1998 से निरंतर प्रकाशित

RNI. No. MPHIN/2017/73838

ISSN 2581-446X

वर्ष-5, अंक-5, अप्रैल-मई 2022, ₹50/-

आज़ादी का अमृत महोत्सव

गौरवपूर्ण यात्रा का 25वाँ वर्ष...

कला समय

कला, संस्कृति, साहित्य एवं समसामयिक द्वैमासिक पत्रिका

स्वतंत्रता आंदोलन में मध्यप्रदेश की गौरव गाथा
विशेषांक (1857-1947)

अतिथि संपादक : कैलाशचन्द्र घनश्याम पाण्डेय

संपादक : भँवरलाल श्रीवास

गुलदस्ता

स्वामी परमात्मानंद सरस्वती जी को मिंटो हॉल में
कला समय पत्रिका भेंट करते संपादक भँवरलाल श्रीवास

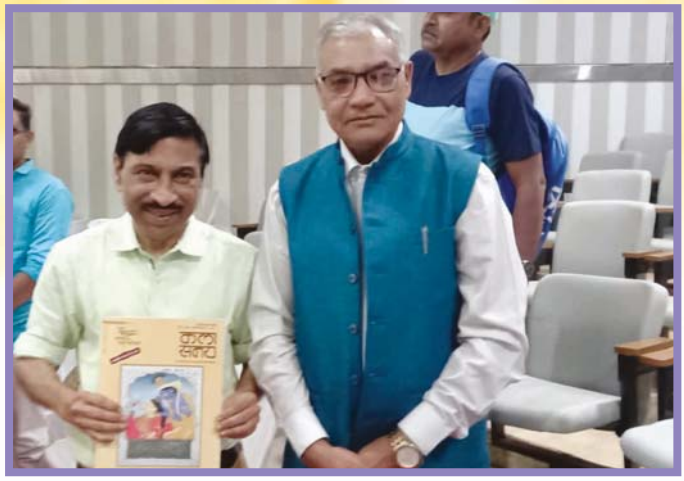

डॉ. के.के. मुहम्मद साहब (पद्मश्री सम्मान से सम्मानित) के द्वारा कला समय
पत्रिका का लोकार्पण साथ में संपादक भँवरलाल श्रीवास

डॉ. नारायण व्यास को डॉ. विष्णु श्रीधर वाकणकर सम्मान प्राप्त होने पर स्वागत करते हुए
भँवरलाल श्रीवास संपादक एवं कैलाशचन्द्र घनश्याम पाण्डेय संरक्षक कला समय

डॉ. नारायण व्यास को डॉ. विष्णु श्रीधर वाकणकर सम्मान प्राप्त होने पर स्वागत करते हुए
दत्तोपंत ठेंगडी शोध संस्थान के निदेशक, एवं कला समय के सलाहकार संपादक-डॉ. मुकेश कुमार मिश्रा

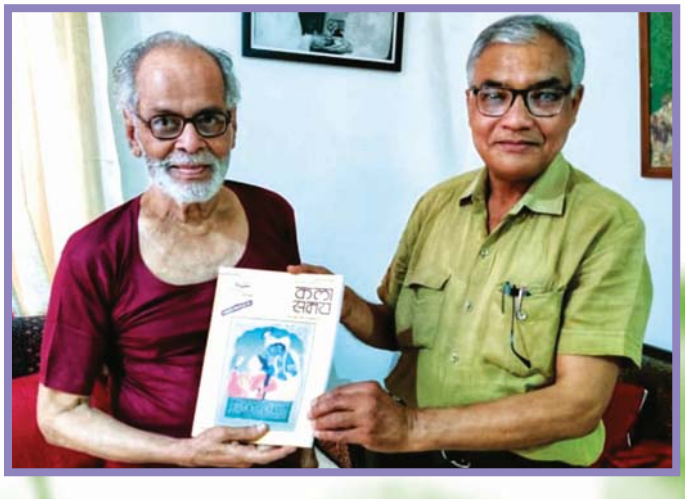

श्री अरविंद चतुर्वेदी जी (पं. माखनलाल चतुर्वेदी जी के भतीजे जी) को
कला समय पत्रिका भेंट करते हुए संपादक भँवरलाल श्रीवास

श्री शम्भू दयाल गुरु (म.प्र. गजेटियर के जनक) को कला समय पत्रिका भेंट करते हुए
भँवरलाल श्रीवास संपादक एवं कैलाशचन्द्र घनश्याम पाण्डेय संरक्षक कला समय

1998 से निरंतर प्रकाशित
RNI NO. MPHIN/2017/73838

कला समय पत्रिका वेबसाइट पर उपलब्ध
www.kalasamaymagazine.com

ISSN 2581-446X
(पंजीयन पूर्व प्रकाशित अंक, वर्ष सम्मिलित)
(वर्ष : 20+05=25) पूर्णांक-116
वर्ष-5, अंक-5, अप्रैल 2022-मई -2022, मूल्य : ₹50/-

माधवराव सप्रे समाचार पत्र संग्रहालय एवं शोध संस्थान, भोपाल म.प्र. द्वारा 'रामेश्वर गुरु सम्मान' से पुरस्कृत
श्री भारतेन्दु समिति कोटा (राज.) द्वारा 'साहित्यश्री' सम्मान एवं
साहित्य मण्डल श्री नाथद्वारा (राज.) द्वारा 'सम्पादक रत्न' सम्मान से सम्मानित
म.प्र. हिन्दी साहित्य सम्मेलन भोपाल (म.प्र.) द्वारा उर्मिला तिवारी स्मृति 'सप्तपर्णी सम्मान' से पुरस्कृत
इन्टरनेशनल ध्रुवपद-धाम ट्रस्ट, जयपुर (राज.) द्वारा 'लाइफ टाइम अचीवमेंट' सम्मान

कला समय

कला, संस्कृति, साहित्य एवं समसामयिक द्वैमासिक पत्रिका

संरक्षक
नर्मदा प्रसाद उपाध्याय
डॉ. महेन्द्र भानावत
पं. विजय शंकर मिश्र
श्यामसुंदर दुबे
पं. सुरेश तातेड़
कैलाशचन्द्र घनश्याम पाण्डेय

परामर्श
लक्ष्मीनारायण पयोधि
डॉ. नारायण व्यास
ललित शर्मा
प्रो. सज्जनलाल ब्रह्मभट्ट 'रसरंग'
प्रो. सुधा अग्रवाल

सांस्कृतिक प्रतिनिधि
चेतना श्रीवास

वेबसाइट प्रबंधन
मयंक अग्रवाल

कानूनी सलाहकार
जयंत कुमार मेढ़े (एडवोकेट)

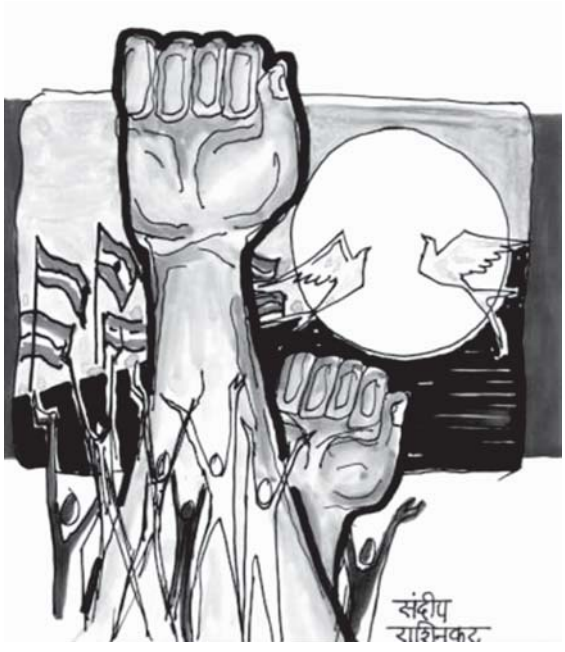

चित्र : संदीप राशिनकर

संपादक
भँवरलाल श्रीवास

सलाहकार संपादक
डॉ. मुकेश कुमार मिश्रा

सह संपादक
डॉ. मधु भट्ट तैलंग

उप संपादक
राहुल श्रीवास

संपादक मंडल
डॉ. बिनय षड़ंगी राजाराम
साहित्य
अरुण तिवारी
समसामयिक
हरीश श्रीवास
कला, संस्कृति
नरिन्दर कौर
प्रबंध

सदस्यता सहयोग राशि:

वार्षिक	:	300 (व्यक्तिगत)	350 (संस्थागत)
द्वैवार्षिक	:	600 (व्यक्तिगत)	700 (संस्थागत)
चार वर्ष	:	1000 (व्यक्तिगत)	1200 (संस्थागत)
आजीवन	:	10,000 (व्यक्तिगत)	12000 (संस्थागत)

(15 वर्ष के लिए)
(कृपया सदस्यता शुल्क- ऑनलाईन/ड्राफ्ट/मनीआर्डर द्वारा 'कला समय' के नाम पर उक्त पते पर भेजें)
विशेष : 'कला समय' की प्रतियाँ साधारण डाक/रजिस्टर्ड बुक-पोस्ट से भेजी जाती हैं यदि कोई महानुभाव रजिस्टर्ड पोस्ट से पत्रिका मंगवाना चाहते हैं तो कृपया वार्षिक डाक खर्च 120/- अतिरिक्त भेजने का कष्ट करें।

कार्यालय सम्पर्क :
संपादकीय एवं सदस्यता सहयोग
जे-191, मंगल भवन, ई-6, महावीर नगर, अरेरा कॉलोनी,
भोपाल (म.प्र.)-462016
फोन : 0755-2562294, मो.- 94256 78058
ई-मेल : kalasamaymagazine@gmail.com
bhanwarlalshrivas@gmail.com
वेबसाइट : **www.kalasamaymagazine.com**

ऑनलाइन सदस्यता सहयोग सुविधा :
'कला समय' का बैंक खाता विवरण
पंजाब नैशनल बैंक की शाखा अरेरा कॉलोनी भोपाल, म.प्र. **(IFSC : PUNB0093210)** के नाम देय, खाता संख्या **A/No. 09321011000775** में ऑनलाइन राशि जमा कराने के बाद रसीद की फोटोकॉपी अपने पूर्ण पते के साथ हमें भेज दें।

कला समय पत्रिका में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं, यह जरूरी नहीं कि संपादक, प्रकाशक, मुद्रक उनसे सहमत हों। पत्रिका से सम्बन्धित समस्त विवाद, भोपाल न्यायालय के अधीन ही रहेंगे।
सम्पादन, संचालन, प्रबंधन एवं प्रकाशन- अवैतनिक/अव्यवसायिक

विशेष नोट : © सर्वाधिकार सुरक्षित 'कला समय' प्रबंधन यह स्पष्ट करना आवश्यक समझता है कि 'कला समय' में प्रवेशांक फरवरी-मार्च 1998 से लेकर अब तक प्रकाशित होने वाली समस्त सामग्री या सामग्री के अंश के पुनर्प्रकाशन तथा पुनरुत्पादन के सर्वाधिकार कॉपीराइट अधिनियम के अंतर्गत 'कला समय' के पास सुरक्षित हैं। अत: कोई भी व्यक्ति या संस्था 'कला समय' की इस सामग्री या इस सामग्री के अंश का उपयोग प्रबंधन की पूर्वानुमति के बिना न करें।

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक एवं स्वत्वाधिकारी भँवरलाल श्रीवास द्वारा गणेश ग्राफिक्स, 26 बी, देशबन्धु भवन, प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी. नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं जे-191, मंगल भवन, ई-6, महावीर नगर, अरेरा कालोनी, भोपाल (म.प्र.)- 462016 से प्रकाशित। संपादक - भँवरलाल श्रीवास

इस अंक के प्रमुख हस्ताक्षर...

डॉ. अद्वैतवादिनी कौल

नर्मदा प्रसाद उपाध्याय

उमाकांत गुंदेचा
(पद्मश्री सम्मान से सम्मानित)

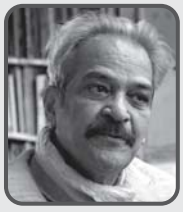

अखिलेश

श्रीकान्त साकल्ले

जगदीश कौशल

प्रीति निगोसकर

कैलाशचन्द्र घनश्याम पाण्डेय
(राष्ट्रपति सम्मान प्राप्त)
मंदसौर, म.प्र.
इस अंक के अतिथि संपादक
मो. 9424546019

शब्द संयोजन एवं आकल्पन - गणेश ग्राफिक्स, भोपाल, 9981984888 | **आवरण चित्र** - कैलाशचन्द्र घनश्याम पाण्डेय के सौजन्य से | **छायाचित्र** -मनीष सराठे, सुनील सेन, गूगल से साभार | **रेखांकन** - संदीप राशिनकर | **सहयोग** - धन सिंह, लता श्रीवास | **आवरण सज्जा** - मनोज माकोड़े, गणेश ग्राफिक्स

इस बार

- अतिथि संपादक की कलम से 05
- संपादकीय 07
- **गौरवगाथा** 09

  प्रथम स्वातंत्र्य समर से देश की स्वाधीनता तक मध्यप्रदेश का योगदान
  1. भोपाल संभाग - भोपाल, राजगढ़, रायसेन, सीहोर, विदिशा
  2. चंबल संभाग - भिण्ड, मुरैना - श्योपुर
  3. ग्वालियर संभाग - दतिया, गुना - अशोकनगर, शिवपुरी
  4. इन्दौर संभाग - इन्दौर, अलीराजपुर, धार, बड़वानी, खरगौन, खण्डवा-बुरहानपुर, झाबुआ, बुरहानपुर
  5. जबलपुर संभाग - बालाघाट, छिंदवाड़ा, डिण्डौरी - मण्डला, जबलपुर - कटनी, नरसिंहपुर, सिवनी
  6. नर्मदापुरम संभाग - नर्मदापुरम, हरदा, बैतूल
  7. रीवा संभाग - रीवा
  8. सागर संभाग - सागर, छतरपुर, दमोह, पन्ना, टीकमगढ़ (ओरछा)
  9. शहडोल संभाग - शहडोल
  10. उज्जैन संभाग - उज्जैन, आगर-मालवा, देवास, मन्दसौर, रतलाम, नीमच, शाजापुर,
- **अद्वैत-विमर्श**

  आदि शंकराचार्य का कश्मीर में अवस्थान.../डॉ. अद्वैतवादिनी कौल 63
- **आलेख**

  कला के अमृत घट और ... / नर्मदा प्रसाद उपाध्याय 75
- **संस्मरण**

  भालू मोंढे लींक से हटकर एक कलाकार / उमाकांत गुंदेचा 77

  भालू मोंढे ने अपना काम किया / अखिलेश 78
- **आलेख**

  लोक कलाओं का शिखर - स्पर्श / श्रीकान्त साकल्ले 80

  स्वतंत्रता संग्राम और कलाकार / प्रीति निगोसकर 83
- **पुस्तक समीक्षा**

  पुस्तक : महाभारत रिसता है / निर्मला भुराड़िया 84
- **स्मृति शेष**

  संतूर के सरताज पंडित शिवकुमार शर्मा 85
- **आलेख**

  बुन्देली लोकगीतों में राष्ट्रीय स्वर / जगदीश कौशल 87
- **समय की धरोहर**

  राष्ट्रकवि पंडित सोहन लाल द्विवेदी 90
- **संस्मरण**

  देश प्रेम की अलख जगाने वाले राष्ट्रकवि... / जगदीश कौशल 91
- **आयोजन**

  आचार्य शंकर प्रकटोत्सव एकात्म पर्व समारोह 92
- **समवेत** 95

  लोक साहित्यविद प्रो शैलेन्द्र कुमार शर्मा एवं लोक साहित्य अध्येता डॉ. सुमन चौरे 35 वें भेराजी सम्मान से अलंकृत / इस मिट्टी से तिलक करो, यह मिट्टी है बलिदान की / देश के प्रतिष्ठित ''राष्ट्रीय वनमाली कथा सम्मान समारोह'' का रवीन्द्र भवन भोपाल में हुआ भव्य आगाज / सुषेण पर्व नाटक का मंचन, दिखाई गई सुषेण के राजवैद्य से वैद्यराज बनने तक की यात्रा / श्री कौतुक के कविता संग्रह का लोकार्पण / गजसिंह द्वारा डॉ. महेन्द्र भानावत को मारवाड़ रत्न का सम्मान / ''संस्कृति के पथ पर'' पुस्तक का लोकापर्ण / प्रो. रविन्द्र कोरिसेट्टार और डॉ. नारायण व्यास को डॉ. विष्णु श्रीधर वाकणकर राष्ट्रीय सम्मान / घनश्याम सक्सेना के उपन्यास 'राजमहिषी मामोला बाई' का लोकार्पण / अष्टोत्तर सहस्त्र शिवलिंग पुस्तक लोकार्पण

अतिथि संपादक की कलम से .....

स्वतंत्रता आंदोलन में प्रत्येक आहुति अपना महत्व रखती है

आजादी के अमृत महोत्सव वर्ष में प्रकाशित 'कला समय' पत्रिका का यह अंक मध्यप्रदेश की उन अमर हुतत्माओं के नाम है, जिन्होंने ब्रिटिश सरकार के कारिन्दों के जुल्म सहे, अपने परिवार का परित्याग किया, समाज की उपेक्षा सही, और वक्त आने पर अपने प्राणों का बलिदान भी दिया। मैं इन संघर्ष वीरों की पावन स्मृति में प्रणाम प्रस्तुत करता हूँ।

इस महान देश की आजादी की 75 वीं वर्षगांठ को सफल बनाने की योजना मैंने वर्ष 2021 के सितम्बर माह में तय कर 'कला समय' के संपादक महोदय श्री भंवरलाल श्रीवास से आग्रह किया था, जिसे उन्होंने सहर्ष स्वीकार कर लिया। तब यह विचार था कि प्रथम स्वातंत्र्य संघर्ष की 150वीं वर्षगांठ 2008 पर मध्यप्रदेश शासन के स्वराज संस्थान ने ''प्रथम स्वातंत्र्य समर फैलोशिप'' जिन-जिन विद्वानों को प्रदान की गई थी उन-उन विद्वानों से मात्र दो पेज के लेख आमंत्रित कर 'कला समय' का श्रृंगार मुफ्त में कर लिया जाए। क्योंकि, कक्षा छः में मैंने जो श्लोक रटा था ''**अन्न दान महादान, विद्यादान महत्तरम**'' अर्थात अन्य दान महादान है पर विद्यादान उससे भी श्रेष्ठ है। पर विद्वान तो विद्वान है जिन्होंने रुपये 60000 लेकर स्वराज के बाद आजादी का इतिहास लिखा, वे दो पेज मुफ्त में क्यों लिखें ? परिणाम ये हुआ कि मुझे एक अपील करनी पड़ी - ''जनवरी 2022 में ''कला समय'' का प्रयास रहेगा कि सम्पूर्ण मध्यप्रदेश के स्वातंत्र्य समर का इतिहास इसके एक अंक में जन-जन को सुलभ हो।''पर इतिहासकार जागे नहीं।

इस पर मैंने ही इस बीड़े को उठाया। मेरे आह्वान पर कई साथी उठ खड़े हुए जिन्होंने मन से, लेखन से और अपने मुक्त हस्त से मेरी मदद की इनमें -

1. श्री प्रकाश मानव (वरिष्ठ पत्रकार) नीमच,
2. डॉ. आर.डी. ठाकुर (निदेशक अश्विनी शोध संस्थान, महिदपुर),
3. डॉ. विजय सिंह पुरावत (व्याख्याता सरदार पटेल श.उ.मा.वि.मंदसौर),
4. डॉ. प्रवीण कुमार श्रीवास्तव (रसायन विद् मध्यप्रदेश पुरातत्व विभाग इंदौर),
5. श्री उमेश कानूनगो (रीजनल डिप्टी डायरेक्टर प्रशिक्षण केन्द्र एमबी मंदसौर),
6. श्री ललित शर्मा (इतिहासकार झालावाड़),
7. डॉ. सहदेव सिंह (शोध अधिकारी श्री म.ना. शोध संस्थान सीतामऊ),
8. श्री गिरजाशंकर मिश्र (रीवा),
9. डॉ. बी.के. श्रीवास्तव (विभागाध्यक्ष इतिहास, सागर विश्वविद्यालय, सागर),
10. सुरेन्द्र शक्तावत (प्राचार्य ज्ञान मंदिर नीमच),
11. श्री अम्बालाल गेहलोत (लोकतंत्र सेनानी),
12. श्री धीरेन्द्र रामनारारण त्रिवेदी (एडवोकेट पूना)
13. श्री मनोज व्यास ,भोपाल
14. श्री के. एल. ड़ाबी, सहायक संचालक म. प्र. पुरातत्व, जबलपुर

15. सत्यप्रकाश व्यास, सेवानिवृत्त जिला शिक्षा अधिकारी, गुना

इन महानुभाव के सहयोग से यह ज्ञान यज्ञ पूर्ण हुआ। प्रत्येक आहुति कितना महत्व रखती है इसका अंदाजा एक-दो संस्मरणों से जो इस कार्य को संपन्न करने के दौरान हुए -

1) देश की आजादी की 40 वीं वर्षगांठ जब मैंने इस क्षेत्र में कदम रखा तब श्री मनोज खरे मध्यप्रदेश में सहयोगी संपादक हुआ करते थे। उन्होंने मुझ जैसे शोधक को 50 पैसे मूल्य का म.प्र. संदेश का ''स्वाधीनता आंदोलन'' अंक निशुल्क प्रदान किया था। 35 वर्ष बाद जब मैं जनसम्पर्क में गया तो मनोज खरे साहब डायरेक्टर पद पर आसीन मिले। पर, वही उदार भाव। मैंने मध्यप्रदेश सन्देश का अंक दिखाया तो बोले - ''अब हम फोटोकॉपियों दे रहे हैं।'' मेरी प्रार्थना पर उन्होंने अपने सहयोगी श्री तिवारी को निर्देश दिया कि मुझे वे दुर्लभ पुस्तकें सात दिवस के लिए प्रदान कर दें। अगर मुझे यह पुस्तकें ना मिलती तो मुझे नकलचियों की नकल करनी पड़ती।

2) जब प्रमाणिक विद्वानों का स्मरण आया तो श्री एस.डी. गुरु के निवास पहुंचे तो उनकी सुपुत्री ने बताया कि - ''पापा कोरोना के दौरान दीदी के पास नागपुर चले गए थे और कोई डेढ़ वर्ष बाद आज ही लौटने वाले हैं। हमारी खुशी का ठिकाना ना रहा। हमने अपना होमवर्क उन्हें दिखाया, जिस पर उन्होंने प्रसन्नता व्यक्त की। जीवन के दसवें दशक की देहरी पर खड़े गुरु साहब की स्मृति आज भी उसी गति से कार्य कर रही है जैसी 1981 में देखी .....

3) सागर जिले के स्वतंत्रता संग्राम सैनिक खंड दो हमें कहीं नहीं मिला। जनसंपर्क जिसने प्रकाशित किया उनके पास भी प्रति नहीं थी। भोपाल की पुरानी पुस्तकों की दुकानों, पुस्तकालयों, स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों के घर आदि सब टटोले, सोशल मीडिया पर फेटोकॉपी के 1000 रु. लगा दिए। अन्त में रीवा के गिरजाशंकर मिश्र ने अपने स्नेही प्रो. जे.एस.दुबे प्रति की फोटो कॉपी नि:शुल्क प्रदान करदी। हम दोनों महानुभावों के उदार सहयोग के प्रति नतमस्तक हैं।

प्रस्तुत अंक अब तक प्रकाशित रपटो, ग्रंथों से अलग सबसे सरल सहज है। इसमें अकादमिकता खोजने की अपेक्षा क्रमबद्धता देखें। इसके बावजूद न तो यह टेबल वर्क है व नही पूर्व प्रकाशित सामग्रियों की फोटो कॉपी। हमारा उद्देश्य देश की आजादी की लड़ाई की जानकारी जनसाधारण तक पहुंचाना है। इस हेतु हमने म.प्र. सूचना प्रकाशन संचालनालय द्वारा प्रकाशित ग्रथों पत्रिकाओं का पूरा-पूरा लाभ उठाया है। इनके सिवाय किसी लेखक को यह लगे कि फलां -फलां सामग्री उसकी पुस्तक की नकल है तो हमारी विनम्र प्रार्थना यह है कि वह इस बात से संतोष प्राप्त करे कि -''सामग्री का सदुपयोग हुआ है।''

हम अपने प्रयास में कितना सफल हुए हैं, यह पाठकों की प्रतिक्रिया पर निर्भर है। ''कला समय'' आपकी प्रत्येक प्रतिक्रिया का स्वागत करता है। सिद्धिस्तु।।

डॉ. विष्णु श्रीधर वाकणर जयन्ती,
4 मई, 2022 तदनुसार
मंगलवार, वैशाख सुदी 3 वि.स. 2079

- कैलाशचंद घनश्याम पाण्डेय
श्री दशपुर प्राच्य शोध संस्थान, मन्दसौर

■

संपादकीय

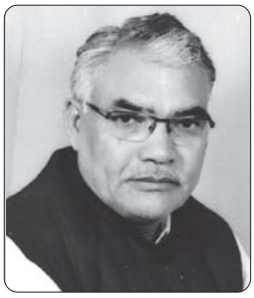

आजादी का अमृत महोत्सव अंतर्गत मध्यप्रदेश का गौरवशाली इतिहास

''हैं होंठ-होंठ पर नाच रहे तेरे उच्छवास सुरभि श्यामल
हैं कण्ठ-कण्ठ में गूंज रही तेरे गीतों की ध्वनि चंचल
है वक्ष-वक्ष में धधक रही तेरे विस्फोटों की ज्वाला
ओ रे! कुर्बानी के गायक/ प्रति युवक तुम्हें पढ़ मतवाला
कितनों के बंधन तोड़ चुकी हुंकार तुम्हारी सेनानी!
अक्षय यौवन का सागर प्रति अंजलि में हो देते दानी!''

-रामेश्वर शुक्ल 'अंचल'

इतिहास के प्रारम्भ से ही भारत एक बहुभाषीय, बहुजातीय, बहुधर्मीय और बहुविश्वासी समाज रहा है। विभिन्नताओं में एक्य की अनुभूति हमारी जातीय सृजनशीलता का प्रतीक है।

व्यक्ति-व्यक्ति के धर्मयुक्त जीवन तथा अपने देवत्व और ब्रह्मत्व के साथ संस्कृति-सभ्यता के प्रति अमिट निष्ठा तथा आस्था और विश्वास जीवित देखते हैं, इतना ही नहीं बाहर से जब-जब विदेशी लोग भारत आये इस हिन्दू जीवनधारा के अंग बन गये।

आदि शंकराचार्य के पश्चात यदि किसी उद्भट दिव्य मनीषी का नाम भारत में गिना जाता है तो वे हैं स्वामी विवेकानंद। स्वामी जी का विश्वास था कि भारतीयों का जीवन आत्मविस्मृत सा हो गया है। वे अपने राष्ट्र की गौरव, गरिमा, शुचिता तथा स्वर्णिम अतीत को भूल चुके हैं। स्वामी जी के काल का भारत ब्रिटिश लोगों के द्वारा नियंत्रण था।

स्वामी जी भारतीयों को राष्ट्रीय शिक्षा से ओतप्रोत कर उनमें देशभक्ति के प्रखर भाव भरना चाहते थे। जिसमें भारतीय राष्ट्र दीक्षित होकर परस्पर संगठन का निर्माण करें और अंग्रेजों के अन्याय के विरोध में उठ खड़ा हो क्योंकि ''शिक्षा ही किसी देश का नैतिक बल होता है।'' स्वामी जी जहाँ देश के युवकों को राष्ट्रीय शिक्षा से अनुप्राणित कर एक सुदृढ़ राष्ट्रीय जीवन का निर्माण करना चाहते थे, वहीं वे नारी शिक्षा पर भी बहुत बल देते थे। उनका मत था कि नारी सृष्टि की मूल जननी है। यह माता है! नागरिकों को राष्ट्रीय बनाने से पूर्व यह आवश्यक है कि उनकी माताओं को देशभक्ति तथा राष्ट्रीय शिक्षा से ओतप्रोत किया जावे जिससे वे देशभक्त संतानों को जन्म दे सके। उन्हें यह अनुभव हुआ कि भारतीयों को एकता और संगठन के सूत्र में रहने में ही लाभ है।

पंडित बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' के साथ पूरा स्वतंत्रता संग्राम का इतिहास चलता है वे गणेश शंकर विद्यार्थी के मानस पुत्र स्वतंत्रता सेनानी, साहित्यकार, कवि, मध्यप्रदेश के इतिहास पुरुष थे। नवीन जी का व्यक्तित्व बहुमुखी व्यक्तित्व था। उनमें एक क्रांतिकारी का आत्मत्याग, एक योद्धा का शौर्य और एक कवि की भावुकता की विशेषताओं की त्रिवेणी पाई जाती है।

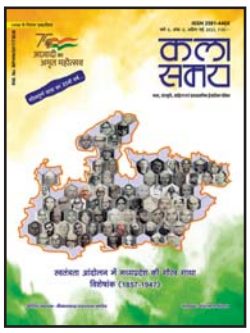

आजादी का अमृत महोत्सव के अंतर्गत मध्यप्रदेश भी भारत के गौरवशाली इतिहास और सांस्कृतिक उपलब्धियों का स्मरण करते हुए स्वाधीनता की 75 वीं वर्षगांठ को समारोह पूर्वक मना रहा है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी की अपेक्षा है कि आजादी के 75 वाँ यह पर्व एक ऐसा पर्व होना चाहिए जिसमें स्वाधीनता संग्राम की भावना, उसका त्याग, साक्षात अनुभव हो सके जिसमें देश के शहीदों को श्रद्धांजलि भी हो और उनके सपनों

का भारत बनाने का संकल्प भी। सनातन भारत के गौरव की झलक हो और आधुनिक भारत की चमक भी हो। हमें 130 करोड़ देशवासियों को साथ लेकर, उन्हें साथ जोड़कर आजादी के 75 साल का यह पर्व मनाना है। जनभागीदारी इस आयोजन की मूल भावना है। अमृत काल का यह समय हमारे ज्ञान, बोध, शोध और नवाचार का समय है। वे कहते हैं – इस काल में हमें एक ऐसा भारत बनाना है, जिसकी जड़ें प्राचीन परम्पराओं और विरासत से जुड़ी होंगी तथा जिनका विस्तार आधुनिकता के आकाश में अनन्त तक होगा। 15 अगस्त 2022 को भारत की आजादी के 75 वर्ष पूरे हो जाएंगे। प्रधानमंत्री जी ने स्वाधीनता के अमृत महोत्सव दिवस के 75 सप्ताह पूर्व – अमृत महोत्सव गतिविधियों की शुरुआत कराई है।

मध्यप्रदेश के यशस्वी मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान जी के मार्गदर्शन और कुशल नेतृत्व में आजादी के अमृत महोत्सव का पूरा कैलेण्डर तैयार कर प्रदेश भर में कार्यक्रमों की श्रृंखलाओं का सिलसिला आरम्भ किया है। भोपाल स्थित शौर्य स्मारक में 12 मार्च 2021 को मुख्यमंत्री जी द्वारा आजादी के अमृत महोत्सव की शुरुआत के साथ ही सभी नगरीय निकायों एवं स्थलों पर स्वाधीनता के अमृत महोत्सव से जुड़े विभिन्न कार्यक्रमों के अन्तर्गत आजादी के अमृत महोत्सव की थीम .... स्वतंत्रता संघर्ष के पाँच प्रमुख विषय ... ''स्वतंत्रता संघर्ष के 75 वर्ष'', ''75 वर्ष की उपलब्धियाँ'', ''75वें वर्ष पर संकल्प'', ''75 वर्ष में विचारण'' और ''75 वें वर्ष में गतिविधियाँ'' शामिल है। इसी थीम पर समय-समय पर विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए गए। स्वराज संस्थान संचालनालय, मध्यप्रदेश शासन संस्कृति विभाग द्वारा ज्ञात-अज्ञात क्रांतिकारियों शहीदों, रणबाँकुरों, वीरांगनाओं तथा जन नायकों को याद किया जा रहा है। बाजीराव पेशवा, रानी अवंती बाई, रानी दुर्गावती, रानी लक्ष्मीबाई, तात्या टोपे, अमर शहीद चंद्रशेखर आजाद, शंकर शाह-रघुनाथ शाह, राजा सरयू प्रसाद सहित सभी जन नायकों की जयंती एवं बलिदान दिवस पर विभिन्न आयोजन, व्याख्यान, शोध संगोष्ठी, चित्रांकन, कार्यशाला, चित्र प्रदर्शनी का एल्बम, फिल्म निर्माण – प्रदर्शन का सिलसिला जारी है।

मध्यप्रदेश शासन ने स्वतंत्रता दिवस 2023 तक समारोह मनाए जाने का निर्णय लिया है। साथ ही आजादी के 100 साल बाद (2047) के भारत के विज़न का दस्तावेजीकरण प्रमुख है।

'कला समय' का यह 25वाँ रजत जयंती वर्ष का 116वाँ अंक मध्यप्रदेश के प्रथम स्वातंत्र्य समर से राष्ट्रीय आंदोलन को समर्पित किया जा रहा है। 'कला समय' परिवार ने इस महत्वपूर्ण प्रतिष्ठित दस्तावेज अंक के अतिथि संपादक का दायित्व डॉ. विष्णु श्रीधर वाकणकर (पद्मश्री) के परम शिष्य श्री कैलाशचंद्र घनश्याम पाण्डेय (राष्ट्रपति पुरस्कार प्राप्त) मंदसौर को सौंपा है। उन्होंने हमारे आग्रह को कृपापूर्वक स्वीकार किया, हम उनके इस स्नेह भाव के कृतज्ञ हैं। मध्यप्रदेश के वर्तमान 10 संभाग और उसके अंतर्गत 52 जिलों (1857-1947) अवधि के क्रांतिकारी स्वातंत्र्य समर की दुर्लभ सामग्री के साथ यह अंक इस अपेक्षा भाव से पाठकों को समर्पित है कि पाठक अपनी प्रतिक्रिया और दृष्टि से हमें अवगत कराएंगे। साथ ही 'कला समय' के अपने स्थायी स्तम्भ अद्वैत-विमर्श में इस बार ''आदि शंकराचार्य का कश्मीर में अवस्थान: सन्दर्भ एवं परिपेक्ष्य'' विषय पर डॉ. अद्वैतवादिनी कौल जी का महत्वपूर्ण विस्तृत आलेख अवश्य पढ़ें और बहुत कुछ.....।

- भँवरलाल श्रीवास

प्रथम स्वातंत्र्य समर से देश की स्वाधीनता तक मध्यप्रदेश का योगदान (दस संभाग-बावन जिले)

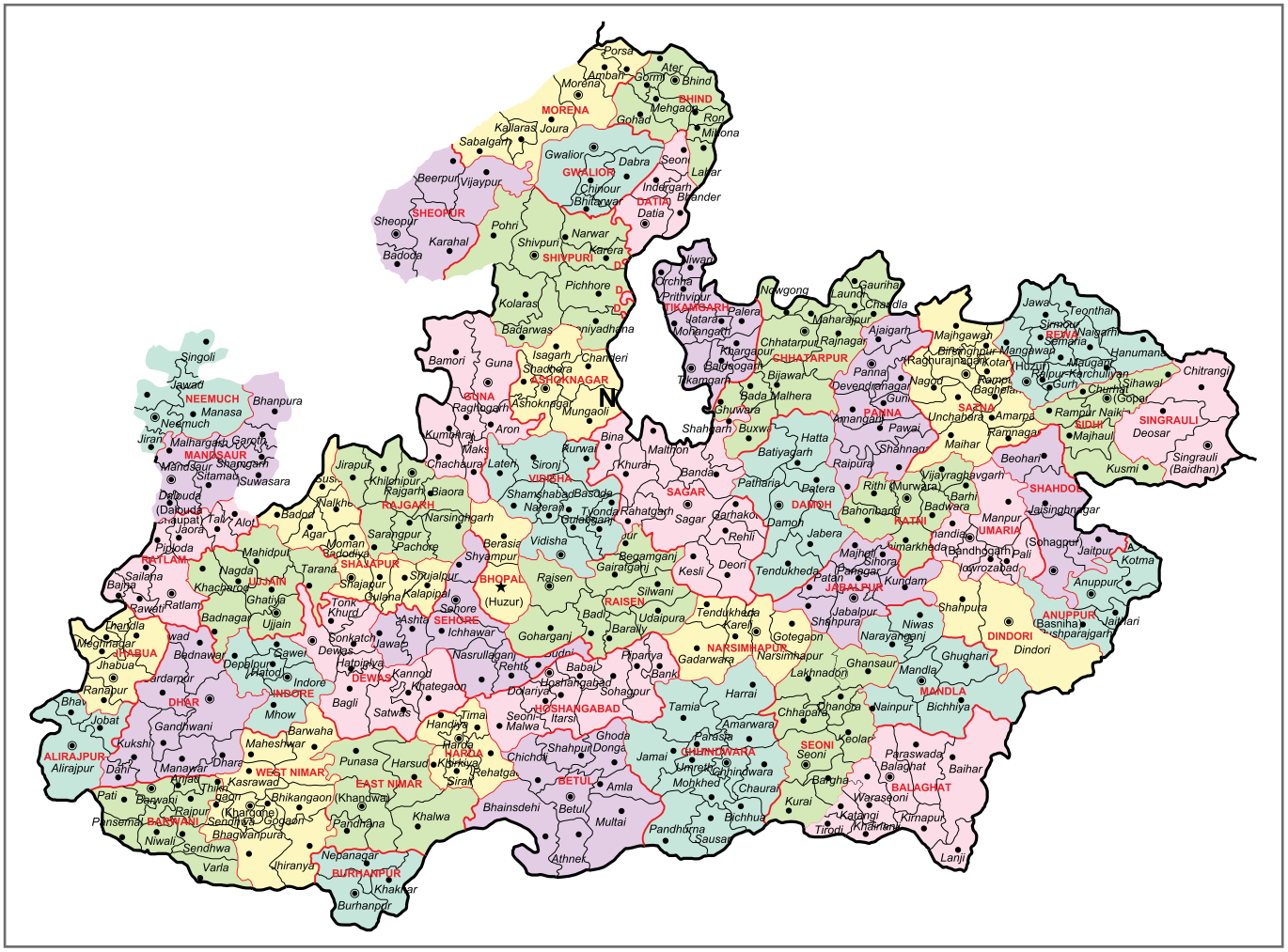

1. भोपाल संभाग

19वीं शताब्दी के नवमे दशक में भोपाल संभाग में भोपाल, सीहोर, रायसेन, विदिशा, राजगढ़ तथा बैतूल जिले सम्मिलित थे। तब होशंगाबाद संभाग (1984) में मात्र होशंगाबाद जिला ही था। वर्तमान संभाग में बैतूल जिला नहीं है। वर्तमान में बैतूल जिला नर्मदापुरम संभाग में रखा है। वर्तमान में भोपाल संभाग में भोपाल, राजगढ़, रायसेन, सीहोर व विदिशा जिले सम्मिलित हैं।

● जिला- भोपाल

भोपाल संभाग में भोपाल जिला 26 जनवरी 1972 को अस्तित्व में आया। पूर्व में यह सीहोर जिले की तहसील था। प्रदेश में इस जिले में जनसंख्या का घनत्व सर्वाधिक है जिले में 855 व्यक्ति प्रति वर्ग कि.मी. में निवास करते हैं। भोपाल नगर का संस्थापक परमार शासक राजा भोज (1000-1055 ई.) को माना जाता रहा है। 18 वीं शताब्दी के प्रारंभ में भोपाल में नवाबी शासन की स्थापना सरदार दोस्त

मो. खान (1708–1726) नें गौंड महारानी कमलापति के पुत्र नवलशाह को धोखे से मारकर की थी। इस वंश में 14 शासक हुए। अतिंम नवाब हमीदुल्लाह खान (1926–1949 ई.) काल में देश को अजादी प्राप्त हा गयी थी लेकिन नवाब ने रियासत कर विलय नहीं किया। अंत में भोपाल विलय आन्दोलन प्रारंभ किया गया तब कही नवाब ने जुन,1949 ई. में भोपाल रियासत को भारतीय संघ में विलिन किया। नवा

भोपाल में सन् 57 का विद्रोह

सन् 1857 के संग्राम में भोपाल रियासत की जनता ने अपने खून से आजादी का गौरवमय इतिहास लिखा। भोपाल रियासत में अँग्रेजों के विरुद्ध बगावत का झंडा बुलंद करने वाले नवाब फाज़िल मोहम्मद खाँ और आदिल मोहम्मद खाँ नामक दो जाँबाँज भाइयों के अद्वितीय संघर्ष को भी कभी विस्मृत नहीं किया जाना चाहिए। अंत में इन्होंने इस संघर्ष की कीमत अपनी शहादत से अदा की।

फाज़िल मोहम्मद खाँ और आदिल मोहम्मद खाँ गढ़ी अम्बापानी के जागीरदार थे। गढ़ी अम्बापानी भोपाल–सागर के बीच भोपाल से करीब 65 कि.मी. दूर स्थित है। वह भोपाल रियासत के पूर्वी जिले में एक तहसील थी, जो कि तहसील गढ़ी कहलाती थी। भोपाल रियासत के संस्थापक दोस्त मोहम्मद खाँ ने अम्बापानी की जागीर आदिल मोहम्मद खाँ और फाज़िल मोहम्मद खाँ के पूर्वज खिजर मोहम्मद खाँ को प्रदान की थी। खिजर मोहम्मद खाँ, दोस्त मोहम्मद का चचेरा भाई था। दोस्त मोहम्मद ने अपनी पुत्री का विवाह भी खिजर से कर दिया था। इस तरह फाज़िल मोहम्मद और आदिल मोहम्मद भोपाल के नवाब के निकट भी सम्बन्धी थे।

विद्रोह की तैयारी

सन् 1857 के विद्रोह की लपटें जब सम्पूर्ण उत्तर भारत में धधक रहीं थीं, तब भोपाल की जनता का बहुमत अँग्रेजी शासन के विरुद्ध था। अनेक मौलवी, जागीरदार और यहाँ तक कि शासकीय कर्मचारी भी अँग्रेजों के नाम तक से घृणा करते थे। जनता अँग्रेजों के विरुद्ध हथियार उठाने का अवसर खोज रही थी। परन्तु भोपाल की तत्कालीन नवाब सिकन्दर बेगम (1844–1868) अँग्रेजों के प्रति पूरी तरह स्वामीभक्त थीं। परन्तु फाज़िल मोहम्मद और आदिल मोहम्मद अँग्रेजों के विरुद्ध हथियार उठाने का फैसला कर चुके थे। दोनों भाईयों ने अँग्रेजों के विरुद्ध संघर्ष की तैयारी शुरु कर दी। उन्होंने विद्रोह के लिये सैनिकों की भर्ती प्रारम्भ की और साथ ही काफी मात्रा में गोला–बारूद एकत्र की।

विद्रोह की शुरूआत

14 अक्टूबर, 1859 को पोलटिकल एजेन्ट ने आदिल मो. खान को गिरफ्तार कराने वाले को 2000 रू. का पुरस्कार प्रदान करने की घोषणा की। 28 नवम्बर, 1859 को विज्ञप्ति कर बताया कि कोई जमीदार या इन क्रान्तिकारियों को अन्न की मदद देगा तो उसे Transported beyond the sea. दिया जावेगा।

अन्त में भोपाल रियासत की सेना के रिसालदार वलीशाह और महावीर कोठा ने दो झण्डे क्रमश: 'निशाने महमदी' तथा 'निशाने महावीरी' गाड़कर 6 अगस्त 1857 को जिस स्वतंत्रता संघर्ष की शुरुआत की थी। उसे फाजिल व आदिल मो. तथा महावीर कोठा और रज्जूलाल ने लम्बे समय तक लड़ा, अन्त में भोपाल राज्य की सेना द्वारा राहतगढ़ में मौत के घाट उतारे गए। यह सब अंग्रेजों के लिए इसलिए संभव हुआ क्योंकि भोपाल नवाब सिकन्दर बेगम ने अंग्रेजों की सेवा में कोई कसर नहीं छोड़ी। उसके बावजूद सन 1881 में सर लेपल ग्रीफन ने नवाब सिद्धिक हसन को सरकार विरोधी गतिविधियों के कारण नवाबी के सब हक छीनकर एक साधारण जमींदार बनवा दिया।

भोपाल रियासत में शासन के सख्त नियंत्रण के कारण जनता द्वारा संगठित आन्दोलन नहीं चलाये जा सके। जो प्रयास समाचार पत्रों के माध्यम से किए गए उन्हें रियासत ने कुचलने में कोई कसर बाकी न रखी। इस कारण मौलवी बरकतउल्ला तथा मौलाना सईद रजमी जैसे लोग भारत और विदेश में चलने वाले भारत की स्वतंत्रता के आन्दोलन में शरीक हो गये। इस कारण 'भारत छोड़ो' आन्दोलन की गूंज भोपाल में इस कदर नहीं उठी। इसमें भाग लेने वाले शाकीर अली खाँ, गोविन्द प्रसाद श्रीवास्तव, मौलाना रजमी, विठ्ठल बजाज, वृन्दावन बजाज को जेल में डाल दिया गया।

देश में अन्तरिम सरकार बन जाने के बाद भी नवाब हम्मीदुल्ली खान ने प्रस्ताव रखा कि रियासतों को यह अधिकार होना चाहिए कि वह हिन्दुस्तान में रहे या पाकिस्तान में। उसने भोपाल रियासत में इसे लागू भी किया। इसके समर्थन में रियासत में दफा 144 के अन्तर्गत प्रजामण्डल के प्रमुखों पर भोपाल नगर के बाहर जाने, लिखने और बोलने पर पाबन्दी लगा दी गई।

भोपाल विलीनीकरण आन्दोलन में शाकिर अली खाँ, रतनकुमार, गोविन्द प्रसाद, सूरज जैन, शान्तिदेवी, वसन्ती देवी, शिवनारायण सुदामा, मिश्रीलाल दुबे, गुलाबचंद तामोट, बालकृष्ण गुप्ता, मथुराप्रसाद, शंकरदयाल शर्मा आदि सैकड़ों लोग भोपाल की

सड़कों पर उतर आए। अन्त में 30 अप्रैल 1949 को नवाब ने विलीनीकरण समझौते पर मुहर लगा दी। इस तरह भोपाल को राष्ट्र की मुख्यधारा से जुड़ जाने पर यहाँ का स्वतंत्रता संग्राम सफल हुआ।

● जिला- राजगढ़

राजगढ़ जिला देश का पहला ऐसा जिला है जिसने पृथक् मानव विकास प्रतिवेदन प्रस्तुत किया है। इस जिले का ब्यावरा राष्ट्रीय राजमार्गों का चौराहा है जहाँ से राष्ट्रीय राजमार्ग क्रमांक 3 व 12 गुजरते हैं। इस जिले में ब्यावरा, जीरापुर, खिलचीपुर, नरसिंहगढ़, राजगढ़ व सारंगपुर नामक सात तहसीलें हैं। इस जिले का निर्माण राजगढ़, नरसिंहगढ़, खिलचीपुर रियासतों के भू-भाग, देवास राज्य के सारंगपुर तथा होलकर रियासत के जीरापुर क्षेत्र को मिलकर किया गया है।

इस जिले की पूर्व रियासतों के कम्पनी सरकार से अलग-अलग मतभेद थे। नरसिंहगढ़, खिलचीपुर तथा राजगढ़ की रियासतों सीहोर में पदस्थ पोलटिकल एजेन्ट कर्नल मैडाक के अधीन थी। नरसिंहगढ़ रियासत के कुंवर चैनसिंह ने अपनी ही रियासत के मंत्री रूपराम बोहरा की हत्या कर दी। इसके पूर्व अपने पिता के विरोध के बावजूद महामंत्री आनन्दराम बख्शी की हत्या भी कर चुका था। रूपराम के भाई ने अपने भाई की हत्या की रपट मैडाक के पास दर्ज कराई। इसके बाद चैनसिंह आक्रामक हो गया और उसने युद्ध प्रारंभ करके संघर्ष का श्रीगणेश कर दिया। इस युद्ध में सिहोर के दशहरा बाग में चैनसिंह अपने दो अंगरक्षकों हिम्मत खाँ, बहादुर खाँ व अन्य 44 साथियों सहित मारा गया। सीहोर के दशहरा बाग में स्थित चैनसिंह की छत्री तथा उसके अंगरक्षकों की कब्रें अब लोक आस्था का केन्द्र बन गई है। नरसिंहगढ़ में भी चैनसिंह का एक स्मारक बना है। जहाँ प्रतिवर्ष मेला भरता है और शहीद दिवस मनाया जाता है।

महात्मा गाँधी के अनुसार देशी रियायतों में प्रजामण्डल के माध्यम से उत्तरदायी शासन की मांग की जानी थी। इस नीति के अन्तर्गत विभिन्न गतिविधियाँ चलाई गईं। राजगढ़ रियासत में प्रजामण्डल की स्थापना का श्रेय सैयद हामिद अली को है। जीरापुर में उत्तरदायी शासक के लिए किसानों ने बड़ा आन्दोलन किया। ब्यावरा राष्ट्रीय आन्दोलन का केन्द्र था जहाँ राष्ट्रप्रेमी बालाबख्श मिश्र तथा पियूषधरा प्रेस आन्दोलन का आश्रय स्थल रहा। खिलचीपुर में भागीरथ चौरोट, शंकरलाल जोशी, भीखुलाल बागड़ी हरिप्रसाद बोहरा, कैलाश नारायण शर्मा का प्रजामण्डल की स्थापना तथा जन आन्दोलन चलाने में प्रमुख योगदान रहा। सारंगपुर में प्रजामण्डल का गठन अल्ताफ हुसैन की अध्यक्षता में किया गया। इसके सदस्य देवास राज्य में लोकप्रिय शासन की मांग तथा नगर से जुंआ घरों को हटाने हेतु मुहिम चलाते।

नरसिंहगढ़ में मध्यप्रदेश देशी राज्य लोक परिषद का गठन गोपीकृष्ण विजयवर्गीय की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। प्रजा मण्डलों की मागों को कभी स्वीकार नहीं किया। रियासतों ने इन मण्डलों को दबाने में कोई कसर न छोड़ी। इनके सदस्यों पर झूठे मुकदमें लगाए जाते, अपमानित किया जाता व आन्दोलनकारियों को सजाएँ झेलना पड़ती थी।

इन जन आन्दोलनों में साहित्य एवं काव्य के माध्यम से जन जागृति उत्पन्न करने में अग्रवाल, रतनलाल जोशी, श्री सत्येन्द्र खुजनेरी तथा हीरालाल जैन ने अपनी रचनाओं से आजादी का शंख फूंका। राजगढ़ जिले के राष्ट्रीय आन्दोलन के बारे में हमें अधिक जानकारी कराने का श्रेय डॉ. सूर्यनारायण प्रलयंकर को है जिन्होंने राजगढ़ 'जिले का स्वतंत्रता संग्राम' पुस्तक का लेखन किया।

जिले के प्रमुख आन्दोलनकारियों में सर्वश्री ऊंकारसिंह, डॉ. कुबेर सिंह, केसरीमल विजय, कैलाशनारायण, गोपीलाल, गौरीशंकर, घीसालाल, देवीराज, जीतमल चौरसिया, देवी सहाय राजन, नथमल हुस्कट, नाथुराम सुतार, श्रीमती प्रतिभा दत्ता, बख्तावरलाल चमार, बनवारी लाल आजाद, बुलाकीचंद, ब्रजनाथदास पंचोली, भंवरलाल जुलानिया, भीखुलाल बागड़ी, मदनलाल पेन्टर, मांगीलाल सिंधी, मुल्ला इनायत अली, मो. सादिक, रामगोपाल, रामचरण दुबे, रामजीदास कसेरा, विजयसिंह सोनगीरा, शांतिलाल चौधरी, शिवशंकर क्रान्ति, हरप्रसाद बोहरा, डॉ. हरिशचंद्र वर्मा, श्रीकृष्ण मिश्र, रामीबाई आदि -आदि प्रमुख हैं।

राजगढ़ जिले के स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों ने देश की

आजादी के बाद 'गोवा मुक्ति आन्दोलन' के महायज्ञ में भी अपनी आहूति दी। इसमें जी. शाय भरतरे, कल्याण शर्मा, बाबूलाल, रामकरण उग्र, शिवदयाल मिश्र, मुरलीधर सियाराम आदि कार्यकर्ता भाग लेने पुर्तगाली सीमा में गए। इनमें से सर्वश्री भरथरे, कल्याण शर्मा एवं श्री बाबूलाल गोवा में शहीद हो गए। सभी सेनानियों को विनम्र श्रद्धांजलि।

● जिला रायसेन

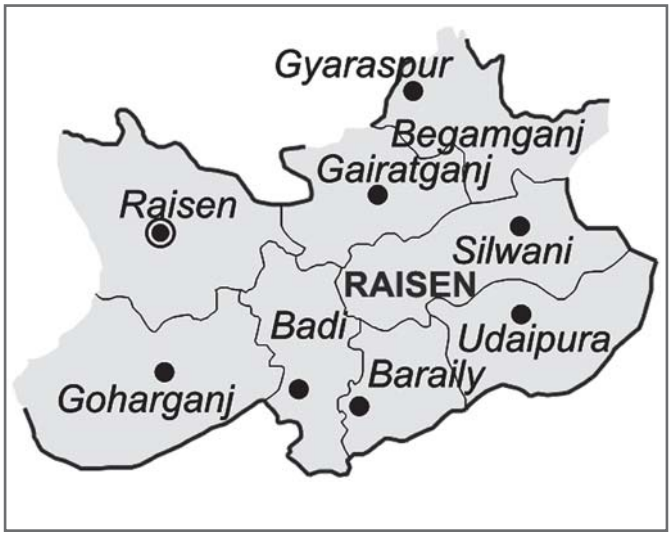

भोपाल संभाग का रायसेन जिला कई विशेषताओं के कारण विश्व में जाना जाता है। साँची का अवलोकन करने सारे विश्व के बौद्ध मतावलम्बी आते हैं। इसके अलावा डॉ.वि.श्री. वाकणकर 'पद्मश्री' द्वारा खोजा गया विश्व का सबसे बड़ा शैलचित्र समूह भीमबैटका इसी जिले में है। विश्व का सबसे बड़ा शिवलिंग इसी जिले के भोजपुर में है। इसी जिले के कुचवाड़ा में आचार्य रजनीश का जन्म हुआ है। इस जिले में बरेली, बेगमगंज, गोहरगंज, गैरतगंज, रायसेन, सिलवानी, उदयपुरा सात तहसीलें है।

प्रथम स्वातंत्र्य समर से संबंधित कोई घटना इस क्षेत्र में घटी हो ऐसा उल्लेख नहीं मिलता। पर राष्ट्रीय आन्दोलन के दौरान ऐसी लोमहर्षक घटना घटी जिसको पढ़कर आप रोमांचित हो उठेंगे।

मध्यप्रदेश के स्वतंत्रता संग्राम सैनिक खण्ड–5 में प्रकाशित इस जिले के स्वतंत्रता संग्राम सैनिकों के परिचय में 190 लोगों के परिचय प्रकाशित किए गए हैं। इनमें से क्र. 103 पर वर्णित रामप्रसाद सुखराम (1922) निवासी ग्राम देवरी जिला रायसेन, ऐसे स्वतंत्रता सेनानी है, जो भारत छोड़ो आन्दोलन में सम्मिलित हुए हैं। कहाँ हुए ? यह जानकारी नहीं मिलती है। शेष 189 स्वतंत्रता सेनानी ऐसे हैं जिन्होंने 1949 में भोपाल विलीनीकरण आन्दोलन में भाग लेने के कारण या तो मारे गए, या घायल हुए । विलीनीकरण आन्दोलन की यह घटना रायसेन जिले के बौरास घाट पर घटी थी। सन् 1984 में प्रकाशित उपरोक्त घटना की विस्तार पूर्वक जानकारी नहीं मिलती है। पर हम आभारी हैं प्रो. अक्षय कुमार जैन के जिन्होंने मध्यप्रदेश संदेश के 15 अगस्त, 1987 के अंक में ''बौरास घाट के शहीद'' शीर्षक से इस घटना की विस्तारपूर्वक जानकारी दी है। कृपया उन्हीं के शब्दों में पढ़ें –

मैं उस इतिहास का एक पोस्ट सुनाता हूँ जिसे शहीदों ने अपने खून से लिखा है। यह शहीद ना राजनीतिक थे और ना ही विद्वान। वे सीधे सरल देहाती जिन्होंने पवित्र भावना से भारत की आजादी के लिए अपने रक्त का अर्ध्य चढ़ा दिया। रायसेन जिले के उदयपुरा तहसील के एक गांव बौरास की घटना है। इस गांव में नर्मदा के तट पर प्रतिवर्ष संक्रांति पर मेला लगता है। कांग्रेसी युवा दल ने निश्चय किया कि इस दिन (14 जनवरी 1949 ई.) को बौरास घाट पर सभा हो और तिरंगा लहराया जावे।

भोपाल का नवाबी शासन बेखबर नहीं था। दमन की पूरी तैयारी थी। जाफर अली थानेदार को मेले में अमन का काम सौंपा गया था। चतुर थानेदार जाफर ने पहले ही खुद ही विलीनीकरण का नारा लगाया और सभा के करीब आ गया फिर उसने रंग बदला। उसने ऐलान किया कि झण्डा वंदन नहीं हो सकता। सनसनी फैल गई, सन्नाटा छा गया। भीड़ को चीरता एक दाढ़ी वाला व्यक्ति आया, लोग उसे साधु समझे। उसने कहा – मैं झण्डा वंदन करता हूँ, गोली चलाओ। एक किरार नौजवान उसके साथ खड़ा हो गया और झण्डा वंदन हो गया। जाफर ने कहा – कोई नारे नहीं लगाएगा, नहीं तो मैं गोली मार दूंगा।

एक नौजवान छोटेलाल जो झण्डा लिए खड़ा था, ललक कर बोला, ''गोली से डराते हो, लो मैं नारा लगाता हूँ'' भारत माता की जय''। विलीनीकरण होकर रहेगा। जाफर ने गोली चला दी। झण्डा गिरा नहीं वीर धनसिंह ने उसे थाम लिया। सारा बौरास घाट नारों से गूंज उठा। पुलिस ने बंदूकों से छर्रे चलाए, लोग घायल हुए। धनसिंह ने फिर नारा लगाया, झण्डा मंगलसिंह ने थाम लिया। मंगल सिंह को गोली लगी लेकिन झण्डा जमीन पर नहीं गिरा। विशाल सिंह ने आगे बढ़कर थाम लिया, विशाल सिंह को 2 गोलियाँ लगीं। मरते समय झण्डा जेब में रखा उसी की जेब से गाडरवारा अस्पताल में मिला हुआ झण्डा उदयपुरा कांग्रेस के घनश्याम दास मालाजी ने नई राह कार्यालय को दे दिया।''

जहाँ तक मुझे याद है मार्च 1949 में बालकृष्ण गुप्ता, शांति

बाई, बसंती बाई और मैं अक्षय कुमार बौरास के शहीद परिवारों की सुध लेने गए थे। सुध क्या लेते ? वहाँ तो अपनी ही सुध भूल गए ..... किन शब्दों में व्यक्त करें अपनी पीड़ा कि अभी तक ये अपनी सम्मान निधि के योग्य नहीं समझे गए। बौरास घाट पर लोगों ने अपना खून व्यर्थ नहीं गँवाया। सम्प्रदायवादी दंगों और राजनीतिक दल बंदियों में नहीं मरे। भारत की एकता, अखण्डता, प्रभुसत्ता और आजादी के उद्देश्य से शहीद हुए। इनको देश की आजादी की 75 वीं वर्षगांठ पर सादर नमन। कविवर ताज भोपाली के शेर से बात खत्म करता हूँ–

'शहादत मकसद से मरने का नाम है,
मकसद ना हो तो भीड़ में मरना हराम है।'

● जिला सीहोर

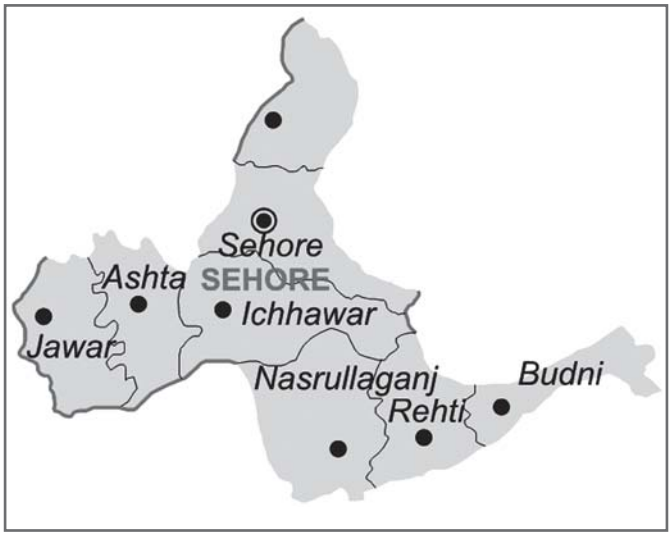

सीहोर का प्राचीन नाम सिद्धपुर मिलता है। 1972 ई. तक भोपाल सीहोर जिले की एक तहसील था। यहां ईस्ट इंडिया कम्पनी की छावनी थी, जिसकी स्थापना 1818 ई. में भोपाल नवाब व कैप्टन स्टेवर्ड के मध्य हुए रायसेन समझौते के अंतर्गत हुई थी। यहाँ देश का पहला आवासीय खेल विद्यालय स्थापित किया गया है।

लार्ड वेलेजली की सहायक संधि के अंतर्गत यह निश्चित था कि जो देशी रियासत इसे स्वीकार करेगी उसे अपनी सेना भंग करनी होगी। कम्पनी सरकार उसकी सुरक्षा का भार लेगी। रियासत को सेना खर्च देना होगा। इस सेना को कम्पनी सरकार द्वारा नियुक्त पोलिटिकल एजेंट नियंत्रण में रखेगा। सीहोर छावनी में भोपाल कान्टिजेन्ट के नाम से एक सैनिक टुकड़ी मिहॉक के अधीन थी, इसमें 600 पैदल सैनिक थे।

अप्रैल 1857 ई. में ले. सी.एल. राबर्स (पोलिटिकल एजेंट मेवाड़) ने सीहोर छावनी के मिडाक को देसी सेना के बागी होने की सूचना दी थी पर मिडॉक ने उल्टे राबर्स को ही सीख देते हुए लिखा "I hope your dreary anticipations of coming evils to India will nort be realized. I do not think there is much danger in the direction you point at among the Active Army."

इन्दौर का स्थापन्न ए. जी. जी. कर्नल एच. एम. ड्यूरेन्ड को जब पता लग गया कि इन्दौर के होल्कर की सेना विद्रोह कर सकती है तो उसने सीहोर कान्टिजेन्ट की सेना को इन्दौर अग्रिम बुलवा लिया था। पर जब 1 जुलाई 1857 के होल्कर सेना ने विद्रोह किया कर दिया तो सीहोर कॉन्टिजेंट के सैनिक भी बदल गए। कुल छः सैनिक ही स्वतंत्रता संग्राम के विरुद्ध सामने आए। इनकी मदद से ड्यूरेन्ट अपने परिवार तथा 16 अन्य अधिकारियों, महिलाओं व बच्चों को लेकर किसी तरह 4 जुलाई 1857 को सीहोर की छावनी में आ पहुँचा।

इधर सीहोर का पोलिटिकल एजेंट मेजर रिचर्ड अपने साथियों के साथ पहले ही सिर पर पांव रखकर भाग खड़ा हुआ। सीहोर में पदस्थ भोपाल कान्टिजेंट में 60 तोपची, 206 घुड़सवार और 600 पैदल सिपाही कुल 866 भारतीय सैनिकों के साथ कुछ अंग्रेजों को आंख दिखाने की अपेक्षा मेजर रिचार्ड व कर्नल ड्यूरेन्ट ने सीहोर से भागकर होशंगाबाद में शरण ली। अंग्रेजों के द्वारा सीहोर छावनी छोड़ते ही क्रांतिकारियों ने अंग्रेजों के बंगले, पोस्ट ऑफिस, चर्च आदि को दिनांक 9 जुलाई को लूट लिया। ईस्ट इंडिया कम्पनी का झण्डा जलाकर अपना कब्जा कर लिया। वली शाह क्रांतिकारियों का नेता बना। सरकार का नाम रखा गया ''सिपाही बहादुर''। आगे चलकर शुजात खाँ पिण्डारी में बेरछा में रखे ब्रिटिश खजाने को लूट लिया। 6 अगस्त को रिसालेदार ने कम्पनी की तोपों पर कब्जा कर लिया। आगे चलकर यह सेना कानपुर के युद्ध में नाना साहब के परचम तले बहादुरी पूर्वक लड़ी।

इसी बीच जमुनिया गांव के राव रणजीत सिंह और चांदबड के ठाकुर गोवर्धन सिंह ने सिहोर पर कब्जा कर लिया। आगे चलकर भोपाल नवाब बेगम सिकंदर ने अपनी सेना भेजकर छावनी पर कब्जा किया। ठाकुर गोवर्धन सिंह व राव रंजीतसिंह खेत रहे। इसके बाद सर ह्यूरोज तथा सर हैमिल्टन 6 जनवरी 1858 से चलकर 8 जनवरी 1858 को सिहोर आए और उन्होंने पकड़े गए क्रांतिकारियों का कोर्टमार्शल कर सजा–ए–मौत आदि कठोर सजा दी। इनमें से 21 को तोप से उड़ाया गया, 11 को गोली मारी गई, 269 को आजीवन कारावास, 61 को अलग–अलग अवधियों की सजा

से दण्डित किया और 31 व्यक्तियों को सेवा से बर्खास्त कर दिया गया। डॉ. के.एल. श्रीवास्तव ने अपने शोध कार्य के दौरान 1962 में सीहोर के अजमत उल्लाह व ठाकुर बलभद्र सिंह के हवाले से लिखा कि 200 से अधिक के सैनिकों को फांसी दी व जलाया गया। ह्यूरोज ने सीहोर में 8 दिन रहकर मौत का ताण्डव भले ही किया, पर आजादी के दीवाने दबे नहीं।

उत्तर प्रदेश से चले स्वामी ज्ञानानंद जब 1922 में सिहोर आये तो लोगों को फेल्ट हेट्स लगाए देखा तो इन अंग्रेजी टोपों की होली जलाने की प्रेरणा दी। इसके कार्यान्वयन में जिन लोगों ने हिस्सा लिया उनमें नारायणदास भरतिया तथा जगन्नाथ भरूका को गिरफ्तार किया गया। इसके बाद 1929-30 के पूर्व पोलिटिकल एजेंट सीहोर से भोपाल चला गया।

नवाब की सख्ती के कारण राष्ट्रीय आन्दोलन सीहोर में जोर ना पकड़ सका। 15 अगस्त 1947 को देश आजाद हो गया पर भोपाल नवाब ने अपनी रियासत को भारत में सम्मिलित करने की स्वीकृति न दीं।इस कारण भोपाल सीहोर आदि के लोगों ने भोपाल राज्य को भारत में विलय करने के लिए भोपाल विलीनीकरण आन्दोलन प्रारम्भ किया। यह एक जन आन्दोलन था जिसमें दूर दूर से लोग आन्दोलन करने आए। भोपाल विलीनीकरण आन्दोलन का नेतृत्व विष्णुदत्त मिश्र ने किया, जिन्हें भोपाल नवाब ने लम्बे समय तक जेल में रखा। इनके अलावा सर्वश्री हरिकृष्ण सिंह, चंदनमल बनबट, अमरचंद रोहीला, नंदकिशोर खत्री, उमराव सिंह, बाबूलाल जैन, माणिकलाल बनवट, रामदयाल श्रीवास्तव, राम शंकर शुक्ल, शिवनारायण सुदामा, विद्यासागर समाधिया, रघुनंदन व्यास आदि ने भी विलीनीकरण आन्दोलन में बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया।भोपाल आन्दोलन लगभग 90 दिन चला। 1 जून 1949 को केन्द्र सरकार ने भोपाल राज्य की सत्ता संभाली।

विलीनीकरण आन्दोलन में भाग लेने वाले लगभग 194 स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों की सूची में 190 हिंदू, 04 मुसलमान तथा एक महिला का नाम दर्ज है। सभी स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों को विनम्र प्रणाम।

● जिला विदिशा

मध्यप्रदेश के 4 प्राचीन शहरों में से एक विदिशा के अनेक प्राचीन नाम यथा 'भद्रावती' 'भिलसा' या 'भेलसा' आदि नाम मिलते हैं। औरंगजेब के काल में इसे 'आलमगीरपुर'' नाम दिया। सन् 1952 में भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ राजेन्द्र प्रसाद ने इसका ''विदिशा'' नाम घोषित किया। राजस्थान से प्राप्त सिरोंज इसी

विदिशा जिले की तहसील है। इस जिले में बासौदा, ग्यारसपुर कुरवाई, लटेरी, नटेरन, सिंरोज, शमशाबाद और विदिशा 8 तहसीलें है। उदयगिरि की गुफाएं भी इसी जिले में है। महाभारत में इस क्षेत्र को 'दशार्ण' कहा गया है।

विदिशा जिले का बड़ा भूभाग भूतपूर्व ग्वालियर रियासत का हिस्सा रहा है तो इसकी वर्तमान कुरवाई तहसील में तीन पूर्व रियासतें कुरवाई, पठारी तथा मोहम्मद गढ़ का विलीनीकरण एक लम्बे आन्दोलन के बाद 1 जुलाई 1948 को हुआ। इस विलीनीकरण हेतु कुरवाई नवाब ने अपने गुरु के साथ दर्जनों लोगों को रियासत बदर कर दिया था। विदिशा जिले के यह आन्दोलन देश की आजादी के बाद का आन्दोलन है, क्योंकि भोपाल नवाब अपने आसपास की मुस्लिम रियासतों को मिलाकर एक राज्य बनाना चाहता था।

''मध्यप्रदेश के स्वतंत्रता संग्राम सैनिक खण्ड-5'' का अवलोकन करने से ज्ञात होता है कि विदिशा जिले में लगभग 60 स्वतंत्रता संग्राम सैनिक हैं और 59 की गतिविधियों का श्रीगणेश 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन से ही हुआ है। यद्यपि मध्यप्रदेश संदेश के 15 अगस्त 1987 के अंक में यह लिखा गया कि-'' 1921 के आन्दोलन में भी यहाँ की युवा पीढ़ी को भी जेल की यातना भोगनी पड़ी थी।''1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन को ग्वालियर राज्य में प्रारम्भ करने का विचार विदिशा निवासी रामसहाय के मन में आया। इस हेतु आपने अपने स्वनिवास ''रामकुटी'' पर एक बैठक का आयोजन किया। इसमें बाबू रामसहाय के अतिरिक्त बाबू तखतमल जैन (इन्दौर), गोपीकृष्ण विजयवर्गीय (गुना), लीलाधर

जोशी (शुजालपुर) तथा सीताराम जाजू (नीमच) की उपस्थिति रही। इस बैठक में ग्वालियर राज्य में भारत छोड़ो आन्दोलन के संचालन की रूपरेखा तय की गई थी। यह निर्णय विदिशा प्रस्ताव या भेलसा प्रस्ताव के रूप में जाना जाता है।

इस निर्णयात्मक प्रस्ताव का अनुसरण एवं अनुकरण किया गया। इस प्रकार विदिशा को ग्वालियर रियासत का नेतृत्व करने का ऐतिहासिक अवसर प्राप्त हुआ। जिले के महत्वपूर्ण स्वतंत्रता संग्राम सेनानी जिन्होंने इस में भाग लिया – सर्वश्री अयोध्या प्रसाद शर्मा, असदअली खान, धनछेदीलाल ढीमर, कृष्ण गोपाल स्वर्णकार, छोगालाल, जमुनाप्रसाद मुखरैया, दामोदर सोले, दमरूलाल भारतीय, नवलसिंह जाट, श्रीमती प्रेमलता सरवटे, बारेलाल सिकरवार, मुन्नालाल साहू, राजमल जालोरी, व्यग्टेश शेवड़े, एस.एस. ढिल्लन, मदन देवी नवाल आदि है। श्रीमती मदन देवी नवाल तथा जमुना देवी राठी ने विदिशा तथा ग्वालियर में भारत छोड़ो आन्दोलन में सम्मिलित ना होने वाले अधिकारियों को चूड़ियाँ पहनाने का महत्वपूर्ण कार्य किया था।

कला समय के आवरण पर छापे गये चित्र

1.प्रथम स्वातंत्र्य समर के नायक –

फिरोजशाह मन्दसौर,.लक्ष्मीबाई ग्वालियर, तात्या टोपे शिवपुरी, राव बख्तावर सिंह अमझेरा,ठा रणमत्तसिंह सतना, रानी अवन्तीबाई रामगढ़, भीमा नायक बडवानी टण्टया भील

2.राष्ट्रीय आन्दोलन में सम्मिलित स्वतंत्रता संग्राम सेनानी –

सर्वश्री शंकरदयाल शर्मा भोपाल, सैयद हामिद अली राजगढ़, मल्लूसिंह रायसेन, बाबूलाल आर्य सिहोर, रामसहाय विदिशा, जहूर मुहम्मद भिण्ड, रामगोपाल बंसल मुरैना, शेकरलाल बाथम श्योपुर, सीताराम ताटके अशोक नगर, नारायणसिंह दतिया, जगन्नाथ मिलिन्द ग्वालियर, गोपीकृष्ण विजयवर्गीय गुना, कर्नल जी.एस. ढिल्लन कुण्डेश्वर, कन्हैयालाल खादीवाला इन्दौर, नारायणदास मोडिया अलीराजपुर, काशीराम त्रिवेदी बडवानी, विष्णुदास खत्री बुरहानपुर, लक्ष्मण ठाकर धार, चन्द्रशेखर अजाद झाबुआ, वि.स. खोड़े खरगोन, माखनलाल चतुर्वेदी खण्डवा, कुंजीलाल दुबे जबलपुर, शांतिलाल जैन बालाघाट, रायचेद भाई छिंदवाड़ा, द्वारकाप्रसाद बिलथरे, अंगदप्रसाद गुप्त कटनी, उदय चंद्र जैन मण्डला, गोविन्दप्रसाद नामदेव नरसिंहपुर, कुंजबिहारी लाल खरे सिवनी, दुर्गाप्रसाद जायसवाल नर्मदापुरम्, लक्ष्मीनारायण अग्रवाल हरदा, जनक सिंह कोरकू बैतूल, राणा शमशेर सिंह रीवा, शिवनाथ चमार सतना, बका बैगा सीधी, लाल कुमार सिंह सिंगरोली, शंभुनाथ शुक्ल अनुपपुर, शीतलप्रसाद बारी शहड़ोल, शिवप्रसाद गुप्ता उमरिया, अब्दुल गनी सागर, जंगबहादुर सिंह छतरपुर, नन्दकिशोर ढ़ीमर दमोह, – निवाडी, – पन्ना, नारायणदास खरे टीकमगढ़, ज्ञानानंद उज्जैन, पं.गणेशदत्त शर्मा, गुरुमुख सिंह देवास, रामनारायण त्रिवेदी मन्दसौर, समाजभूषण सेठ नथमल चोरडिया, आर्यदत्त जुगणान रतलाम, बालकृष्ण शर्मा नवीन शाजापुर,

मातृशक्ति – कु. मोहिनीदेवी श्रीवास्तव भोपाल, सर्वश्रीमती पुख्खनदेवी दतिया, क्रांतिदेवी ग्वालियर, धनेश्वरी चौबे मन्दसौर, जानकीबाई वर्मा बुरहानपुर, मेहरबानी अलीराजपुर, फुकु.चौरडिया इन्दौर, श्याम कु. शर्मा धार,सुभद्रा कु.चौहान जबलपुर, काशीदेवी पांचाल रतलाम, शांतिदेवी मालू देवास, केसरबाई चोरडिया नीमच, कमलाबाई बढ़ोनिया सागर, पार्वतीबाई गढ़ा कोटा, कारीबाई वारासिवनी, तारादेवी मिश्रा रीवा, शिवराज कुमारी सतना।

कुरवाई का किला विदिशा

गढ़ पहरा, विदिशा

2. चंबल संभाग

इस संभाग में 3 जिले क्रमश: भिण्ड, मुरैना तथा श्योपुर हैं। यह सरसों उत्पादित संभाग है। यहाँ चंबल, कुंवारी, सिंध, पाहुज, आसन, मिरगा, पार्वती सीव, बनास व सांक नदियाँ बहती हैं।
संभाग में कुल 16 तहसीलें हैं। कभी यह संभाग बागियों का गढ़ कहा जाता था, पर धीरे-धीरे यह समस्या स्वत: समाप्त हो रही है।

● जिला भिण्ड

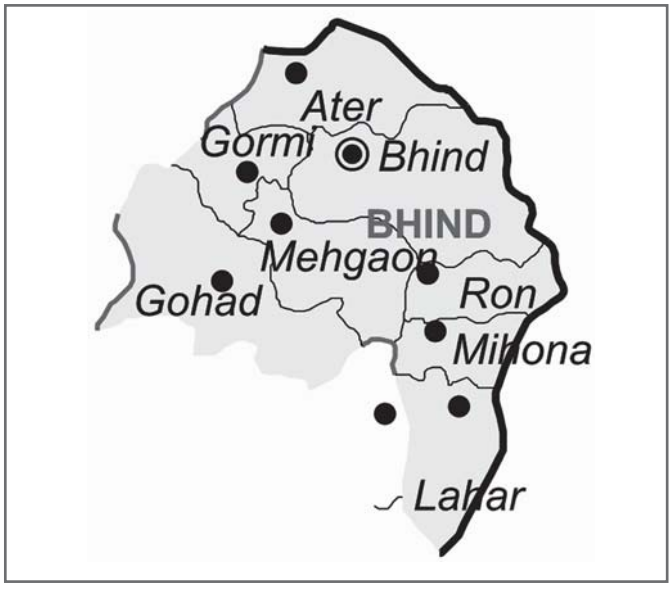

भिण्ड जिले का मौजूदा गठन कछवाहा धार, मदावधार, तोमरधार, जटवार बुंदेलखंड का प्राचीन जनपदों के कुछ भागों को मिलाकर हुआ है। एक जानकारी के अनुसार भिण्ड नामक ऋषिके नाम पर इस जिले के मुख्यालय का नाम भिण्ड पड़ा। जिले में भिण्ड, अटेर, मेंहगांव, लहार, रौन, मिहोना तथा गोहद नामक तहसीलें हैं।

वीरांगना लक्ष्मीबाई जब ग्वालियर के शासक सिंधिया से मदद लेने के लिए कालपी से जालौन होते हुए गोपालपुरा पहुँची। यहाँ से पहुज नदी पार कर भिण्ड जिले में प्रवेश हुई। यहाँ से मिहोना नदी पार कर लेनपुरा आई। यहाँ रतनपुरा में अंग्रेजों की छावनी थी, महारानी के भय से यहाँ से अंग्रेज सैनिक भाग खड़े हुए। यहाँ से रानी में मिहोना गई, यहाँ के ब्राह्मण परिवार को उसने 60 बीघा जमीन तथा पण्डा के खिताब से सम्मानित किया। ब्राह्मणों के कहने पर वह सूर्य मंदिर के दर्शन करने गई। यहाँ उन्होंने मिहोना की गढ़ी नष्ट की। मिहोना से महारानी बैजनाथ मंदिर गई व पुजारी को जमीन भी दी। बाग जिसमें वे ठहरी थी, आज भी ''बाई का बाग'' के नाम से जाना जाता है। यहाँ से वह बोहारा को जाते हुए इन्दुरखी जो उस समय झांसी जिले का ही परगना था पहुँची। यहाँ के राजा गौर भगन्तु ने रानी का साथ देने से मना किया अत: रानी ने उसकी गढ़ी नष्ट कर दी।बोहारा के चिमनाजी ने लक्ष्मीबाई का साथ दिया था। यहाँ से बढ़कर उसने सिंध नदी पार कर अमायन पहुँची, जहाँ के ठाकुरों ने रानी का बड़े उत्साह से साथ दिया। बिलहरी में रानी ने जिस चबूतरे पर विश्राम किया था वह आज भी ''बाई का चबूतरा'' के नाम से प्रख्यात है।

चंबल के किनारे बसा होने के कारण इटावा के क्रांतिकारी भिण्ड में आकर शरण लेते थे। चंद्रशेखर आजाद भांडेर की सोन तलैया पर रहते थे। पंडित गेंदालाल दीक्षित मिहोना आया-जाया करते थे यहीं से वे गिरफ्तार भी हुए।

बढ़ते आंदोलन को दबाने का कार्य मछण्ड के जागीरदार रघुवीर सिंह ने किया। उसने सिंधिया के इशारे पर आंदोलनकारियों को घोड़ों की तरह बांधकर कई दिनों तक दाना-पानी बंद रखना, आम सभा ना होने देना, सभा में नंगे खड़े करके विघ्न डालना, जैसे दंड दिए। इन सबके बावजूद 1939 में मिहोना के निकट बालाजी नामक स्थान पर एक वृहत जिला सम्मेलन करने का निर्णय लिया गया।सिन्धिया ने धमकी दी कि मशीनगन लगवा दी जाएगी पर आयोजक हिम्मत न हारे। सम्मेलन में एक लाख से अधिक लोग जमा हुए। माईक टेस्टिंग के दौरान कुड़ -कुड़ की अवाज होने के कारण हजारों लोग भाग गयै इसके बावजुद सम्मेलन सफल रहा। इसकी सफलता से नाराज होकर 10 दिन बाद हरीसेवक मिश्र (मिहोना) तथा भिण्ड के यशवंत सिंह कुशवाह को भारत सुरक्षा अधिनियम के अंतर्गत गिरफ्तार कर लिया गया।

1940 में ग्वालियर का राज्यव्यापी अधिवेशन भिण्ड में ही हुआ जिसका उद्घाटन महात्मा गांधी के सचिव महादेव देसाई ने किया। इस पर श्री हरिकृष्ण भूता और यशवंत कुशवाहा को भारत सुरक्षा अधिनियम के अंतर्गत गिरफ्तार किया।भारत छोड़ो आंदोलन में भी श्रीनाथ शर्मा, रघुवीर सिंह कुशवाहा ने भूमिगत रहकर आंदोलन को गति दी। कई सैनिकों ने आजाद हिंद फौज में शामिल होकर नेताजी सुभाष चंद्र बोस के नेतृत्व में आजादी हेतु संघर्ष किया।सिंधिया ने कांग्रेस के आंदोलन को दबाने का पूरा जोर दिया। पर भिण्ड जिले के कांग्रेसी आंदोलनकारियों ने ''महाराजा का स्वागत न करें'' ऐसा आदेश जारी कर दिया।

1946 के सीमित मतदान अधिकार के अंतर्गत हुए चुनाव में राज्यसभा का कांग्रेसी अधिकारी भले ही हार गया पर पांचों विधायक कांग्रेसी चुने गए। इस तरह स्वतंत्रता संघर्ष में भिण्ड का अभिनंदनीय योगदान रहा है।

भिण्ड जिले के प्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानीयों में सर्वश्री अब्दुल हमीद उलफत, गंगाधर मुनीम, गंगाराम कुदरैया, जहूर मोहम्मद, दीपचंद पालीवाल, ध्यान सिंह, जीत बहादुर सिंह कुशवाह, नाथूराम अग्रवाल, नाथूराम शर्मा, जुगल किशोर सक्सेना, नाथूराम सोनी, बटेश्वरदयाल शर्मा, नूर खान, प्रभाषचंद्र तिवारी, प्रेम नारायण, बदलूराम, झा वैद्यनाथ शर्मा, नवल पोद्दार, मलखान सिंह आदि आदि।

● जिला मुरैना - श्योपुर

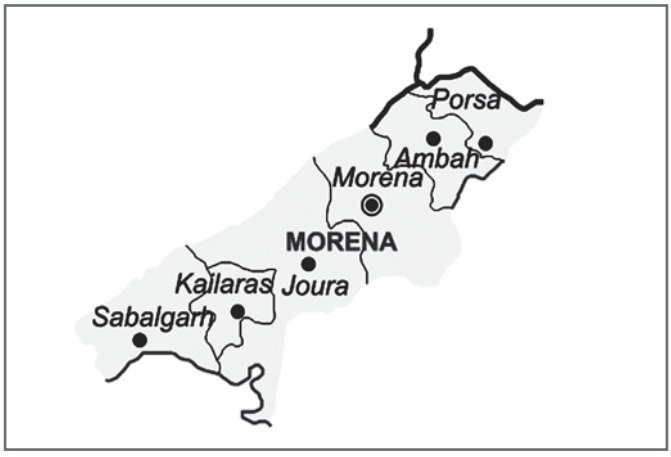

मुरैना जिला मध्यप्रदेश के उन जिलों में एक है जहाँ लिंगानुपात 1000:840 ही है। यह जिला चंबल घड़ियाल परियोजना व डॉल्फिनों के संरक्षण में अग्रणी है। जिले में मुरैना अम्बाह, पोरसा, जोरा, सबलगढ़, पहाड़गढ़ नामक छः तहसीलें है। वर्ष 1998 में मुरैना जिले से श्योपुर जिले का निर्माण किया गया इसमें श्योपुरकलां, विजयपुर व कराहल तहसीलें हैं।

मुरैना जिले में 1857 संबंधी किसी घटना के प्रमाण नहीं मिलते हैं। इस जिले में राष्ट्रीय आंदोलन के अंतर्गत सार्वजनिक सभा का कार्य 1936 में आरंभ हुआ। ग्वालियर सार्वजनिक सभा के वर्ष

1940 के ऐतिहासिक बालाजी मिहोना अधिवेशन के बाद मुरैना में हुआ। इसकी अध्यक्षता शिवशंकर रावल (उज्जैन) ने की थी।

भारत छोड़ो आंदोलन में मुरैना जिले ने यथाशक्ति योगदान दिया। जबकि ग्वालियर राज्य के प्रथम जत्थे को जिसमें सर्वश्री जगन्नाथ मिलिंद, देवलाल रुद्र और डॉ सदानंद त्रिपाठी आदि को 23 अगस्त 1942 की रात जेल में ठूंस दिया।

राष्ट्रीय आंदोलन में निम्न स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों का महत्वपूर्ण योगदान रहा इनमें सर्वश्री ओछेलाल चतुर्वेदी, कविरत्न पाराशर, उदयभान चौहान, उदल सिंह जादौन, कृपाशंकर शर्मा, कुडेरीलाल वैश्य, चतुरसेन गुप्ता, काशीराम साहब, केदारनाथ वैश्य, छीतरमल जैन, गुलाबचंद वर्मा, छोटेलाल वैश्य, छोटेलाल गुप्ता, डॉ. देशराज सेठ, जगन्नाथप्रसाद मिश्र, दामोदर दास पुजारी, जगन्नाथ प्रसाद भरोसी, देवीलाल सोढिया, जहारसिंह शर्मा, देवीलाल किरार, सीताराम बेसल, हरिदास माहेश्वरी, शंकरलाल बाथम, लाडली प्रसाद कामठान, रामजी दास मित्तल, मोती बादशाह, मदनलाल स्वर्णकार, पुरुषोत्तमलाल आदि -आदि।

सबलगढ़ किला, मुरैना

3. ग्वालियर संभाग

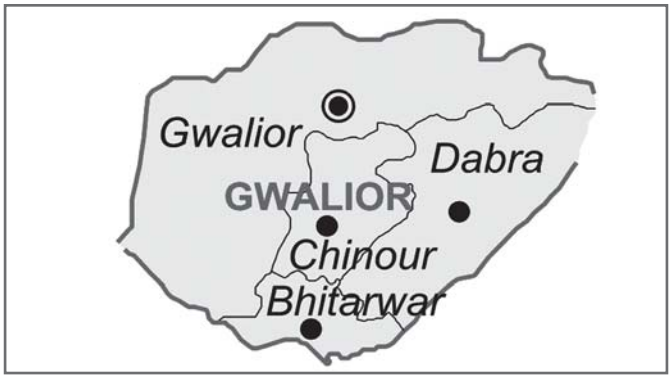

1984 में ग्वालियर संभाग में 6 जिले थे। आगे चलकर मई 1998 मुरैना जिले से श्योपुर नामक नवीन जिले का निर्माण हुआ। इसी बीच संभाग का भी विभाजन होकर नवीन चम्बल संभाग अस्तित्व में आ गया। वर्तमान में ग्वालियर संभाग में ग्वालियर, अशोकनगर, दतिया, गुना, शिवपुरी जिले हैं। अशोकनगर 15 अगस्त 2003 के पूर्व तक गुना जिले का ही भाग था, पर वर्तमान में स्वतंत्र जिला है। प्रदेश में क्षेत्रफल की दृष्टि से दतिया सबसे छोटा जिला है।

ग्वालियर प्राचीन मंदिरों, किलों, कब्रों व स्मारकों का नगर है। इस नगर से सिंधिया राजवंश की राजधानी होने का सौभाग्य प्राप्त है।

ईस्ट इंडिया कम्पनी ग्वालियर रियासत के बीच सहायक संधि थी और इस कारण बाहरी आक्रमण से ग्वालियर को बचाने का दायित्व कम्पनी का था। इसीलिए कम्पनी की एक सेना जिसमें 6300 पैदल, 1160 अश्वारोही तथा 24 तोपें ब्रिगेडियर रेम्स की कमान में सम्मिलित थी। जब नीमच, ललितपुर, हाथरस, नसीराबाद, कानपुर, लखनऊ, बरेली, मुरादाबाद, शाहजहांपुर की छावनियाँ भड़क चुकी तो ग्वालियर की सेना में पदस्थ देशी सैनिकों को विश्वास हो गया कि अब भारत में अंग्रेजों का महाविनाश संभव है।

जैसे ही झाँसी में दिनांक 6 जून 1857 का विद्रोह भड़कने का समाचार यहाँ की मुरार छावनी में पहुँचा तो क्रांतिकारी मातृभूमि पर बलिदान होने हेतु उठ खड़े हुए। 14 जून 1852 को दोपहर 1:30 बजे छावनी के बीचों –बीच स्थित एक बंगला जला कर इसका श्रीगणेश कर दिया गया। फिर तो छावनी के दूसरे बंगलों में आग भी लगा दी। क्रांन्तिकारियों ने 7 अधिकारी, 6 सार्जेंट, 6 बच्चे मार दिए। कुछ अंग्रेज महिलाओं को भी कैद कर लिया गया।

मैकफर्सन अपने परिवार व कुछ अंग्रेज अधिकारियों के साथ महाराजा के फूल बाग में पहुँचे, जहाँ से महाराजा के अंगरक्षकों ने उन्हें आगरा जाने वाले मार्ग पर पहुँचाया। महाराजा जीवाजीराव सिंधिया स्वयं अपने दीवान दिनकर राव के भरोसे राज्य छोड़कर आगरा भाग गए।''अंग्रेजों के मित्र सिंधिया ने छोड़ी राजधानी''।

सेंट्रल इंडिया की सभी छावनियों इंदौर, आगर, महिदपुर, नीमच आदि के क्रान्तिकारी अब ग्वालियर पहुँच रहे थे क्योंकि यही से आगरा होकर दिल्ली जाया जा सकता था।

आगे चलकर जब रानी लक्ष्मीबाई ने ग्वालियर पर कब्जा कर लिया तो उनके साथ तात्या टोपे राव साहब आदि पहुँचे तो सिंधिया के भामाशाह अमरचंद बांठिया ने उनका स्वागत करते हुए 5 जून 1858 को ग्वालियर का सारा राजकोष क्रान्तिकारियों के हवाले कर दिया। इस धन से क्रान्तिकारियों को पांच–पांच माह का वेतन का भुगतान किया गया, राशन का प्रबंध किया व पुरस्कार बांटे गए। इस सहायता से क्रान्तिकारियों के हौंसले बुलंद हो गए। महारानी लक्ष्मीबाई भी दुश्मनों पर भूखी शेरनी की तरह झपट पड़ी। अंग्रेजों ने भी अपनी सारी ताकत एक अबला पर लगा दी। रानी ने वीरता पूर्वक लड़ते–लड़ते अपना आत्मोत्सर्ग किया। लक्ष्मीबाई का घोड़ा स्वर्णरेखा नाला पार कर बाबा गंगादास की कुटिया पर उन्हें सुरक्षित ले आया। महारानी की अंतिम इच्छा के अनुसार बाबा ने उनका अंतिम संस्कार किया।

युद्ध शांत होने पर अंग्रेजों ने बाबा गंगादास को अकबर द्वारा प्रदान की गई जागीर छीन ली। बाबा स्वयं हरिद्वार चले गए। क्रान्तिकारियों को धन वितरण करने के अपराध में 22 जून 1858 को ब्रिगेडियर नेपियर ने लश्कर के भीड़ भरे बाजार में खजांची अमरचंद बांठिया को एक नीम के पेड़ पर लटकवा दिया। एक कठोर चेतावनी के रूप में बहुत दिनों तक वही लटकाये रखा। देश की आजादी की 75वें वर्षगांठ पर इन महान देशभक्तों का स्मरण करना स्वाभाविक है। जो आग इन बलिदानियों ने लगाई थी, वह 'स्व' का लक्ष प्राप्त करने तक प्रज्ज्वलित रहना चहिये।

बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ में ही ग्वालियर में प्रख्यात क्रान्तिकारी विजय सिंह पथिक ने यहाँ जन चेतना विस्तार हेतु 1913 में एक ''सरस्वती पुस्तकालय'' की स्थापना की थी। सविनय अवज्ञा आंदोलन के दौरान श्रीमती लक्ष्मीबाई गर्दे ने विदेशी वस्त्रों की होली जलाई। त्रयंबक दामोदर ने यहाँ खादी भंडार की स्थापना की। वर्ष 1935 में बप्पा ठाकर ने यहाँ हरिजन सेवक संघ की स्थापना की पर रियासत के महाराजा का अंग्रेजों के प्रति प्रेम कम ना

हुआ। इस पर 1939 में विद्यार्थियों ने 1800 युद्ध विरोधी पर्चे छपवा कर ग्वालियर में बांटे जिससे राजशाही चौंक गई। महारानी विक्टोरिया के तैल चित्र पर उसकी नाक काटी गई तथा यूनियन जैक झंडा जलाने से राजशाही रोष हुआ। इस में भाग लेने वाले सर्व श्री कटारे राजेंद्र सिंह जोगलेकर को कारावास की सजा दी गई।

1942 के भारत छोड़ो आंदोलन में विद्यार्थियों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन पर घोड़े दौड़ाए गए, किरचों के प्रहार किए गए, घेरकर लाठीचार्ज किया गया पर आंदोलन थमा नहीं वह वनाग्नि की तरह फैला। अंत में 15 अगस्त 1947 को देश आजाद होने के बाद स्टेट कांग्रेस और महाराजा के मध्य हुए विचार-विमर्श के बाद 20 जनवरी 1948 को प्रथम कांग्रेस सरकार बनाने का समझौता हुआ तथा आगे चलकर लीलाधर जोशी के नेतृत्व में पूर्व उत्तरदायी सरकार की स्थापना हुई।

ग्वालियर के राष्ट्रीय आंदोलन में भाग लेने वाले प्रमुख स्वतंत्रता संग्राम सेनानी इस प्रकार हैं – सर्वश्री अशर्फीलाल तिवारी, कन्हैयालाल खण्डेलवाल, कामता प्रसाद सक्सेना, काशीराम सिंह, श्रीमती क्रान्ति देवी, खटणमल, गंजाधर प्रसाद माथुर, गिरधारी सिंह, गौरीकृष्ण कटारे, गंगाधर दाते, छेदीलाल, जगन्नाथ प्रसाद, मिलिंद, खाटूलाल, देवीलाल रूद्र, देशराज सिंह चौहान, नरहरि सप्रे, प्रभुदयाल गुप्त, बालकृष्ण शर्मा, भगवान सिंह, मकबूल अहमद खाँ, मुरलीधर धूले, राजेन्द्र सिंह, रामकृष्ण पांडे, वृंदावन तमोली, स्टीफेन जोसेफ फर्नांडिस, श्रीमती सावित्री शर्मा, हरीलक्ष्मण मसूरकर, ज्ञानेन्द्र प्रकाश अधैया आदि – आदि।

● जिला दतिया

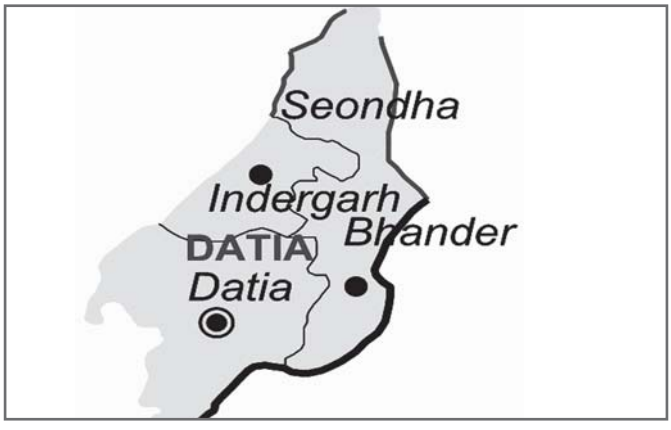

स्वतंत्रता के पूर्व दतिया रियासत थी। इस नगर को महाराज दलपत राय (1683-1707) ने बसाया था। अत: इसे दिलीप नगर भी कहा जाता था। यह राजवंश ओरछा से निकला है। वर्तमान दतिया जिले में दतिया सेवड़ा व भांडेर तीन तहसीले हैं। दतिया, धर्मवीर हरदौल की जन्मभूमि व प्रख्यात पीताम्बरा पीठ का केन्द्र है।

झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई व दतिया का राजा विजय बहादुर लगभग समवयस्क से। झाँसी के राजा गंगाधर राव नेवलकर व विजय बहादुर का एक ही दुख था – दोनों संतानहीन थे। झाँसी व दतिया के बीच मात्र 17 मील की दूरी है। 1857 की क्रान्ति के पूर्व विजय बहादुर (1839-1857 ई.) की मृत्यु हो गई थी।

महारानी लक्ष्मीबाई ने जब झाँसी छोड़ी तो उनके पिता मोरोपंत तांबे भी उसके पीछे-पीछे थे। भाण्डेर जाते समय वे दतिया की सीमा में से उन्नाव के निकट आए तो दतिया के कामदार बलदेव मोदी ने उनका सत्कार कर ठहराया। बाद में कम्पनी सेना को खबर कर दी। अंग्रेजों ने मोरोपंत को गिरफ्तार कर झाँसी ले गए और उनका वध कर डाला। इस पर महारानी ने ग्वालियर पहुँचकर दतिया महारानी को धमकी भरा पत्र भी प्रेषित किया था, दुर्भाग्य से वे अपने पिता की मृत्यु का बदला न ले सकीं। लक्ष्मीबाई के भाग्य की विडम्बना यह भी थी कि दतिया का एक जागीरदार जवाहर सिंह उसका सेनापति था। दतिया के ही कल्याण सिंह कुडरा ने ''झाँसी को रायबो'' बुंदेलखण्डी में लिखा है। यह एक समकालीन रचना है जिसमें 1857 की झाँकी मिलती है।

दतिया के राजा भले ही अंग्रेजों के दास थे पर प्रजा दोहरी पराधीनता से मुक्त होना चाहती थी।

नागपुर अधिवेशन के दौरान राधालाल चौधरी ने गांधी जी की प्रेरणा से पगड़ी त्याग कर टोपी धारण की। इसका दुष्परिणाम यह हुआ कि उन्हें रियासत से निर्वासित कर दिया गया। 1932 में दतिया के वासुदेव गोस्वामी की प्रेरणा से लॉर्ड रीडिंग हाई स्कूल के छात्रों ने अंग्रेजों के राष्ट्रीय गीत 'God save the King' गाने से इंकार कर दिया।

काकोरी कांड के बाद पंडित चंद्रशेखर आजाद कुछ दिन दतिया में रहे। यहाँ उन्होंने क्रान्तिकारी दल का गठन कर उन्हें बम बनाना सिखाया। इस दल में ठाकुर नाहर सिंह, राधालाल चौधरी, व साधु खजांची प्रमुख थे। भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान श्री रामचरण लाल वर्मा और श्यामसुंदर शर्मा 'श्याम' के ओजस्वी भाषण हुए। सन् 1946 में रियासत के दीवान ''सैय्यद अहमद एनउद्दीन को निकाल दो'' का नारा गूंजा। यह आंदोलन 38 दिन चला। इस जन आंदोलन की प्रशंसा महात्मा गांधी ने भी की।

1947-48 में पूर्ण उत्तरदायी शासन की मांग लेकर पूरे मण्डल में आंदोलन छेड़ा गया। महाराजा गोविंदसिंह के मुम्बई जाते

समय रघुवर दयाल के साथ सैकड़ों लोग पटरियों पर लेट गए। फलत: महाराजा ने उत्तरदायी शासन की घोषणा की।

दतिया जिले के स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों ने सबसे अधिक सेनानी बसई ग्राम के हैं। इनमें जगन्नाथ खंगार, जगन्नाथ मिश्रा, नारायण सिंह, बालचंद गुप्ता, कच्छीलाल, बाबूलाल मिश्र, भगवानदास गोस्वामी, रघुवरदयाल कनकने, रघुवरदयाल गुप्ता, श्यामलाल पांडेय प्रमुख है। इनके सिवाय रामसेवक शुक्ला, रघुवर दयाल गुप्ता, रामचरणलाल वर्मा, श्रीमती पुख्खन देवी आदि –आदि सम्मिलित थे। सभी का पुण्य स्मरण।

● जिला गुना – अशोकनगर

गुना, कभी ग्वालियर संभाग का सबसे बड़ा जिला था, जिसमें 10 तहसीलें रही होंगी। इनमें गुना जिले की चार तहसीलों को अलग कर अशोकनगर जिले का निर्माण किया गया। जिसमें जिला मुख्यालय अशोकनगर के सिवाय ईसागढ़, मुंगावली और चंदेरी तहसीलें सम्मिलित हैं। गुना जिले में अब गुना, चाचौड़ा, कुंभराज, राधौगढ, आरोन तथा नागौरी तहसीलें हैं।

1857 की क्रान्ति के समय यह लगभग शांत क्षेत्र ही था। गुना में ब्रिटिश छावनी थी। इंदौर की होल्कर रियासत के सैनिक जब इंदौर से दिल्ली की ओर रवाना हुए तो वे मुम्बई– आगरा मार्ग पर सफर करते हुए 15 दिनों में गुना पहुँचे। निश्चित रूप से उन्होंने अपने नेता सादात खान के माध्यम से गुना छावनी के सैनिकों को क्रान्ति करने हेतु प्रोत्साहित किया होगा। लगता है कि ये सैनिक तैयार नहीं हुए, अत: क्रान्तिकारियों ने 16 जुलाई 1857 को गुना छावनी को लूट लिया। राधौगढ़ के राजा अजीत सिंह ने इंदौर के क्रान्तिकारियों की मदद की इस अवसर का लाभ उठाकर बानपुर के विद्रोही राजा मर्दनसिंह ने चंदेरी पर कब्जा कर लिया। गुना से सादात खान की सेना 21 जुलाई को ग्वालियर पहुँची।

गुना क्षेत्र में राजनीतिक चेतना जागृत करने का श्रेय गोपीकृष्ण विजयवर्गीय को है। इनका सम्बन्ध नीमच के सेठ नथमल चौरड़िया से था, जो उस समय कांग्रेस के अध्यक्ष थे। विजयवर्गीय ने चौरड़िया की आर्थिक सहायता से सपत्नीक करांची कांग्रेस के अधिवेशन में भाग लेने गए थे। सविनय अवज्ञा आंदोलन के नमक सत्याग्रह अजमेर में भाग लेने गए थे । वर्तमान मध्यप्रदेश में केवल दो ही लोग ऐसे थे जो नमक सत्याग्रह के दौरान अजमेर के केन्द्रीय कारागृह में वर्ष भर जेल में रहे।

ग्वालियर राज्य का पहला राजनीतिक सम्मेलन गुना से 30 किलोमीटर दूर शाडोर ग्राम में हुआ था, जिसका संचालन विजयवर्गीय तथा सीताराम विश्वनाथ ताटके ने किया था। दूसरा अधिवेशन गुना में हुआ जिसमें उत्तरप्रदेश के विधि मंत्री डॉ. कैलाश नाथ काटजू ने भाग लिया था।

गुना क्षेत्र क्रांतिकारियों की गतिविधियों का भी केन्द्र रहा है। सागर सिंह सिसोदिया विद्यार्थी जीवन से ही क्रान्तिकारी रहे और लाहौर में आपका सम्पर्क चंद्रशेखर आजाद से हुआ। 1927 में आपको भारतीय सेवा में कमीशन मिल गया। आपकी नियुक्ति ग्वालियर आर्टिलरी में हुई। इसके बाद आपका सम्पर्क बुंदेलखण्ड के प्रख्यात क्रान्तिकारी दीवान शत्रुघ्नसिंह व बिहार के योगेश शुक्ला से हुआ। आगे चलकर आप वारन्ट निकलने पर आगरा चले गए। यहाँ आगरा षड़यंत्र केस में आपको प्रमुख अभियुक्त बनाया गया। ये हरदोई में पकड़े गए। डॉक्टर कैलाशनाथ काटजू ने आपके मुकदमे की पैरवी की। अदालत ने आपको निर्दोष पाया पर ब्रिटिश सरकार ने आपको जेल से नहीं छोड़ा। 1935 में गुना तहसील के जंगल में भड़रा ग्राम में क्रान्तिकारियों के लिए एक प्रशिक्षण केन्द्र खोला गया। रोहतक के भूतपूर्व प्रशिक्षक मानसिंह को प्रशिक्षण हेतु रखा गया था।

गुना क्षेत्र के प्रमुख आंदोलनकारियों में सर्वश्री एम. जी. देशमुख, दौलतराम ज्ञानीचंद मॉडल, श्यामलाल विजयवर्गीय, धर्मस्वरूप सक्सेना, कोदण्ड रामन, सौदागर सिंह, रामप्रसाद चौरसिया, गौरीशंकर श्रीवास्तव आदि–आदि के नाम उल्लेखनीय हैं।

● जिला शिवपुरी

शिवपुरी को प्राचीन काल में ''सीपरी'' के नाम से जाना जाता था। वर्तमान में इसे ''कुण्डेश्वर'' नाम दिया गया है। यहाँ सिंधिया परिवार की छत्रियाँ दर्शनीय हैं। इस जिले में बदरवास, खनियाधाना, कटेरा, कोलारस, नरवर, पिछोर, पोहरी, शिवपुरी नामक 8 तहसीलें है।

14 जून 1857 ई. को जब 1:30 मिनट पर क्रांतिकारियों ने मुरार छावनी पर झंडा फहरा दिया तब तक शिवपुरी शान्त थी। मेजर मैकफर्सन को डर था कि यह खबर यदि बाहर निकल गई तो विद्रोह फैल सकता है। अत: उसने जीवाजीराव सिंधिया से आग्रह किया कि सैनिकों को अग्रिम वेतन भुगतान किया जावे। अत: महाराज ने 3 माह का अग्रिम वेतन भुगतान करने का आदेश कर दिया। 18 जून को जैसे ही रेजीमेंट के अग्रिम भुगतान का वेतन लेकर सैनिकों का दस्ता पहुँचा उन्होंने साहब लोगों व सैनिकों को ग्वालियर में क्रांति के समाचार प्रदान कर दिए। शिवपुरी में भी घटना घट सकती है इसका पुर्वानुमान लगाकर साहब लोगों को था अत: वे छावनी छोड़कर पूर्व में ही भाग गए। आशंका सत्य निकली, शिवपुरी की रेजीमेंट भी क्रांति की चपेट में आ गयी।

ग्वालियर और शिवपुरी का लाभ उठाकर राजा मानसिंह ने अपना खोया नरवर का राज्य प्राप्त करने के लिए सिंधिया के खिलाफ विद्रोह कर दिया। मानसिंह के पास 400 सिपाही, 6 तोपें पर तथा 12 हाथी थे, जिसकी सहायता से उसने शिवपुरी–गुना मार्ग पर डाक तथा आवागमन छिन्न–भिन्न कर दिया। मानसिंह जुलाई से सितम्बर के बीच लूटपाट करता रहा। इसी बीच वह तात्या टोपे के सम्पर्क में आया व उनके बीच गहरी मित्रता हो गई। मानसिंह तात्या टोपी की मित्रता के कारण अंग्रेजों के रडार पर आ गया और स्टुअर्ट की सेना ने उसे भागने पर मजबूर कर दिया। ऐसी अवस्था में शिवपुरी से 10 मील दूर पेरोन के जंगल में उसने अपना मुख्यालय बनाया।

ग्वालियर के पतन के बाद सेनापति तात्या टोपे ने लगभग 1 वर्ष तक गुरिल्ला युद्ध पद्धति से अंग्रेजों को बहुत छकाया। हिंदुस्तान की आधी अंग्रेजी सेना इस महान स्वतंत्रता सेनानी के प्राणों की तलाश में सेंट्रल इंडिया व इसके बाहरी क्षेत्रों में झक मारती रही। तात्या से अंग्रेजी सेना की अंतिम लड़ाई 21 जनवरी 1859 को सीकर (राजस्थान) में हुई। यहाँ से शिवपुरी लौटने के पूर्व उन्होंने अपने सम्पूर्ण सेना को विदा दे दी थी। सीकर से लुकते- छुपते उन्हें शिवपुरी पहुँचने में लगभग 3 माह 12 दिन लगे। कोई 1000 मील का सफर कर तात्या टोपे अपने विश्वस्त मित्र व नरवर के पूर्व जागीरदार मानसिंह के पास आ गया।

तात्या टोपे के शिवपुरी पहुँचने की खबर जैसे ही मेजर मीड के पास पहुँची उसने मानसिंह के दीवान के माध्यम से मानसिंह को विद्रोह के अपराध से माफी व अंग्रेज सरकार से जागीर दिए जाने के आश्वासन का समाचार भेजा। मानसिंह मीड के लालच में आ गया क्योंकि उसे दौलतराव सिंधिया द्वारा छीनी अपनी पैतृक जागीर प्राप्त करना थी। अत: उसने 7 अप्रैल की रात, जब तात्या टोपे गहरी नींद में सोया था अभिन्न मित्र मानसिंह ने उसे गिरफ्तार करा दिया। 15 अप्रैल को कोर्ट मार्शल कर तात्या टोपे को फांसी की सजा दे दी गई। 18 अप्रैल 1858 को जब तात्या को शिवपुरी में सार्वजनिक स्थान पर फांसी के लिए खड़ा किया तो फांसी तख्ते पर खड़े होकर उन्होंने स्वयं फांसी का फंदा अपने गले में लगा कर अपना प्राणत्सर्ग किया।

लेकिन अब इतिहासकारों का एक वर्ग यह मानता है कि 18 अप्रैल को फांसी पर चढ़ने वाला व्यक्ति तात्या टोपे नहीं था। इस संबंध में यह भी कहा गया कि फांसी पर चढ़ने वाला व्यक्ति नारायणराव भागवत था जो कि तात्या टोपे का करीबी अनुचर था। एक इतिहासकार के रूप में मैं तात्या टोपे के प्राणोंत्सर्ग को प्रामाणिक मानकर अमर बलिदानी को अनगिनत प्रणाम अर्पित करता हूँ।

इस जिले में राष्ट्रीय आंदोलन में राष्ट्रीय चेतना को प्रचलित बनाए रखने में महत्वपूर्ण योगदान पंडित गोपालकृष्ण पुराणिक ने किया। ग्राम भटनावर में स्थापित ''आदर्श विद्यालय'' के छात्रों ने राष्ट्रीय आंदोलन में महत्वपूर्ण सहयोग किया। यहाँ के लोग व्यक्तिगत सत्याग्रह में भाग लेने हेतु पड़ोसी राज्य उत्तरप्रदेश भी गए थे। इनमें से विश्वनाथ गुप्ता को डेढ़ वर्ष की सजा हुई। भारत छोड़ो आंदोलन में इनके 12 साथी गिरफ्तार हुए। इनमें कुछ पर मुकदमे चलाए गए तथा उन्हें सख्त सजा दी गई। कुछ को बिना मुकदमा किए जेलों में ठूंस दिया गया। इनमें सर्वश्री अवधप्रसाद श्रीवास्तव 'प्रसून', आनंदसिंह गिरधारीलाल 'आजाद', जयकिशन खत्री, चिंटूलाल बंसल, कर्नल जी एम ढिल्लन, नरहरी प्रसाद शर्मा, बब्बर हजारा सिंह, मेहर चंद गुप्ता, रतनचंद जैन, राधाकृष्ण पांडेय, श्री रामकिशन दास सिंघल, रामसिंह वशिष्ठ, रामसेवक स्वर्णकार, लक्ष्मीचंद शर्मा, लालसिंह चौहान, हरदास गुप्ता, विश्वनाथ गुप्ता, वैदेही चरण पाराशर एवं श्री कृष्ण शर्मा आदि- आदि।

इस प्रकार ग्वालियर संभाग के सभी जिलों का भारत के स्वतंत्रता संग्राम में उल्लेखनीय योगदान रहा है।

4. इन्दौर संभाग

इन्दौर संभाग का मुख्यालय इन्दौर होल्कर राजवंश की राजधानी 'इन्दूर' का मुख्यालय रहा है। होल्कर राजवंश की महारानी व प्रात: स्मरणीया अहिल्याबाई होल्कर ने भारत के समस्त तीर्थों, प्रमुख स्थलों पर मन्दिरों का जीर्णोद्धार करवाया, नवीन मन्दिर बनवाये, धर्मशालायें, बावड़ी, कुण्डों आदि के निर्माण का जो प्रतिमान कायम किया, वह अद्यावधि तक अखण्डित है। ब्रिट्रिश काल में यह सेन्ट्रल एजेन्सी का मुख्यालय था, जहाँ से मध्य भारत की 22 रियासतों का संचालन किया जाता था।

इन्दौर संभाग में इन्दौर, धार, झाबुआ, अलीराजपुर, खरगोन (प. निमाड़), खण्डवा (पू. निमाड़), बड़वानी व बुरहानपुर सहित 9 जिले व 39 तहसीलें है। मध्यप्रदेश भर में जनसंख्या की दृष्टि से यह सबसे बड़ा संभाग है। इस लेख में इन्दौर संभाग के प्रत्येक जिले में 1857 से देश की आजादी तक किये आन्दोलनों तथा आन्दोलनकारियों की गतिविधियों का पुण्य स्मरण किया जाने का प्रयास किया जा रहा है।

● जिला - इन्दौर

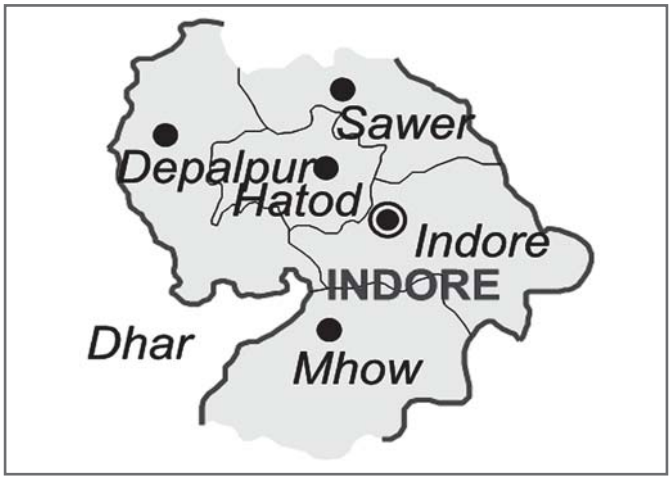

मध्यप्रदेश में इन्दौर जिला जनसंख्या की दृष्टि से प्रदेश का सबसे बड़ा जिला है। इसका मुख्यालय स्वच्छता के मामले में सम्पूर्ण भारत में पाँच बार सर्वोच्च स्थान प्राप्त कर चुका है। ब्रिटिश काल में यहाँ सेन्ट्रल इण्डिया की 22 रियासतों का सर्वोच्च अधिकारी एजेन्ट टू दी गवर्नर जनरल का मुख्यालय था, जिसे स्थानीय भाषा में 'रेजिडेण्ट' के स्थान पर 'रेसीडेण्ट' कहा जाता था। प्रथम स्वातंत्र्य समर के समय इस पद पर हेमिल्टन की नियुक्ति थी, लेकिन उसके अवकाश पर इंग्लैण्ड चले जाने के कारण इस पद पर मेजर हेनरी मेरियन डयूटेन्ट (4 अप्रैल 1857 से (12-1857) की नियुक्ति की गई थी। इनकी सहायता के लिए इन्दौर के महाराजा तुकोजी होल्कर की सेना तथा महू छावनीं की सेना थी।

नीमच में भारतीय सेना के विद्रोह का समाचार जब महू पहुँचा तो इन्दौर छावनी में सादात खाँ, बन्स गोपाल, भागीरथ सिलावट, नवाब वारिस मुहम्मद खाँ, मौलवी अब्दुल समद खाँ (फारसी शिक्षक) आदि प्रमुख सैन्य अधिकारियों ने अंग्रेजों को इन्दौर राज्य से खदेड़ने की सोची। इसी बीच महिदपुर की छावनी में क्रान्ति का समाचार सुनकर आजादी के मतवालों का चैन से बैठना असंभव हो गया। गहरे विचार विमर्श के बाद 1 जुलाई 1857 को प्रात: 8.40 पर विद्रोह करने का मुहुर्त निकाला गया।

होल्कर की घुड़सवार सेना का सेनापति सादात खाँ स्वयं डयूटेन्ट के पास गया और उसने नाश्ता कर रहे डयूटेन्ट को धमकाया। डयूटेन्ट ने रिवाल्वर चला दी पर निशाना चूक गया। सादात खाँ यहाँ से होल्कर के राजमहल में जा धमका, जहाँ उसे गिरफ्तार कर लिया गया। सादात खाँ की गिरफ्तारी का समाचार सुनकर होल्कर फौज के अश्वारोही भड़क उठे। विद्रोह का समाचार सुनकर महाराजा तुकोजीराव होलकर द्वितीय ने सादात खान को मुक्त कर प्रार्थना की कि वह क्रान्तिकारियों को शान्त करे। महल से लौटते हुए सादात खाँ ने चिल्लाकर यह कहा कि - ''महाराजा का हुक्म है कि अंग्रेजों को मारने के लिए तैयार हो जाओ।'' तत्काल विद्रोह भड़क उठा। इसी दिन महू की छावनी रात 11 बजे लूट ली गई।

क्रान्तिकारियों ने अंग्रेजों के बंगले जला दिए, रेसेडेन्सी व उसका खजाना जिसमें 9 लाख रुपये और 9 तोपें लूट लीं व लूट का सामान लेकर देवास के रास्ते दिल्ली जाने के लिए रात 10 बजे रवाना हो गए। इस सैनिक कार्यवाही में 29 अंग्रेज मारे गए। 65 दिन की यात्रा कर ये क्रान्तिकारी धौलपुर पहुँचे। ऐसा लगता है कि इन्हें दिल्ली पहुँचते-पहुँते 75 दिन लगे। दिल्ली में ये लोग 16-17 दिन ठहरने के बाद मुगल बादशाह से दो परवाने लेकर लौटे। लौटते समय भागीरथ बारगीर व इसके साथियों को हातोद के समीप बाकल नामक स्थान पर देपालपुर के मामलेदार ने गिरफ्तार कर लिया। यहीं भागीरथ बारगीर को फांसी पर लटका दिया गया।

अब अंग्रेजों ने पुन: शक्ति अर्जित कर ली तो इन्होंने अपना दमन चक्र चलाया। 20 दिसम्बर, 1857 को जिन्सी पलटन के अडारू सिंह को किले के समीप पीलिया खाल नाले के किनारे तोप से उड़ा दिया गया। 28 दिसम्बर 1887 को रखमाबाई की बाड़ी के पास 6 लोगों को तोप से उड़ाया गया। बन्दूक की गोलियों से मारा

गया। अनेक वृक्षों पर लोग फांसी पर चढ़ाए गए। रेसीडन्सी का चप्पा-चप्पा शहीदों के बलिदान की याद दिलाता है।

क्रान्तिकारियों का यह प्रयास भले ही असफल हो पर उनकी खून हर बूँद ने प्रेरणा दी। सादात खाँ को अंग्रेज तत्काल पकड़ नहीं पाए। वह कोई 20 वर्ष बाद 1877 ई. में झालावाड़ से पकड़ा गया। उसे इन्दौर लाया गया और इन्दौर में फांसी दी गई।

इन्दौर के तत्कालीन रेजेडेन्ट डयूटेन्ट का मत है कि इन्दौर क्रान्ति के समय महाराजा तुकोजीराव होलकर द्वितीय की भूमिका सन्देहास्पद थी। इस सम्बन्ध में वजीरबेग का मत था कि इन्दौर नगर को लूट से बचाने के लिए होलकर कुछ समय के लिए क्रान्तिकारियों के साथ हो गया था पर इनके दिल्ली चले जाने के बाद वह पुन: अंग्रेज भक्त हो गया था।

राष्ट्रीय आन्दोलन के दौरान मराठी रियासत में राष्ट्रचेतना की लहर पूना व नागपुर के गणेशोत्सवों और शिवाजी जयन्ती से प्रारम्भ हुई। आगे चलकर ज्ञान प्रकाश मण्डल की गतिविधियों में भाग लेने के कारण महान क्रान्तिकारी अर्जुनलाल सेठी, प्रो. गोखले, पी. के. कोतवाल, आदि को सेवा से पृथक कर रियासत बदर कर दिया गया। इन्दौर का यह सौभाग्य रहा कि यहाँ महात्मा गांधी का दो बार अगमन हुआ।पहली यात्रा 1918 तथा दूसरी यात्रा सन् 1935 में हुई।

1 जून 1920 में रेसीडेंसी क्षेत्र में काँग्रेस की नींव रखी गई जिसके अध्यक्ष सेठ बद्रीलाल भोलाराम बनाए गए। प्रिन्स ऑफ वेल्स के भारत आगमन का विरोध करने पर आर्यदत्त जुग ड़ान को 24 बेंतों की सजा दी गई। जुगरान 12 बेंते खाने के बाद बेहोश हो गए। उनका इलाज कराया और शेष 12 बेंते उनके ठीक होने के बाद लगायी गयीं।

महात्मा गाँधी का शायद ही कोई आन्दोलन ऐसा हो जिसका संचालन इन्दौर में न हुआ हो। इन्दौर में ही राष्ट्रीय महिला परिषद की स्थापना 1940 में की गई। इसमें श्रीमती रूकमणीदेवी शर्मा, फूलकुंवर चौरड़िया, राधादेवी आजाद आदि ने महिलाओं के बीच राजनीतिक चेतना जागृत करने का महत्वपूर्ण प्रयास किया।

भारत छोड़ों आन्दोलन के साथ-साथ इन्दौर में राजनीतिक सरगर्मियाँ तेज हो गई। पुलिस का रूख भी दमनकारी होता गया पर आजादी के दीवाने पीछे न हटे। सर्वश्री कन्हैयालाल खादीवाला, मिश्रीलाल गंगवाल, पुरूषोत्तम, विजय, रायबहादुर, हीरालाल, गुलाबचंद छजलानी, भानुदास शाह, देवेन्द्र कुमार जैन, मदनसिंह मास्टर, आदि ने सक्रिय भाग लिया। इन्दौर जिले के स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों की सूची बहुत बड़ी है जिसमें कोई 685 लोग 1984 तक दर्ज हो चुके थे। देश के लिए बलिदान होने वाले इन हुत्मात्माओं को शत-शत प्रणाम।

● जिला - अलीराजपुर

17 मई 2008 को झाबुआ जिले का पुनर्गठन कर मध्यप्रदेश राज्य का 49 वाँ जिला अलीराजपुर अस्तित्व में आया। सेन्ट्रल इण्डिया में अलीराजपुर 22 रियासतों में सम्मिलत था। यहाँ राठौर राजवंश के राजपूतों का राज्य कायम था। प्रशासनिक तौर पर तीन तहसीलें 'अलीराजपुर, जोबट तथा भाबरा का अस्तित्व इस जिले में है।

अलीराजपुर जिला अपने में धन्य है क्योंकि इसकी भाबरा तहसील महान क्रान्तिकारी पण्डित चन्द्रशेखर आजाद की जन्म स्थली है।

अमर शहीद चन्द्रशेखर आजाद

क्रान्तिकारी आन्दोलन के सूत्रधार प्रख्यात क्रान्तिकारी चन्द्रशेखर के पिता सीताराम तिवारी मूलत: उत्तरप्रदेश के निवासी थे। वे शासकीय सेवा के कारण यहाँ आ बसे थे। यहीं 23 जुलाई 1906 को चन्द्रशेखर आजाद का जन्म हुआ था। पिता सीताराम की मृत्यु के बाद उन्हें माता जगरानी ने पाला-पोसा। आगे चलकर चन्द्रशेखर को वाराणसी के संस्कृत विद्यापीठ में संस्कृत अध्ययन करने के लिए भेजा गया। यहाँ राष्ट्रीय आन्दोलन से प्रभावित होकर ब्रिटिश शासन के खिलाफनारे-बाजी करते हुए गिरफ्तार किये गये। मजिस्ट्रट के द्वारा पूछने पर आपने अपना नाम 'आजाद' पिता का नाम 'स्वतंत्रता' तथा पता 'जेलखाना' बताया। इन्हें 15 बेंतों की सजा दी गई। आगे चलकर 'आजाद' चन्द्रशेखर का उपनाम हो गया।

1925 के काकोरी काण्ड में आप अभियुक्त की हैसियत से फरार हो गये। आजाद कहा करते थे – ''दुश्मनों की गोलियों का हम सामना करेंगे। आजाद ही रहेंगें आजाद ही मरेंगे।।

फरारी के दिनों में वे झाँसी–ओरछा के बीच सतार नदी के किनारे पं. हरिशंकर ब्रह्मचारी के वेश में रहे। फरारी में लगभग 6 वर्ष बिताने के बाद आजाद इलाहाबाद के अल्फ्रेंड पार्क में पहचाने गए। ब्रिटिश पुलिस की घेराबन्दी में पुलिस से संघर्ष करते हुए आजाद ने अपनी ही रिवाल्वर की अन्तिम गोली से अपनी इहलीला 27 फरवरी 1931 में समाप्त कर ली। उसके आत्मोत्सर्ग के बाद उनकी यह रिवाल्वर पुलिस ने जब्त कर ली थी। बाद में इसे पुलिस अधीक्षक सर जॉन नाट बावर को भेंट में दे दी थी। अंग्रेज इस रिवाल्वर को वे अपने साथ इग्लैण्ड ले गए थे। इसे भारत सरकार ने लम्बे पत्राचार के बाद 1972 में मंगवा लिया है। वर्तमान में यह प्रयाग संग्रहालय के विशेषकक्ष में प्रदर्शित है। दर्शक 50 रु. शुल्क देकर इसके साथ सेल्फी व 1000 /– देकर वीडियों शूटिंग कर सकते है। मध्यप्रदेश सरकार ने आजादी की स्मृति में भाबरा में शहीद की प्रतिमा व उद्यान बनवाया है।

अलीराजपुर जिले के जोबट मे रियासती जन आन्दोलन हुआ। यहाँ के शमशुद्दीन मकरानी और उनके सातों बेटों को उनकी आने वाली तीन पीढ़ियों तक जोबट से निष्कासित कर दिया। इस रियायती फरमान के विरूद्ध कन्हैयालाल वैद्य ने रामगढ़ अधिवेशन में एक ज्ञापन दिया। इस विचित्र आदेश पर पं. नेहरू ने एक टिपण्णी लिखी जो ''नेशनल हेराल्ड'' ने अपने 26 मार्च, 1938 के अंक में A Cry From Jobat शीर्षक से छापी थी।

● जिला– धार

धार को परमार राजवंश की राजधानी रहने का सौभाग्य मिला है। इस राजवंश में सीयक, मंजु, भोज जैसे पराक्रमी शासक हुए। भोजराज कुशल शासक के साथ–साथ अपनी विद्धता के लिए सदैव याद किया जाता रहेगा।

सन् 1730 ई. में पेशवा बालाजी विश्वनाथ ने जब मालवा का विभाजन अपने सरदारों – गायकवाड़ सिधिया, होलकर पंवारों के बीच किया तो उदाजी पंवार को धार संस्थान प्रदान किया गया था। इस वंश के राजा रामचन्द्र राव द्वितीय ने 1819 में सहायक सन्धि स्वीकार की।

1857 की क्रान्ति प्रारम्भ होने के 13 दिन बाद धार का राजा जसवन्तराव पंवार कालरा से मर गये। मरने के पूर्व वह उसने अपने सौतेले भाई के 13 वर्षीय पुत्र आनन्दराव को गोद ले लिया। आगे चलकर धार दरबार पारिवारिक संघर्ष में दो गुटों में बदल गया। दोनों गुट अपने–अपने पक्ष को मजबूत करने हेतु मकरानी, पठान मुसलमान सैनिकों की भर्ती करने लगे। पारिवारिक शत्रुता को देखकर दोनों दल के मुस्लिम नेता एक हो गए और उन्होंने धार रियासत पर कब्जा कर लिया। ब्रिटिश संधि के बाद चूंकि रियासत की सुरक्षा का दायित्व कम्पनी का था।

मकरानी, पठान आदि धार पर कब्जा करने के बाद अंग्रेजों को भगाने के लिए अड़ गए। 19 सितम्बर 1857 को सरदारपुर, भोजाक्ट को लूट लिया गया। अक्टूबर माह तक क्रान्तिकारियों की संख्या 800 से बढ़कर 9500 हो गई। इन्होंने मानपुर पर भी कब्जा कर लिया। क्रान्तिकारियों की बढ़ती ताकत को देखकर ड्यूरेन्ट अपनी सेना के साथ 31 अक्टूबर को धार पहुँचा व उसकी सेना ने 1 नवम्बर को ही किले पर कब्जा कर लिया। इसी किले में क्रान्तिकारियों द्वारा संरक्षित 12 लाख रु. मूल्य का धार राजवंश का खजाना अंग्रेजों ने जप्त कर लिया। क्रान्तिकारी नेता गुलखान, बादशाह खान, शाहदत खान और रसूल खान धार से भागकर मन्दसौर आ गए और शाहजादा फिरोज के मार्गदर्शन में अंग्रेजों को हराने के लिए डट गए।

धार का राज्य चूंकि पंवारो को डयूटेन्ट की कृपा से प्राप्त हुआ था अत: यहाँ के शासक राष्ट्रीय आन्दोलन के विरूद्ध ब्रिटिश भक्त बने रहे। 1941 में इन्दौर के कॉग्रेसी नेता सर्वश्री कन्हैयालाल खादीवाला के साथ धार आए और उन्होंने ' यहाँ 'प्रजामण्डल' की स्थापना की। शंकरलाल दीघे प्रजामण्डल के पहले अध्यक्ष बने।

भारत छोड़ों आन्दोलन धार रियासत में भी प्रांरभ हुआ। इस अवसर पर यतीन्द्र कानूनगो ने एक गीत बनाया –

''मजा आएगा जेल में, नीली पीली दाल मिलेगी मोटी-मोटी।
रोटी खाने वाले के भाग्य से होगी भोटी थोटी।

आन्दोलन के तीसरे दिन दीघे, कालूराम विरूलकर, हीरालाल गंगवाल, लक्ष्मण सिंह सठीवाला गिरफ्तार हुए पर आन्दोलन चलता रहा। कन्हैयालाल जैन ने नेतृत्व संभाला। बदनावर में देवीसिंह सोलंकी के नेतृत्व में रतनलाल जैन, पुरूषोत्तम दुबे, बाबूलाल सराफ़ पं. केवलराम मास्टर, लक्ष्मीनारायण धामनोद के भगवान पाटीदार, खलधाट के अमीचंद पाटीदार को भी पुलिस ने पकड़ा व नजरबन्द किया।

आन्दोलन के दौरान धार रियासत का रवैया उदार था। साधारणत: नजरबंद किए जाते, जेल में डालते,कभी - कभी ही गहन कारावास की सजा दी जाती थी हरिभाउ वाकणकर को धामनोद का पुल उड़ाने की योजना के अन्तर्गत गहन कारावास की सजा हुई थी। ये संघ के कार्यकर्त्ता थे, चित्रकार होने के नाते इस जिले की जेल में भारतमाता का चित्र बनाया था।

इस आन्दोलन में छगनलाल पोरवाड़, डॉ. मुकरान दुबे, मनोहर दीघे, जगन्नाथ सिठोलिया, कैलाश जोशी, राधाकृष्ण गोयल, देवीशंकर भट्ट, बाबुराव गुप्ते, मनोहर जोशी, गोपालराव वैद्य, कैलास नारायण सक्सेना, मदनलाल विजयवर्गीय, पन्नलाल गोयल, चांदमल जैन प्रमुख थे।

1942 के बाद 1946 में धार में एक बड़ा आन्दोलन ''बाहरी अधिकारी रियासत से बाहर करो।'' इसके अन्तर्गत धार के दीवान चान्दोरकर तथा एस. जी. साइमन को हटाने की मांग की। इस हेतु रियासत के कुक्षी, बगड़ी, धामनोद, धरमपुरी, बदनावर के लोगों के जत्थे आते थे। एक माह तक राजवाड़ा चौक से घोड़ा चौपाटी तक का जलूस निकाला जाता। रियासत की पुलिस ने किसी प्रकार का प्रतिरोध नहीं किया। इस प्रकार धार के शासक ने अपनी उदारता का परिचय देकर अप्रत्यक्ष रूप से आंदोलन को ही गति दी।

यह धार जिले का सौभाग्य था कि प्रख्यात क्रान्तिकारी तात्या टोपे ने क्रान्ति के दौरान कुछ समय धार क्षेत्र में कुक्षी, सुसारी तथा चिखल्दा की गढ़ियों में बिताये। कुक्षी (वर्तमान में धार जिले की तहसील का जागीरदार मोहनसिंह से तात्या टोपे की मित्रता हुई थी।) इसी मोहनसिंह ने अमझेरा (वर्तमान धार जिले की सरदारपुर तहसील का गाँव जो सरदारपुर से दक्षिण-पूर्व में लगभग 23 कि.मी. दूर स्थित) के राव बख्तावरसिंह राठौड़ (म.प्र. शासन ने इसे महाराणा बख्तावरसिंह लिखा है जो त्रुटिपूर्ण है। महाराणा, विरूद मेवाड़ के शासकों के लिए प्रयुक्त होता है।) जो सिंधिया का जागीरदार था का, सम्पर्क तात्या टोपे से कराया था।

बख्तावरसिंह 7 वर्ष की आयु में सिंहारूढ़ हुआ। 1857 ई. में राव बख्तावरसिंह 33 वर्ष का था और अंग्रेजों के प्रति घृणा के कारण उसने अपनी सेना में मकरानी सैनिकों की भर्ती की। जबकि डयूरेन्ट का आदेश था कि-''इन सैनिकों की भर्ती न की जावे।''

इन्दौर व महू छावनी के सैनिकों के विद्रोह की खबर सुनकर राव बख्तावरसिंह भी विद्रोही हो गया। उसने भोपावर की भील पलटन को अपने पक्ष में कर लिया। 3 जुलाई 1857 को ही राव ने दीवान गुलाबराय व संदला के कुंवर भवानीसिंह का भेजकर भोपावर ऐजेन्सी को लूट लिया। उसकी सेना ने भोपावर को दूसरी बार 10 अक्टूबर को पुन: लूटा। इसके बाद सरदारपुर की सैनिक छावनी पर आक्रमण किया। अंग्रेजों ने बख्तावरसिंह की गिरफ्तारी 21 दिसम्बर 1857 को उसके साथियों के साथ कर ली गई। ए.जी.जी. हेमिल्टन ने बख्तावर सिंह के चार अधिकारियों दीवान गुलाबराय, कुँ. भवानीसिंह व मोहनलाल को फांसी और चिमनलाल को आजन्म कारावास की सजा दी गई। 10 फरवरी, 1858 को राव बख्तावरसिंह को भी सरेआम फांसी दी गई। दिन भर उसका शरीर फन्दे पर झूलता रहा। पुत्र वियोग में उसकी माता ने अफीम खाकर जान दे दी। उसकी सम्पूर्ण जागीर खालसा करके सिंधिया को दे दी गई। आगे चलकर उसके दो पुत्रों की सन्देहास्पद अवस्था में मृत्यु हो गई। उसकी 9 रानियों ने दर-दर की ठोकरें खाकर अपना जीवन व्यतीत किया।

स्वतंत्रता की वेदी पर अपने प्राणों की आहूति देने वाले एवं बख्तावरसिंह का कोई वंशज शेष नहीं बचा। शेष रही तो केवल उसकी कीर्ति जो दिन-प्रतिदिन विस्तारित हो रही है। अमर हुतात्मा और उसके परिवार को विनम्र श्रृद्धाजंलि।

● **जिला बड़वानी**

बड़वानी कभी सेन्ट्रल इण्डिया की देशी रियासत के रूप में जाना जाता था। नर्मदा नदी के दक्षिण तट पर बसा बड़वानी 25 मई 1998 के पूर्व खरगोन जिले का भाग था। इसकी पहचान ''निमाड़ के पेरिस'' के रूप में हुआ करती थी। वर्तमान में इस जिले में बड़वानी, ठीकरी, राजपुर पानसेमल, सैंधवा, निवाली तहसीले सम्मिलित है। यह जिला आदिवासी जिला प्रधान है।

इस जिले के मुख्यालय पर सन् 1815 में नहाल जाति में भीमा नायक का जन्म हुआ था। आगे चलकर यह अपने राज्य के भीलों का वंशजगत नेता बना। अपनी साहसिक कारगुजारी के भीमानायक को निमाड़ का ''रॉबिन हुड'' कहा जाता है।

भीमा नायक ने बड़वानी के करीब स्थित धाबाबावड़ी को अपनी गतिविधियों का केन्द्र बनाकर यहाँ एक गढ़ी का निर्माण कराया। मात्र 22 वर्ष की उम्र में उसने ब्रिटिश सरकार के शोषण व अत्याचार से जनता को मुक्त कराने के लिए एक सैनिक टुकड़ी का निर्माण किया। जिसमें भील, भिलाला व मकरानी सैनिक सम्मिलित थे। सम्पन्न साहूकार अंग्रेज अधिकारी व राजे-महाराजे को अपनी लूट का शिकार बनाता था।

भीमा नायक धमकियों व बढ़ती गतिविधियों के कारण सतपुड़ा फील्ड फोर्स का कमाण्डर मेजर इवान्स बड़वानी आया। अंग्रेजों के आपाधापी के इस अभियान में क्रान्तिकारियों को भारी क्षति उठाना पड़ी। पर क्रान्तिकारियों की सबसे बड़ी विजय यह रही कि इनके नेता भीमा, खाज्या व मोबासिया में से कोई पकड़ा न जा सका। इनका शेष बचा दल तात्या टोपे से मिला जो अपने गुजरात के प्रवास पर था। तात्या टोपे ने ब्राह्मण होने के नाते तिलक कर भीमा को निरन्तर संघर्ष का आशीर्वाद दिया।

भीमा अपनी निपूण नीति के कारण गिरफ्तार न किया जा सका जबकि 1865 तक उसकी माता सहित परिवार के अन्य लोग पकड़े जा चुके थे। अन्त में 2 अप्रैल 1867 ई. को वह बालकुंआ के पास गिरफ्तार किया व उसे क्रान्तिकारियों को शरण देने, डकैती व हत्या के अपराध में कोई 300 मुकद्मों का अभियुक्त बनाकर 9 नवम्बर 1867 को कालेपानी की सजा सुनाई गयी। पोर्टब्लेयर में इस महान क्रान्तिकारी की मृत्यु हो गयी। आदिवासी सेनानायक की देशभक्ति को सादर नमन।

राष्ट्रीय आन्दोलन के दौरान बड़वानी नगर के मंशाराम वर्मा, भगवानसिंह, काशीनाथ त्रिवेदी, सूरजमल लुक्कड़ (अजंड) आदि ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। सेंधवा तहसील में रामरतन शर्मा के नेतृत्व में आन्दोलन शुरू हुआ। इन्हीं दिनों नगर की महिलाओं द्वारा हाथ में चूड़ियाँ लेकर सेंघवा के किले के दरवाजे पर प्रदर्शन किया गया तथा किले का मार्ग रोक दिया गया। सेंधवा के तत्कालीन जज टी. एन. मुंशी ने अन्ततः अंग्रेजों की गुलामी का प्रतीक अपना हेट महिलाओं को सौंप दिया।

14 अगस्त 1942 को रामरतन शर्मा को गिरफ्तार कर सेंधवा लॉकअप में रखा गया। आन्दोलनकारियों ने एक सुबह किले के ऊपर राष्ट्रीय ध्वज फहरा दिया। जो लगभग एक घण्टे तक फहराता रहा। आन्दोलन के दौरान शिवनाथ प्रसाद गुप्त सहित अनेक आन्दोलकारियों को मानपुर तथा इन्दौर की जेलों में रखा गया।

● जिला-खरगौन

खरगौन पश्चिमी निमाड़ जिले का मुख्यालय है। इन्दौर संभाग में खरगौन जिला सर्वाधिक तहसीलें वाला खरगौन भगवानपुरा, सेगांव, भीकमगांव, झिरन्या, महेश्वर, बड़वाह व कसरावद है। यह जिला प्रदेश के दक्षिण पश्चिम में स्थित है।

प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के दौरान मण्डलेश्वर दुर्ग में घटी घटना महत्वपूर्ण हैं। यह दुर्ग महेश्वर तहसील मुख्यालय महेश्वर से 10 कि.मी. दूर नर्मदा के उत्तर तट पर मैदानी में किला है। इस इमारत का निर्माण कब हुआ ? इसका क्या उपयोग था ? इसकी भी जानकारी नहीं होती है। वर्तमान में भी यहाँ जेल है। इस कारण साधारण दर्शकों तो क्या संशोधकों को भी देखने की अनुमति नहीं मिलती है।

1857 में मण्डलेश्वर स्थित घुड़सवार एवं पैदल सेना ने बगावत कर जिले पर कब्जा कर लिया। इस घटना में बंगाल रेजिमेंट के कैप्टन बैंजामिन होक्स मारे गए। दुर्ग में रखे खजाने में से 7936 रुपये 2 आने तथा 9 पैसे निकाले गये। अन्त में अंग्रेजों ने इस काम में लगे 18 क्रान्तिकारियों को पकड़ने में सफलता प्राप्त की। इनमें से 7

को फाँसीबेड़ी स्थान पर फांसी दी गई। और अन्य तीन को कालेपानी की सजा दी गई।

इस प्रकार मण्डलेश्वर दुर्ग में घटी घटना जनक्रान्ति थी क्योंकि अंग्रेज अधिवासियों ने भीलों का सिर काटने पर 25 रुपये का ईनाम रखा था पर सैनिकों ने ईनाम का लालच छोड़कर देश सेवा पर बलिदान होने का जो निर्णय लिया, वह स्वर्णाक्षरों में लिखा जावेगा।

राष्ट्रीय आन्दोलन के दोरान 1905 से ही मण्डलेश्वर में राष्ट्रीय गतिविधियों के संचालन के प्रमाण मिलते है। 1939 में खरगौन में लोकसेवक संघ की स्थापना से रचनात्मक कार्यों को गति मिली। 1940 में खरगौन में प्रजामण्डल का तीसरा अधिवेशन हुआ।

1942 के भारत छोड़ों आन्दोलन में जिले के मण्डलेश्वर बड़वाह, सनावद आदि में ऐसा उत्साह उमड़ा कि ब्रिटिश हुकुमत को लाठी चार्ज व धारा144 का सहारा लेना पड़ा। इन्दौर संभाग में इन्दौर के बाद सनावद ही ऐसा स्थान है जहाँ ब्रिटिश सरकार का ऐसा दमन हुआ।

महेश्वर किले में बन्द 66 स्वतंत्रता संग्राम सैनिकों ने जेल प्रशासन के विरूद्ध अहिंसात्मक आन्दोलन किए। जब प्रशासन के अत्याचार कम न हुए तो उन्होंने 2 अक्टूम्बर 1942 को जेल का मुख्य द्वार तोड़ दिया व 51 बंदी मुख्य बाजार में निकल गए? इन आन्दोलनकारियों पर विभिन्न धाराओं में मुकद्में चलाए गए। 11 अक्टूम्बर को 33 आन्दोलनकारियों को विभिन्न धाराओं में 6 वर्ष की सजा सुनाई गई।

देश की आजादी के संघर्ष में सर्वत्री वि. स.खोडे, नारायण भावसार, मन्नालाल पंचोलिया, मायाचंद जंटाले, फक्कीरचन्द, मांगीलाल पाटनी, कोमलचंद जैन, सुमेरसिंह, जगदीश विद्यार्थी, गुलाबचन्द, ब्रजमोहन, भगवानदास, जड़ावचन्द जैन, डॉ. औंकारलाल महाजन, केशव भावसार, गोकुलदास महाजन, छतरसिंह डांगी, भंवरलाल भट्ट, ''मधुष'', रमाकान्त खोडे, विश्वनाथ खोडे, सौभागसिंह चौरड़िया आदि ने महत्वपूर्ण कार्य किया। इन सभी का शत-शत अभिनंदन।।

● खण्डवा-बुरहानपुर जिला (पूर्वी निमाड़)

अविभाजित खण्डवा - बुरहानपुर का क्षेत्र पूर्वी निमाड़ के रूप में जाना जाता है। यह क्षेत्र प्रदेश के दक्षिण-पश्चिम में स्थित है। 15 अगस्त 2003 को खण्डवा जिले को विभाजित कर इस जिले में खण्डवा, पंधाना, हरसूद तथा बुरहानपुर जिले में बुरहानपुर, खकनार व नेपानगर तीन तहसीलें रखी गयीं हैं।

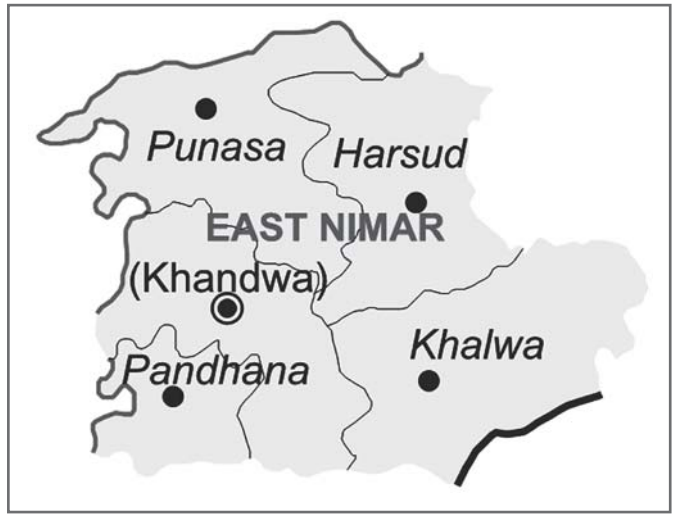

यद्यपि यह क्षेत्र प्रथम स्वतांत्र्य समर की गतिविधियों से अछूता रहा, पर राष्ट्रीय आन्दोलन के दौरान प्रत्येक आन्दोलन में भाग लेकर देश को आजाद कराने में त्याग और कुर्बानी दी।

खण्डवा में लोकमान्य तिलक के वर्ष 1917 के आगमन से क्षेत्र में राजनीतिक गतिविधि का पारा चढ़ने लगा। वर्तमान गांधी भवन कभी राबर्टसन पार्क हुआ करता था। यहाँ जब लोकमान्य का तेजस्वी भाषण हुआ। ब्रिटिश शासन ने इसमें भाग लेने वालों पर अनुशासनात्मक कार्रवाई की।

1918 में यहाँ भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना हुई। इसी वर्ष कलकत्ता अधिवेशन में पंडित माखनलाल चतुर्वेदी के नेतृत्व में लक्ष्मण सिंह चौहान व अब्दुल कादिर सिद्दीकी ने जिला प्रतिनिधि की हैसियत से भाग लिया। 1921 में प्रिंस ऑफ वेल्स के भारत आगमन पर खण्डवा में जुलूस निकला। भीड़ को तितर-बितर करने के लिए बैंतें भांजी गईं। नागपुर के सत्याग्रह में खण्डवा बुरहानपुर से 40 सत्याग्रहियों का जत्था शामिल हुआ जिनमें से कई ने अपनी गिरफ्तारियाँ दी। लाला लाजपतराय की मृत्यु पर दमन के खिलाफ खण्डवा और बुरहानपुर में भी सभाएँ हुईं।

सविनय अवज्ञा आंदोलन (1930) के दौरान विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार किया वह उनकी होली जलाई। 11 अप्रैल 1930 को पंडित माखनलाल चतुर्वेदी की अध्यक्षता में नमक कानून तोड़ने वाले सत्याग्रहियों की सूची बनाई गई। जगह-जगह नमक बनाया गया वह सभाएँ की गई। जेल में सत्याग्रहियों को दाल व सब्जी अलग-अलग ना देने के विरोध में सिद्धनाथ महोदय व बाबूलाल तिवारी ने अन्न-वस्त्र त्याग दिए। 6 दिन बाद सेशन जज के हस्तक्षेप से इस विवाद का पटाक्षेप हुआ तो सत्याग्रह ने अन्न-वस्त्र स्वीकार किए।

वर्ष 1933 में हरिजन उद्धार के सिलसिले में स्वयं महात्मा गांधी खण्डवा पधारे तो जनता की तरफसे थैली भेंट की गई।

भारत छोड़ो आंदोलन में इस क्षेत्र की गर्मजोशी को देखकर अंग्रेजों ने प्रमुख प्रमुख नेताओं को पहले ही गिरफ्तार कर लिया। इन्हें नागपुर, जबलपुर, अमरावती, बालाघाट, सिवनी आदि जिलों में भेज दिया गया।

भारत के स्वाधीनता आंदोलन में पूर्वी निर्माण का सबसे महत्वपूर्ण कार्य है कि क्षेत्र से बौद्धिक क्रान्ति भी हुई। खण्डवा से प्रकाशित समाचार पत्र कर्मवीर (संपादक माखनलाल चतुर्वेदी), अंकुश (संपादक रामकृष्ण पालीवाल), हिन्दी स्वराज्य (संपादक सिद्धनाथ आगरकर) पत्रों का प्रसारण एवं वाचन भारत के विभिन्न भागों तक होता था। प्रजातंत्र के इस चतुर्थ स्तम्भ को शत-शत प्रणाम।

इनमें खण्डवा के अनोखीलाल झरझरे, अमोलकचंद जैन, इंद्रमणि मिश्र, गोविन्दराय शुक्ल, डॉ. जगन्नाथ सोनी, टेकचंद सिंधी, दौलतसिंह सोलंकी, नागेन्द्र मोहन चतुर्वेदी, प्यारेलाल गुप्त, भगवंतराव मण्डलोई, रायचंद नागड़ा, शिवचरण पाण्डे, सोनजी चौधरी, हेमराज सिंह चौहान, त्र्यंबकसिंह गहलोत, कस्तूरीबाई उपाध्यक्ष आदि।

बुरहानपुर के विष्णुप्रसाद खत्री, लक्ष्मीदास मास्टर, विनय कुमार पाराशर, रामदत्त ज्ञानी, श्री रंगलाल मातादीन, रघुनाथ राव दसनूकर, मार्तण्ड राव मजूमदार, धन्नुलाल शाह, श्रीमती जानकीबाई वर्मा, देवीदास सोनार, घीसाजी चौहान, गंगाचरण दीक्षित, खेमचन्द, कृष्णा जी दामले आदि- आदि।

● जिला झाबुआ

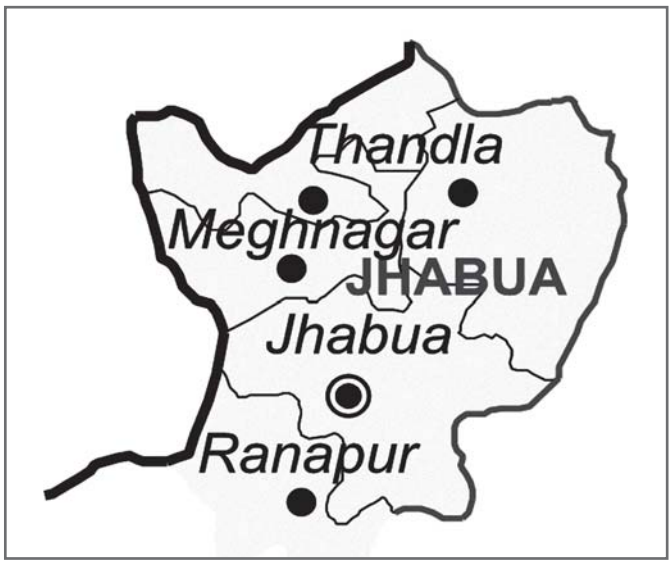

झाबुआ जिला मध्य प्रदेश के दक्षिणी-पश्चिमी कोने पर स्थित है। यह जिला मुख्य रूप से झाबुआ नायक देशी रियासत का अंग रही है। कभी इस जिले में 8 तहसीलें थी। 17 मई 2008 को इस जिले का पुनर्गठन कर अलीराजपुर नामक 49वाँ जिला बनाया। वर्तमान में इस जिले में झाबुआ, रानापुर, पेटलावद, थांदला तथा मेघनगर नामक तहसीलें हैं।

झाबुआ, अलीराजपुर दोनों राठौड़ राजपूतों की रियासतें थी। इनमें भील जनजाति का निवास प्रमुख रूप से है। यह दोनों रियासतें भी अन्य राठौड़ी रियासतों रतलाम, सैलाना व सीतामऊ की तरह अंग्रेजों की परम भक्त थी। इसीलिए प्रथम स्वातंत्र्य समर में इनका कोई योगदान न था। भोपावर एजेन्सी से भागे हुए अंग्रेजों को झाबुआ के राज्य ने शरण प्रदान की थी।

राष्ट्रीय आंदोलन के दौरान झाबुआ अत्यधिक बदनाम रियासतों में एक थी। यहाँ के राजा उदय सिंह को अंग्रेजों ने दो बार राजगद्दी से उतार दिया था। वह राजच्युत अवस्था में ही इन्दौर में 1947 ईस्वी में मरा था। नवीन राजा दिलीप सिंह भी अपने पिता उदय सिंह की तरह स्वाधीनता सेनानियों के प्रति अनुदार था। इस कारण झाबुआ रियासत में आजादी के लिए राजशाही और हुकूमत के विरुद्ध जनआंदोलन के तीन दौर चले।

झाबुआ में जनजागृति आंदोलन थांदला से हुआ। जो अब एक तहसील मुख्यालय है। जन आंदोलन राजा उदय सिंह राठौड की मूर्खता से उठ खड़ा हुआ। हुआ यह कि 1933 के अकाल में सेठ सौभागमल पोरवाल तथा टीकमचंद जैन ने लोगों से अन्न एकत्र कर गरीब आदिवासियों को बाँटना प्रारम्भ कर दिया। राजा उदय सिंह नाराज हो गए और उसने सौभागमल को 40 दिन तक जेल में रखा। इसकी शिकायत पोलिटिकल एजेंट से की, तब कहीं और पोरवाल जेल से छूटे। ऐसे बेढंगे कार्यों के कारण 1934 में उदय सिंह को गद्दी से उतार दिया गया और रियासत सीधे अंग्रेजों के नियंत्रण में आ गई और पंडित रामनारायण मुल्ला प्रशासक बनाए गए।

राजशाही के जोर-जुल्मों के विरुद्ध कन्हैयालाल वैद्य, (थांदला) तथा पंडित बालेश्वरदयाल दीक्षित उर्फ ''मामाजी'' (बमनिया) ने ''झाबुआ राज्य लोक परिषद'' बनाई। इसके प्रथम अधिवेशन दाहोद (1935) के बाद से प्रशासक ने सीमाबंदी व अन्य प्रतिबंधात्मक कानून लागू कर दिए। 1936 में अनेक व्यक्तियों पर राजद्रोह के मुकदमे चलाकर जुल्म ढाए गए। 1936 में थांदला के धर्मदास जैन विद्यालय में जॉर्ज पंचम की रजत जयंती मनाने का विरोध किया गया।

उन दिनों पेटलावद होलकर रियासत थी। चंपावती नदी के आगे झाबुआ रियासत शुरू होती थी। होलकर रियासत के किसान रात के समय बामनिया रेलवे स्टेशन से अपनी फसल बेचने झाबुआ रियासत में प्रवेश करते थे। ऐसे लोगों पर झाबुआ के पुलिस व कस्टम अधिकारियों ने गोलियाँ चलाई और दो महिलाओं को बंदी बनाकर बलात्कार किया गया।

कन्हैयालाल वेद ने इसकी शिकायत पंडित नेहरू को की। वह इस घटना की विस्तृत जानकारी अंग्रेजी में ''झाबुआ ट्रेजडी'' तथा हिन्दी में ''झाबुआ गोलीकांड और बलात्कार की काली कहानी'' शीर्षक से लिखी। पंडित द्वारकानाथ कारजू की रपट के आधार पर रियासत के कस्टम अधिकारी पी.एन. बिड़वाई सहित 24 कर्मचारियों के विरुद्ध फौजदारी मुकदमा चला।

इसी बीच भारत छोड़ो आंदोलन प्रारम्भ हो गया और 9 अगस्त 1942 ई. की रात एक जुलूस निकाला गया। इसके प्रेरक तीन क्रान्तिकारी थे, जो शिक्षक के रूप में फरारी काट रहे थे। इनमें एक ने राजा दिलीप सिंह पर गोली दाग दी और तीनों अपने एक साथी बाबूलाल भारतीय 'आजाद' के साथ फरार हो गए।

झाबुआ रियासत में आजादी पूर्व का अंतिम निर्णायक आंदोलन 10 अक्टूबर 1940 से जनवरी 1948 तक रघुनंदनचंद शरण शर्मा के नेतृत्व में चला। सभाबंदी का प्रतिबंधात्मक आदेश रद्द करने की एक सभा पर घोड़ों से लोगों को कुचलवाया। 17 नेताओं को बंदी बनाकर जेल में डाल दिया। इन्हें दूसरे दिन धार व इन्दौर रियासत की सीमा पर ले जाकर निर्वासन आदेश थमा दिया। इस प्रकार अनेक आंदोलनकारी राज्य से निर्वासित हुए तब कहीं देश की आजादी का दिन आया। इस दिन झाबुआ में बरसते पानी में रघुनंदन शर्मा की माताजी बन्नी देवी ने आजाद चौक में झंडा फहराया।

अब उत्तरदायी शासन की मांग चली। इसके लिए राजा दिलीप सिंह राजी नहीं हुए। दिसंबर 1947 में घोड़ापाटी दशहरा मैदान में झाबुआ राज्य लोक परिषद का खुला अधिवेशन सौराष्ट्र के विख्यात गांधीवादी नेता राजा गोपालदास व सांवलदास भाई गांधी के मुख्य आतिथ्य में हुआ। राजा दिलीप सिंह राठौर को एक माह का समय दिया गया पर राजा के कान पर जूँ तक न रेंगीं। अंत में यह निर्णय किया गया कि तीन दिन में राजा उत्तरदायी शासन की घोषणा न करें तो 19 जनवरी 1948 को 12 बजे सत्याग्रह प्रारम्भ किया जाएगा। अंत में सैय्यद हामिद अली तथा तालिब शाह की सलाह पर राजा मान गए एवं दिनांक 20 जनवरी को छह सदस्यीय मंत्रिमंडल को शपथ दिलाई गई। इसमें रघुनंदन शर्मा ने प्रधानमंत्री पद की तथा कुंसुमकांत जैन और हजारीलाल जैन ने मंत्री पद की शपथ ली। लेकिन यह मंत्रिमंडल सिर्फ चार माह ही सत्तारूढ़ रह पाया। 28 मई 1946 को निर्मित मध्यभारत राज्य में झाबुआ रियासत भी विलीन हो गई और तब रियासती मंत्रिमंडल स्वत: ही समाप्त हो गया।

● जिला- बुरहानपुर

इस जिले का निर्माण 15 अगस्त, 2003 को खण्डवा जिले के विभाजन से हुआ। बुरहानपुर मुगलों के दक्षिण राजमार्ग पर स्थित प्रख्यात नगर है जिसका नामकरण शेख बुरहानुद्दीन के नाम पर हुआ। इस जिले में तीन तहसीलें क्रमश: बुरहानपुर, खकनार एवं नेपानगर है।

बुरहानपुर जिले की बुरहानपुर तहसील में स्थित असीरगढ़ कभी दक्षिण का दरवाजा कहलाता था। इस किले के महत्व को अंग्रेजों ने समझा और इसे उन्होंने 1817 की संधि के बाद दौलतराव सिन्धिया से प्राप्त कर अपने कब्जे में कर लिया। 1857 की क्रान्ति के पूर्व ग्वालियर कान्टीजेन्ट की सेनाएँ अन्य स्थानों के साथ-साथ बुरहानपुर व असीरगढ़ में नियुक्त थी जहाँ पदस्थ कुछ अंग्रेज अधिकारी इन भारतीयों की सेनाओं पर नियंत्रण करते थे।

इन्दौर में क्रान्ति के पश्चात मण्डलेश्वर में पदस्थ यूरोपियन अधिकारी भागकर असीरगढ़ के किले की तरफभागे थे। इसी किले में उनके जानमाल की सुरक्षा हुई थी। परन्तु इस क्षेत्र के लोगों ने स्वयं किसी क्रान्ति में भाग न लिया।

डॉ. सिद्धनाथ के संस्मरण के अनुसार 6 अप्रैल 1930 को राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी ने नमक सत्याग्रह प्रारंभ किया। बुरहानपुर में भी सार्वजनिक सभा के माध्यम से नमक बनाया गया किन्तु किसी

कार्यकर्ता की गिरफ्तारी नहीं हुई। इसके एक माह बाद ही जंगल सत्याग्रह का काँग्रेस से आवंटन किया गया। इस आन्दोलन में युवकों एवं छात्रों के प्रेरणास्रोत थे रामदत्त ज्ञानी। 11 सितम्बर, 1930 को जंगल सत्याग्रह के लिए बुरहानपुर के सत्याग्रहियों का जिन्होंने नेतृत्व किया उनमें से तोताराम बाबू, मुन्नालाल शाह, सोनजी भाऊ, वंशीलाल पीरचंद, जम्बकसिंह मास्टर को उनके भाषण देने के आरोप में गिरफ्तार किया तथा जेल भेजा गया।

नवम्बर 1931 में बुरहानपुर में तहसील कांग्रेस सम्मेलन का आयेाजन किया गया। इसका उद्घाटन बरार के ब्रिजलाल बियाणी ने किया था। स्वागत अध्यक्ष थे सेठ कन्हैयालाल तथा मुख्य अतिथि थे पं. माखनलाल चतुर्वेदी। 1932 में मार्च महीने में फकीरचंद कपूर ने चौक की धर्मशाला के मैदान में अंग्रेजी शासन के विरोध में जो भाषण दिया तो गिरफ्तार कर जेल भेज दिये गये। अन्य सत्याग्रही श्री रामहन्त ज्ञानी, श्री खुशालचंद विनयकुमार, शान्तिकुमार पुरुषोत्तम विनायक, वासुदेव श्रीधर दायले तथा रघुनाथ गोविन्द दसतूरकर प्रमुख थे।

भारत छोड़ो आन्दोलन में बुरहानपुर के नागरिकों ने अपनी उल्लेखनीय आहूति दी। 9 अगस्त की देर रात कांग्रेस नेता मार्तण्डराव मजुमदार तथा दूसरे दिन किसनप्रसाद मजुमदार को बोर्ड लिखने के अपराध में जेल भेज दिया।

अब रावर्टसन हाईस्कूल मैदान युद्ध स्थल बना। इस शाला का संचालन उन दिनों नगर पालिका के अधीन था। विद्यालय पर ध्वज लगाने के प्रयास ने युद्ध का स्वरूप लिया। इस युद्ध के प्रथम सैनिक थे युवा छात्र मनोहरदास ढाकोरदास 12 अगस्त के इस घटना के बाद मनोहर दास, विष्णुप्रसाद खन्ना व केशवराव विलकर को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया। अगले दिन दशरथ देवचन्द झण्डा लगाने के प्रयत्न में गिरफ्तार हुए। यह क्रम कोई 4 से 6 माह तक चला। इस आन्दोलन के अपराध में लक्ष्मीदास मास्टर, द्वारकादास वन्नातवाले, ढोके तथा विपट को नौकरी से हटा दिया गया।

13 अगस्त 1942 को गुजराती की 7वीं कक्षा की छात्राओं कु. मंजुला रघुभाई वाले, कु. उर्मिला रघुभाई वाले, कु. कुसुम सुन्दरलाल लोहेवाले, कु. गनीवेन पटेल, श्रीमती कमलाबेन छन्नालाल शाह, नारायणदास, खेमचन्द के साथ गिरफ्तार किया गया। शाम कोतवाली पर बैठाकर मुक्त कर दिया।

इस अहिंसात्मक आन्दोलन के साथ कुछ लोगों ने क्रान्तिकारी घटनाओं को भी अंजाम दिया। बुरहानपुर नगर में टेलिग्राम के तार काटने, लेटरबाक्स में तेजाब डालने, लेटर बाक्स के डिब्बे हटाने की घटनाएँ हुई। इन घटनाओं में नारायण शाह, गोवर्धन रामगुप्ता, कृष्णदास गोविन्द गिरफ्तार हुए। डिटेलमेंट के संयोजक रामभाऊ योग एवं सतारा के भूगर्भ कार्यकर्ता पटवर्धन वकील अपने अज्ञातवास में बुरहानपुर में रहे। निम्बोला के युवक श्री मातादीन रेल में फिश प्लेट निकालने के आरोप में पकड़े गए व जेल में रहे।

प्रस्तुत विवरण से स्पष्ट है कि बुरहानपुर के हिन्दुओं ने राष्ट्रीय आन्दोलन में पूरी सक्रियता से योगदान दिया। शत-शत अभिनन्दन।

बुरहानपुर

5. जबलपुर संभाग

जबलपुर संभाग क्षेत्रफल की दृष्टि से मध्यप्रदेश का सबसे बड़ा संभाग है। इस संभाग में बालाघाट, छिंदवाड़ा, डिण्डौरी, मण्डला, जबलपुर, कटनी, नरसिंहपुर तथा सिवनी जिले सम्मिलित हैं। विनोबा भावे ने जबलपुर को संस्कारधानी कहा है।

● जिला बालाघाट

बालाघाट जिले में बैगा जनजाति की प्रधानता है। यह प्रदेश का सर्वाधिक लिंगानुपात वाला जिला (1000: 1021) है। चावल तथा बांस के उत्पादन में शीर्ष जिला है। एशिया की सबसे बड़ी भूमिगत मैगनीज खान – भरवेली खान यहाँ है तो मलाजखण्ड तहसील में तांबा निकाला जाता है। इस जिले में बालाघाट, बैहर, कटंगी, खैरलांजी, किरनापुर, लांजी व वारासिवनी नामक 7 तहसीलें हैं।

दक्षिण पूर्व में बसे बालाघाट मध्यप्रदेश की तत्कालीन राजधानी नागपुर के निकट ही बसा हुआ है। इसलिए यह स्वाभाविक ही था कि जो प्रांतव्यापी हलचल नागपुर से प्रारम्भ होती उसे वहाँ पहुँचने में कोई देर न लगती है। पर,प्रथम स्वातंत्र्य समर की कोई उल्लेखनीय घटना बालाघाट जिले में नहीं घटी।

सन् 1919 में जलियावाला बाग के नरसंहार के बाद इस जिले में 1920 में कांग्रेस की स्थापना की गई। इसी समय राजगोपालाचार्य श्री देवदास गांधी के साथ बालाघाट आये, इनका जनता ने स्वागत किया। आगे चलकर सेठ जमुनालाल बजाज, पंडित माखनलाल चतुर्वेदी आदि कांग्रेस के नेतागण चेतना जागृत करने की दृष्टि से बालाघाट में आते रहे। 30 नवंबर 1922 को कांग्रेस के जिला अध्यक्ष विभु पटेल व अन्य कांग्रेसी सदस्यों के हस्ताक्षर से एक पर्चा प्रकाशित किया गया जिसमें गांधी जी द्वारा चलाए गए असहयोग आन्दोलन से निर्मित परिस्थितियों का विवरण दिया गया था। इसी दौरान स्वामी कुमारानंद ने बालाघाट जिले में जनजागृति फैलाने का कार्य किया। वारासिवनी तहसील व बैहर तहसील उनकी गतिविधियों का केन्द्र रही। अंत में सोमदेव जासूस ने इनकी मुखबरी कर इन्हें जेल में डलवा दिया।1923 में नागपुर झण्डा सत्याग्रह प्रारम्भ हुआ तो बालाघाट के राष्ट्रप्रेमी इसमें सम्मिलित होने रेल से जाते थे। यह देख सरकार ने टिकट बंद कर दिए तो आन्दोलनकारी पदयात्रा करने में नहीं चूके।

1930 के सविनय अवज्ञा आन्दोलन में दाण्डी यात्रा का नमक कानून तोड़ा। उन्होंने ऐसे क्षेत्र, जहाँ घने जंगल थे, में कानून भंग करने के लिए जंगल सत्याग्रह का विकल्प दिया था। तथा बालाघाट जिला कांग्रेस के प्रमुख चिंतामनराव केलकर के मार्गदर्शन में गांधी चौक से जुलूस निकालना प्रारम्भ किया। इसमें जिले के वारासिवनी, कटंगी, लालबर्रा, बैहर, लांजी आदि स्थानों के लोगों ने भाग लिया। पाँच महीने चले इस आन्दोलन का पुलिस ने दमन किया एवं आन्दोलन के नेता इन्दापवार वकील, केलकर महर्रिकर वकील को जेल में डाल दिया। इसी वर्ष 25 मार्च 1931 में गणेश शंकर विद्यार्थी की हत्या पर छात्रों ने दुख व्यक्त किया तथा शासकीय हाई स्कूल पर झण्डा पहराकर इसे एक माह तक बंद रखा। 28 नवंबर 1933 को महात्मा गांधी हरिजन कल्याण की दृष्टि से बालाघाट आए। वह नारायणराव केलकर के यहाँ ठहरे। हरिजन मोहल्ले में गए। महिलाओं की सभा की। यहाँ से किरनापुर होते हुए सिवनी गए।

1940 में व्यक्तिगत सत्याग्रह के अंतर्गत लोग बालाघाट से पैदल पैदल नरसिंहपुर, ब्राह्मणघाट, चांवरपाठा गए और इन्हें गिरफ्तार कर सात दिन बाद छोड़ा गया। इस सत्याग्रह का उद्देश्य था कि द्वितीय विश्व युद्ध में अंग्रेजो की मदद न की जाए। जबकि ब्रिटिश प्रशासन निरंतर यह प्रयास करता रहा कि युद्ध के लिए सहायता प्राप्त की जाए। बालाघाट के कलेक्टर वॉटसन ने बालाघाट हाई स्कूल में कांग्रेस की इस नीति की आलोचना की तो छात्रों ने कलेक्टर की सभा भंग कर दी। दूसरे दिन विद्यालय में छात्रों ने प्रार्थना के समय ''झण्डा ऊंचा रहे हमारा'' तथा ''वंदे मातरम्'' के नारे लगाए तो सरकार ने कुछ छात्र नेताओं को गिरफ्तार कर लिया।

भारत छोड़ो आन्दोलन 1942 में बालाघाट जिले में खूब सक्रियता दिखाई। वारासिवनी में 20 अगस्त 1942 को निकाले गए जुलूस को तितर–बितर करने के लिए लाठियाँ भांजी। इसके जवाब में जनता ने पत्थर बरसाये। पुलिस ने गोली चला दी, जिसमें दशाराम फुलमारी शहीद हुआ। देश की आजादी के इस लम्बे संघर्ष में जिले में

कोई 300 से अधिक स्वतंत्रता संग्राम सेनानी थे जिनमें से कुछ प्रमुख नाम इस प्रकार हैं – सर्वश्री हरिशंकर अग्रवाल, हिरदेलाल मरार, सोया नाई, सीताराम कुनबी, शिवनारायण, रामचंद्र, इंद्रापवार बद्दूलाल मराठे, प्रकाश गढ़ेवाल, दुर्गाप्रसाद दीक्षित, श्रीमती गंगाबाई चौबे, श्रीमती कारीबाई, अर्जुनलाल महार, कन्हैयालाल खड़े आदि आदि। बलिदानियों तथा आन्दोलनकारियों का सादर अभिनंदन।

● जिला छिंदवाड़ा

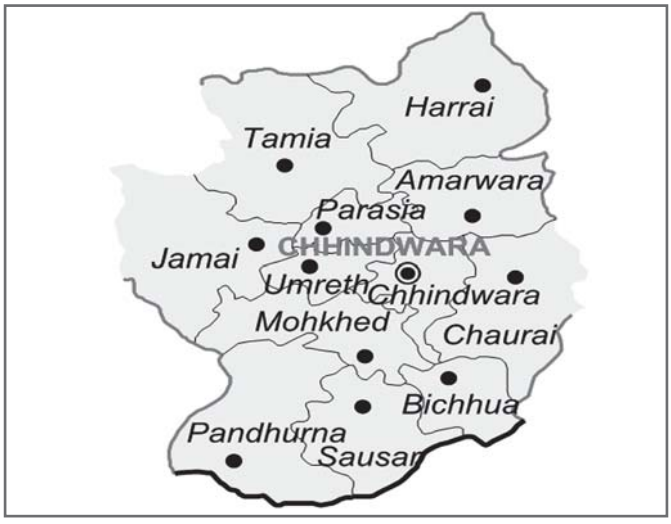

यह जिला क्षेत्रफल की दृष्टि से मध्यप्रदेश का सबसे बड़ा जिला है। जिले में कोरकू जनजाति की प्रधानता है लेकिन तामिया के पातालकोट में भारिया जनजाति का भी निवास है। इस जिले में अमरवाड़ा, बिधुआ, चौरई, छिंदवाड़ा जामई, पांढुर्ना, परासिया, सौसर, तामिया, उमरेठ नामक 10 तहसीलें हैं जो प्रदेश में सर्वाधिक है।

राष्ट्रीय आन्दोलन की गतिविधियों की शुरुआत इस जिले में नागपुर कांग्रेस अधिवेशन के बाद ही प्रारम्भ हुई। अली बन्धु छिंदवाड़ा जेल में रहे थे अत: उनके प्रयास से 6 अप्रैल 1921 को महात्मा गांधी छिंदवाड़ा पधारे। उनकी सभा हेतु अपार उत्साह था, इसमें कोई 10,000 से अधिक लोग एकत्रित हुए। गांधीजी के आह्वान पर सर्वश्री व्ही. डी. सापलेकर, शांताराम मांजरेकर, व्ही. आर. ढोंक, ओ.पी. घाटे, व्ही. एस, शर्मा तथा मोहन सिंह ठाकुर ने वकालत छोड़ कर सार्वजनिक जीवन में कार्य करने की घोषणा की।

वर्ष 1922 में प्रदेश कांग्रेस कमेटी का अधिवेशन होशंगाबाद में हुआ। इसमें सापलेकर घाटे सहित कुछ लोगों ने भाग लिया। इनके मार्गदर्शन में नागपुर से निकटता के कारण नेताओं तथा कार्यकर्ताओं ने भाग लिया। इसके बाद सविनय अवज्ञा आन्दोलन के अंतर्गत हुए जंगल सत्याग्रह ने तो गांव–गांव में जागृति की लहर फैला दी एवं बड़ी संख्या में लोगों ने जंगल कानून तोड़ा। जिले के रामाकोना और खुरावा नामक स्थानों पर कार्यकर्ताओं ने आरक्षित वनों की कटाई कर विदेशी सत्ता पर प्रहार किया।

हरिजन उद्धार कार्यक्रम में जब महात्मा गांधी ने मध्यप्रदेश का दौरा किया तो वे छिंदवाड़ा भी आए। यहाँ उन्होंने हरिजन मोहल्लों का निरीक्षण किया। आदिवासियों ने उन्हें 100 रुपयें की थैली भेंट की।

वर्ष 1941 का व्यक्तिगत सत्याग्रह का नेतृत्व श्यामाचरण सोनी व बैरिस्टर गुलाब चौधरी ने किया। इसी प्रकार भारत छोड़ो आन्दोलन में भी पूर्ण उत्साह से भाग लिया इनमें सर्वश्री कृष्ण स्वामी नायडू, जयदेव उड़गे, देवमन वानखेड़े, बलिराम मिस्त्री बालाजी, भगवानपाल शुक्ल, हरकारे कापसे, अब्दुल मजीद खां, आत्मानंद घाटोद, श्रीकृष्ण तरपड़े, गणपत बेलदार, गोविंद माधव, गंगाराम कुंटे, चंदू जी अप्पा, तुलसीराम तेली, नीलकंठराव मुण्डे, बलीराम गाडगिल, अर्जुन सिंह सिसोदिया, उदयराम शर्मा, श्रीकृष्ण रेखड़े, कालीप्रसाद तिवारी, केसरी प्रसाद ठाकुर, गणेश प्रसाद, गुलाबचंद राठी, गोकुलसिंह बैस,चुन्नीलाल कलाल, चोखेलाल मान्धाता, जयराम वर्मा, नाथू जी, बाबूलाल ठाकुर आदि आदि सम्मिलित थे।

● जिला डिण्डौरी – मण्डला

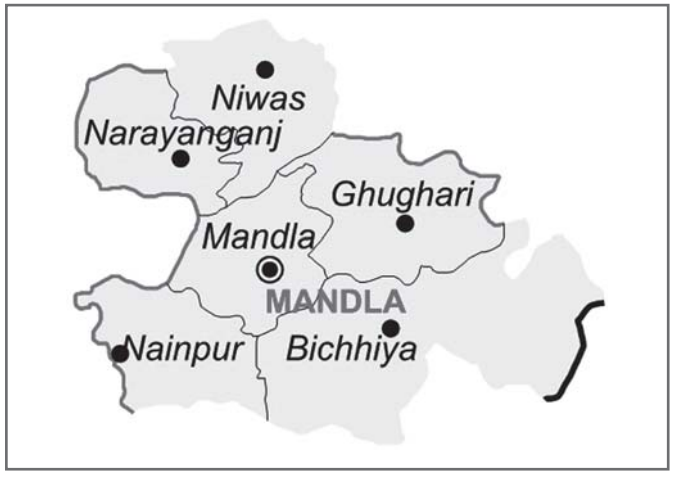

आदिवासी प्रधान डिण्डौरी – मण्डला जिले पहले एक ही थे। 25 मई 1999 को डिण्डौरी को मण्डला से अलग कर नवीन जिला बनाया गया है। यह जिला प्रदेश में सबसे कम जनसंख्या घनत्व (94 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर) वाला जिला है। लिंगानुपात में चौथा स्थान है (1000:1002)। यहाँ बैगा तथा गौंड जातियाँ पाई जाती है। नर्मदा नदी इस जिले के मध्य से गुजरती है। मण्डला जिला रामगढ़ की शासिका ''अवन्तिबाई'' से पहचाना

जाता है। रामगढ़, मण्डला जिले की पहाड़ियों में स्थित छोटी सी जागीर का अंतिम शासक लक्ष्मण सिंह का पुत्र था विक्रम सिंह। अंग्रेजों ने विक्रम सिंह को अन्तिम शासन के योग्य न मानकर इसका प्रबंधक एक तहसीलदार को बना दिया। रानी ने अंग्रेजों द्वारा नियुक्त तहसीलदार को निकाल भगाया और अपने राज्य का शासनसूत्र अपने हाथ में ले लिया। जिसे अंग्रेजों ने कम्पनी सरकार के प्रति विद्रोह माना और 1 अप्रैल 1858 को लेफ्टिनेंट वार्टन ने मण्डला पर दो ओर से आक्रमण कर दिया। युद्ध क्षेत्र में अपनी पराजय देखकर रानी ने अंतिम क्षण तक अपनी स्वतंत्रता की रक्षा करते हुए अपनी कटार से अपनी जीवन लीला समाप्त कर ली। अमर हुतात्मा को शत-शत प्रणाम।

राष्ट्रीय आन्दोलन आन्दोलन के दौरान बंग-भंग आन्दोलन के दौरान मण्डला के बैरिस्टर उमेशदत्त पाठक ने भी सहभागिता की थी। सन 1912 में पाठक मण्डला लौट आए और उन्होंने अपनी कानूनी ज्ञान से बेगार प्रथा के विरुद्ध सरकार पर 23 मुकदमे दायर किये व इस अमानवीय प्रथा को बंद करवाया। सन 1917 में मण्डला में प्रथम राजनीतिक कान्फ्रेंस का आयोजन किया गया। सन् 1918 में मण्डला में कांग्रेस की स्थापना हुई थी।1921 के नागपुर अधिवेशन के बाद यहाँ के लोगों ने नागपुर जाकर झण्डा सत्याग्रह में भाग लेकर अपनी राष्ट्रीयता का परिचय दिया।

1930 में सविनय अवज्ञा आन्दोलन के अंतर्गत जंगल सत्याग्रह मण्डला, डिण्डौरी, भुआबिछिया आदि स्थानों पर बड़े उत्साह पूर्वक संपन्न हुआ। इस सत्याग्रह में बढ़ती सक्रियता के कारण शासन के अत्याचार भी बढ़ते गए। इसके विरुद्ध 1932 में गंधू भोई के नेतृत्व में लगभग 500 सशस्त्र आदिवासियों ने डिण्डौरी तहसील को घेर लिया। इस विद्रोह की खबर पर जबलपुर से सेना डिण्डौरी पहुँची और आन्दोलनकारियों को समझा-बुझाकर अपने अपने गांव वापस लौटा दिया। 1933 में जब महात्मा गांधी मण्डला आए तो गंधू भोई अपने साथियों को लेकर उनके दर्शन करने आया था। आगे चलकर गंधू भोई गुमनामी के अंधेरे में खो गया।

महात्मा गांधी अपने अछूतोद्धार कार्यक्रम के अंतर्गत 1933 में मध्यप्रदेश में आए तो वे 6 दिसंबर को मण्डला पहुँचे। मण्डला में उनके निवास की व्यवस्था गिरिजाशंकर अग्निहोत्री के यहाँ की गई थी। सभा में जाने के पूर्व गांधी जी ने एक देवालय में रामलाल पाटीदार की पत्नी मुन्नीबाई से 500 रुपये की थैली प्राप्त की थी। मण्डला में गांधी जी ने लालनाथ नामक एक सनातनी से छुआछूत पर शास्त्रार्थ भी किया था।

मण्डला जिले में राष्ट्र चेतना निरंतर द्विगुणित होती रही। भारत छोड़ो आन्दोलन के दौरान यहाँ का जनसमुदाय कंधे से कंधा लगाकर खड़ा हो गया एवं 15 अगस्त 1942 को मण्डला नगर में एक विशाल जुलूस निकाला गया, जिसका नेतृत्व जगन्नाथ हाई स्कूल के छात्र उदयचंद जैन ने किया। मजिस्ट्रेट ने जुलूस को रोकने का प्रयास किया पर वह न रूका अत: गोली चलाने का आदेश दे दिया। उदय जैन ने छाती खोलकर ललकारा - 'चलाओ गोली' तत्काल गोली चली व उदयचंद की छाती चीर कर निकल गई। इस घटना के बाद जनता ने अहिंसा का रास्ता छोड़कर हिंसा और तोड़-फोड़ का मार्ग अपना लिया। ब्रिटिश सरकार ने भी आन्दोलनकारियों को भीषण यातनाएं दी।

मण्डला डिण्डौरी क्षेत्र में जिन आन्दोलनकारियों ने संघर्ष किया - सर्वश्री अम्बिकागिरी, कालीचरण राय, कोदूलाल लोधी, गोकुल सिंह भरकाम, गोरेलाल गौंड, जुगल किशोर कस्तवार, तेजूलाल कौल, प्यारेलाल कुर्मी, बटेदी भोई, बिहारीलाल बहरे, भूपतलाल ढ़ीमर, मंतूलाल मातेले, मन्नूलाल विश्वकर्मा, मायाराम काछी, रामलाल राजपूत, शंकरलाल पागल, सुरेन्द्र लाल सा, हरिप्रसाद लोहार आदि -आदि। शहीदों एवं आन्दोलनकारियों को शत-शत प्रणाम।

● जिला जबलपुर - कटनी

जबलपुर जिला प्रत्येक दृष्टि से अपना विशिष्ट महत्व रखता है। इस जिले में सम्राट अशोक के दो अभिलेख मिले हैं। इस जिले के नाम की उत्पत्ति जाबालि ऋषि से हुई है। इसके एक जिले कटनी को कभी 'मुडावरा' तथा बिलहरी को 'पुष्पावती' नगरी' कहा जाता था। ''त्रिपुरी'' कभी कलचुरी राजाओं की राजधानी रही है। इस जिले में वर्तमान में 4 तहसीलें क्रमश: जबलपुर, कुण्डम, सीहोरा व

पाटन है। वर्ष 1998 में पूर्व जबलपुर जिले की कटनी तहसील को काटकर कटनी जिला बनाया गया। इसे 'चूना नगरी' के नाम से भी जाना जाता है। वर्तमान में कटनी जिले में बहोरीबंद, ढीमरखेड़ा, मुडावरा, विजय राधौगढ़ व रीठी नामक 5 तहसीलें हैं।

इस प्रदेश के जबलपुर नगर को यह गौरव प्राप्त है कि यहाँ सबसे पहले क्रांति की हलचल प्रारम्भ हुई। 16 जून को एडजुटेंट मिलर अपनी रेजीमेंट का निरीक्षण कर रहा था कि एक भारतीय सैनिक ने उस पर बंदूक से आक्रमण कर दिया। उसे कैद कर फांसी पर लटका दिया गया। इस घटना के 2 दिन बाद 52वीं बटालियन की तीन कंपनियों ने 'कंपनी सरकार' की तरफबंदूकें तान दी जिन्हें बाद में समझा–बुझाकर शांत कर दिया गया।

उन दिनों गोंड वंश के अंतिम शासक 'राजा शंकरशाह' अंग्रेजों के पेंशनर के रूप में जबलपुर के उपनगर 'पुरवा' में रह रहे थे। शंकरशाह व उनके साथियों ने मोहर्रम के दिन जबलपुर की छावनी पर आक्रमण करने की योजना बनाई। इस योजना की किसी ने एक दिन पूर्व जबलपुर के डिप्टी कमिश्नर को शिकायत कर दी। शंकरशाह के घर पर तलाशी करवाने पर उसके पुत्र रघुनाथशाह द्वारा लिखी गई एक कविता भी बरामद हुई जिससे ज्ञात हुआ कि पिता–पुत्र कंपनी सरकार के प्रति विद्रोह में जुटे हैं। जबलपुर कमिश्नर ने इस कविता को अंग्रेजी में अनुवाद भी कराया।

पिता–पुत्र और उनके सहयोगियों पर मुकदमा चलाया गया। 18 सितंबर 1857 को राजा शंकरशाह व उनके पुत्र रघुनाथ को राजद्रोह के अपराध में तोप के मुंह पर बांध कर उड़ा दिया। इस कृत्य को जनता को देखने के लिए बकायदा लोगों को आमंत्रित किया। रानी की ओर से अधजले अवशेष एकत्र कराने पर अंग्रेज अधिकारियों के होठों पर तृप्त प्रतिशोध की मुस्कुराहट देखी गई। रानी ने विधवा होकर भी अंग्रेजों से संघर्ष जारी रखा और डटकर युद्ध भी किया पर विशाल सैन्य शक्ति के सामने अपने को असहाय पाकर कटार भौंक का मृत्यु का वरण कर लिया था।

इस प्रकार दमन चक्र चलाकर भले ही अंग्रेजों ने राजा शंकरशाह और रघुनाथ शाह को अपने रास्ते से हटा दिया हो, पर वे उस महान रानी दुर्गावती के वंशज थे, जिसने अकबर के सामने अपनी आजादी की हुंकार भरी थी। शंकरशाह की विधवा रानी ने भी जो प्राणोत्सर्ग किया, इसी प्रकार विजय राधौगढ़ के ठाकुर सरजू प्रसाद ने भी कटार भौंक कर जो प्रा आत्महत्या कर ली। इससे आगे चलकर भारतीयों में आत्म बलिदान की भावना का विकास हुआ।

प्रथम स्वातंत्र्य समर के बाद मध्यप्रदेश चीफ कमिश्नरी प्रदेश बनाया गया जिसमें 19 जिले थे। जबलपुर में फौजी छावनी का प्रमुख केन्द्र बना। भारतीयों को निहत्था बनाने की दृष्टि से 1860 में शस्त्र कानून लाकर भारतीयों के शस्त्र जब्त कर लिए गए। आगे चलकर ए. ओ. ह्यूम के प्रयासों से कांग्रेस की स्थापना हुई तो उसको प्रथम अधिवेशन में जबलपुर के लोगों ने भागीदारी की। कांग्रेस का द्वितीय अधिवेशन 1906 में जबलपुर में हुआ। दादा साहब खापर्डे और डॉ. मुंजे ने मई 1907 में जबलपुर तथा कटनी में राष्ट्रवादी कांग्रेस की शाखाएँ स्थापित की।

जबलपुर क्रांतिकारी गतिविधियों का भी केन्द्र रहा। इसके केन्द्र बिंदु रॉबर्टसन कॉलेज के छात्र चिदम्बरम पिल्लई व उनके मित्र थे। घोष तथा पिल्लई इतिहास प्रसिद्ध 'कामा गोरा मारू' काण्ड में भी अभियुक्त रहे हैं।लोकमान्य तिलक तीन बार जबलपुर आये। उनकी द्वितीय यात्रा (7–10–17) के दौरान भाषण में सम्मिलित होने के कारण 12 छात्रों को उनकी संस्थाओं ने निकाल दिया। तिलक ने अपनी तीसरी यात्रा (3–6–1920) के अवसर पर विशाल जनसमुदाय के समक्ष अपने प्रख्यात नारे ''स्वराज हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है और उसे हम लेकर रहेंगे'' को उद्घोषित किया था।

महात्मा गांधी पांच बार जबलपुर आए। 20 मार्च 1921 की प्रथम यात्रा में उन्हें रु 20,000 की सम्मान निधि भेंट की गई थी। गांधी जी के आगमन से लोगों का ध्यान अहिंसात्मक आंदोलन की ओर गया। 1923 ई. जबलपुर टाउन हॉल पर झण्डा फहराने के विवाद में तत्कालीन डिप्टी कमिश्नर के इशारे पर पुलिस वाले ने आंदोलनकारियों के ध्वज को पाँवों में कुचल दिया। इस पर रोषपूर्ण आंदोलन 'झण्डा सत्याग्रह' प्रारम्भ हो गया। इसमें पं. सुन्दरलाल को छह माह की सजा हुई। 13 अप्रैल 1923 को जलियावाला दिवस के अवसर पर झण्डा ले जाते जुलूस पर भीषण लाठीचार्ज किया गया।

इससे झण्डा सत्याग्रह पूरे देश में चल पड़ा। नागपुर में यह अप्रैल से अगस्त तक चला जिसमें जबलपुर व अन्य नगरों के 8000 स्वयंसेवकों ने भाग लिया। अंत में अंग्रेज सरकार झुक गई। झण्डे के सम्मान को मान्यता दी। इस प्रकार झण्डे के साथ जुलूस निकालने की परम्परा चली।

गांधी जी ने सविनय अवज्ञा आंदोलन को नमक सत्याग्रह के रूप में प्रारम्भ किया गया। जबलपुर में इस आंदोलन का संचालन सेठ गोविन्ददास व पं. द्वारका प्रसाद मिश्र के नेतृत्व में तिलक भूमि जबलपुर से प्रारम्भ किया गया। 6 अप्रैल 1930 ई. को सत्याग्रहियों का एक बड़ा जुलूस वीरांगना महारानी दुर्गावती की समाधि नीमखेड़ा के पास पर प्रतिज्ञा करने गया कि – ''हम स्वतंत्रता के लिए प्राण दे देंगे, पर एक डग भी पीछे नहीं हटेंगे।''

समाधि से वापस लौटने पर तिलक भूमि तलैया जबलपुर में 8 अप्रैल को नेताओं ने जबलपुर, सिहोरा, कटनी में नमक बनाया उसे नीलाम किया। किंतु कोई गिरफ्तारी नहीं की गई। इसी आंदोलन के अंतर्गत वन क्षेत्रों में जंगल सत्याग्रह का आयोजन किया गया इसके अंतर्गत सेठ गोविन्ददास, पं. माखनलाल चतुर्वेदी, पं. रविशंकर शुक्ल, पं. द्वारकाप्रसाद मिश्र और विष्णुदयाल भार्गव को गिरफ्तार किया गया। इनमें से प्रथम चार को दो–दो वर्ष तथा भार्गव को 1 वर्ष का कठोर कारावास दिया गया इस आंदोलन के अंतर्गत विदेशी वस्त्रों का बहिष्कार तथा विदेशी वस्त्रों की होली जलाने का कार्यक्रम भी सम्पन्न हुआ। जबलपुर के दुलीचंद जैन इसके प्रमुख थे। इस आंदोलन में भाग लेने के कारण पं. बालमुकुंद त्रिपाठी को सर्वाधिक लम्बी जेल भुगतनी पड़ी। उन्हें महात्मा गांधी की सूचना पर लॉर्ड हडसन के आदेश के बाद छोड़ा गया।

द्वितीय अवज्ञा आंदोलन के अंतर्गत 4 जनवरी 1932 को एक विशाल आमसभा जबलपुर में आयोजित की गई। इसके कारण सेठ गोविन्दास, पं. द्वारका प्रसाद मिश्र, पं. सुन्दरलाल तथा ठाकुर लक्ष्मणसिंह चौहान को क्रमश: एक–एक वर्ष तथा 9 व 6 माह की सजा तथा क्रमश: 2000, 1500, 100 रूपये का जुर्माना भी किया गया। इसी समय दैनिक लोकमत समाचार पत्र प्रतिबंधित कर दिया गया।

1939 में कांग्रेस के त्रिपुरी अधिवेशन में सेठ गोविन्ददास स्वागत समिति के अध्यक्ष बनाए गए। यह अधिवेशन 4 – 9 मार्च तक जबलपुर से 13 किलोमीटर दूर त्रिपुरी नामक प्राचीन नगर में हुआ। अधिवेशन की बस्ती का नाम विष्णुदत्त नगर रखा। आम किसानों में चेतना जागृत करते हुए हल धारी किसान की भव्य प्रतिमा बनाई गई। अधिवेशन के अध्यक्ष सुभाष चंद्र बोस बीमार थे, अत: उनकी तस्वीर 52 हाथियों वाले रथ में रखकर सभा स्थल पर लाई गई। इसी दौरान 1 सितंबर 1939 को द्वितीय विश्व युद्ध प्रारम्भ हो गया। उस दौरान गांधीजी ने तय किया कि इंग्लैंड के किसी प्रकार की आर्थिक मदद न की जावे। 10 अक्टूबर 1939 को आचार्य विनोबा भावे ने सबसे पहले इसका सूत्रपात किया। इस आंदोलन को गति प्रदान करने हेतु कांग्रेस के दो शीर्षस्थ नेता पं. जवाहरलाल नेहरू तथा डॉ. राजेन्द्र प्रसाद जबलपुर पधारे।

भारत छोड़ो आंदोलन का प्रस्ताव पास होते ही कांग्रेसी अवैध घोषित कर दी गई। उसके शीर्षस्थ सभी नेता गिरफ्तार कर लिए गए। जबलपुर में 9 अगस्त 1942 को तिलक भूमि पर सार्वजनिक सभा का आयोजन किया गया। एक सप्ताह की हड़ताल रखी गई। 11 व 14 अगस्त को फव्वारे पर से निकलने वाली रैली में लाठी चार्ज किया गया। दिनांक 14 अगस्त 1942 के गोली चालन की गई जिसमें गुलाबसिंह नामक युवक शहीद हुआ।

27 फरवरी 1945 को जबलपुर में स्थित भारतीय सिग्नल ट्रेनिंग कोर के जवानों ने मुम्बई में रॉयल इंडियन नेवी के विद्रोह की सहानुभूति प्रदर्शन करने के लिए हड़ताल की। एक हड़ताली जवान ने इस अवसर पर आयोजित सभा में कहा कि – 'यद्यपि हम सब आज गुलामों के रूप में इकट्ठे हुए हैं लेकिन हम गुलाम रहकर मरना नहीं चाहते। देश की आजादी के लिए हम अपने खून की आखिरी बूँद तक बहाने के लिए तैयार हैं।' भारत छोड़ो आंदोलन के बीच सरकार ने जो जुल्म ढाये तो आंदोलन भी हिंसक हो उठा। टेलीफोन के तार काटे गए, पोस्ट ऑफिसों में आग लगाई गई, सरकारी भवनों में तोडफोड़ भी खूब हुई।

जबलपुर जिले में कोई 962 स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों की सूची मिलती है। जिनमें द्वारकाप्रसाद मिश्र, सेठ गोविन्ददास, सुभद्राकुमारी चौहान जैसी लब्ध प्रतिष्ठित हस्तियाँ भी सम्मिलित हैं और इनके सिवाय कोई एक दर्जन क्रांतिकारी भी हैं जिनमें नजरबंद पांच सूरमा शिवप्रसाद शर्मा, शैलेन्द्र घोष, प्रफुल्ल कुमार चक्रवर्ती, मास्टर देवीशरण सिंह, चिदम्बरम् पिल्लई, देवनारायण तिवारी, यशवंत सिंह चौहान, विनायकराव कापले, नलिनी मोहन मुखर्जी, नलिनी कांत घोष आदि।

इन सबके सम्मिलित प्रयासों से देश को लम्बी दासता से मुक्ति मिली और शायर का यह शेर सार्थक हुआ –

इलाही वह भी दिन होगा, जब अपना राज देखेंगे।
जब अपनी ही जमीन होगी और अपना आसमां होगा।

● **जिला नरसिंहपुर**

नर्मदा बेसिन के 15 जिलों में स्थित नरसिंहपुर सोयाबीन उत्पादक जिलों में एक गिना जाता है। जिले के 'देवाकछार' नामक स्थान से कोई 5 लाख साल पुराने हाथी का जीवाश्म डॉ वि. श्री. वाकणकर (उज्जैन) द्वारा खोजा गया था। वर्तमान में यह कीर्ति मंदिर संग्रहालय वि.वि.वि. उज्जैन में प्रदर्शित है। वर्तमान में इस जिले में नरसिंहपुर, गोटेगांव, करेली, गाडरवारा व तेंदूखेड़ा नामक तहसीलें सम्मिलित हैं।

वर्तमान मध्यप्रदेश में ईस्ट इंडिया कंपनी के शासन के खिलाफ सर्वप्रथम आंदोलन सन् 1842 में हुआ था, जिसे बुंदेला विद्रोह की संज्ञा दी गई। इस विद्रोह का मूल कारण सागर के उत्तरी भाग में दो प्रभावशाली बुंदेला ठाकुरों पर एक असंभव राशि का जुर्माना वसूलने के लिए की गई डिग्री के विरुद्ध प्रारम्भ हुआ और उत्तरी क्षेत्र के विस्तृत भू-भाग में वन अग्नि की तरह फैल गया। नरसिंहपुर क्षेत्र में इस विद्रोह का नेतृत्व मदनपुर के गोंड सरदार डेलनशाह कर रहे थे। इस विद्रोह के कारण इस क्षेत्र के एक बड़े भूभाग को अंग्रेजी शासन से मुक्त करा दिया गया। दुर्भाग्य से 1842 में हिरदेशाह का परिवार व 1839 मधुकर शाह के गिरफ्तार किए जाने से अप्रैल 1843 ई. में आंदोलन समाप्त हो गया। दोनों पक्षों ने अपनी-अपनी भूल स्वीकार कर शांति स्थापित कर ली। लार्ड एलन ब्रो ने प्रांत का पूरी तरह पुनर्गठन कर नरसिंहपुर को एक नया जिला बना दिया। इस नवीन जिले का प्रशासक कर्नल एलीमन को बनाया।

अंग्रेजों के विरुद्ध नरसिंहगढ़ क्षेत्र के निवासियों के मन में प्रतिकार की भावना तो विद्यमान थी ही। 1857 ई. के स्वातंत्र्य में यह पुन: भड़क गई। इस समय नरसिंहगढ़ का डिप्टी कमिश्नर कैप्टन टर्नन था। अगस्त 1857 में भोपाल तथा सागर क्षेत्र के क्रांतिकारी चवरपाड़ा परगने में घुसे और उन्होंने तेंदूखेड़ा नगर और पुलिस थाने को लूट लिया। क्रांतिकारियों पर नियंत्रण करने के लिए जबलपुर से दो कंपनियों को बुलाया। कंपनी की सेना ने नरसिंहगढ़ के परेड मैदान में गजाधर तिवारी को 10 अक्टूबर 1857 को दोषी ठहरा कर तोप से उड़ा दिया।

गजाधर तिवारी का बलिदान व्यर्थ नहीं गया, इससे 52 वी पैदल सेना के सैनिक उखड़ गए और वह मेहरबान सिंह के नेतृत्व में नरसिंहपुर को घेरने चले आए। क्रांतिकारियों के अन्य दल ने शिवबक्श लोधी के नेतृत्व में दक्षिण-पूर्व से आक्रमण किया गया। सांकल के युद्ध में मेहरबान सिंह की पराजय हुई और वह भागने में सफल रहा। उसकी विप्लवकारी गतिविधियाँ चलती रही। एक दिन उसने सांकल की पुलिस चौकी में आग लगाकर कंपनी सरकार को चुनौती दे दी। अंतत: कैप्टन टर्नन एवं कैप्टन वुली की संगठित सेना ने क्रांतिकारियों का दमन कर दिया। दलगंजन सिंह आदि को फांसी पर लटका दिया गया। मई 1858 में डेलनशाह भी पकड़ लिए गए।

जबलपुर के समीप होने के कारण यहाँ की हलचल का प्रभाव नरसिंहपुर पर अवश्य पड़ा। 1918 में प्रांतीय कांग्रेस कमेटी की विधिवत मान्यता के बाद अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के लिए नरसिंहपुर से माणकचंद कोचर का नाम प्रस्तावित हुआ। सन 1920-21 में नरसिंहपुर में कांग्रेस की शाखा स्थापित की गई।

सविनय अवज्ञा आंदोलन के दौरान नरसिंहपुर जिला अछूता नहीं रहा। यहाँ जंगल कानून का व्यापक रूप से उल्लंघन किया गया। चींचली में यह सत्याग्रह पूरे एक सप्ताह तक चला। बचई में आंदोलन प्रारम्भ करने के पूर्व ही सभी स्वयंसेवकों को गिरफ्तार कर लिया। इसके बावजूद जनता में सत्याग्रह के प्रति उत्साह बनता ही रहा।

1932 में शासन ने महाकौशल कांग्रेस एवं जिला कांग्रेस कमेटी को गैरकानूनी घोषित कर दिया। इसी वर्ष इस जिले की राजस्व जिले के रूप में स्वतंत्र सत्ता समाप्त कर उसे होशंगाबाद में मिला दिया गया।

1933 में हरिजन फंड जमा करने हेतु जब महात्मा गांधी पधारे इस समय करेली में जिला कांग्रेस कमेटी का मुख्यालय था। हजारों लोगों ने अपने प्रिय नेता के आगमन पर उन्हें थैली भेंट की। 1939 में जबलपुर के समीप प्राचीन शहर त्रिपुरी में अखिल भारतीय कांग्रेस के अधिवेशन में नरसिंहपुर जिले से भारी संख्या में स्वयंसेवक व अन्य कार्यकर्ता पहुंचे जिनसे जिले में राष्ट्रीय चेतना का भाव जागृत हुआ।

वर्ष 1940-41 में व्यक्तिगत सत्याग्रह में इस जिले के 311 सत्याग्रहियों मई 1941 तक भाग लिया। इन्हें भारत सुरक्षा अधिनियम के अंतर्गत विभिन्न धाराओं में सजा दी गई। मुम्बई

कांग्रेस में जीवनी ज्योंही ही भारत छोड़ो आंदोलन की घोषणा हुई त्योंही ब्रिटिश सरकार ने 10 अगस्त 1942 को ही जिला कांग्रेस कमेटी को अवैध घोषित कर दिया। करेली स्थित कार्यालय के कागजात जब्त कर लिए गए। करेली, गोटेगांव में भी विद्यार्थियों ने जुलूस निकाले, हड़ताल रखी। 14 अगस्त 1942 को गाडरवारा तहसील कार्यालय पर झण्डा फहराने के प्रयास में 8 लोग बंदी बनाए गए। तेंदूखेड़ा के बाबूलाल की गिरफ्तारी पर 300 लोगों की भीड़ ने पुलिस को घेर लिया।

23 अगस्त 1942 को चीचली में नर्मदा प्रसाद और बाबूलाल की गिरफ्तारी का विरोध किया जा रहा था तब पुलिस ने भीड़ पर 20 चक्र गोली चलाई जिसमें मंशाराम जबाटी तथा श्रीमती गौरी बाई शहीद हो गई। इसके बावजूद आंदोलन न थमा और अगले दिन पुलिस ने 14 लोगों को गिरफ्तार कर लिया। आंदोलन के दौरान नरसिंहपुर के क्रांतिकारी वीर छोटेलाल काछी ने सिविल कोर्ट पर झण्डा फहराने की घोषणा कर दी। ब्रिटिश शासन ने कड़ी सुरक्षा की पर बंदूके तनी की तनी रह गई। वीर सेनानी छोटेलाल काछी ने जान की बाजी लगाकर अपने संकल्प को पूर्ण किया। सिविल कोर्ट से कूदने के कारण उन्हें गिरफ्तार कर मुकदमा चलाया हुआ और उन्हें छह माह की सजा दी गई।

पुलिस के अत्याचार से जब भारत छोड़ो आंदोलन नेतृत्व विहीन हो गया तो नरसिंहपुर जिले के मानेगांव के ठाकुर रुद्रप्रताप सिंह को आंदोलन के नेतृत्व का दायित्व स्वयं गांधीजी ने प्रदान किया। ठाकुर रुद्रप्रताप सिंह ने बड़ी निर्भीकता से आंदोलन का नेतृत्व किया। वह अपने विश्वस्त हेमराज झारिया तथा झीनीराम विश्वकर्मा के सहयोग से गोहचर रेलवे पुलिया को उड़ा दिया। यद्यपि पुलिस ठाकुर रुद्रप्रताप सिंह के खिलाफ कोई प्रमाण न जुटा सकी पर ठाकुर रुद्रप्रताप सिंह के इकबालिया बयान के अनुसार उन्हें गिरफ्तार करके नरसिंहपुर जेल भेज दिया। परंतु लाख प्रताडना के बाद जब पुलिस उनसे अपराध न उगलवा सकी तो माफी मांगने का प्रस्ताव करने हेतु जोर डाला। जेल में ठाकुर रुद्रप्रताप सिंह चेचक की बीमारी से ग्रस्त हो गए और इसी दौरान रूद्रप्रताप सिंह की 29 मार्च 1945 ई. को कारावास में ही उनकी मृत्यु हो गई।

नरसिंहपुर जिले की कोई 75 स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों की सूची प्रकाशित है, जिनमें से सर्वश्री अमृतलाल चंचल, गंगाधर शास्त्री, नर्मदा प्रसाद कसेरा, ठाकुर निरंजना सिंह, नितीराज सिंह चौधरी, पुरुषोत्तम राठी, पूरनलाल नामदेव, बद्रीनाथ चौधरी, भगवंत प्रसाद झरिया, मुरलीदास बैरागी, मंसाराम कसैरा, रघुनाथ सिंह किलेदार, राजा भैया, गौरव, लालजी बढ़ई, हरिविष्णु कामथ, हल्कू प्रसाद नेमा, हल्कू सिंह लोधी आदि प्रमुख है।

वीरों का खेल मरना कायरों का काम डरना।
वे कर्म पथ जो चलते मरने से क्यों डरेंगे।।

● जिला सिवनी

सिवना वृक्षों की बहुतायत के कारण इस जिले का नाम सिवनी पड़ा है। राष्ट्रीय राजमार्ग क्रमांक 7 इस जिले से गुजरता है। वर्तमान में इस जिले में बरघाट, घंसौर, केवलारी, कुरई, लखनादौन, सिवनी नामक 6 तहसीलें हैं। वन आवरण के मामले में सिवनी का स्थान मध्यप्रदेश में पांचवें क्रम पर है।

इस जिले में प्रथम स्वातंत्र्य समर काल में कोई महत्वपूर्ण घटना नहीं घटी। पर, इस जिले में 1916 से ही महत्वपूर्ण क्रांतिकारी गतिविधियों का संचालन हो गया था। ग्राम सिवनी में राष्ट्रीय आंदोलन के जनक प्रमुख वकील प्रभाकर हुण्डीराज जटार थे। इनका तिलक युग के नेताओं तथा क्रांतिकारियों से निकट का सम्पर्क रहा।

सिवनी का यह सौभाग्य ही रहा कि यह नागपुर-जबलपुर राजमार्ग पर स्थित है। अत: नागपुर कांग्रेस के बाद जबलपुर जाते समय महात्मा गांधी के चरण सिवनी में पड़े। इस प्रवास के दौरान गांधीजी ने तिलक स्वराज कोष के लिए मुक्त हस्त से दान देने की अपील की। गांधी जी के भाषण से प्रभावित होकर जटार ने वकालत छोड़ व अपनी पत्नी राधाबाई व दो बच्चों के साथ राष्ट्रीय आंदोलन में कूद पड़े।

नागपुर कांग्रेस के तुरंत बाद भगवानदीन, अर्जुनलाल सेठी, पं. मदन मोहन मालवीय, श्रीमती सरोजिनी नायडू, राधा मोहन आदि नेता समय-समय पर आए और उन्होंने विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार तथा विदेशी वस्त्रों की होली जलाने के उपक्रम किए।

नागपुर झण्डा सत्याग्रह में प्रभाकर जटार को सत्याग्रह का डिक्टेटर भी बनाया। चूँकि इसमें जिले के एस.पी. और तथा कलेक्टर अंग्रेज थे, अत: उन्होंने जोर-शोर से भाग लेने वाले

सत्याग्रहियों का स्वागत दमन से किया। स्वयं जटार को छः माह की सजा दी गई। यहाँ की स्थिति का अवलोकन करने लार्ड हार्डिंग तथा चेम्सफोर्ड सिवनी आए। छात्रों ने इनके लिए बनाए गए द्वारों में आग लगा दी। ब्रिटिश शिक्षा नीति के स्थान पर भारतीय शिक्षा का प्रचार-प्रसार करने हेतु महात्मा गांधी के नाम पर एक राष्ट्रीय विद्यालय की स्थापना की।

सविनय अवज्ञा आंदोलन के दौरान सिवनी के गांधी चौक में आम जनता के सामने दुर्गाशंकर मेहता ने नमक बनाया। बने नमक के पैकेट 5-5 रूपये में बैंचे गए। जिले के सैकड़ों स्वयंसेवकों ने जंगल सत्याग्रह में भाग लिया। स्वयंसेवक बाकायदा अंग्रेज सरकार को नोटिस देकर चार-चार, पाँच-पाँच के जत्थे में पहुंच जाते थे। इन सत्याग्रहियों पर फॉरेस्ट एक्ट के अनुसार कार्यवाही की जाती थी किंतु जब सत्याग्रहियों की संख्या बढने लगी तो उन्हें जंगल से दूर छोड़ा जाने लगा।

जंगल सत्याग्रह के दौरान ही टूरिया कांड घटित हुआ। सिवनी नागपुर मार्ग पर स्थित खवासा नामक स्थान से लगभग 5 मील की दूरी पर बसे वन ग्राम में घटी घटना ने सिवनी जिले के इतिहास में एक लोमहर्षक इतिहास जोड़ दिया। खवासा के मूका लुहार ने घोषणा की कि 9 अक्टूबर 1930 को टूरिया के निकट घास सत्याग्रह करेंगे। बड़ी संख्या में टूटिया में लोग एकत्र हो गए। पुलिस ने मूका लुहार व उसके साथियों को गिरफ्तार कर लिया। गिरफ्तारी से जनता भड़क गई, इस पर पुलिस ने गोली चलाना शुरु कर दी। इसमें तीन महिलाएं क्रमशः गुड्डुगाई, सकिन कामरोठ, श्रीमती रेनी बाई साकिन खंबा, श्रीमती देभोबाई साकिन भीलबा, श्री बिरझू भाई साकिन मुरझोड। इनकी लाशें भी इनके परिवार वालों को अंतिम संस्कार हेतु नहीं दी गई। उगलीं नामक स्थान पर आदिवासियों को पेड़ से बांधकर कोड़े लगाए गए। बड़ी संख्या में आदिवासी गिरफ्तार किए गए जिनमें वे लोग भी थे जो टूरिया गोली कांड में पुलिस की गोली के शिकार हुए थें।

अंगूठा निशानी कांड

यह घटना उन दिनों की है जब प्रत्येक अपराधी की पहचान के लिए उनकी उंगलियों के निशान लेने की प्रथा चल पड़ी थी। सिवनी की जेल में पं. रविशंकर शुक्ल ने इस प्रथा का विरोध किया क्योंकि वह आदतन अपराधी नही थे। डिप्टी कमिश्नर ने आदेश दिया कि बल प्रयोग कर निशान लिए जावे तथा बल प्रयोग कर अंगुलियों के निशान लिए गए। इस मनमानी प्रथा का डटकर विरोध हुआ। जेल से छूटकर शुक्ल ने अंग्रेजी शासन के खिलाफमानहानि का मुकदमा दायर किया। मध्यप्रदेश में सिवनी की जेल अत्यधिक सौभाग्यशाली रही जिसमें पं. रविशंकर के बाद नेता सुभाष चंद्र बोस भी (3-1-1932 से 30-5-1932) रहे। इसके बाद तो कई दिग्गज नेताओं ने अपनी जेल यात्रा को यहाँ स्मरणीय बनाया

गांधीजी के हरिजनोंद्धार कार्यक्रम के अंतर्गत सिवनी में जटार ,सुन्दरलाल मिश्र आदि के नेतृत्व में हरिजनों को मंदिर में प्रवेश कराया गया। सिवनी जिले को यह सौभाग्य मिला कि यहाँ दो बार महात्मा गांधी का आगमन हुआ। राधाबाई जटार के अथक प्रयासों से गांधी जी ने महावीर व्यायामशाला में महिलाओं की एक सभा को भी संबोधित किया। यहाँ महिलाओं द्वारा प्रदत गहनों को भी नीलाम कर नगद धन एकत्र किया गया।

1939 में त्रिपुरी में कांग्रेस का अधिवेशन हुआ। इस अधिवेशन में गोपनीय मदद देने के कारण डॉ. सिद्ध गोपाल की शासकीय सेवाएं समाप्त कर दी गई। वर्ष 1940-41 में व्यक्तिगत सत्याग्रह के कार्यक्रम में भी सिवनी की जनता ने उत्साह पूर्वक भाग लिया। दुर्गाशंकर मेहता तथा पी. डी. जटार को सत्याग्रह की अनुमति मिली जिन्होंने छपरा व कान्हीवाड़ा में आंदोलन किया इन्हें क्रमशः 1 वर्ष और 6 माह की सजा देकर नागपुर जेल में रखा गया।

भारत छोड़ो आंदोलन में प्रारम्भ में ही ब्रिटिश सरकार ने बड़े नेताओं को गिरफ्तार कर लिया था। सिवनी में दुर्गाशंकर मेहता व जटार की गिरफ्तारी सिवनी में की गई। गांधीजी की गिरफ्तारी पर सिवनी में जबरदस्त हड़ताल व विशाल जुलूस निकाला गया। इस आंदोलन को सक्रिय रखने हेतु गुप्त कमेटी एक हस्तलिखित पर्चा निकालती थी।1942 के आंदोलन के दौरान बिठली गांव में रेल के पाटों के बोल्ट खोले गए। इस पर गांव के लोगों पर 10000 का सामूहिक जुर्माना किया गया। इस जुर्माने का विरोध करने पर पुलिस ने नेताओं को पकड़कर सिवनी जेल में ही कोर्ट लगाकर एक-एक वर्ष तथा छह-छह माह की सजा दी। इस आंदोलन में विद्यार्थी तथा आदिवासी युवकों ने खूब उत्साह से भाग लिया।

हमें सिवनी जिले में लगभग 300 स्वतंत्रता सेनानियों की सूची मिलती है। इनमें सर्वश्री अकबर गौंड, अब्दुल रहमान फारुखी, कन्हैयालाल तंतुवाय, कुंदन भोई, के.वी. खरे. कुंजीलाल पटेल, कोमलचंद आजाद, छोटेलाल यादव, छोटूराम हरिजन, टेटुरा बमोर, दुर्गाशंकर मेहता, नत्थूलाल नारद, नन्हेलाल मिश्र, नारायणदास गुप्त, नारायण महाराज, नित्येन्द्र नाथ, शील प्रभावती नामदेव, विरथीचंद गोयल, मंसाराम हलवा, लक्की देवी आदि-आदि देशप्रेमियों को शत-शत प्रणाम।

6. नर्मदापुरम संभाग

नर्मदापुरम संभाग का नामकरण 27 अगस्त, 2008 को किया गया। इसके तहत होशंगाबाद, हरदा और बैतूल जिले आते हैं। जनसंख्या की दृष्टि से होशंगाबाद सबसे छोटा संभाग है। इस संभाग में 3 जिले व 18 तहसीलें हैं।

● जिला- नर्मदापुरम

होशंगाबाद नगर का पूर्व नाम नर्मदापुरम है जिसका उल्लेख परमार शासक नरवर्मा के ताम्रपत्र में मिलता है। इसी आधार पर म.प्र. शासन ने होशंगाबाद का नाम बदलकर ही अब मार्च 2021 में 'नर्मदापुरम' कर दिया है। माण्डू के सुल्तान हुशंगशाह गौरी ने 15वीं शताब्दी में इस नगर को तहस-नहस कर अपने नाम पर होशंगाबाद कर दिया था। जिले का लगभग 44 प्रतिशत भाग वनाच्छादित है। बांद्रभान में नर्मदा व तवा नदी का संगम है। यही म.प्र. का एकमात्र हिल स्टेशन पचमढ़ी में है। जिले में नर्मदापुरम, बाबई, इटारसी, सोहागपुर, बनखेड़ी, पिपरिया व सिवनी मालवा नामक 7 तहसीलें हैं।

नर्मदापुरम ब्रिटिश शासित होने के कारण अंग्रेजों के लिए सुरक्षित स्थान था। यही कारण था कि जब 1 जुलाई 1857 ई. को जैसे ही इन्दौर में क्रान्ति हुई वैसे ही ड्यूरेन्ड इन्दौर से भागकर होशंगाबाद की ओर रवाना हुआ। उसके साथ भगोड़े दल में 17 अधिकारी 08 महिलाएँ और बच्चे सम्मिलित थे। मार्ग में कोई दुर्घटना नहीं घटी। कर्नल ड्यूरेन्ड व भोपाल का पोलटिकल एजेन्ट दोनों क्रमशरू 9 व 14 जुलाई को होशंगाबाद पहुँच गये। इनके भागने से लोगों को लगा कि Authority of the copany's Government hed ended.

इसी प्रकार जब 4 जुलाई 1857 को आगर की छावनी में क्रान्ति हुई तो केप्टन कार्ले व अन्य यूरोपियन्स भी भाग कर होशंगाबाद ही आये थे। क्रान्तिकारियों की दहशत इतनी थी कि कर्नल ड्यूरेन्ड ने होशंगाबाद में कोई 5 दिन ही विश्राम किया और वह औरंगाबाद से चली मेजर वुडवर्न की सेना जो 1 अगस्त को सिमरोल होकर महु आने वाली थी, की प्रतिक्षा में चल पडा। इस सेना में 700 यूरोपियन तथा 1200 भारतीय थे।

होशंगाबाद क्षेत्र पर जब अंग्रेजों ने अपना कब्जा किया तो यह क्षेत्र नागपुर के भोंसले के पास था और अप्पा साहेब भोंसले ने पचमढ़ी को ब्रिटिश राज में मिलाने का विरोध किया व अंग्रेजों से युद्ध भी लड़ा था।

मेजर इरस्किन के अनुसार प्रथम स्वातंत्र्य समर के समय होशंगाबाद क्षेत्र के गाँव-गाँव में छोटी-छोटी रोटियों के माध्यम से क्रांति की सूचना दी गई थी। अक्टूबर 1857 में नेमावर पर झण्डा लहराया था। इसके साथ 350 लोग थे। दौलतसिंह मेवाती के साथ 2000 क्रान्तिकारी राहतगढ में शामिल हुए। रामसिंह, दौलतसिंह और कल्याणसिंह को फांसी हुई और अन्य को आजीवन कारावास। 28 अक्टूबर 1858 को क्रान्ति का निशान लाल झण्डा और नारियल भी इस क्षेत्र में मिला। तात्या टोपे ने साडिया घाट से नर्मदा पार की। फतेहपुर के राजा ने सहयोग किया। मकड़ई रियासत भी ब्रिटिश शासन की कोप भाजन हुई। राष्ट्रीय आन्दोलन के दौरान होमरुल लीग शाखा होशंगाबाद में 1917 में स्थापित हुई। 25 अप्रैल 1920 को यहाँ जिला राजनीतिक कान्फ्रेन्स की स्थापना हुई। 18 अगस्त 1923 को नागपुर में पटेल के नेतृत्व में झण्डा सत्याग्रह हुआ। जिसमें 2755 सदस्यों ने भाग लिया। इसमें होशंगाबाद के ठाकुर केशरीसिंह व ज्वालासिंह तथा 10 स्वयं सेवकों ने भाग लिया। 1926 में पण्डित मोतीलाल नेहरू इस जिले में आए।

सन् 1930 के नमक सत्याग्रह में सर्वश्री लाल अर्जुनसिंह, शंभूदयाल मिश्रा, सीताचरण दीक्षित, चन्द्रगोपाल मिश्र, ठाकुर गुलजार सिंह, दादा भाई नाईक, महेशदत्त मिश्रा, सैयद अहमदी सत्याग्रही बनें और गिरफ्तार हुए।

भारत छोड़ो आन्दोलन में हजारों लोगों ने ब्रिटिश सत्ता के खिलाफआन्दोलन में भाग लिया इनमें सर्वश्री अमृतलाल, अश्विनी कुमार, कामताप्रसाद वर्मा, काशीनाथ, खेतसिंह, गुंचीलाल, गुलजारीलाल माली, गोपाल प्रसाद गोला, जगन्नाथराव गदरे, तुलसीराम गुरवा, दीनानाथ अग्रवाल, नर्मदा प्रसाद राजौरिया, नाथूराम किराड़, नानकदास, प्यारेलाल गुरु, वल्देवप्रसाद रायकवार, बाबूलाल डेरिया, भोलाराम धेनुसेवक, महेशदत्त मिश्र, मुहम्मद खाँ, रामचरण लौवंसी, लादू विश्नोई, श्याम भारती, शिवलाल माली आदि- आदि। इस जिले के 300 से भी अधिक स्वतंत्रता संग्राम

सेनानियों के नाम ज्ञात हुए हैं। होशंगाबाद जिले की नर्मदा कछार की पवित्र धरती शहीदों के बलिदान पर आज भी गर्व करती है।

● जिला-हरदा

जनसंख्या की दृष्टि से प्रदेश का सबसे छोटा जिला हरदा है। इस जिले का निर्माण हरदा, खिरकिया, टिमरनी तहसीलों को मिलाकर वर्ष 1998 में किया गया है। यह प्रदेश का सर्वाधिक औसत जोत (5.4) वाला जिला भी है। इस जिले में सागौन एवं बाँस के बहुमूल्य वन हैं जिनमें मुख्य रूप से कोरकू एवं गौंड जनजाति के लोग निवास करते हैं।

मेजर इरस्किन ने अपने वर्णन में लिखा है कि जनवरी 1857 में सागर और नर्मदा क्षेत्र के गाँव-गाँव में छोटी-छोटी रोटियों के माध्यम से क्रान्ति की सूचना दी जाती थी। जुलाई 1857 में हरदा तहसील का खजाना क्रान्तिकारियों के द्वारा लूटने का प्रयास किया गया परन्तु यह योजना असफल हुई। 9 जुलाई को पुलिस द्वारा 9 बागी पकडे गए, कुछ को फांसी हुई और कुछ को आजीवन कारावास की सजा दी गई। इसी प्रकार की योजना सोहागपुर के लिए भी बनाई गई पर कर्नल कुरंड ने उसे ध्वस्त कर दिया।

सन 1905 में हरदा के आत्माराम लोखण्डे ने सामाजिक क्रान्ति में योगदान दिया और मध्यप्रान्त बरार के संघ की स्थापना पर इस जिले के एम.आर. दण्डवते, एन.आर. केकरे तथा काशीराम तिवारी ने समिति की सदस्यता ग्रहण की।

सन 1926 में पण्डित मोतीलाल नेहरू हरदा आये। हरदा से 'हण्टर' नामक अखबार निकाला गया। 30 नवंबर 1933 ई. को महात्मा गाँधी बैतूल से सोहागपुर, बाबई व हरदा का भी दौरा किया। सन 1936 ई. में जवाहरलाल नेहरू ने हरदा के लोगों को संदेश दिया। वर्ष 1940 में व्यक्तिगत सत्याग्रह अन्तर्गत 50 लोगों ने भाग लिया। भारत छोड़ो आन्दोलन में अनेक स्वाधीनता प्रेमियों ने गिरफ्तारी देकर देशहित में यातना झेली। इनमें सर्वश्री- अब्दुल रऊफ़ ओंकार प्रसाद शर्मा, गेंदालाल बिलोदिया, घासीराम वैद्य, छोटेलाल चतुर्वेदी, तुलसीदास, बाबूलाल, बद्रीप्रसाद शर्मा, वसन्तकुमार चौरे, बाबूलाल सिलारपुरिया, बिहारीलाल, भगवानदास बांके, भगवती प्रसाद तिवारी, मगनलाल, मोतीलाल सेन, रामकिशन जलखरे, रामेश्वर सिंह सोलंकी, श्रीमती लक्ष्मी जलसरे, लक्ष्मीनारायण, लक्ष्मीनारायण अग्रवाल, शंकरराव मराठा, शंकरलाल शर्मा, शिवदत्त दाधिच, शिवनारायण गुप्ता, सीताराम हरिनारायण नायडू, सीताराम पुजारी, आदि-आदि।

जिला- बैतूल

बैतूल कोरकू जनजाति प्रधान जिला है। जिले के मध्य से राष्ट्रीय राजमार्ग 69 गुजरता है। पहले यह जिला भोपाल संभाग में सम्मिलित था बाद में इसे होशंगाबाद जिले में सम्बद्ध किया गया। इस जिले में वर्तमान में आठनेर, आमला, बैतूल, भैंसदेही, घोड़ाडोंगरी, मुलताई, शाहपुर नामक सात तहसीलें विद्यमान हैं।

1857 की क्रान्ति के प्रस्फूटन के पश्चात भी जिले में शान्ति थी। यद्यपि कृषक भारी करों का विरोध कर रहे थे। बैतूल के घने जंगल अंग्रेजों के लिए अभयारण्य साबित हुए। जब नरसिंहपुर क्षेत्र में विद्रोह फैला तो वहाँ के अंग्रेज सुरक्षा की दृष्टि से बैतूल जंगलों में घुस गए।

1857 की क्रान्ति से अंग्रेज इतने भयभीत हो गए थे कि वे छोटी सी बात के बड़े अर्थ निकालने लगे थे। उन्हें मालूम पडा कि बैतूल बाजार के पटेल बन्धु असीरगढ़ का किला साफ करा रहे हैं तो उन्होंने विद्रोह की आशंका कर 5 अक्टूबर को पटेल बन्धु व उनके अन्य सहयोगियों को गिरफ्तार कर दोनों भाइयों को सात-सात वर्ष व अन्यों को चार वर्ष की कैद की सजा कर दी।

बैतूल जिले के निकटवर्ती गांव इटावा के कोटवार ने जब असीर थाने पर रपट लिखाई और गेरुआ झण्डा, नारियल तथा पान व

सुपारी जमा कराई तो अंग्रेज अधिकारियों को लग गया कि विद्रोह होने वाला है। और इसका श्री गणेश तात्या टोपी ने जामई में अंग्रेजी पुलिस के 17 सिपाहियों को ठिकाने लगाते 7 नवम्बर 1857 को मुलताई पहुँचे। यहाँ सरकारी इमारतों को ध्वस्त किया। इसके बाद वे बिरुला, मासोद, आठनेर और भैंसदेही होते हुए निमाड़ पहुँच गए। 1866 में बनी एक रपट से ज्ञात होता है कि तात्या की मदद करने के अपराध में मालगुजार का शाहपुरा तालुका जब्त कर लिया गया। ग्रामीणों के सभी प्रकार के हथियार जब्त कर लिये गये।

1896 के दौरान बैतूल बाजार में आर्य समाज की शाखाएँ स्थापित हो गई। इनके अलावा मुलताई में 'विद्यावर्धन' और 'वचन सभा' की स्थापना हुई। श्रीमती एनी बेसेन्ट की होमरूल लीग की बैतूल शाखा भी 1917 में स्थापित हो गई थी। 1920 में बैतूल जिला काँग्रेस की स्थापना हुई जिनके पहले अध्यक्ष रामदीन अवस्थी बने। 1922 में धार्मिक व राष्ट्रवादी वक्ता नारायण स्वामी के आव्हान पर एक सेवा समिति का गठन किया। इस समिति ने सुरक्षा तथा न्याय के मुद्दे पर अंग्रेजों से असहयोग कर ऐसा कार्य किया कि सरकारी न्यायालय में पहले 6 महिनों में ही मुकद्मों की संख्या घटकर एक चौथाई रह गयीं।

सेवा समिति के माध्यम से काँग्रेस के कार्यकलापों को गति मिली। 1922 में काँग्रेस का प्रान्तीय अधिवेशन श्रीमती कस्तूरबा गाँधी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। ठीक 2 वर्ष बाद हुए प्रांतीय राजनीतिक सभा की स्थापना ई. राघवेन्द्र राव की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। इसमें सर्वश्री पण्डित रविशंकर शुक्ल, सेठ गोविन्ददास, सेठ जमनालाल बजाज, माखनलाल चतुर्वेदी, सुभद्रा कुमारी चौहान आदि ने भाग लिया। इसी सभा में तपस्वी सुन्दरलाल ने झण्डा सत्याग्रह का ऐलान किया। बैतूल में सेठ जेठमल तातेड व उनकी पत्नि के मार्गदर्शन में यह सत्याग्रह अत्यन्त सफल रहा।

बैतूल जिला परिषद और स्वतंत्रता के लिए संघर्ष कर रही जिला काँग्रेस के अध्यक्ष पण्डित ब्रह्मदीन की सक्रियता से नाराज होकर अनुदान की रकम घटा दी। असहयोग आन्दोलन के दौरान बिहारीलाल पटेल (1925-1936) की सक्रियता से विशाल जुलूस निकाला। परिषद ने अपने स्कूलों के शिक्षकों से भी आन्दोलन में भाग लेने की अपील की। जनता ने नमक सत्याग्रह का दिल से समर्थन किया। ब्रिटिश सरकार ने कड़ा रुख अपनाते हुए 11 नवम्बर 1930 को जिला परिषद भंग कर दी।

अगस्त 1930 में सेठ दीपचंद गोटी के नेतृत्व में चिखलार के आरक्षित वन में लकडी काटकर ब्रिटिश सरकार का जंगल कानून भंग किया। तीन दिन बाद ही सेठ को एक वर्ष की बामशक्कत सजा सुना दी गई। इस पर गंजन कोरकू ने इस आन्दोलन को आगे बढाया तो संघर्ष में एक पुलिस की मृत्यु हो गई। अगले दिन पुलिस ने गोली चालन कर दिया जिसमें कोबा गोंड शहीद हुआ। 23 आदिवासियों पर मुकदमें चले। गंजन कोरकू फरार हो गया जिस पर 500 रुपये का ईनाम रखा गया। जंगल सत्याग्रह आग की तरह फैल गया। मार्च 1932 में स्वयं गवर्नर ने बैतूल का दौरा किया। इस दौरे को सफल बनाने हेतु सभी कैदियों को छोड दिया। हरिजन उद्धार कार्यक्रम के अन्तरर्गत महात्मा गांधी ने बैतूल बाजार, खेडी व मुलताई का दौरा किया जिससे कार्यकर्ताओं में उत्साह बढा।

13 अप्रैल 1935 को मुलताई में जिला राजनीतिक सम्मेलन पण्डित रविशंकर शुक्ल की अध्यक्षता में हुआ। इसी बीच दो वर्ष के लिए भंग जिला परिषद अस्तित्व में आ गई। 1939 में काँग्रेस परिषद के इस्तीफे के बाद 28 अप्रैल 1940 को बाबूलाल धोटे ने मोटर स्टेण्ड के निकट इन्कलाब जिन्दाबाद के नारे बाँटे। इस अपराध में उन्हें 3 वर्ष की सजा दी गई। 1941 में सत्याग्रहियों की कुल संख्या 229 तक पहुँच गई।

भारत छोड़ो आन्दोलन के दौरान पूरा बैतूल जिला सक्रिय हो उठा। 19 अगस्त 1942 की एक बैठक में लकड़ी का डिपो जलाने, सुरंगों की निकटवर्ती रेलवे लाइन उखाडने, टेलीग्राफ तार काटने, रेलवे स्टेशन व थाने जलाने का निर्णय आनन्दराव लोखण्डे की अध्यक्षता में किया गया। इसे कार्यरूप में परिणत करने का दायित्व आम जनता ने लिया। आखिरकार घोड़ाडोंगरी का डिपो जला दिया गया। सरगडी के निकट तार काटे गए और रेलवे पटरियों को उखाडा गया। पुलिस ने गोली चालन किया। उत्तेजित भीड ने घाटासोह व रानीपुरा के स्टेशन फूंक दिए। सरकार ने नागपुर व जबलपुर से फौज बुला ली। विष्णुसिंह को फांसी व उसकी पत्नि को सात वर्ष के कारावास की सजा दी गई। इस सजा के विरोध में बैतूल के पुरुषोत्तम शास्त्री व डॉ. शारदा प्रसाद निगम के प्रयासों से विष्णुसिंह का मृत्युदण्ड आजीवन कारावास में बदल गया।

एक लम्बे संघर्ष के बाद देश को आजादी मिली। बैतूल में भी समस्त शासकीय अर्द्धशासकीय भवनों से यूनियन जैक के झण्डे उतारे गए और राष्ट्रीय ध्वज फहराये गये। 21 अगस्त 1947 तक स्वतंत्रता पखवाड़ा मनाया गया। इस सबका श्रेय बैतूल के 462 अधिकृत स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों व उनके पीछे खड़े रहने वाले आन्दोलनकारियों को है। अपने प्राणों की आहूति देने वाले शूरवीरों को शत-शत प्रणाम।

7. रीवा संभाग

वर्तमान रीवा संभाग भूतपूर्व रीवा रियासत का ही भाग है। सन 1984 के पूर्व तक इस संभाग में रीवा, सतना, सीधी तथा शहडोल जिले सम्मिलित थे। 14 जून 2008 को शहडोल संभाग पृथक बन जाने के कारण वर्तमान में इस संभाग में रीवा, सतना, सीधी, सिंगरौली जिले हैं।

सीधी जिले के कुछ हिस्से को अलग करके 24 मई 2008 को सिंगरौली जिले का निर्माण किया गया है।

● जिला रीवा

सफेद शेरों की जन्मस्थली के लिए विख्यात रीवा मध्यप्रदेश में सर्वाधिक ग्रामीण आबादी वाला जिला है। यहाँ प्रदेश का एकमात्र सैनिक स्कूल है। मध्यप्रदेश का सबसे ऊँचा जलप्रपात 'चचाई' इस जिले की बीहड़ नदी पर है। इस जिले में वर्तमान में गुढ़, हुजूर, रीवा, कर्चुलियान, हनुमना, मऊगंज, रायपुर, सिरमौर तथा त्यौंथर तहसीले हैं।

रीवा राजा जयसिंह के काल में 5 अक्टूबर 1812 को सहायक संधि सम्पन्न हुई। राजा जयसिंह के पोते महाराजा रघुराजसिंह अंग्रेजों के पूर्ण स्वामीभक्त थे तथा उन्होंने प्रथम स्वातंत्र्य समर के दौरान अपनी रियासत रीवा तथा पड़ोसी छोटे-मोटे राज्यों में क्रांति को दबाने में कोई कसर न छोड़ी। इसके बावजूद रीवा के तत्कालीन पोलिटिकल एजेंट आसवर्न को संदेह था कि महाराजा रघुराज सिंह कोठी (सतना) घराने के बघेल सरदार लाल रणमल सिंह बघेल के साथ सहानुभूति रखते हैं। महाराजा रघुराज सिंह ने अंग्रेजों का विश्वास जीतने के लिए मैहर, नागौद व कोठी आदि के विरुद्ध सैनिक कार्यवाही की। इससे लाल रणमत सिंह अंग्रेजों के कट्टर दुश्मन हो गए। आसवर्न ने मैहर से आए तैलंग ब्राह्मण को जब फांसी पर चढ़ाने का निश्चय किया तो ब्राह्मणों के पक्षधर रीवा रियासत के दरबारी ठाकुर भड़क गए। ठाकुर सरदारों में से लोचनसिंह, धीर सिंह, पंजाब सिंह ने रीवा जेल पर आक्रमण करके तैलंग ब्राह्मण को मुक्त कर दिया। अब ये सरदार लाल रणमत रणमत सिंह से जा मिले। रीवा महाराज ने इन चारों को रियासत से भगा दिया। इस घटना के बाद यद्यपि रीवा में बगावत (विद्रोह) की शुरुआत हुई।

अगस्त 1857 ई. में क्रांतिकारियों के नेता कुंवरसिंह (बिहार) अपने 5 सैनिकों के साथ रीवा रियासत में घुसे तो रीवा स्थित मऊ के तहसीलदार और तेंदुन के ईश्वरजीत ने करारा घाट तक विरोध किया। पर डगौरा के रणजीत राव दीक्षित जैसे इलाकेदार सामंत ने उनका स्वागत भी किया। क्रांतिकारी लाल रणमत सिंह अंग्रेजों के पक्के विरोधी रहे। रणमत सिंह के संबंधों के कारण पोलिटिकल एजेंट आसवार्न रीवा महाराज पर विश्वास नहीं करता था। महाराजा रघुनाथ सिंह के दीवान पं. दीनबंधु पांडे की सूचना के कारण रणमत सिंह को 12 मार्च 1860 को आत्मसमर्पण करना पड़ा। इस समय ये अपने मित्र विजयशंकर नाग के घर जलवा देवी मंदिर के तहखाने में विश्राम कर रहे थे। आगे चलकर रणमत सिंह को आगरा में फांसी दी गई। इस महान क्रांतिकारी की मृत्यु के बाद अपने काकू की मृत्यु के बदले महाराजा रघुनाथ सिंह ने सोहागपुर, सिंहवाड़ा तथा अमरकंटक के इलाके अंग्रेजों से पुरस्कार के रूप में प्राप्त किए।

ठाकुर रणमत सिंह भी अपने बलिदान के बाद लोकनायक के रूप में प्रतिष्ठित हो गए। उनकी बहादुरी पर लोकगीत व गाथाएं बनी। उनके नाम पर रीवा का दरबार कॉलेज अब रणमत सिंह कॉलेज के रूप में जाना जाता है। इस कॉलेज के परिसर में लगी ठाकुर रणमत सिंह की प्रतिमा युवकों में उत्साह का संचार करती है।

देशप्रेमियों की दिन पर दिन वृद्धि होती गई। अवधेश प्रताप सिंह तथा राज भानु तिवारी ने करांची कांग्रेस में भाग लिया और लौटकर 30 मई 1931 को रीवा में बघेलखंड कांग्रेस कमेटी की स्थापना की। इसके लिए रामकुमार ने अपना मकान दान में दिया। इसी समय रीवा में चरखा संघ, वाचनालय तथा हिंदुस्तानी सेवा दल की स्थापना भी की गई। बघेलखंड कांग्रेस कमेटी ने उत्तरदायी शासन की मांग उठाई। इस कारण इसके पदाधिकारियों को नौगांव स्थित पोलिटिकल एजेंट के दमन का शिकार होना पड़ा। 11 जुलाई 1931 को कप्तान अवधेश प्रताप सिंह की गिरफ्तारी से आंदोलन तेज

हो गया। इस पर रीवा राज्य काउंसिल के उपाध्यक्ष कारफील्ड ने 28 अप्रैल 1932 को पत्र द्वारा सूचना दी जिसमें कहा गया कि –'' जनता की मांग पर विचार किया जा रहा है।''

इसमें कोई संदेह नहीं था कि 1932 के इस आंदोलन को सच्चा जन आंदोलन कहा गया। इस आंदोलन में लगभग 15000 लोगों ने भाग लिया। 300 आंदोलनकारियों को जुर्माने किए गए तो कोई 200 लोगों को जेल की सजा दी गई। इस आंदोलन की प्रतिक्रिया में महाराजा गुलाबसिंह ने कुछ सुधार भी किए।

भारत छोड़ो आंदोलन के प्रारम्भ में ही सभी बड़े नेताओं को गिरफ्तार कर लिए जाने से आंदोलन का भार युवकों पर आ गया। इस आंदोलन के अंतर्गत रीवा रियासत के रिकॉर्ड रूम में आग लगा दी गई। 16 अक्टूबर 1945 को महाराजा गुलाबसिंह कुछ शर्तों के साथ पुन: शासनारुढ़ हो गए हुए उन्होंने रीवा राज्य में उत्तरदायित्व पूर्ण शासन की स्थापना कर दी। इस पर नेहरु जी ने कहा था 'इससे शासन भले ही ना मिले परंतु जन–जागरण पर इसका नैतिक प्रभाव पड़ेगा।'

इस क्षेत्र में चांवल आंदोलन महत्वपूर्ण घटना जिसकी शुरुआत रीवा के बदवार ग्राम से हुई। इन दिनों रीवा राज्य द्वारा लगान के स्थान पर चांवल की वसूली की जा रही थी। इसमें किसानों को हानि थी क्योंकि रू.16 प्रति मन के बाजार भाव के स्थान पर रियासत के कर्मचारी रू.8 प्रतिमन के भाव से ही चावल वसूलते थे इस पर आंदोलन चला और बदवार में उत्साही आंदोलनकारी त्रिभुवन तिवारी, पुलिस महानिरीक्षक करतारनाथ के आदेश पर चली गोली से शहीद हो गए। रीवा से 70 किलोमीटर दूर शिवराजपुर में धुलेण्डी के दिन गोली चालन में भैरवप्रसाद तिवारी भी शहीद हुए।

चांवल आंदोलन के दौरान गिरफ्तार लगभग 200 नेताओं और कार्यकर्ता लगभग 3 माह तक जेल में रहे। आजादी मिलने के कुछ समय पूर्व ही उन्हें छोड़ा गया। रीवा का चांवल आंदोलन इस बात का प्रतीक है कि 'शोषण और दमन के बल पर जनता की आवाज नहीं दबाई जा सकती है।'

जिला स्वतंत्रता संग्राम सेनानी के अंतर्गत रीवा जिले में कोई 410 से अधिक स्वतंत्रता सेनानियों के नाम दर्ज हैं। इनमें सर्वश्री अविनाश चंद्र सिंह, अम्बिका प्रसाद कायस्थ, अलताफ हुसैन, इंद्रबली सिंह, इच्छालाल पाण्डेय, करीमउल्ला खाँ, केशव प्रसाद, केसरी सिंह, किशोरी लाल हलवाई, कौशल प्रसाद, श्रीमती कृष्णा कुमारी, गजधर प्रसाद, गुलाब सिंह, गोकुलदास, श्रीमती चम्पादेवी, जमुना प्रसाद सोनी, जोगेश्वर कुर्मी, श्रीमती तारा देवी मिश्रा, तेजभान सिंह, देवनंदन धोली, नवल किशोर, नैन सिंह, बरमदीन, बाबा सिंह कूर्मवंशी, बुद्धसेन सेठ, भोला प्रसाद, मकर सिंह, मुरली, मृत्युंजय पाठक, यमुना प्रसाद शास्त्री, श्रीमती राजकुमारी देवी, राजीवलोचन सिंह, राणा शमशेर सिंह, रामचंद्र गौड़, रामसूरत, लालमणि, वंशपति, शारदा पटेल, शिवधारी जायसवाल, साक्षी पटेल, सुभान खाँ, सूर्यदीन, राम तिवारी, श्रीमती सावित्री देवी, क्षेत्रपाल सिंह, श्रीमती राजकुमारी आदि सभी स्वतंत्रता सेनानियों व शहीदों को शत–शत नमन।

रीवा का किला

8. सागर संभाग

सागर संभाग का मुख्यालय ''सागर'' का नामकरण यहाँ स्थित विशाल तालाब के आधार पर किया गया। यह क्षेत्र 1818 ई. के बाद ईस्ट इंडिया कम्पनी के अधीन था। आगे चलकर 1861 ई. को में प्रशासनिक दृष्टि से नागपुर के साथ मिला दिया गया। यह व्यवस्था सन 1956 तक नए मध्यप्रदेश राज्य के पुनर्गठन तक बनी रही। वर्तमान में इस संभाग में छतरपुर, दमोह, निवाड़ी, पन्ना, सागर व टीकमगढ़ जिले सम्मिलित हैं।

● जिला सागर

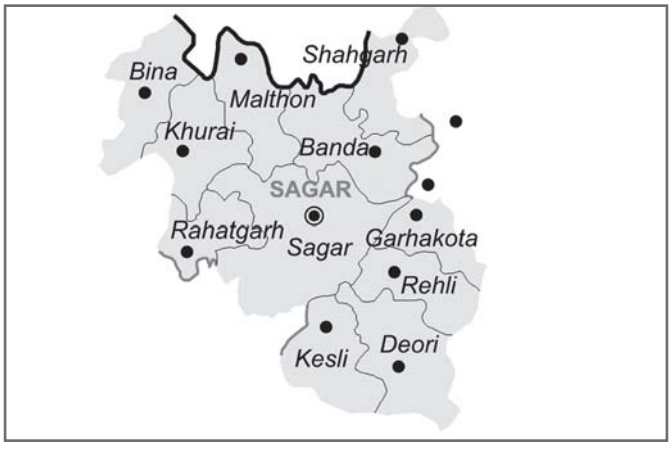

ऐसा माना जाता है कि सागर संभाग मुख्यालय सागर की स्थापना उडानसिंह नामक व्यक्ति के द्वारा 1660 ई. में की गई थी। मध्यप्रदेश में सर्वाधिक ग्रामीण आबादी वाले जिले के रूप में इसकी गणना होती है। मध्यप्रदेश का सबसे पहला विश्वविद्यालय (डॉ. हरिसिंह गौर) की स्थापना 1946 ई. में इसी नगर में की गई थी। वर्तमान में सागर जिले में निम्न 8 तहसील है – बण्डा, बीना, देवरी, गढ़ाकोटा, केसली, खुरई, रहली एवं सागर।

इतिहासकार डॉ. भगवानदास गुप्त के अनुसार प्रथम स्वातंत्र्य समर ने बुन्देलखण्ड में जब युद्ध का ही रूप धारण कर लिया था ..... तब सागर की आम जनता ने ऐसी भागीदारी की कि वह क्षेत्र आठ माह तक क्रांतिकारियों के कब्जे में रहा और इस बीच अंग्रेजों को 8 माह सागर किले की शरण में बिताना पड़े।

सागर में विद्रोह की शुरुआत सैनिक आक्रोश से प्रारम्भ हुई। 15 जून 1857 ई. को लेफ्टिनेंट मिलर जार्ज का निरीक्षण कर रहा था कि सिपाही ने उस पर धावा बोल दिया। इस विषम परिस्थिति को सागर ब्रिगेडियर वेज भाँप गया और उसने कम्पनी से 173 कर्मचारियों तथा 63 महिलाओं एवं 134 बच्चों को तोपों व खजाने के साथ सुरक्षित किले में पहुँचा दिया।

सागर में विद्रोह की घोषणा 42 वीं देशी पलटन के सूबेदार शेख रमजान ने मस्जिद के द्वार पर नगाड़ा बजाकर 1 जुलाई 1857 को किया। क्रांतिकारियों ने 42 वीं देशी पलटन के क्वार्टर गार्ड को ही अपना मुख्यालय बना लिया। क्रांतिकारियों ने राहतगढ़, गढ़ाकोटा आदि अनेक स्थानों पर कब्जा कर लिया। जुलाई के अंत में बानपुर के राजा मर्दनसिंह ने सागर पर आक्रमण कर उन्हें किले की शरण लेनी पड़ी। लोक गीतकारों ने तान छेड़ दी –

का कइये बानपुर बारे की, मर्दनसिंह नृपत जुझारे की
अंग्रेजन के गरे उतर गई, पैनी धार दुधारे की।

राजा मर्दन सिंह के साथ–साथ शाहगढ़ राजा बख्तवली का प्रमुख सलाहकार बोधन दौआ भी युद्ध के मैदान में अंग्रेजों के विरुद्ध अति सक्रिय रहा। उसने रहली, गौरझामर तथा देवरी पर भी अधिकार कर लिया। 16 जुलाई 1857 ई. को अपने स्वामी राजा बख्तवली के आत्मसमर्पण के बावजूद भी बोधन दौआ ने आत्मसमर्पण न कर आजादी के संघर्ष की अनूठी मिसाल पेश की।

सागर क्षेत्र में न केवल क्रांतिकारियों अपितु ग्रामीणों ने भी कम्पनी सरकार के विरुद्ध संघर्ष का बीड़ा उठाया। सागर से 11 मील दूर हिरौली के युद्ध में ग्रामीणों ने सुसज्जित ब्रिटिश सेनाओं को धूल चटा दी। सागर के विद्रोह ने गंभीर रूप धारण कर समूचे बुन्देलखण्ड में फैल गया। इस विद्रोह को दबाने के लिए कम्पनी को देशी रियासतों से सैनिक सहायता की भीख मांगना पड़ी अंत में ह्यूरोज ने अपनी सारी ताकत लगाकर इस विद्रोह को दबाया। तब कहीं जाकर विद्रोह शांत हुआ।

1857 की क्रांति के दमन के बाद कम्पनी के लोगों ने जिस क्रूरता से दमन किया, उसका एक उदाहरण सागर में भी मिलता है। सागर का एक निवासी जिसके संबंध में कहा जाता है था कि उसने विद्रोहियों को जूते पहनने को दिए थे। इसके कारण उसे घर से पकड़ लिया गया और सार्वजनिक स्थान पर पेड़ पर कील से ठोक कर मार डाला गया। आज भी स्थानीय लोग परंपरागत ज्ञान से उस पेड़ को दिखाते हैं जिस पर जंगलीपन से उसका प्राणान्त किया गया था। वीर शहीद को शत शत प्रणाम।

1857 की क्रांति के 60 वर्ष बादसागर क्षेत्र के लोगों में जन चेतना का संचार करने वाली घटना 1920 में घटी जिसे इतिहास में ''रतौना सत्याग्रह'' के नाम से जाना जाता है। इसका नायक था 'अब्दुल गनी' सागर से 8 कि.मी. दूर 'रतौना' ग्राम में ब्रिटिश सरकार ने कसाई घर का लायसेन्स जारी किया। इस कसाई घर में 1400पशु प्रतिदिन काटे जा सकते थे। इसके विरूद्ध संगठित

आन्दोलन हुआ जिसमें हजारों लोगों ने भाग लिया। फलस्वरूप अंग्रेज सरकार को न केवल रतौना की योजना रद्द करना पड़ अपितु राहतगढ़ और दमोह के कारखाने भी बन्द करने पड़े। यह एक गैर राजनीतिक आन्दोलन था लेकिन इसने सागर क्षेत्र के लोगों को संगठित होकर आन्दोलन करने की प्रेरणा दी। इस आन्दोलन से जुड़े लोग आगे चलकर नागपुर के झण्डा सत्याग्रह में सम्मिलित हुए।1930 के जंगल सत्याग्रह में सागर क्षेत्र के हजारों लोगों ने रमना, राहतगढ़, खुरई आदि स्थानों पर व्यापक रूप से जंगल कानून का उल्लंघन किया गया।

वर्ष 1934 ई. में महात्मा गाँधी अपने हरिजन दौरे के अन्तर्गत देवरी की यात्रा की। सागर में मुरली मनोहर मंदिर के कपाट खोले तथा एक हरिजन मंदिर का शिलान्यास किया।

भारत छोड़ो आन्दोलन के अन्तर्गत सागर क्षेत्र की जनता अत्यधिक सक्रिय हो उठी। हड़ताल सभाओं में महिलाओं, विद्यार्थियों की भागीदारी पर पुलिसिया दमन एक आम बात हो गयी। गढज्ञकोटा के जुलूस पर पुलिस के गोली चालन पर एक छात्र बाबूलाल जैन की मृत्यु हो गयी। सागर क्षेत्र में आन्दोलनों में भाग लेने वाले सर्वश्री अब्दुल गनी, स्वामी कृष्णानन्द, गौरीशंकर पाठक, ज्वालाप्रसाद ज्योतिषी, ताराचंद जैन, पद्नाभ तैलंग, मास्टर बल्देव प्रसाद सोनी, बलाप्रसाद मिश्र, मौलवी चिरागउद्दीन,श्रीमती पार्वतीबाई,इंदिराबाई, आदि-आदि। इन सबके त्याग बलिदान को शत-शत वन्दन।

● जिला छतरपुर

बुन्देल शासकों की राजधानी होने के कारण छतरपुर को ''जेजाकमुक्ति'' कहा जाता है। मध्यप्रदेश ये प्रथम यूनेस्को द्वारा विश्व धरोहर में शामिल खजुराहो मंदिर इस जिले में है। वर्तमान में इस जिले में बिजावर, बड़ामलहरा, छतरपुर, गौरीहाट, लौंजी, नौगांव, महाराजपुर, राजनगर आठ तहसीलें है। प्रथम स्वातंत्र्य समर में इस क्षेत्र में हलचल के प्रमाण नहीं दिखाई पड़ते हैं। छतरपुर रियासत में राष्ट्रीय चिटना की उत्पत्ति 1920-21 में आर्य समाज की स्थापना की गई थी। यहाँ की जनता का झाँसी, ललितपुर आदि पड़ोसी जिले से घनिष्ठ संबंध रहा है। वर्ष 1929 में भितरिया गांव के जंगल में पंडित रामसहाय तिवारी और कुँवर हीरा सिंह ने एक सभा का आयोजन किया जिसमें सरकार के साथ असहयोग करने का निर्णय लिया गया। वर्ष 1931 में ''चरणपादुका''' नामक स्थान पर संक्रान्ति के अवसर पर एक विशाल सभा के आयोजन का निश्चय किया गया। जब कार्यवाही चल रही थी उसी समय बुन्देलखण्ड एजेंसी के पोलिटकल एजेंट किरार पुलिस को लेकर वहाँ आ गए और सभा विसर्जित करने का आदेश दे दिया।

शासकीय प्रतिवेदन के अनुसार इस गोलीकाण्ड में 27 व्यक्ति घायल हुए-

1.बसौरा चमार, 2. चितवा बसौर टहनगा 3. बैजनाथ 4. रामसेवक 5. तमसा चमार राजपुरा (पन्ना) 6. गनगति गडेरिया रामपुरा (पन्ना), 7.गनपत ठाकुर, सालिगराम लेखा, कलुआ लोधी, खंदे भातां खिजारिया, जिला हमीरपुर, आजाद मुसलमान, महोबा जिला कीरपुर, घनश्याम चमार, बाबा भिड़का छतरपुर, राजधर सिंह कटिया, बिन्द्रावन तिवारी बलकौरा, बिन्द्रावन नामदेव अकोला, मोतीलाल भाट बम्होरी, जगतराज पाठक, भूरा सुपा उमरिया, रामरतन चौबे तहसील रहली जिला सागर, शिव प्रकाश शर्मा शिवराजपुर जिला बांदा, रघुवर सिंह पाटन अजयगढ़, चुदीदीन भिलसाय सलैहा अजयगढ़, प्यारे राजावीरा अजयगढ़, जगत लोधी सिजारी, नाम नहीं बताया,

मृतकों के नाम - सेठ सुंदरलाल, धर्मदास लिखा, लिखू आतौं गौंड, हल्के कुर्मा बांठिया, रामलाल कुर्मी गुना, रघुराज सिंह मोरिया जबकि घटना के प्रत्यक्षदर्शी पं. राम सहाय तिवारी का कहना है कि चरणपादुका काण्ड में घायलों व मरने वालों की संख्या इससे कई गुना अधिक रही। इस गोलीकाण्ड को बुन्देलखण्ड का जलियावाला बाग कहा जाता है। छतरपुर की जनता इसकी टीस को भुला नहीं सकी बल्कि इस घटना ने पूरे बुन्देलखण्ड को विद्रोही बना दिया।

दुर्भाग्य से डॉ. हंसा व्यास ने इस घटना की जानकारियाँ अपने ग्रंथ (मध्य प्रदेश में स्वतंत्रता संग्राम 1857-1947 ई.) में दी है। अपने ग्रंथ के पृ. 131 पर उन्होंने इस घटना को 1930 में घटना बताया है और लगभग 60 हजार व्यक्तियों, जो शस्त्र व लाठियों से लैस होना बताया है, जबकि पृ. 133 पर लिखा है कि ''एक किरार सभा चरणपादुका में 30 दिसंबर को की जिसमें लगभग एक लाख जनता एकत्रित हुई। इतने विशाल पैमाने पर अन्य किसी सभा में जनता एकत्रित नहीं हुई थी। जबकि पृ. 132 पर ही डा. व्यास ने नवंबर 1930 में चरणपादुका की सभा में मात्र करोड़े लोहार की मृत्यु

होना बताया है। चरणपादुका गोलीकाण्ड का दुर्भाग्य ही है कि देश की आजादी के बाद भी प्रदेश के इतिहास लेखक इसका महिमामण्डन की अपेक्षा इस आन्दोलन की भ्रामक जानकारियाँ प्रस्तुत कर रहे हैं। इस आन्दोलन में घायल 27 आन्दोलनकारियों व छह मृतकों को शत-शत प्रणाम।

इनके सिवाय सर्वश्री काशीप्रसाद मंहतो, कोमल चन्द जैन, गौरी शंकर चौरसिया,ठाकुरदास रिछारिया, धरमदास कुर्मी, प्यारेलाल काछी, बलदेव दउआ, भगवानदास काछी,मथुराप्रसाद सुनार, महेन्द कुमार मानव, लक्ष्मीनारायण गुप्ता, सादिक अहमद, सुमेर लोधी, सुशीला देवी, श्रीपाद नरायण भार्गव आदि -आदि प्रमुख सेनानी रहे।

● जिला दमोह

ऐसा माना जाता है कि दमोह का नामकरण पौराणिक साधक 'नल' की पत्नी दमयंती के नाम से जुड़ा हुआ है। प्रदेश की सर्वाधिक बाल मजदूर वाला यह जिला पीतल के सामान हेतु प्रसिद्ध है। वर्तमान में जिले में बरियागढ़, दमोह जबेरा, पथरिया, पटेरा, तेंदूखेड़ा, हटा नामक तहसीलें विद्यमान है।

दमोह और सागर का क्षेत्र बुन्देलखण्ड के राजा छत्रसाल बुन्देला द्वारा पेशवा को प्रदान किए गए थे। 1818 ई. में जब बाजीराव द्वितीय को लार्ड हस्टिग्ज ने पदच्युत किया तो यह क्षेत्र अंग्रेजों के कब्जे में आ गया।

प्रथम स्वातंत्र्य समर में झाँसी के विद्रोह का समाचार जैसे ही सागर पहुँचा 42 वी पैदल सेना के सूबेदार शेख रमजान ने इस्लाम की पताका फहराई व नगाड़े की चोट पर देशी सैनिकों को क्रांति का आह्वान किया। क्रांतिकारियों ने भी शेख रमजान को अपना सेनापति स्वीकार कर लिया। जब क्रांतिकारियों की यह टोली दमोह की ओर रवाना हुई तो यहाँ के डिप्टी कमिश्नर ने विचार किया कि राजकोष को जेल के किले में रखकर देशी सैनिकों के साथ किले में ही रहा जाए परंतु देशी सैनिकों की निष्ठा पर संदेह करके उन्होंने दमोह छोड़ दिया।

दमोह के किले में पदस्थ सेना की टुकड़ी कम्पनी के प्रति पूर्ण वफादार रही। अंग्रेज अधिकारियों के पलायन करने के बावजूद उन्होंने क्रांतिकारियों से किले व खजाने की रक्षा की। इसके बावजूद शीघ्र ही क्रांतिकारियों ने इस क्षेत्र पर कब्जा कर लिया। इसमें हिण्डोरिया के ठाकुर किशोर सिंह की महत्वपूर्ण भूमिका रही। उन्होंने हिण्डोरिया से निकलकर दमोह पर आक्रमण किया और उसे 10 जुलाई 1857 को कब्जा कर लिया। दमोह को मुक्त कराने हेतु अंग्रेजों ने अगस्त में हिण्डोरिया पर आक्रमण किया परंतु ठाकुर किशोर सिंह लापता हो गए।

दमोह जिले के दूसरे महान क्रांतिकारी किशनगंज के सरदार रघुनाथ राव थे इन्होंने क्रांतिकारियों की मदद भी की, इसी कारण अंतत: उन्हें पकड़कर फांसी पर लटका दिया गया।

ख्यालीराम के अनुसार राष्ट्रीय आन्दोलन के दौरान जब महात्मा गांधी का सविनय अवज्ञा आन्दोलन अपने शबाब पर था, तब दमोह में जन्मे यशवंत सिंह (27 मई 1909 से 11 दिसंबर 1931 ई.), दिनेश नारायण तिवारी तथा दलपत राव ने 23 जुलाई 1931 की रात पंजाब मेल में (दिल्ली से मुंबई) के यात्री फौजी अफसर लेफ्टिनेंट हेक्सट व मेजर शीहन की हत्या कर दी। इन तीनों क्रांतिकारियों को खण्डवा न्यायालय में प्रस्तुत किया, जहाँ निमाड़ के सत्र न्यायाधीश एफजे.वुडवर्थ ने प्राणदण्ड की सजा दी।

इन क्रांतिकारियों हेतु डी.पी. मिश्रा तथा सेठ गोविंददास ने तत्कालीन गवर्नर (सी.पी. एण्ड बरार) को ज्ञापन दिया। पर सब कोशिशें बेकार हुई 11 दिसंबर 1931 को ब्रिटिश सरकार ने 20 वर्ष के देवनारायण तिवारी और 22 वर्षीय यशवंत सिंह को फांसी के फंदे पर लटका दिया। यह दोनों युवक भारत माता को विदेशी दासता से मुक्त कराने के लिए हंसते-हंसते फांसी के तख्तों पर झूल गए।

दमोह जिले में कांग्रेस को नेतृत्व में स्वाधीनता संघर्ष का सूत्रपात 1906 में वंग-भंग आन्दोलन से होता है जिसमें दमोह के भैयालाल चौधरी के द्वारा भाग लिये जाने की जानकारी प्राप्त होती है। इन्हें 1917ई. में आम सभा को संबोधित करने के कारण डी. आई. आर. के अन्तर्गत बन्दी बनाया गया था।

2 दिसंबर, 1933ई. को जब महात्मा गॉधी दमोह आये तो उन्हें मानपत्र भेंट कर बताया गया कि इस जिले में 1926 से ही शराब बंदी लागू है तो वे बहुत प्रसन्न हुए। यहां गांधीजी ने हरिजन बस्ती में वाल्मीकि समाज के लिए एक मंदिर का शिलान्यास भी किया।

सन् 1930 के जंगल सत्याग्रह में जन जाग्रति के क्षेत्र में सिंघई गोकुल वकील,तपस्वी सुन्दरलाल तथा दादाभाई नाईक ने अभुतपूर्व कार्य किया। भारत छोड़ो आन्दोलन में सिंघई प्रेमचंद तथा यशवन्त सिंह शहीद हुए। सेनानी रघुवर प्रसाद मोदी को पुलिस ने जूतों की

ठोकर से इतना पीटा गया कि सारा प्रांगण लाल हो गया। इनके सिवाय सर्वश्री अमान सिंह कुर्मी,कन्छेदी, गणेशप्रसाद माली, कुंजबिहारी लाल गुरु, गसाप्रसाद पाण्डेय, गौरी शंकर प्यासी,घुटिया ढ़ीमर, टंटे, नथुआ बसोड़, नर्मदाप्रसाद श्रीवास्तव, पूरन चंद जैन, प्रेमनारायण सोनी, प्रेमशंकर धगट, बाबुलाल ताम्रकार, बालू नामदेव, भैयालाल काछी, मुन्नालाल चित्र, मुन्नीलाल नाई, मूलचंद तेली, मोतीलाल चौरसिया, रामप्रसाद चमार, शेर खॉ, हरबंस सिंह गिल आदि–आदि का महत्वपूर्ण योगदान रहा।

शहीदों तुम्हारा हर धूलि कण,
भारत वासियों के लिए पावन है।

● जिला पन्ना

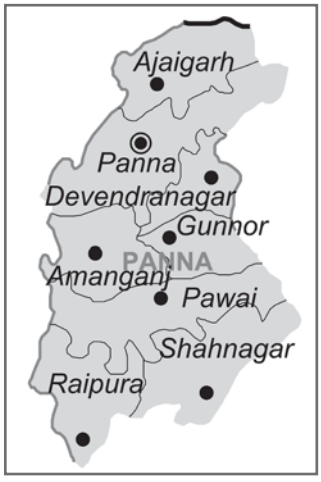

विंध्याचल क्षेत्र रेंज में बसाया यह जिला भारत का डायमण्ड जिला है। यह जिला ऐतिहासिक धरोहर एवं सुरम्य प्राकृतिक स्थलों से समृद्ध है। यह महामति प्राणनाथ के दर्शनीय मंदिर तथा प्रणामी समुदाय के प्रमुख तीर्थ के रूप में लोक विश्रुत है। वर्तमान में पन्ना जिले में अजयगढ़, गुन्नौर, पवई, पन्ना, रैपुरा व शाह नगर छः तहसीलें सम्मिलित हैं। वर्तमान पन्ना जिला, पूर्व पन्ना रियासत से ही निर्मित है। यहाँ के शासक ओरछा राजवंश से निकले हैं। मुगल बादशाह जहांगीर की मृत्यु के बाद उत्पन्न अराजकता के दौर में राजा चंपतराय बुन्देला शासक हुआ। इसका पुत्र छत्रसाल ने पन्ना राज्य की नींव का घसान नदी के तट पर रखी। इसका पुत्र हिरदेशाह पन्ना का प्रथम शासक बना।राजा हिरदेशाह का छठे वंशज राजा किशोर सिंह ने 1807 में कम्पनी की संधि स्वीकार की। इस प्रकार यह बुन्देलखण्ड की वरिष्ठ सनदप्राप्त रियासत बनी।

पन्ना रियासत पूर्ण रूप से अंग्रेज भक्त रियासत थी तथा उसके शासक नरपत सिंह को क्रांतिकारियों को दबाने के एवज में खिलअत तथा बीस हजार रुपये नगद प्रदान किए गए थे। पर, आगे चलकर राष्ट्रिय आन्दोलन के दौरान जनता उठ खडी हुई इनमें प्रमुख सेनसनी यर्वश्री ईसुरिया गौतम, बितई पटेल, चन्दीदीन चौरह,मलिक पाठक, नौनेबुद्धसिंह, प्यारेलाल खरे, मुकुन्दी लाल चौहान, रामदेव कुशवाह,लक्ष्मण मिश्र, हीरालाल अग्रवाल,आदि – आदि प्रमुख हैं। सेनानियों को शत –शत प्रणाम।

● जिला टीकमगढ़(ओरछा)

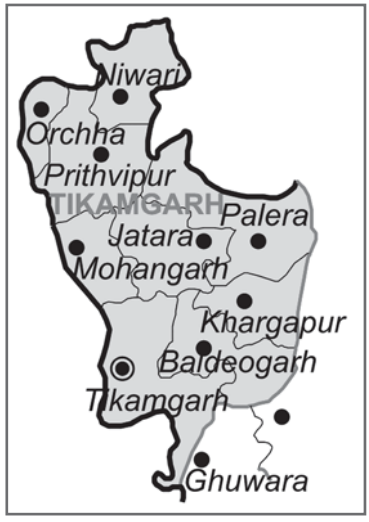

1501 ई. में रूद्र प्रताप सिंह ने ओरछा राज्य की नींव डाली। इसकी चौथी पीढ़ी में वीरसिंह देव (1605–1626 ई.) के दूसरे पुत्र पहाड़सिंह को शाहजहाँ ने जागीर दी। जब अंग्रेज कम्पनी ने बुन्देलखण्ड में प्रवेश किया तो पहाड़ सिंह के ग्यारहवें वंशज राजा विक्रमजीत महेन्द्र ने 1812 में सहायक संधि स्वीकार कर ली।

ओरछा के महल प्रख्यात हैं जिनमें प्रवीण महल, जहांगीर महल, हरदौल महल, सुंदर महल आदि वर्तमान में भी नगर की शोभा बढ़ा रहे हैं।। मधुकर शाह ने एक महल को मंदिर बनाया जिसमें रामलला की विख्यात प्रतिमा विद्यमान हैं।

प्रथम स्वातंत्र्य समर के समय महाराज हमीर सिंह ने अंग्रेजों की खूब मदद की। इसलिए उन्हें कंपनी के द्वारा रुपये 3000 मूल्य की तरोली की जागीर तथा रूपये 200 मूल्य का मोहनपुरा का इस्तमुरारी पट्टा प्रदान किया गया था।

वर्तमान में टीकमगढ़ में बल्देवगढ, जतारा, निवाड़ी, पलेरा, पृथ्वीपुर तथा टीकमगढ़ तहसीलें हैं। इसी जिले से 1 अक्टूबर 2018 से निवाड़ी नामक नवीन जिला प्रस्तावित किया गया। यह मध्यप्रदेश का 52 वाँ जिला होगा। जिसमें निवाड़ी, ओरछा, पृथ्वीपुर तथा तरीछर कंला तहसीलें प्रस्तावित हैं।

श्यामलाल साहू के अनुसार ओरछा रियासत में राष्ट्रीय आन्दोलन की शुरुआत 1934 में प्रारम्भ हुई। इस क्षेत्र में आन्दोलन के प्रसार का श्रेय कैप्टन अवधेश प्रताप सिंह को है, जो महाकौशल प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष थे। उस समय रीवा राज्य जिला कांग्रेस कमेटी के अंतर्गत बुन्देलखण्ड की ओरछा सहित 34 रियासतें एक तहसील कांग्रेस कमेटी के रूप में थी।

झण्डा सत्याग्रह की शुरुआत टीकमगढ़ के तालाब पर हुई। इसमें सम्मिलित प्रेमनारायण खरे, चतुर्भुज पाठक, नारायणदास खरे को ओरछा रियासत ने गिरफ्तार कर लिया। रियासत ने कांग्रेस के प्रसार को रोकने के लिए लालाराम वाजपेई (लखनऊ अधिवेशन में

झांसी से पदयात्रा), प्रेम नारायण खरे, चतुर्भुज पाठक, नारायणदास खरे, श्यामलाल साहू, लक्ष्मीनारायण नायक तथा माधवप्रसाद गुप्ता को राज्य से निष्कासित कर दिया टोडी फतेहपुर राज्य के नौगांव छावनी में पोलिटिकल एजेंट तथा क्रॉउन रिप्रेजेंटेटिव पुलिस का मुख्यालय था। दिसंबर 1936 में जन आन्दोलन को कुचलने हेतु राज्य नेताओं को गिरफ्तार करके नौगांव जेल भेजा गया।

निवाड़ी काण्ड

घोना में 28 फरवरी को झण्डा सत्याग्रह का आयोजन किया गया। इस सत्याग्रह से लौटने पर रियासती पुलिस ने गोलियाँ चला दी, जिसमें कुछ कार्यकर्ताओं को चोटें आई।

व्यक्तिगत सत्याग्रह 1941

राष्ट्रीय आन्दोलन के दौरान महात्मा गांधी ने व्यक्तिगत सत्याग्रह आन्दोलन की शुरुआत की। इसके अंतर्गत लालाराम वाजपेई ने श्यामलाल साहू और प्रेमनारायण खरे ने अपनी-अपनी गिरफ्तारियाँ दी। जनवरी 1942 में प्रेमनारायण खरे, पाठक व गुप्ता ने मई 1942 में राजा वीरसिंह से मिलकर ओरछा सेवा संघ नामक संस्था खोलने का निर्णय प्रस्तुत किया। 19 जुलाई 1942 को टीकमगढ़ राज्य के कार्यकर्ताओं का सम्मेलन अजयगढ़ के नजरबाग में हुआ। जिसमें राज्य की तरफ से मुख्यमंत्री रमाशंकर शुक्ल सम्मेलन में सम्मिलित हुए। इस सम्मेलन में ओरछा राज्य कांग्रेस कमेटी ने टीकमगढ़ में ओरछा सेवा संघ संचालन के लिए वाजपेई, पाठक व साहू को भार सौंपा।

भारत छोड़ो आन्दोलन 1942

इस आन्दोलन के दौरान लालाराम वाजपेई ने निवाड़ी तहसील में कार्य आरम्भ किया। वाजपेई का वारन्ट निकलने के बाद भी ओरछा राज्य ने इन्हें गिरफ्तार नहीं किया। इस आन्दोलन में टीकमगढ़ राज्य से लक्ष्मीनारायण नायक, छोटेलाल रिछारिया, रामकुमार जोशी, राजराम यादव जेलों में बंद रहे। टीकमगढ़ राज्य में विद्यार्थी भी आन्दोलन में पीछे ना रहे। 13 अप्रैल 1946 के छात्र आन्दोलन में 9 विद्यार्थी राज्य से निष्कासित किए गए। 2 नवंबर 1946 को विद्यार्थियों की इसमें सरदार सिंह तथा किशोरी शरण को जेल में बंद कर 9 दिन तक रखा गया।

चंदेरा सत्याग्रह -

ओरछा राज्य में 14 दिसंबर को पुलिस द्वारा चंदेरा में लेग एरिया घोषित करके चंदेरा में जाना प्रतिबंधित कर दिया। 16 दिसंबर 1946 को जतारा आने की कोशिश में पुलिस ने चंदेरा जाते हुए उदपुरा के पास पाठक व साहू को गिरफ्तार कर टीकमगढ़ जेल भेज दिया। इस पर ओरछा सेवा संघ ने कार्यकारिणी की बैठक बुलाकर चंदेरा में सत्याग्रह करने का निश्चय किया। महाराजा वीरसिंह जूदेव को लगा कि पुलिस सत्याग्रही ऊपर गोली चालन कर सकती है, अत: उन्हें वाजपेई सहित नेताओं को बुलाकर सत्याग्रह बंद करने की सलाह दी। अंत में चतुर्भुज पाठक को मंत्रिमण्डल में लेने का निर्णय हुआ।

उत्तरदायी शासन आन्दोलन -

9-10 नवंबर को बम्होरी में उत्तरदायी शासन प्राप्त करने का आन्दोलन करने का निश्चय किया। 1 दिसंबर के दिन आन्दोलन को प्रारम्भ किया जाना था, उसी दिन नारायण खरे की हत्या हो गई। उस समय महाराजा ओरछा मुंबई में थे, अत: उन्होंने आन्दोलनकारी नेताओं को मुंबई बुलाकर समझाया। अंत में उन्होंने 17 दिसंबर को मुख्यमंत्री की शपथ दिलाकर बुन्देलों का एक हजार वर्ष का शासन लोकतंत्र के प्रतिनिधि सेवा संघ को सौंप दिया। ओरछा राज्य का विलीनीकरण 22 अप्रैल 1948 को नौगांव राज्य राजधानी में हो गया। 11 जुलाई 1948 को राजधानी रीवा चली गई। 1952 से 1956 तक विंध्य प्रदेश की राजधानी रीवा ही रही।

चंद्रशेखर आजाद ने भी ओरछा में शरण ली थी

काकोरी लूट काण्ड के बाद झांसी और ओरछा के बीच ग्राम दीमरपुरा के नजदीक सतार नदी के किनारे पं. हरिशंकर ब्रह्मचारी के रूप में निवास किया। आगे चलकर आजाद झांसी के सहायक रूद्रनारायण के पास चले गए थे, जहाँ वे मोटर ड्राइवर रामानंद के साथ रहे, एवं मोटर कम्पनी में कार्य किया। ऐसे कर्मवीर की कुटिया अब ओरछा का राष्ट्रीय स्मारक है। जब तक आजाद जीवित रहे, देशभर के क्रांतिकारी उनसे प्रेरणा लेते रहे। आज भी 'आजाद कुटी' को नमन कर इस महान क्रांतिवीर को श्रद्धांजलि अर्पित की जाती है। इस प्रकार मध्यप्रदेश में भावरा के साथ-साथ सातार तट पर भी इस अमर शहीद का स्मारक विद्यमान है। टीकमगढ़ जिले के राष्ट्रीय आन्दोलन में जिन लोगों की महत्वपूर्ण भूमिका रही उनमें सर्वश्री कामता प्रसाद मास्टर, अमृतलाल फणीद्र, किशोरीशरण खरे, चरणदास बाबा,छोटेलाल रेजा, दुलीचेद बढ़ई, नत्थु खंगार, नत्थुराम वाल्मीक, नारायणदास खरे, परीक्षत साहू, फितुरे बंसोर, बैजू अहिरवार, बृजलाल नापित, मसलती यादव, भूलू काछी, राजाराम यादव, लक्ष्मीनारायण यादव, शोभाराम दांगी, लालाराम वाजपेयी, श्यामलाल साहू, श्यामनारायण कश्मीरी, सरदार ज्वालासिंह, हलके कुलगर, आदि- आदि महत्वपूर्ण हैं। अमर बलिदानी को शत-शत नमन।

■

9. शहडोल संभाग

शहडोल संभाग मध्यप्रदेश का सबसे छोटा संभाग है। संभाग मुख्यालय शहडोल का नामकरण सहस्त्र .डोल से मिलकर बना है। एक जानकारी के अनुसार महाभारत में जिस विराट नगर का वर्णन है वह शहडोल ही है, जिसके शासक राजा विराट थे। यह मध्यप्रदेश का सबसे छोटा संभाग है जिसमें अनूपपुर, शहडोल व उमरिया जिले विद्यमान है।

वर्ष 1984 से पूर्व यह रीवा संभाग का अंग था। इस संभाग का उद्घाटन 14 जून 2008 में किया गया था। शुरुआती दौर में डिण्डौरी को इस संभाग में रखा गया था। जबकि अब इस संभाग में अनूपपुर, शहडोल, उमरिया जिलों के लिए ही ''शहडोल संभाग'' इस्तेमाल किया जा रहा है। डिण्डौरी अब जबलपुर संभाग में है।

● जिला शहडोल

वर्तमान शहडोल संभाग व शहडोल जिला स्वतंत्रता के पहले देशी रियासत रीवा का हिस्सा था। भारत की स्वतंत्रता के बाद शहडोल रीवा संभाग का जिला बना। 14 जून 2008 को शहडोल संभाग के रूप में काबिज हुआ। इसकी उमरिया तहसील 1998 में तथा अनूपपुर तहसील 15 अगस्त 2003 को जिला बनी। चूँकि शहडोल से ही उमरिया, अनूपपुर जिले व अस्तित्व में आए हैं अत: हम वर्ष 1984 की स्थिति में ही इन तीनों जिलों का इतिहास लिपिबद्ध कर रहे हैं।

प्रथम स्वातंत्र्य समर में शहडोल जिले के सोहागपुर इलाके के इलाकेदार लाल गरुड़ सिंह उनके भाई दीवानलाल, भारत सिंह, गोलंदाज फतेहराम काजी इकबाल हुसैन और मुंशी ऋषिपाल ने आजादी के लिए विद्रोह किया था। फलस्वरुप गरुड़ सिंह को अपनी गद्दी छोडनी पड़ी। गरूड़ सिंह का संबंध क्रांतिकारी श्यामशाह से था। श्यामशाह का संबंध प्रख्यात क्रांतिकारी तात्या टोपे से था। इस प्रकार शहडोल क्षेत्र के क्रांतिकारियों का सम्पर्क देश के महान क्रांतिकारियों से था।

डॉ. राधेशरण का मत है कि वास्तव में सोहागपुर के ठाकुर गरूडसिंह एवं उनके भ्राता भारतसिंह का विद्रोह संपन्न सामंतों का विद्रोह था जो अंग्रेजों के व्यवहार से रुष्ट थे। इसमें जनता की भागीदारी प्राय: देखने को नहीं मिलती है। ठाकुर गरूडसिंह के रीवा महाराज से घनिष्ठ संबंध थे। उनमें पत्र व्यवहार भी चलता था। पर अंग्रेजी सत्ता के पक्षधर महाराजा ने सोहागपुर के विद्रोही ठाकुर को दबाने के लिए उनके विरुद्ध अपनी सेना भेजी और सोहागपुर पर कब्जा कर लिया। सोहागपुर वर्तमान में शहडोल की तहसील है।

चूँकि रीवा के महाराजा अंग्रेजों के परम भक्त थे। अत: स्वतंत्रता संघर्ष में अधिक गति न आ सकी। पर इसका सूत्रपात कैप्टन अवधेश प्रताप सिंह (1881– 1967) ने किया। वे कानून की शिक्षा इलाहाबाद से प्राप्त कर रीवा राज्य की सेना में कैप्टन व मेजर रहे। आगे चलकर काकोरी कांड के सहभागी राजेन्द्रनाथ लाहिड़ी के संपर्क में आए। इन्होंने बुढ़ार में सेवा समिति कायम की जिसने गांधी टोपी का प्रचार किया। बुढ़ार आगे चलकर शहडोल जिले का एक प्रमुख राजनीतिक चेतना केन्द्र प्रमाणित हुआ।

वर्तमान जिला उमरिया के रामलीला मैदान में कांग्रेस की पहली सभा अवधेश प्रताप सिंह के नेतृत्व में हुई, जिसमें 15000 लोग सम्मिलित हुए। सन 1932 में व्यक्तिगत सत्याग्रह में जंगल सत्याग्रह के अंतर्गत बुढ़ार में विदेशी वस्त्र बहिष्कार कार्यक्रम हुआ। अनूपपुर के पास दक्षिणी जंगल में जंगल सत्याग्रहियों ने भाग लिया जिसमें 1200 लोग गिरफ्तार हुए। इन सत्याग्रहियों को फलदार और सुन्दर ईमारती पेड़ों को नष्ट नहीं करने की हिदायत दी गई थी। इसके बावजूद पुलिस द्वारा लोगों को आतंकित करने एवं परेशान करने की कार्यवाहियाँ की गईं।

त्रिपुरी कांग्रेस में भाग लेने के लिए शहडोल से सैकड़ों की संख्या में लोग पहुंचे। इससे इस क्षेत्र में नवचेतना का संचार हुआ।

रीवा के महाराजा रघुराज सिंह ने अपनी सेना के 2000 जवानों को अंग्रेजों को इसीलिए प्रदान किया ताकि वे क्रांतिकारियों को कुचल सके। आगे चलकर अंग्रेजों ने रीवा महाराजा गुलाबसिंह के विरुद्ध में जांच की व उन्हें राज्य से बाहर निकाल दिया।

1 अगस्त 1942 को पूरे बुढ़ार में तिलक जयंती मनाई गई। यहीं से शहडोल जिले में 1942 के आंदोलन की शुरुआत हुई। पं. चंद्रकांत शुक्ल की गिरफ्तारी के बाद कांग्रेस संगठन का नेतृत्व भी सरस्वती पटेल के हाथ में आया तो उन्होंने बुढ़ार में पदस्थ मजिस्ट्रेट की अदालत में स्वतंत्र भारत की अदालत लगाई। कुछ देर की कार्रवाई के बाद मजिस्ट्रेट पटेल ने भारत की स्वतंत्रता की खुशी में कचहरी बंद करने की घोषणा की। इस घटना के बाद सभी आंदोलनकारियों को गिरफ्तार कर लिया गया।

बुढ़ार में आंदोलनकारियों को रीवा की सेन्ट्रल रखा गया था। बुढ़ार के ही अन्य दो विद्यार्थी कृष्णपाल सिंह और रामसुंदर गौतम रीवा में पढ़ते थे। इनका छात्रों पर अच्छा प्रभाव था। अंग्रेजी हुकूमत के खिलाफभाषण देने के कारण इन्हें 12 अगस्त 1942 को रीवा के जानकी पार्क में गिरफ्तार कर लिया गया। इसी क्रम में श्यामसुन्दर गौतम को भी 15 अगस्त 1942 को गिरफ्तार कर लिया गया।

शहडोल जिले की स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों की सूची में लगभग 50 लोगों के नाम दर्ज हैं। जिनमें सर्वश्री आत्माराम, कृष्णपाल सिंह, कुंजरसिंह, चंद्रकांत शुक्ल, छोटेलाल पटेल, जागेश्वर प्रसाद तिवारी, दानबहादुर सिंह, नासिर अली, धर्मचंद जैन, नागरमल, नारायण प्रसाद तिवारी, पद्मचन्द गर्ग, पन्नालाल, पुरूषोत्म प्रसाद, बाबूलाल जैन, भगवानदास, मंगल प्रसाद, महादेव प्रसाद द्विवेदी, माधवराव मिश्र, मुलायमचंद जैन, मुस्तफा खान, मौनी रतनचंद जैन, रविशंकर गुप्ता, रामखेलावन मिश्र, रामबालक द्विवेदी, राममिलन, राममनोहर राय, रामशोभित तिवारी, रामसुन्दर गौतम, रूपचंद जैन, लाल वीरेन्द्र बहादुर सिंह, शंभूनाथ शुक्ल, शिवप्रसाद गुप्ता, शिवप्रसाद सिंह, शीतलप्रसाद बारी, संकरा प्रसा सुमतिचंद्र, स्वामी वल्लभाचार्य, स्वामी माधवानंद, सरस्वती प्रसाद पटेल, सागरचंद जैन, साधुराम, सीताराम नाई आदि-आदि।

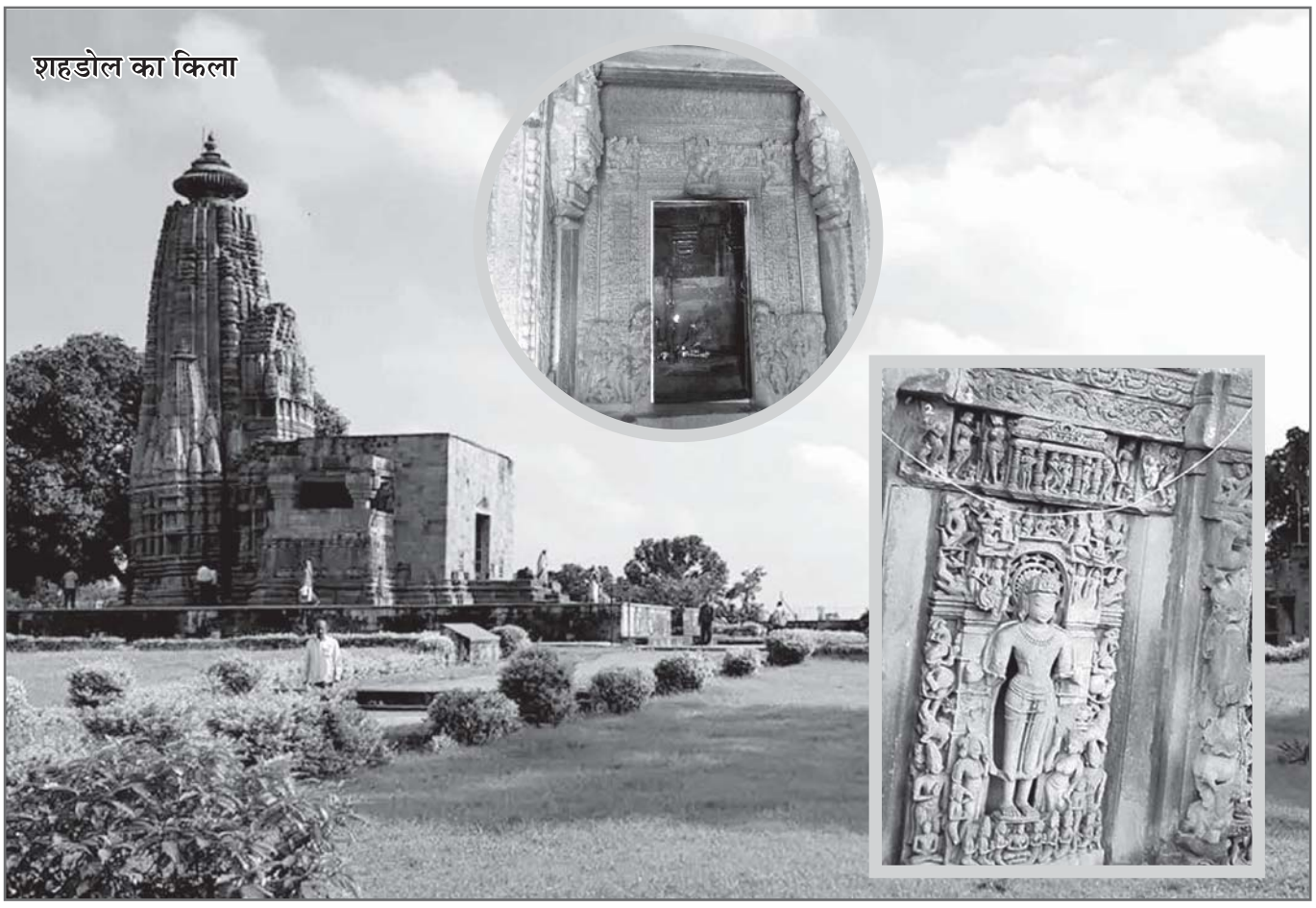

10. उज्जैन संभाग

मध्य प्रदेश के उत्तर पश्चिम में स्थित उज्जैन संभाग में वर्तमान में उज्जैन, देवास, रतलाम, शाजापुर, आगर, मन्दसौर व नीमच, 07 जिले है। संभाग मुख्यालय उज्जैन में ''महाकाल'' नामक द्वादश ज्योर्तिलिंग स्थापित है। इस नगर में प्रत्येक 12 वर्ष में सिंहस्थ पर्व का आयोजन किया जाता है। नगर के दक्षिण में प्रख्यात जंतर-मंतर वैद्यशाला है, जिसका निर्माण जसवंतसिंह ने कराया था।

जिला उज्जैन

प्रथम स्वातंत्र्य समर में उज्जैन जिले की, बड़नगर, घटिया, खाचरोद, , महिदपुर, नागदा, तराना और उज्जैन तहसीलें सम्मिलित हैं।

महिदपुर मुख्यालय कभी ईस्ट इंडिया कंपनी की छावनी के रूप में रहा। जब नीमच की छावनी में क्रान्ति हुई (03, जून, 1857) तब तक महिदपुर की छावनी शांत थी। यद्यपि यहाँ की सेना में मेवाती मुसलमानों की संख्या पर्याप्त थी, परन्तु इन्दौर में क्रान्ति सम्पन्न होने के बाद महिदपुर की सेना में हलचल होने लगी। इसी बीच मालवा सेना को 06, जुलाई, 1857 को निर्देश दिया कि वे लेफ्टिनेंट हर्ड व बोर्डिंग के मार्गदर्शन में नीमच के विद्रोह को दबाने के लिए प्रस्थान करें। इस देशी सेना ने नीमच के रास्ते में स्थित मल्हारगढ़ में 07, जून, 1857 को विद्रोह कर लेफ्टिनेंट हर्ड व बोर्डिंग की हत्या कर दी। यह सेना इसी दिन वापस महिदपुर लौट आई और इसने महिदपुर की छावनी को आजाद करा लिया।

खाचरोद का संदर्भ इस अर्थ में भी आता है कि शाहजादा फिरोज जावरा पहुँचने के पहले खांचरोद में ही देखा गया था। उज्जैन के सरसूबा बाबा आपटिया ने उसे खदेड़ने का प्रयास किया था। प्रथम स्वातंत्र्य समर में उज्जैन में किसी घटना के होने का संदर्भ नहीं मिलता है, क्योंकि यह सिंधिया की द्वितीय राजधानी के रूप में प्रख्यात था इसलिए यहाँ कि व्यवस्था चाक-चौबंद थी।

जहाँ तक उज्जैन में राजनीतिक चेतना के विकास का प्रश्न है। 1917 ई. में यहाँ ''उज्जैन सार्वजनिक सभा'' की स्थापना की गई थी और इसका कार्यालय पटनी बाजार के खादी भण्डार में रखा गया था। इसके 70 संस्थापकों में त्र्यंबक दामोदर पुस्तकें, पंडित अम्बाप्रसाद तिवारी व कृष्णराव दाते प्रमुख थे। यह सभा आज के शब्दों में स्टेट कांग्रेस थी। उस समय राष्ट्रीयता जाग्रत करने के लिए एकमात्र साधन गणेशोत्सव था, जिसे 1895 में लोकमान्य तिलक ने प्रारम्भ किया था। सार्वजनिक सभा के कार्यकर्ताओं ने महात्मा गांधी के प्रभाव में 1920-1921 के बाद खादी के वस्त्र पहनना प्रारम्भ कर दिया था।

1928 में ग्वालियर राज्य में खादी संघ की स्थापना की गई थी। उज्जैन नगर में बाकड़ा बड़ में पहला खादी भण्डार खोला गया था। इस समय कांग्रेस का मुख्यालय अजमेर में था और यहीं से ग्वालियर, बड़ौदा, बुंदेलखण्ड तक के कांग्रेस कार्यालयों का संचालन एवं नियंत्रण होता था। महात्मा गांधी के अनन्य सहयोगी हरिभाऊ उपाध्याय, देवास के समीप भंवरासा के निवासी होकर अजमेर के समीप हटुंडी से कांग्रेस की गतिविधियों का संचालन करते थे।

महात्मा गांधी के आव्हान पर सविनय अवज्ञा आंदोलन के अंतर्गत जिस नमक सत्याग्रह का आंदोलन हुआ, उसमें उज्जैन से पंडित शिवशंकर रावल तथा नारायणदत्त रावल का नाम भी अजमेर जाने वालों की सूची में दर्ज है।

सविनय अवज्ञा आंदोलन में स्वदेशी की भावना बलवती की गई थी। इसके अंतर्गत उज्जैन में प्रोफेसर पराड़कर की अध्यक्षता में स्वदेशी भण्डार की स्थापना 1931 ईस्वी में उज्जैन स्थित पुस्तकें साहब के घर में की गई थी। इसी कार्यक्रम के अंतर्गत उज्जैन में अनेक स्थानों पर विदेशी वस्त्रों की होलियाँ जलाई गई तथा प्रभात फेरियों का आयोजन किया गया ।

उज्जैन के कपड़ा मिलों में श्रमिक मजदूरों का भारी शोषण होता था। इस शोषण को रोकने के प्रयास में सन् 1932 में नंदाजी के आदेश पर पहली बार मजदूर संघ की स्थापना की गई थी। 1940 में मुरैना अधिवेशन में जागीरदारी प्रथा के दुख-दर्द दूर करने का संकल्प किया गया था। नागदा का जागीर आंदोलन उज्जैन जिले की

जागृति का प्रमुख केन्द्र था।

सन् 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन में उज्जैन की भूमिका अत्यधिक महत्वपूर्ण रही। 19, अगस्त, 1942 को भारत छोड़ो का नारा देने के पश्चात उज्जैन के सभी लब्ध प्रतिष्ठित नेतागण गिरफ्तार कर लिए गये फिर भी उज्जैन में एक महिने तक लगातार सत्याग्रह जुलूस व सभाएं होती रही। उज्जैन के राष्ट्रीय आंदोलन में विद्यार्थियों की महत्वपूर्ण भूमिका रही। इसी दौरान अवंतिलाल जैन के मार्गदर्शन में गजानंद वर्मा, श्यामलाल मित्तल, शिवचरण, गुलाबसिंह आदि युवकों ने मिलकर रेल पटरियाँ उखाड़ी, जिससे रेल का आवागमन ठप्प हो गया। बाद में इन सब पर ब्रिटिश इंडिया में मुकदमा चला। जिले की महिदपुर तहसील में प्रजामण्डल का राज्य व्यापी अधिवेशन एक महत्वपूर्ण कड़ी है।

सन् 1984 तक उज्जैन के स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों की सूची में 193 लोग दर्ज थे। इनमें उज्जैन तहसील में सर्वश्री पुस्तकें साहब, अम्बाप्रसाद तिवारी, सूरजभाई, लच्छुभाई, मथुरादास मुनीम, बाबूलाल अवस्थी, सगीर एहमद कुरैशी, शंकर राव देशमुख, आदि प्रमुख थे। खांचरोद तहसील में भैरव भारती, रामचंद्र रघुवंशी, रामचंद्र नवाल, राधेलाल व्यास, सागरमल भारती, हरिराम चौबे, पंडित हरिप्रसाद, श्रीमती रतनबाई भारती, श्रीमती देवीबाई चौबे, आदि प्रमुख आंदोलनकारी थे। महिदपुर तहसील में नेमीचंद कासलीवाल, तारादेवी कासलीवाल, काका पुलेकर, रामचंद्र कर्नावट, भेरूलाल किशुक, कचरूलाल टेलर, रामकृष्ण गांधी, आनंदीलाल छजलानी, आदि प्रमुख सेनानी थे। कृपाशंकर तिवारी के अनुसार सर्वश्री मुरली मनोहर ज्योतिषि, श्री सुंदरलाल पटेल, हफीजउद्दीन कुरैशी, मोतीलाल नीमा ने आजादी की लड़ाई को लड़ने में और वातावरण बनाने में जो सहयोग दिया, वह बड़नगर के इतिहास में स्वर्णाअक्षरों में लिखा जावेगा। इन महान सैनानियों का शत-शत अभिनंदन।

ग्वालियर राज्य सार्वजनिक सभा जिला उज्जैन 1942 श्री सूरजसेठ (प्रधान मंत्री), श्री गजानन्द वर्मा (मन्त्री), श्री कन्हैयालाल मेहता, श्री छगनलाल कुलमी, श्री वि.वा. आयाचित, श्री बनारसी दासजी जैन (नगर अध्यक्ष), श्री राधेलाल व्यास, (जिला अध्यक्ष), श्री कन्हैयालाल मनाना (उपाध्यक्ष), श्री सिद्धनाथ ठक्कर, श्री लक्ष्मी नारायण नागर, ठाकुर विजयसिंह ।

● जिला - आगर-मालवा का योगदान

कभी आगर मालवा, शाजापुर जिले की तहसील हुआ करता था। ''आगरिया भील'' की स्मृति में स्थापित आगर को

अंग्रेजी में लिखने पर यह आगरा बन जाता था। अत: अंग्रेजों ने इसके आगे मालवा जोड़कर इसे आगर-मालवा नाम दिया। 16, अगस्त, 2013 में इसे शाजापुर जिले से अलग कर मध्य प्रदेश के 51 वें जिले के रूप में स्वतंत्र रूप से जिला मुख्यालय का स्थान प्राप्त हुआ। इस प्रकार यह उज्जैन संभाग में सातवें जिले के रूप में सम्मिलित हो गया। इस जिले में आगर, बड़ौद, सुसनैर व नलखेड़ा नामक 04 तहसील हैं।

लाल मिट्टी का है ये क्षेत्र। जहाँ-जहाँ लाल मिट्टी होती है, वहाँ-वहाँ मंगल का वास होता है। अत: ईस्ट इंडिया कंपनी ने भी भारतीय ज्योतिषियों का प्रमाण मानकर उन्हीं स्थानों पर अपनी छावनियाँ स्थापित की, जहाँ लाल मिट्टी थी। उनका भी विश्वास था कि 'मार्स यानें मंगल' युद्ध का देवता है और वह ऐसी भूमि में निवास करता है। 1844 ई. में कंपनी की ग्वालियर राज्य से संधि हुई। इसके अनुसार ग्वालियर कांटिजेंट की पांचवी इंफेंटरी रेजिमेन्ट पदस्थ की गई थी। प्रथम स्वातंत्र्य समर में जैसे ही इन्दौर में क्रान्ति का उद्घोष हुआ, वैसे ही मेवाती प्रधान सेना वाली पांचवी इंफेंटरी ने 04, जुलाई, 1857 को बुनियाद अली के नेतृत्व में विद्रोह कर दिया और अपने तीन यूरोपियन अफसरों को ढेर कर दिया। क्रान्ति का समाचार सुनकर छावनी प्रमुख कैप्टन कार्लेर और अन्य यूरोपियन अधिकारी होशंगाबाद की तरफ भाग खड़े हुए। क्रान्ति के समय यहाँ सोलह यूरोपियन निवास करते थे, जिनमें 07 पुरूष 06 स्त्रियाँ व 3 बच्चे थे। अत: ये शेष बचे तीन पुरूष पांच स्त्रियाँ व 3 बच्चे लुकते-छुपते नर्मदा के दक्षिण में कंपनी की सीमा में जा पहुँचे। छावनी का मिस्टर जेम्स और उसकी पत्नी भटक गये। इन्होंने एक घौंसी से मदद लेकर लाल्या कुरमुड़ी गाँव तक पहुँचे। यहाँ से पैदल चलते-चलते यह दम्पत्ति करनालिया गाँव में जा पहुँचे। इन्हें अपने गाँव में आता

देखकर ग्रामीण जब इनकी ओर बढ़े तो ये घबरा गये। अंत में जेम्स ने गोलियाँ चलाना शुरू कर दी, जिससे कुछ ग्रामीण मारे गये और कुछ भाग खड़े हुए। अंत में जेम्स ने अपनी पत्नी को मारकर स्वयं आत्महत्या कर ली। ग्रामीणों ने इन्हें ईसाई परंपरानुसार दफना दिया।

अंग्रेजों ने चलवाया गधे का हल:-

विद्रोह शांत होने पर इस घटना की जांच की गई और जांच में यह पाया गया कि जेम्स ने स्वयं आत्महत्या की थी, इसके बावजूद भी ब्रिटिश अधिकारियों ने पूरे गाँव को दण्डित करने का निश्चय किया। इस दण्ड में उस प्राचीन भारतीय परम्परा का अनुसरण किया जो लगभग ईसा की दो शताब्दी पूर्व भारत में प्रचलित था और जिसे मुसलमान शासकों ने भी समय समय पर अपनाया था। इस प्रथा के अनुसार अंग्रेजों ने करनालिया गाँव में आग लगवाकर वहाँ गधे का हल चलवाया। इसके बाद जेम्स दंपत्ति को जिस स्थान पर ग्रामीणों ने दफनाया था उस स्थान पर उनकी स्मृति में एक मृतक लेख भी लिखवाया। आज भी यह गाँव आगर जिले में गंगापुर करनालिया के नाम से जाना जाता है।

टंट्या भील की गिरफ्तारी:-

स्वातंत्र्य समर की समाप्ति के बाद सेन्ट्रल इंडिया की हार्स रेजिमेन्ट के चार स्कवार्डन यहाँ पदस्थ थे, इसकी 39 वीं रेजिमेंट के रिसालेदार ईश्वरीप्रसाद की नियुक्ति टंट्या भील को पकड़ने के लिए की गई थी। 45 वर्ष की उम्र का टंट्या भील मालवा व निमाड़ में टंट्या मामा के नाम से प्रख्यात था और कंपनी की नज़र में 400 से अधिक अपराधों का भागीदार था। बनेर गाँव के गणपत के विश्वासघात के कारण टंट्या पकड़ा गया। वह बड़ा साहसी, बहादुर, दयालु, गरीबों का सहायक, स्त्रियों, बच्चों व ब्राह्मणों के रक्षक के रूप में जाना जाता था। अंग्रेजों के अत्याचार के कारण उसे डाकू बनना पड़ा, इसकी सबसे पहली प्रतिमा कालाकुण्ड रेल्वे स्टेशन के पास स्थापित की गई थी। वर्तमान में टंट्या मामा की स्मृति में उनके वंशजों को पैंशन, उसके नाम पर पुरूस्कार, विद्यालय एवं महाविद्यालय के नामकरण किए जाकर उसके महान बलिदान के प्रति श्रद्धा सुमन अर्पित किये जा रहे हैं।

हमारे प्रदेश के गरिमामय मुख्यमंत्री माननीय शिवराजसिंह जी चौहान की उपस्थिति में मध्य प्रदेश सरकार प्रतिवर्ष टंट्या मामा स्मृति में गौरवपूर्ण कार्यक्रम का आयोजन कर इस महान् स्वतंत्रता सैनानी की स्मृति में श्रद्धा सुमन अर्पित करती है।।

प्रथम स्वातंत्र्य समर के पश्चात रानी लक्ष्मीबाई की एक दासी काशीबाई आगर के लछमनपुरे में आकर बस गई थी। वे आजीवन यहीं रही, इनकी मृत्यु 1910 ईस्वी में हुई। कहा जाता है कि लक्ष्मीबाई के सुपुत्र दामोदर राव को कुछ दिन यहीं रखा गया था। क्रान्ति के दौरान नाना साहेब व तात्या टोपे भी अपने प्रवास के दौरान इस क्षेत्र से गुजरे थे। इस प्रकार आगर-मालवा की भूमि महान क्रान्तिकारियों के आगमन से गौरवान्वित हुई है।

राष्ट्रीय आंदोलन के दौरान यह क्षेत्र प्रख्यात क्रान्तिकारी नारायण राव दांडेकर, काशीनाथ जोशी, पंडित सिद्धनाथ माधव लौंढ़े की गतिविधियों का केन्द्र या क्षेत्र रहा है। ऐसे महान क्रान्तिकारियों की इस भूमि को सादर नमन।

● जिला - देवास का योगदान

वर्तमान देवास जिले की देवास तहसील कभी मराठा पंवार शासकों की बड़ी पांती एवं छोटी पांती रियासत के रूप में जाना जाता था। स्वतंत्रता के बाद ग्वालियर रियासत के सोनकच्छ व बागली तथा होल्कर रियासत के कन्नौद, खातेगाँव तथा धार रियासत के कुछ भाग को मिलाकर वर्तमान देवास जिले का निर्माण हुआ है। इस जिले में वर्तमान में देवास, बागली, कन्नौद, खातेगाँव, हाटपिपलिया, सतवास, सोनकच्छ व उदेनगर सहित 09 तहसील सम्मिलित है।

प्रथम स्वातंत्र्य समर के दौरान इन्दौर के समीप होने के कारण देवास रियासत में भी अंग्रेजों के खिलाफ वातावरण निर्मित हुआ। रियासत के आलोट परगने के कलसा गाँव में अमरजी, अवजी व लालजी अमरजी दो स्वाधीनता प्रेमी लड़ाके मन्दसौर जाकर शाहजादा फिरोज की सेना में सम्मिलित हुए और क्रान्ति का झण्डा थामा। आलोट के ही समियतखाँ फरीदखाँ मेवाती ने बगावत करके अपने स्वजनों की एक फौज खड़ी की व वहाँ से अपने आप को नवाब घोषित कर लिया। आगे चलकर वह अपने दलबल सहित मन्दसौर के युद्ध में सम्मिलित हुआ और उसने अंग्रेजों के विरूद्ध

क्रान्ति की पताका थामी। इसी क्षेत्र के बापू दंडी ने भी स्वाधीनता संघर्ष में बढ़ –चढ़ कर हिस्सा लिया। देवास से 20 मील पर राघोगढ़ के ठाकुर दौलतसिंह ने सतवास पर आक्रमण करके अपनी पताका फिराई। जब अंग्रेजी सेना का दबाव बढ़ा तो दौलतसिंह ने राघोगढ़ की गढ़ी में आश्रय लिया। ब्रिटिश अधिकारी कर्नल हेनरी ड्यूरेंट के आदेश पर जब राघोगढ़ की गढ़ी ध्वस्त कर दी गई तब दौलतसिंह ने अपना परिवार आंकिया गाँव के पटेल के हवाले कर दिया। अंत में आजादी के इस दीवाने को गुना की छावनी में फांसी दी गई। इसके बावीस गाँव जप्त करके देवास बड़ी पांती व छोटी पांती को वितरित कर दिए गये।

देवास का यह सौभाग्य रहा कि यहाँ तात्या टोपे राव साहब व शाहजादा फिरोज के बीच आजादी के संघर्ष हेतु बैठकों का आयोजन हुआ। यहाँ के लोगों ने इन्दौर के प्रख्यात क्रान्तिकारी सादातखाँ को 25,000 रुपए की आर्थिक मदद करने का सौभाग्य प्राप्त किया। बागली तहसील के पिपलिया ठिकाने के तखतसिंह, भवानीसिंह, रघुनाथसिंह, बख्तावरसिंह, गंगाराम, आदि ने ब्रिटिश सरकार के विरूद्ध संघर्ष में जोर–शोर से भाग लिया। नेमावर, सतवास के लोगों ने भी ब्रिटिश सेना का प्रतिकार किया और अपनी देश प्रेम भावना का परिचय दिया। आगे चलकर देवास जिले के भौंरासा में जन्में हरिभाऊ उपाध्याय महात्मा गाँधी के साबरमती आश्रम में रहे। उन्हें महात्मा गाँधी के पाँचवे पुत्र सेठ जमनालाल बजाज का विश्वास प्राप्त था। जमनालाल बजाज के आग्रह पर वे 1927 में अजमेर के समीप हटुण्डी में जाकर बसे। वर्ष 1930 में महात्मा गाँधी के सविनय अवज्ञा आंदोलन के अंतर्गत नमक सत्याग्रह के प्रमुख संचालक बने। महात्मा गाँधी के आव्हान पर ही देवास के नारायण देव तीर्थ ने 1930 के नमक सत्याग्रह में अजमेर जाकर भाग लिया और 03 माह की जेल काटी।

देवास जिले में प्रजामण्डल का भी गठन हुआ। यहाँ का चरनोई आंदोलन 1943 शंकर कानूनगो तथा ठाकुर कन्हैयासिंह के मार्गदर्शन में चला। देवास जिला मध्य प्रदेश के उन जिलों में सम्मिलित है जहाँ के लोगों ने सुभाष चन्द्र बोस की आजाद हिन्द सेना में सम्मिलित होने का सौभाग्य प्राप्त किया, इनमें सर्वश्री कल्लु ग्वली, कन्हैयासिंह, किशन ठाकुर, गुरुमुखसिंह, गौकुलसिंह, तीरथसिंह, दत्ताजीराव शिंदे, बख्तावरसिंह, बाजीराव जाधव, बालकृष्ण हिंगोले, भीमराव कोटे, रामभाऊ बोंगेड़े, रामभाऊ जाधव, ठाकुर रामसिंह, लक्ष्मणराव कदम, शंकरराव तौलसे, सदाशिव राव हरदे, आदि ने आजाद हिन्द फौज के माध्यम से देश की आजादी के लिए संघर्ष करने का गौरवशाली इतिहास बनाया। सभी महान स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों को विनम्र श्रद्धांजली।

● जिला – मन्दसौर का योगदान

वर्तमान में मन्दसौर जिला राज्य मार्ग क्रमांक 79 पर स्थित है। वर्तमान में इस जिले में 9 तहसीलें है जिनमें मन्दसौर, मल्हारगढ़, दलौदा, सीतामऊ, सुवासरा, शामगढ़, गरोठ, भानपुरा व मन्दसौर ग्रामीण सम्मिलित है। इस जिले का निर्माण कोई सात देशी रियासतों से मिलकर हुआ है। कभी यह जिला ग्वालियर राज्य का सबसे बड़ा एवं सबसे दूरस्थ जिला था। इसके उत्तर में नीमच में अंग्रेजों की छावनी स्थित थी। इसके आगे मेवाड़ में उदयपुर में अंग्रेजों का पोलिटिकल एजेण्ट लेफ्टिनेंट शावर्स का निवास था। जब मेरठ क्रान्ति की खबर जब मेवाड़ में पहुँची तब लेफ्टिनेंट शावर्स माउण्ट आबू में था जब वह आबू से उदयपुर पहुँचा तब उसे मेवाड़ी जनता के आक्रोश का सामना करना पड़ा।

नीमच छावनी ईस्ट इंडिया कंपनी शासित प्रदेश था। जहाँ 50 ब्रिटिश सैनिक अपने परिवार के साथ निवास करते थे। यहाँ भारतीय घुड़सवार सेना मौजूद थी। इस सेना ने 03, जून की रात मोहम्मद अली बेग के नेतृत्व में विद्रोह कर अंग्रेजों को छावनी से भगा दिया जब इस विद्रोह की खबर उदयपुर पहुँची तो महाराणा मेवाड़ की सेना अर्जुनसिंह सहिवाला तथा लेफ्टिनेंट शावर्स के नेतृत्व में नीमच आ पहुँची तब तक नीमच के क्रान्तिकारी सैनिक निम्बाहेड़ा होते हुए दिल्ली की ओर रवाना हो चुके थे।

नीमच के विद्रोह की खबर सुनकर महिदपुर से भी एक सेना नीमच की ओर रवाना हुई। इसमें पदस्थ मेवाती सैनिकों ने विद्रोह कर अपने दो सैन्य अधिकारियों को मल्हारगढ़ में मौत के घाट उतार दिया और ये वापस महिदपुर चले गये। इन्हीं दिनों इन्दौर, खाँचरोद होता हुआ शाहजादा फिरोज नामक एक व्यक्ति जो अपने

आप को मुगल वंश का कहता था, जावरा के नवाब के दरबार में पहुँचा। जावरा नवाब चूंकि ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी का भक्त था। अत: उसने शाहजादा फिरोज को अपने राज्य से निकलने का आदेश दिया। इस पर वह अफजलपुर पहुँच गया। मन्दसौर के मदारपुरा के मेवाती मुसलमानों और मकरानियों ने जब यह सुना कि शाहजादा फिरोज हज करके मक्का से लौटा है और वह पैगम्बर का पवित्र बाल अपने साथ लाया है तो वे उसे लेने अफजलपुर पहुँचे और बड़ी धूमधाम के साथ शाहजादा फिरोज को म्याने में बैठाकर मदारपुरा ले आए। मदारपुरा की मस्जिद में देश की आजादी के बाद तक उसका म्याना वहाँ मौजूद रहा था।

कुछ दिनों बाद जब ग्वालियर सेना का दबाव बढ़ा तो शाहजादा, शहीद वाधवा शाह की मजार के पास जा टिका। वर्तमान में यह स्थान दुदन सैयद की दरगाह के नाम से प्रसिद्ध है। यहीं से 21, अगस्त, 1857 को शाहजादा फिरोज जब एक जुलूस के साथ निकला तो इस जुलुस को तितर-बितर करने के लिए कोतवाल देवीप्रसाद (कश्मीरी ब्राह्मण) सिंधिया की सेना के साथ आगे बढ़ा। शाहजादा फिरोज के उत्साह को देखकर के सिंधिया की फौज बागी हो गई और कप्तान देवीप्रसाद को भागकर मेवातियों की मस्जिद में शरण लेना पड़ी। यहाँ उसने मस्जिद में रखे मटके का पानी पीकर घोषणा की कि अब वह मुसलमान बन गया है इसलिए उसकी जान बख्शी जावे।

22, अगस्त, 1857 को हजारों सैनिकों के साथ शाहजादा फिरोज ने मन्दसौर के किले पर अपना ध्वज फहरा दिया और वह ''गिरहा बादशाह'' के रूप में मन्दसौर की गद्दी पर बैठ गया। क्रान्तिकारियों ने उसे 9 तोपों की सलामी देकर ''बादशाह फिरोजशाह'' का नाम दिया। ईनाम बतौर जब इन सैनिकों ने अपनी तनख्वाह की मांग की तो बादशाह ने खीसे निपोरते हुए कहा कि सिंधिया के महाराष्ट्रियन पंडितों से धन वसूल लो। इस पर मुस्लिम सैनिकों ने सिंधिया के मन्दसौर में पदस्थ ब्राह्मण अधिकारियों की हत्या कर धन वसूल लिया।

शाहजादा फिरोज ने मन्दसौर के आसपास की रियासतों, जैसे सीतामऊ, जावरा, प्रतापगढ़, आदि में अपने फरमान भेजकर धन वसूल करना प्रारम्भ किया। इस समय तक विभिन्न रियासतों की सेना से निकाले गए हजारों सैनिक अच्छी तनख्वाह व लूट के लालच में मन्दसौर में जमा हो गये थे। इन सबका एक ही उद्देश्य था। अंग्रेजों को मार भगाना ताकि दिल्ली के तख्त पर पुन: बहादुरशाह जफर का राज्य कायम हो सके।

शाहजादा फिरोज की बढ़ती ताकत को नेस्तनाबूद करने के लिए कंपनी सरकार ने देशी राजाओं की मदद मांगी। मन्दसौर से एक ब्राह्मण जूते में गोपनीय संदेश लेकर ग्वालियर गया, जिसे बाद में अंग्रेजों ने चार बीघा जमीन व एक चांदी की तोप पुरूस्कार में प्रदान की थी। इस स्वातंत्र्य समर को कुचलने के लिए कंपनी ने तैयारी प्रारम्भ की तब तक शाहजादा फिरोज ने बिल्लौद को लूट लिया, रतलाम लूटने की योजना बनाई। सीतामऊ के शासक को धमकाकर 28 हजार रू. की रकम वसूली, कनघट्टी के ठाकुर की गढ़ी तोड़ दी, नाहरगढ़ पर आक्रमण किया, आलोट पर कब्जा किया, जीरन के युद्ध में कैप्टन रीड व कैप्टन टक्कन के सिर काटकर मन्दसौर किले के पश्चिमी दरवाजे पर 23, अक्टूबर, 1857 को टांग दिए। आज भी यह दरवाजा ''मण्डी दरवाजे'' के नाम से जाना जाता है जो मुण्डी दरवाजे का अपभ्रंश है। इस घटना के ठीक 15 दिन बाद शाहजादा ने नीमच पर आक्रमण कर 08, नवम्बर, 1857 को ब्रिटिश पॉलिटिकल एजेण्ट के मुख्यालय आक्टर लोनी हाल पर कब्जा कर लिया। शाहजादा फिरोज ने कोई 92 दिन तक मन्दसौर दुर्ग पर अपनी आजादी का ध्वज फहराया। अंत में कर्नल ड्यूरेन्ट के नेतृत्व में इन्दौर से एक विशाल सेना इन क्रान्तिकारियों को कुचलने के लिए अपने 7 सेनापतियों के साथ इन्दौर से रवाना हुई। धार होते हुए रतलाम आई। इस सेना के साथ रतलाम, सैलाना, पिपलौदा, सीतामऊ व ग्वालियर राज्य की देशी सेनाओं और जागीरदारों की सेना सम्मिलित हुई जो 21, नवम्बर, 1857 को मन्दसौर पहुँची। 22 से 25 नवम्बर, 1857 को गुराड़िया के युद्ध में कोई 2,000 से अधिक भारतीय सैनिक मारे गये। इस युद्ध में ब्रिटिश सेना का एकमात्र सैनिक अधिकारी लेफ्टिनेन्ट रेडमैन मारा गया। अंत में 25, नवम्बर की रात शाहजादा फिरोज उत्तरप्रदेश की ओर पलायन कर गया। कोई छ: माह से अधिक चले संघर्ष में कोतवाल देवीप्रसाद कश्मीरी का धर्मान्तरण और महाराष्ट्रियन पंडितों के नरसंहार एवं सेठों से जबरिया वसूली के कारण शाहजादा फिरोज की आलोचना भी की गई। इसका प्रमाण हमें कृषि वैज्ञानिक नरेन्द्र सिपानी के संग्रह से प्राप्त एक लम्बी कविता में मिलता है।

बल्या इमान बईमान सब इंसान
भयै कीनी है कीसान मतै लगै सब
इरानी के कर हीला गला पुकारे दाम
मौला कु कलबला मरेंगे प्यासे मरे अन
पानी के आगी में जरैगें अैक सार से
से खीचेंगे हरगज बचेंगे नाथ तुरक

तुरकानी कैः

अंग्रेज भी अपनी सेना के साथ रतलाम के राजकवि गोविन्द को साथ लाए थे जिसने आगे चलकर 1860 ई. में ''गौरांग विजय'' नाम का ग्रंथ लिखा। इस ग्रंथ में मन्दसौर के युद्ध का वर्णन कुछ इस प्रकार किया गया है

एकत मिवाती विलायतीमोची मणियार
घोंसी छीपा बकरकसाई कुंजड़े किये।
चूड़ीगर रंगरेज भटयारे पिंजारे भट,
भडवे भड़भूजे थोक थोक के थड़े किये।।
गावत गोविन्द गिरा फिरोज फकीरहू कौं,
थापि स्याहजादा सब लोगों में बड़े किये।
सिंदे सिरकार के निसान मिटाय मंद,
बादशाही झंडे मंदसौर में खड़े किये ।।9/4

मन्दसौर से शाहजादा फिरोज के पलायन करने के बाद ब्रिटिश सेना ने भारी मात्रा में क्रान्तिकारियों का नृसंहार किया। 12 पत्थर का मैदान जहाँ वर्तमान में उत्कृष्ठ विद्यालय लगता है, के मैदान में सैनिक न्यायालय की स्थापना की गई थी जिसमें क्रान्तिकारियों के खिलाफझूठे गवाह तैयार कर उन्हें फांसी पर लटकाने और मृत्यु दण्ड प्रदान करने का आदेश दिया जाता था। ऐसे ही 04 प्रमुख क्रान्तिकारियों अनवर खाँ जमादार, मुंशीगुलाम मोइद्दीन तथा रहीम बख्श को फाँसी दी गई। एक हिन्दु लाला सोहड़मल को भी फांसी का आदेश था परन्तु उसका आदेश स्थगित हो गया। इन्हें 16, दिसम्बर, 1857 को मुण्डी दरवाजे के सामने ही फांसी पर लटकाया गया। इस प्रकार अंग्रेजों ने दो की मौत का बदला तीन को मारकर लिया।

बरसों तक मन्दसौर में कुछ नहीं घटा, परन्तु राष्ट्रीय आंदोलन के दौरान फिर देश की आजादी का स्वप्न लिए लोग उठ खड़े हुए। ग्वालियर रियासत के सिंधिया शासक अंग्रेजों के परम भक्त थे, अतः यहाँ राष्ट्रीय आंदोलन जोर न पकड़ सका। इस समय में सिंधिया रियासत का अधिकृत पत्र ''जयाजी प्रताप'' निकलता था और इस समाचार पत्र में एक भी समाचार आंदोलन के बारे में कभी नहीं छपा। लेकिन विभिन्न रियासतों से निकाले हुए स्वतंत्रता संग्राम सैनानी मन्दसौर में आ बसे और उन्होंने आजादी की लौ, लोगों में जलाना प्रारम्भ कर दिया। इनमें सर्वश्री रामनारायण त्रिवेदी थे। सैलाना में जन्मे त्रिवेदी अत्यन्त प्रतिभावान होकर पन्ना रियासत के पवई में डिविजनल मजिस्ट्रेट की नौकरी छोड़कर गांधीजी की प्रेरणा से राष्ट्रीय आन्दोलन में सम्मिलित हुए। सैलाना रियासत ने इन्हें निर्वासन का दण्ड दिया।

त्रिवेदी मन्दसौर में बस गए और ग्वालियर राज्य सार्वजनिक सभा के अध्यक्ष चुने गए। भारत छोड़ो आन्दोलन में कोई 9 माह की जेल मुंगावली में भोगी। देश की आजादी के बाद आपने किसी प्रकार की पेंशन स्वीकार न की। अपने द्वारा अर्जित सम्पत्ति से आपने एक जन कल्याणकारी ट्रस्ट की स्थापना की जिसका संचालन उनके सुपुत्र एडवोकेट धीरेन्द्र त्रिवेदी आज भी कर रहे हैं।

केशवप्रकाश विद्याथी, कन्हैयालाल मनाना, कन्हैयालाल कटलाना, इसी प्रकार श्यामसुख गर्ग (नीमच), शंकरलाल कटलाना (सीतामऊ), विजयसिंह पथिक (उत्तरप्रदेश) चांदमल मारू, नन्दलाल दलाल, लालचंद चौरड़िया, विमलकुमार चौरड़िया, आदि की भूमिका महत्वपूर्ण रही।

इन्होंने सार्वजनिक सभा के माध्यम से प्रभात फेरियाँ निकालना, खादी की टोपी धारण करना और खादी पहनना, आदि छुटपुट गतिविधियों की शुरूआत की। कई स्वतंत्रता संग्राम सैनानियों को इंदौर, उज्जैन, आदि स्थानों पर जेलों में रखा गया। भारत छोड़ो आंदोलन में गिरफ्तार कई स्वतंत्रता प्रेमियों ने अपनी गिरफ्तारियाँ दी। 1972 में जब आजादी की 25 वीं वर्षगांठ मनाई तब तक वर्तमान मन्दसौर जिले के इने गिने ही स्वतंत्रता संग्राम सेनानी प्रकाश में आए थे, इनके नाम हमें शासकीय राजीव गांधी महाविद्यालय, मन्दसौर में लगे स्तम्भ से ज्ञात होते है। आगे चलकर वर्ष 1994 में मध्य प्रदेश शासन ने जो स्वतंत्रता संग्राम सैनानियों की सूची प्रकाशित की, उसमें इन सैनिकों की संख्या बढ़कर 18 हो गई थी। इन सबके सम्मिलित प्रयास से देश को आजादी प्राप्त हुई। जिन दिनों खादी की टोपी पहनकर घूमना ही अपराध था उन दिनों आंदोलनकारियों ने जो अलख जगाई, वह वंदनीय है।

● रतलाम जिलाः स्वातंत्र्य समर से स्वतंत्रता तक

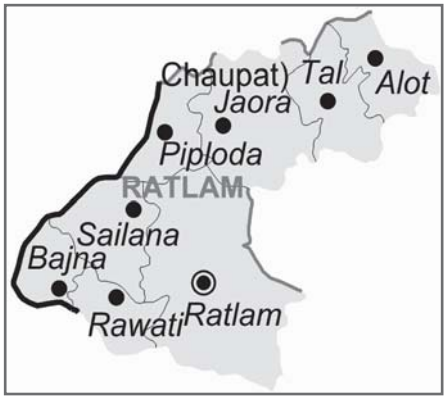

आज का रतलाम जिला पूर्व रतलाम रियासत का मुख्यालय रहा है। वर्तमान के इस जिले में रतलाम, जावरा, सैलाना, पिपलौदा रियासतों के सम्पूर्ण भाग के सिवाय देवास सिनियर, देवास जूनियर, ग्वालियर स्टेट तथा चीफकमीश्नरी पन्थ पिपलौदा के गाँवों के विलय से हुआ है।

कभी रतलाम क्षेत्र अफीम के व्यापार का प्रमुख केन्द्र था। वर्तमान में यह सोने के विश्वस्त विक्रय केन्द्र तथा नमकीन के लिए भारत भर में प्रख्यात है। मुगल काल में रतलाम, उज्जैन सरकार के अंतर्गत महाल के रूप में प्रख्यात था। इसका प्राचीनतम उल्लेख आइन-ए-अकबरी में मिलता है।

1857 के प्रथम स्वातंत्र्य समर के पूर्व पश्चिमी मालवा की सभी रियासतें सहायक संधि के अंतर्गत ब्रिटिश सरकार की अधीनता स्वीकार किये हुए थी। अत: ये प्रत्यक्ष रूप से ईस्ट इंडिया कंपनी का विरोध करने का साहस नहीं रखती थी। पर सैनिकों में विभिन्न कारणों से जो आक्रोश था उसका विस्फोट 03, जून, 1836 को नीमच छावनी के मोहम्मद अली बेग के नेतृत्व में फूट पड़ा। इस विद्रोह को दबाने के लिए उदयपुर से लेफ्टिनेन्ट सी.एल.शावर्स तथा मालवा की महिदपुर छावनी से ब्रिटिश अधिकारी लेफ्टिनेन्ट हंट व रीड़ के नेतृत्व में ब्रिटिश सेना ने प्रणायन किया। महिदपुर छावनी के भारतीय सैनिकों में भी भारी आक्रोश था इसलिए उन्होंने अपने ब्रिटिश अधिकारियों की मल्हारगढ़ में हत्या कर दी और 07, जून, 1857 को वापस महिदपुर लौट आए। उत्तेजित सैनिकों ने महिदपुर की छावनी भी लूट ली।।

तवारीख-ए-जावरा के अनुसार इस प्रारंभिक संघर्ष में जावरा, पिपलौदा, सैलाना, रतलाम, सीतामऊ, आदि किसी भी रियासत ने हिस्सा नहीं लिया। परन्तु जावरा के लोगों में अंग्रेजों के प्रति आक्रोश था। इसी बीच मुगल वंश के शहजादा फिरोज का जावरा में आगमन हुआ और उसने नवाब से अंग्रेजों के विरूद्ध आर्थिक सहायता मांगी जिसे नवाब गौस मोहम्मद ने अस्वीकार करते हुए उसे जावरा राज्य की सीमा तत्काल छोड़ने का आग्रह किया।

जावरा से निकलकर शाहजादा फिरोज अफजलपुर होता हुआ मन्दसौर आया, जहाँ उसका मेवाती व अन्य मुस्लिम तबकों ने गर्मजोशी के साथ स्वागत किया। शाहजादा फिरोज ने 26, अगस्त, 1857 को मन्दसौर दुर्ग पर कब्जा कर अपना राज्य कायम कर दिया। इस घटना के तीसरे दिन ही रतलाम के शासक बलवंतसिंह राठौड़ की मृत्यु हो गई। जावरा नवाब अपने प्रिय मित्र के अंतिम संस्कार में भाग लेने के लिए रतलाम गया तब उसके भाई अब्दुल सत्तारखाँ के नेतृत्व में जावरा के लोगों ने क्रान्ति कर दी और वे शाहजादा फिरोज की राजधानी मन्दसौर चले गये। मन्दसौर में शाहजादा फिरोज के साथ कोई 20 हजार से अधिक क्रान्तिकारी सैनिक आ जुटे थे। ये वही सैनिक थे, जिन्हें इस्ट इंडिया कंपनी के आदेश से कई देशी रियासतों के राजाओं ने सहायक संधि के अंतर्गत सेवा से निकाल दिया था। शाहजादा फिरोज को पराजित करने के लिए इन्दौर से कर्नल ड्यूरेन्ट के नेतृत्व में एक विशाल सेना चली, जिसमें कोई 7 से अधिक सेनापति थे। इस सेना ने 31, अक्टूम्बर, 1857 को धार को जीतकर क्रान्तिकारियों को वहाँ से खदेड़ दिया।

मन्दसौर के अभियान के अंतर्गत 11, नवम्बर, 1857 को निमाड़ के पोलिटिकल एजेण्ट कैप्टन किटिंग ने रतलाम पहुँचकर वहाँ के राजा व समीपस्थ रियासतों के शासकों से मदद मांगी। रतलाम का शासक भैरोसिंह इस समय मात्र 18 वर्ष का ही था और वह कुंवारा भी था। अत: उसने युद्ध में जाने से हाथ जोड़ लिये। उसने अपनी सेना पंचेड़ के ठाकुर चंदनसिंह के नेतृत्व में मन्दसौर भेजी। सैलाना के शासक दुलेसिंह की भी शादी ठहर गयी थी, अत: उसने भी हाथ जोड़कर अपनी सेना मुंशी शहामत अली के साथ भेज दी। सीतामऊ का शासक राजसिंह काफी बूढ़ा था और उसे शीत बादी की शिकायत थी। अत: उसने अपनी सेना कुंवर रतनसिंह के साथ भेजी। रतलाम के राजा के द्वारा नेतृत्व न करने के कारण रतलाम की देशी सेना ने मन्दसौर जाने के लिए विद्रोह कर दिया और घोषणा की कि- ''यदि हमें मजबूर किया तो हम मन्दसौर पहुँचकर शाहजादा को तोपें नज़र कर देंगे।'' इस पर जावरा नवाब गौस मोहम्मद खान ने स्वयं नेतृत्व की स्वीकृति प्रदान कर सैनिकों को अपनी ओर कर लिया।

मन्दसौर के युद्ध में जो गुराड़िया गाँव की सीमा में सम्पन्न हुआ। 21 से 24 नवम्बर के बीच इस युद्ध में कोई 1,500 से अधिक आजादी के दीवानों ने अपनी प्राणों की आहूति दी जबकि ब्रिटिश सेना का एकमात्र सैनिक लेफ्टिनेन्ट रेडमैन मारा गया।

अंग्रेज अपनी सेना के साथ रतलाम रियासत के प्रख्यात राजकवि गोविन्द को अपने साथ लाये थे ताकि वह इस युद्ध का जीवंत वर्णन लिख सके। राजकवि गोविन्द ने इस युद्ध में अंग्रेजों की भूमिका पर 'गौरांग विजय' नामक ग्रंथ की रचना की इसमें उसने ब्रिटिश साम्राज्य के गुणों, मुसलमानों के अत्याचारों और क्रान्तिकारियों पर ब्रिटिश सेना की विजय का विस्तारपूर्वक वर्णन किया है। 1857 की क्रान्ति में पश्चिमी मालवा में मिली यह रचना भारत की पहली समकालीन रचना है। सौभाग्य से इसकी मूल प्रति श्री दशपुर प्राच्य शोध संस्थान, मन्दसौर में सुरक्षित है।

प्रथम स्वातंत्र्य समर में रतलाम के शासक भैरोसिंह ने भले ही अंग्रेजों का साथ दिया। पर आजादी के दीवाने रतलाम के सैकड़ों लोगों ने ब्रिटिश साम्राज्य के विरूद्ध क्रान्ति में भाग लिया। रतलाम में सैरानियों की दरगाह के मुर्शीद गुलाबशाह के लड़के हुसैन शाह ने

बढ़-चढ़ कर भाग लिया था। युद्ध में पराजय के बाद वह फरार हो गया था। उसकी खोज में ब्रिटिश सरकार 50 वर्षों तक लगी रही। वर्ष 1907 में रतलाम दरबार में हुसैन शाह की तलाश में एक गोपनीय पत्र आया था। उसकी खोज हेतु दर्जनों लोगों के बयान लिये गये पर उसका कहीं पता नहीं चला।

इस युद्ध में नामली के ठाकुर के भाई बख्तावरसिंह ने लेफ्टिनेन्ट ड्यूरेन्ट की खूब मदद की थी। अत: ड्यूरेन्ट ने उसे 02 बन्दूकें बख्शीश में दी और मश्वरा दिया कि- ''हमने एक नया बीज बोया है, उसको अच्छा पानी पिलाना और ऐसी हिफाजत करना कि वह आबाद रहे।'' पश्चिमी मालवा की यह देशी रियासतें अपने ब्रिटिश स्वामियों की 1858 के बाद से लम्बे समय तक सेवक के रूप में कार्य करती रही। इन्होंने प्रथम विश्व युद्ध (1914-1918 ई.) व द्वितीय विश्वयुद्ध (1939-1945) में भी अंग्रेजों की खूब मदद की।

लोकमान्य तिलक की मृत्यु के पश्चात रतलाम क्षेत्र में राष्ट्रीय आंदोलन का सूत्रपात स्वामी ज्ञानानंद की प्रेरणा से 1920 ई. के बाद हुआ। वर्ष 1923 में प्रिन्स ऑफवैल्स के रतलाम आगमन पर उनका भारी विरोध हुआ। ''प्रीन्स ऑफवैल्स, वापस जाओ'' के नारों से रतलाम गूंज उठा। औंकारेश्वर तीर्थ यात्रा कर के विरोध में एक सत्याग्रही जत्था श्रीमती काशीदेवी उदयलाल पांचाल के नेतृत्व में औंकारेश्वर गया था। श्रीमती काशीदेवी अपने 06 माह के बालक देवदत्त को खांक में दबाये अपने लोकप्रिय त्रिशुल के साथ जत्थे का नेतृत्व करती हुई औंकारेश्वर पैदल-पैदल गयी थीं। जिन दिनों सफेद टोपी लगाना अपराध समझा जाता था उन दिनों उदयलाल पांचाल का परिवार खादी की टोपी लगाकर गौरवान्वित होता था। राजनैतिक चेतना बढ़ाने के लिए सन् 1929 में गणेशजी की प्रतिमा को खादी की टोपी खादी की धोती पहनाकर उनके हाथ में तिरंगा झण्डा दिया गया था।

शहीदे आजम सरदार भगतसिंह व उनके साथियों की फांसी की सजा पर रतलाम नगर में हड़ताल का आयोजन किया गया। जुलूस निकाला गया। रतलाम के शासक ने इस जुलूस को कुचलने में कोई कसर नहीं छोड़ी। महिलाओं का नेतृत्व करने वाली काशीदेवी पांचाल को कौड़ों की सजा दी गई।

रतलाम में घूँघट त्यागकर आंदोलन में सक्रिय भूमिका निर्वहन करने वाली श्रीमती दुर्गादेवी निगम थी। सभाबंदी कानून के अंतर्गत निगम ने श्रीमती पांचाल के साथ एक स्त्रीसेवा दल का गठन भी किया था। इसकी वे प्रथम अध्यक्षा बनीं।

ज्यों-ज्यों आंदोलन परवान पर चढ़ता गया, त्यों-त्यों रतलाम रियासत के जुल्म आंदोलनकारियों पर बढ़ते गये। इस पर उदयलाल पांचाल ने महात्मा गांधी को एक जवाबी पत्र लिखा। इस पत्र के जवाब में दिनांक 19, जून, 1932 को कांग्रेस की घोषित नीति का उल्लेख करते हुए महात्मा गांधी ने उदयलाल पांचाल को लिखा कि- ''कांग्रेस देशी रियासतों के मामले में दखल नहीं देगी, अत: अपने ऊपर हो रहे बचाव के लिए आवश्यक कार्यवाही वहाँ की जनता स्वयं करें, उसमें कांग्रेस का नाम न लिया जावे।''

गांधीजी के इस दो टूक जवाब के बाद रतलाम की जनता ने बिना कांग्रेस का नाम लिये देश की आजादी के लिए जो कुछ किया उसकी एक लम्बी फेहरिस्त है।

रतलाम की जनता के आंदोलनों का दमन करने में रतलाम राजा सज्जनसिंह के प्रिय पात्र मेजर शिवाजी की महत्वपूर्ण भूमिका थी। मेजर शिवाजी के अत्याचारों के कारण जनता द्वारा उसे हटाये जाने की निरंतर माँग की गई। अंत में भारत सरकार के दबाव पर महाराजा सज्जनसिंह रतलाम को उसे हटाना पड़ा और सन् 1945 में उसे रतलाम राज्य से निष्कासित कर दिया गया।

स्वतंत्रता संग्राम सैनानी चाँदमल मेहता का मत है कि- ''राष्ट्रीय आंदोलन के दौरान रतलाम राज्य के महाराजा सज्जनसिंह ने अपने निरंकुश अधिकार, राजगद्दी, राजचिन्ह बनाए रखने के लिए बिना संघर्ष जनजागृति न होने दी उन्होंने सार्वजनिक कार्यकर्ताओं के लिए समय-समय पर दमन, शोषण, लाठी चार्ज, गोलीकाण्ड, निर्वासन, जेल, आदि का भरसक उपयोग किया।''

70 वर्ष की उम्र में जनवरी सन् 1947 ई. में महाराजा सज्जनसिंह की मृत्यु हो गई। 15, अगस्त, 1947 को देश स्वतंत्र हुआ तब रतलाम में उत्तरदायी शासन की स्थापना हुई। इसमें प्रजामण्डल के दो कार्यकर्ता डॉ. देवीसिंह और लहरसिंह भाटी मंत्रीमण्डल में शामिल हुए तथा अनेक सुधारों की घोषणा की गई। रतलाम जिले के राष्ट्रीय आंदोलन (1920-1947 ई.) में 27 वर्षों के लम्बे संघर्ष में समाज के विभिन्न वर्ग के लोगों ने भाग लिया, जिनमें 63 प्रतिशत सर्वण, 33 प्रतिशत पिछड़ा, 2 अ.ज.जा. तथा 1 प्रतिशत अ.जा. के लोग सम्मिलित थे। वर्ष 1966 में स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों की सूची जारी की गई। इस समय तक कुछ स्वतंत्रता संग्राम सैनिक पाकिस्तान से आकर रतलाम में बस गये थे, कुछ शासकीय सेवा में होने के कारण आ बसे। ऐसे कोई 124 स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों की सूची मैने अपने शोधकार्य के दौरान 2008 में तैयार की है। अनेक ऐसे भी लोग थे जो स्वयं स्वतंत्रता संग्राम सैनानी

तो घोषित न हुए पर मुझे उनके कार्यकलापों का उल्लेख मिला। ऐसे लोगों को भी मैंने स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों की सूची में सम्मिलित किया। इन लोगों की संख्या 163 है।

वर्ष 1993 में रतलाम जिले का गजेटियर प्रकाशित हुआ। इसमें 37 स्वतंत्रता सैनानियों की सूची प्रकाशित की गई है। स्वातंत्र्य समर में रतलाम जिले के सैंकड़ो लोगों ने अपना योगदान दिया। मैं उन सभी को विनम्र प्रणाम प्रस्तुत करते हुए अपने इस लेख को विराम देता हूँ। सिद्धिरस्तु।।

● जिला- नीमच का योगदान

-प्रकाश मानव, वरिष्ठ पत्रकार, नीमच

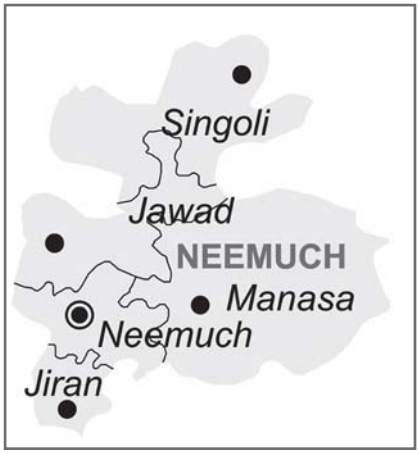

राजस्थान एवं मध्यप्रदेश की सीमा पर बसा नीमच जिले का मुख्यालय, नीमच मध्यप्रदेश का एक विशिष्ट नगर भी है। सी.आर.पी.एफ की जन्मस्थली एवं व्यवस्थित बसावट यहाँ का प्रमुख आकर्षण है। इस नगर का नाम नीमच कैसे पड़ा ? जनश्रुति के आधार पर इस नगर का नाम नीम के पेड़ों के बाहुल्य के कारण पड़ा बताया जाता है। पर, वास्तविकता यह है कि प्राचीन काल में यह ''मीणों का नगर'' था, संभवत: मीणों ने ही इसे बसाया हो और इसी कारण उसका पुराना नाम मीणच था। बदलते-बदलते यह मीणच से ''मीमच'' हो गया और तत्पश्चात् यह ''नीमच'' हो गया। जनश्रुति के मनोरंजक अर्थ-नीमम़च का वाचक दिखाई देने लगा। सन् 1857 के प्रथम स्वाधीनता संग्राम से लेकर देश की आजादी के संधर्ष में नीमच का अपना विशिष्ट स्थान रहा है।

मन्दसौर की सन्धि (06, जनवरी, 1818) के बाद तत्कालीन सेन्ट्रल इंडिया एवं राजस्थान के रजवाड़ों की व्यवस्था बनाये रखने के लिये नीमच की स्थिति को केन्द्रीय मान कर अंग्रेजों ने यहाँ अपनी छावनी स्थापित करना अनिवार्य समझा था। यही कारण था कि नसीराबाद एवं महू की छावनियों की नींव डालने वाले मेजर जनरल ऑक्टलोनी को तत्कालीन सरकार ने नीमच में भी छावनी डालने का कार्यभार सौंपा। सन् 1818 में उन्होंने यहाँ अपना प्रधान कार्यालय बनाया तथा कोठी का निर्माण कार्य प्रारम्भ किया जो आज भी ऑक्टरलोनी हॉल के नाम से प्रसिद्ध है। सैकड़ों रजवाड़ों और हजारों जागीरदारों पर नियंत्रण रखने के लिये ब्रिटिश शासन को फौजें रखना आवश्यक हो गया तभी पिंडारियों का दमन करने के बहाने की आड़ लेकर सन् 1819 में यहाँ किले का निर्माण कार्य प्रारम्भ हुआ जो लगभग डेढ़ लाख रुपयों में बन कर तैयार हुआ। किला बन जाने के पश्चात् अंग्रेजों ने फौजी ताकत बढ़ाने की ओर ध्यान दिया। धीरे-धीरे छावनी नगर भी बसने लगा। यहाँ की गतिविधियों पर दृष्टि रखने के लिये ले. कर्नल एबोट एवं ले. मिलर की नियुक्ति की गई।

जब समस्त देश में विद्रोह की चिन्गारियाँ फैलने लगीं, नीमच भला कैसे पीछे रह सकता था ? मेवाड़ के पोलिटिकल एजेन्ट कप्तान शाबर्स की पुस्तक ''ए मिसिंग चेप्टर ऑफ दी इंडियन म्यूटिनी'' के अनुसार- पहली बम्बई केवलरी के बागी सैनिकों ने भी 28 मई 1857 को नीमच-छावनी के सैनिक दस्तों को विदेशी शासन के विरुद्ध उन्मुख किया। बहकी हुई सेना ने मुहम्मद अली बेग के नेतृत्व में 3 जून 1857 की रात्रि को विद्रोह कर दिया। जो सेना कुछ घंटों पूर्व कथित विद्रोह को दबाने के लिये समद्ध थी वही सरकारी खजाने को लूटने लगी। विद्रोह से भयभीत अंग्रेज अधिकारियों ने आत्मरक्षा का कोई उपाय न देख कर नीमच के किले में शरण ली, पर बागियों ने वहाँ से भी उन्हें भगा दिया। निदान डॉ. मरे, डॉ. गैन जैसे फौजी को अपने बच्चों को लेकर भाग जाना पड़ा। सार्जेन्ट सप्लाय सपरिवार कत्ल कर दिया गया।

भागे हुए अधिकारियों ने समीपवर्ती ग्राम केसूंदा में शरण प्राप्त कर रक्षा की प्रार्थना की। केसूंदा ग्राम के पटेल रामसिह, केसरसिंह जैसे राष्ट्रद्रोही लोगों ने उन्हें अपने मकानों में छिपा लिया। इनकी सूचना बागियों को मिल गई और वे केसूंदा पहुँचे परन्तु पटेलों ने शरणगतों की रक्षा की।

कुछ समय पश्चात् केप्टन शावर्स और मेवाड़ के सेनापति अर्जुनसिंह सहीवाला के नेतृत्व में अंग्रेजों को एक बार फिर नीमच दुर्ग पर आधिपत्य करने में सफलता मिली। नीमच से निराश हो विद्रोही क्रान्तिकारियों ने जीरन के किले को जा घेरा और उसे केन्द्र स्थल बना कर संघर्ष जारी रखा। ब्रिटिश राज से मुक्ति पाने के उद्देश्य में मतवाले कब मानने वाले थे ? जितना उन्हें दबाने का प्रयत्न किया गया उतनी ही आग अधिक जोर से भड़कने लगी। 23 अक्टूबर 1857 को निम्बाहेडा का बागी हाकिम मन्दसौर पहुँच कर वहाँ से एक बागीदल को साथ लेकर जीरन के क्रान्तिकारियों की सहायतार्थ जब वहाँ गया तब कर्नल लायड, बाइस, सिमसन आदि 11 सैनिक

अफसर तोपखाने सहित वहाँ पहुँच चुके थे। विद्रोहियों एवं ब्रिटिश सेना के मध्य जमकर लड़ाई हुई, किन्तु अन्त में, अंग्रेजों को अपने वीर सेनाधिकारियों की आहति देने के पश्चात हार माननी पड़ी। कप्तान रीड और कप्तान टुकर को खोकर कप्तान सिमसन और कर्नल लॉयड अपना-सा मुँह लेकर नीमच वापिस आ गये।

क्रान्तिकारियों को इस प्रतिशोध में अपने वीरों को भी खोना पड़ा, परन्तु उनके आगे खोने का कोई प्रश्न ही नहीं था, उनके आगे तो स्वतंत्रता प्राप्ति का पुनीत लक्ष्य था। बागियों ने पुन: लगभग चार हजार विद्रोहियों की एक खासी सेना तैयार की। नवम्बर 1857 के प्रथम सप्ताह में ही उन्होंने नीमच पर चढ़ाई कर दी। आज की ''मोहन की बेरी'' नामक स्थान पर उनका जम कर मुकाबला हुआ। विकट संघर्ष के पश्चात् निराश हो केवलरी फोर्स ने किले में शरण ली। किले की व्यवस्था ठीक न होने के कारण क्रान्तिकारी सीढ़ियाँ लगा कर किले में घुस गए, हालांकि पहली बार वे खदेड़ दिये गये थे। किले में मालवा फील्ड फोर्स विद्रोह फैल जाने से बागियों ने उनका भी सहयोग पाया। इस भयंकर लड़ाई में सार्जेन्ट निम्मो व कॉनरी तथा लेफ्टीनेन्ट ब्रेट मारे गये। कठिन परिश्रम के पश्चात् बागियों को पूर्ण सफलता प्राप्त हुई। इस संग्राम में नीमच क्षेत्र के अगणित वीरों ने ख्याति प्राप्त जनरलों को लोहे के चने चबवा कर अपनी वीरता का अनुपम उदाहरण दिया।

नीमच पर क्रान्तिकारी नेता शाहजादा फिरोज का शासन हो गया। अन्त में गवर्नर जनरल को नीमच विजय करने के लिये एक बड़ी भारी सेना मेजर डूरेन्ट के नेतृत्व में भेजना पड़ी। असंगठित और मनमौजी देशभक्त इस तूफानी सेना के समक्ष टिक नहीं सके और उनके पांव गुराडिया देदा के युद्ध (25, नवम्बर, 1857 में उखड़ गये। अंग्रेजी हुकूमत को पुन: सफलता मिली।

विद्रोही कहे जाने वाले अनगिनत वीर पकड़े गये और नीमच के आसपास बड़े-बड़े वटवृक्षों पर उनके शरीर लटका दिये गये उनके शरीरों को झूलते हुए हम नहीं देख पाये परन्तु वे वटवृक्ष 164 वर्षों के बाद भी उन्हें ज्यों के त्यों देख रहे हैं। वर्तमान माध्यमिक शाला, नीमच नगर जहाँ कभी अंग्रेजों के समय जेल थी। उसके सामने के वटवृक्ष पर कई देश भक्तों को फांसी की सजा दी गई थी, जो आज भी उन अमर शहीदों की बरबस याद दिलाता है। स्वाधीन भारत में नीमच क्षेत्र के उन अज्ञात शहीदों के ये बलिदान युग-युग तक प्रेरणा देते रहेंगे जिन्होंने 1857 के स्वाधीनता संग्राम में सक्रिय भाग लेकर देश को दासता की बेड़ियों से मुक्त कराने का प्रबल प्रयास किया था।

प्रथम स्वातंत्र्य समर के पश्चात हमें बीसवीं शताब्दी के द्वितीय दशक में नीमच में राजनीतिक गतिविधियों की शुरूआत सेठ नथमल चोरड़िया (1885-1936) के कार्य कलापों से मिलती है। नीमच छावनी में सर्राफी व्यवसाय करने वाले सेठ नथमल हेमराज ने नीमच से मुंबई तक अपने कारोबार को फैलाया। खूब धन-यश कमाया। मुंबई में वे सेठ जमनालाल बजाज के संपर्क में आये। आपने वहाँ ''मारवाडी चैम्बर आफ कामर्स'' की स्थपना की व उसके संस्थापक सचिव की हैसियत से आठ बरस तक कार्य किया। सेठजी, महात्मा गाँधी के अछूतोद्धार आन्दोलन से प्रभावित होकर नीमच लौटे। नीमच में आपने 'यादव सम्मेलन (1926) का आयोजन करवाया। अछूतों की प्रगति हेतु ''हरिजन पाठशाला'' की स्थापना की। नीमच में आपने हरिभाऊ उपाध्याय के आवाहन पर कॉंग्रेस की स्थापना (1628) में की।

नीमच में नथमल चोरड़िया ने अपने निवास हेतु जिस तिमंजिला हवेली का निर्माण कराया वह नीमच की प्रथम पक्की ईमारत है। महात्मा गाँधी के आवाह्न पर सेठजी ने अजमेर नमक सत्याग्रह में अपनी पुत्री कैसरबाई के साथ भाग लिया। आपने डिक्टेटर के रूप में गिरफ्तारी दी व एक वर्ष जेल में रहे। अपने युवा पुत्र माधवसिंह की मृत्यु के बाद भी मॉफी मांगकर नहीं छूटे। आपकी युवा पुत्री कैसरबाई ने नमक आन्दोलन के दौरान पिकेटिंग, शराब बन्दी, विदेशी वस्त्रों की होली जलाने के कार्यों में धूम मचा दी। अजमेर से लौटकर सेठजी आन्दोलन से इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने अपनी पुत्री कैसरबाई व बहु फुलकुमारी को प्रशिक्षण प्राप्त करने हेतु महात्मा गाँधी के सानिध्य में साबरमती आश्रम भेज दिया। आगे चलकर सेठ नथमल चोरड़िया के अनन्य सहयोगी धनीराम सगर ने अपनी पत्नि श्रीमती लक्ष्मीबाई सगर मूलचंद अग्रवाल, श्रीमती जानकीदेवी अग्रवाल व अन्य साथियों के साथ 1932 में ''अजमेर कांग्रेस कार्यालय कब्जा आन्दोलन'' में कारावास की सजाएँ काटी। सेठ नथमल चोरड़िया ने नीमच में राष्ट्रीय आन्दोलन की जो मशाल जलाई उसके प्रकाश में आगे चलकर भारत छोड़ो आन्दोलन में आजादी के दीवानों का कतारें लग गई। आगे चलकर सीताराम जाजू के मार्ग दर्शन में नीमच जिले के - सर्वश्री गुलाबचंद मेवाड़ी, उत्सव लाल पुरोहित, शोभाराम गुप्त, मेघराज जैन, रंगलाल जैन, कन्हैयालाल पाण्डे, घीसालाल अग्रवाल, घीसालाल व्यास, चिरंजीलाल जड़िया, चौथमल एरण, जगदीश चन्द्र एरन, जमनालाल उपाध्याय, देवकरण अग्रवाल, प्रहलाद अग्रवाल, बद्रीलाल भट्ट, भगतराम पाटीदार, भेरूलाल वेदमूथा, रामलाल

पोखरना, रामनारायण भट्ट, रामविलास पोरवाल,रामेश्वर गर्ग,श्यामसुख गर्ग, लक्ष्मण टेलर, बंशीलाल नरेडी, शकरलाल बसीवाल आदि प्रमुख थे।

राष्ट्रीय आन्दोलन में सगर दम्पति के प्रयास से यादव समाज के सर्वश्री बिहारीलाल यादव, दौलतराम हरित, श्रीमती कमलादेवी हरित, छोटेलाल व्यास, श्रीमती सावित्रीदेवी व्यास, श्रीमती रामेश्वरीदेवी व्यास, शंकरलाल व्यास, शान्तादेवी व्यास व चंपादेवी सिंहास ने राष्ट्रीय आन्दोलन मे सक्रिय भागीदारी की जेल यातनाएँ भोगी। इतिहासकार कैलाशचन्द्र घनश्याम पाण्डेय के अनुसार –''अविभाजित मन्दसौर जिले में वर्ष 1999 में 67 स्वतंत्रता संग्राम सैनानी घोषित थे जिनमें से अकेले नीमच जिले के 42 स्व.सं.सै.मूल निवासी थे। ''देश की स्वतंत्रता पर बलिदान देने वालों को शत–शत प्रणाम्।''

● जिला- शाजापुर का योगदान

शाजापुर जिले की स्वतन्त्रता संग्राम में भूमिका

–ललित शर्मा, इतिहासकार

शाजापुर जिला अपने अतीतकाल से ही स्वतन्त्रता प्रेमी रहा है। क्षेत्र में मालव जाति का प्राचीन संघर्ष और इसके प्रस्थित होने की भूमिका इसकी पुष्टि करती है। मालव नेता सम्राट विक्रमादित्य द्वारा देश और मालवा अवन्ति को शकों से स्वतन्त्रता दिलाने की ऐतिहासिक भूमिका आज भी गौरव के साथ उच्चारित की जाती है। इस क्षेत्र में परमार से लेकर ब्रिटिशकाल तक की दीर्घावधि में जितने भी स्वातन्त्र्य समर हुए उनमें उज्जयिनी केन्द्र बिन्दु के कोण से यहाँ के वीर तथा स्वतन्त्रता प्रेमियों ने अपनाया तथा अपनी स्वतन्त्रता की भावनाओं से जन–जन को जोड़ने में जो मशाल प्रज्जवलित की वह आज एक गौरवशाली इतिहास है, जिसे जानकर हम अपने वर्तमान एवं भविष्य को स्वर्णिम बना सकते हैं। देखा जाये तो मध्य भारत में शाजापुर वह क्षेत्र है जहाँ के वीरान गढ़ों और भयावह जंगलों में भारतीय स्वतन्त्रता के महान क्रान्तिकारी, स्वतन्त्रता प्रेमियों ने गुप्त निवास किया और कर्मवीर महात्मा गाँधी तथा सरदार भगतसिंह जैसे स्वतन्त्र शिखा के दीवानों से सम्पर्क रखा एवं सदैव परतन्त्रकारियों से संघर्ष कर एवं यातनाएँ सहकर अपनी अस्मिता को बनाये रखा।

इसी क्रम में 1857 की क्रान्ति के समय पूरे देश के साथ ही मध्य भारत के अनेक कस्बों और शहर भी उससे जुड़ गये थे। इनमें विशेषकर उज्जैन, देवास तथा इन्दौर से शाजापुर क्षेत्र की निकटता होने के कारण वहाँ की स्वतन्त्रता भावना तथा वातावरण का पूरा प्रभाव यहाँ भी पड़ा। उस समय का मध्य भारत ग्वालियर, इन्दौर, देवास, राजगढ़ आदि रियासतों में विभक्त था और ब्रिटिश सत्ता ने अपनी प्रभुसत्ता को स्थापित बनाये रखने के लिए महू, नीमच, गुना तथा शाजापुर के तत्कालीन आगर कस्बे में छावनी स्थापित की हुई थी। इस प्रकार ब्रिटिश फौजी छावनी की स्वतन्त्रता की भावना रखने वाले जन सामान्य के प्रति कठोर रूख था। इस कारण से जनमानस में इन छावनियों के प्रति शनैः – शनैः आक्रोश बढ़ता गया और फिर अन्त में उसकी परिणिती घटनाओं में होने लगी। सन् 1844 ई. में ब्रिटिश फौज की छावनी आगर में स्थापित हुई थी। इसी आगर में 1857 के विद्रोह के तहत गणेशदत्त शर्मा 'इन्द्र' के अनुसार 31 मई की रात्रि में क्रान्ति होने की सूचना मिली थी। इसी क्रान्ति की हवा जब फैली तब 18 जून 1857 ई. को शिवपुरी के विप्लवी सैनिक भी आगर आ धमके और उन्होंने यहाँ की फौज को ब्रिटिश अधिकारियों के विरूद्ध उकसाया तथा उनमें बदला लेने की भावना को बलवती बना दिया। इस बात ने आग में घी डालने का काम किया और 4 जुलाई 1857 ई. को आगर के लाल परेड मैदान में सिपाहियों ने तीन ब्रिटिश फौजी अफसरों को मार गिराया। इस खुली घटना से छावनी, शाजापुर और आस–पास के क्षेत्रों में हड़कम्प मच गया और ब्रिटिश अफसर सपरिवार भाग खड़े हुए।

इसी क्रम में ऐसी घटना यही अवरूद्ध नहीं हुई वरन क्रान्तिकारियों के हौंसले बुलन्द हो गये। आगर में ही पदस्थ एक अन्य ब्रिटिश अफसर मि. ओ. नील भी ऐसी घटना के दौरान क्रान्तिकारियों के हत्थे चढ़ गया। दरअसल उसने यहाँ के आम लोगों के साथ बहुत क्रूरता का व्यवहार किया था। इसी क्रूरता के कारण यहाँ का एक क्रान्तिकारी सिपाही आसफअली शहीद हो गया था। इसी घटना से बुरी तरह आहत होकर उसके पुत्र मजहर अली ने रंगरूट सिपाहियों से मिलकर ओ नील को सरेआम गोली से उड़ा कर खुले आम बगावत कर जयघोष कर दिया कि आततायी ब्रिटिश से खून का बदला खून से लेना हमारा कर्तव्य है। इतना ही नहीं इस जनघटना ने अंग्रेजी दासता के विरूद्ध शाजापुर क्षेत्र के भारतीय स्वतन्त्रता में विश्वास करने वालों को एकजुट होकर ब्रिटिश अधिकारियों को सबक सिखाने की चेतावनी भी दे डाली थी। ऐसा

विद्रोह थमा नहीं और शाजापुर क्षेत्र के तत्कालीन सुसनेर, सोयत क्षेत्र में सौंन्धिया राजपूत समाज के ग्रामीण कृषकों व युवकों ने भी एक जुट होकर ब्रिटिश अधिकारियों की क्रूरता और महिलाओं से दुर्व्यवहार के कारण तंग होकर खुले आम बगावत का झण्डा बुलन्द कर दिया। सौन्धिया राजपूतों के दल के आक्रमक कारणों एवं योजनाओं से कई ब्रिटिश गोरे मारे गये और उनके अष्व तथा हथियार सौन्धिया नवयुवकों ने छीन लिये। उन्होंने कई गोरो के सिर भी काट दिये। इस घटना की पुष्टि वहाँ के स्वतन्त्रता प्रेमी और इस क्षेत्र के लोकगीतों से होती है। देखिये एक पंक्ति:-

अईजा रे भूरिया खड़ेखड़े। होन्दिया नाम नींडरे।
के भूरिया की तुक्डिया रड़कती फिरेरे..... ।
अईजा रे भूरिया खड़ेखड़े।.....

अर्थात् भूरिया यानि अंग्रेज को होन्दिया (सौन्धिया) (सौंधवाड में 'स' को 'ह' संज्ञापित किया जाता है) समाज ने चुनौती दे डाली और अपने अपमानों का उन्होंने गर्दन काट कर बदला लिया है।

शाजापुर क्षेत्र का बीजानगरी-करनालया ग्राम आज भी 1857ई. की क्रान्ति के ऐसे पृष्ठ का ऐतिहासिक गवाह है जब ब्रिटिश अधिकारियों की अमानवीय क्रूरताओं और यातनाओं ने यहाँ के जन साधारण को इतना अधिक प्रताड़ित कर डरा दिया था कि फिर अन्तिम सीमा पर जाकर उनका डर ही खत्म हो गया था और इस डर को स्वयं में से समाप्त कर वे कठोर क्रान्तिकारी हो गये थे। इस अंग्रेजी अत्याचार से इस स्तर पर वे इतने उग्र हो गये कि जब भी और जहाँ भी उन्होंने अवसर देखा वहीं फिरंगियों को मार डाला। इस ग्राम के एक शिलालेख पर इसी घटना का निम्न विवरण पढ़ने को मिलता है।

To, the memory of Astt. Surgoon James of the Gwalior Contingent and his wife & who were barbarously mindered at this villages. — July - 1857

परन्तु यह प्रभाव यहीं नहीं थमा अपितु अनुवांशिक रूप से इसका प्रभाव यहाँ पड़ता रहा। शाजापुर क्षेत्र की जनता में अब राजनैतिक स्वतन्त्रता के बीज उत्पन्न हो चुके थे। क्षेत्र के सोयत कस्बे की फोर्स के एक सिपाही कन्हैयालाल शर्मा ने ब्रिटिश अधिकारियों के ग्रामीणों पर गोलियाँ चलाने के आदेश के प्रति विद्रोह कर दिया था और स्वदेशी की भावना से ओतप्रोत इस साहसी व्यक्ति ने अपनी नौकरी का त्याग कर क्रान्तिकारियों का साथ दिया। यह एक अनुकरणीय एवं स्वदेशी स्वतन्त्रता की भावना से प्रेरित प्रेरणादायी घटना थी। इस क्रम में आगर के रिसालदार और ब्रिटिश सरकार के एक चाटुकार नौकर बुनियाद अली ने वहाँ की जनता पर अत्याचार किये परन्तु आगरवासी अब एकजुट हो चुके थे और इसके फलस्वरूप उन्होंने उसका खूनी प्रतिकार किया। 1860 ई. के बाद ऐसी घटनाओं के मध्यनजर आर्मी के सिपाहियों की बाकी फोर्स ग्वालियर के सिन्धिया नरेश को सौंप दी। नरेश ने फिर जन सामान्य की भावना का आदर किया और क्षेत्र में सद्व्यवहार तथा आम माफी का वातावरण बनाया और फिर 1895 ई. से ब्रिटिश सरकार की मालवा एजेन्सी आगर से हटाकर इन्दौर में स्थापित कर दी गई। इस प्रकार शाजापुर क्षेत्र के लगभग सभी अंचलों में ब्रिटिश सत्ता की कारगुजारियों के विरूद्ध विरोध हुआ। जनता अपने देशभक्त मार्गदर्शकों के नेतृत्व में अत्याचारों के प्रति घोर विरोधी का साहस करने सामने आई। इतना ही नहीं विवेच्य क्षेत्र के बंजारों एवं गुर्जर समाज में भी ब्रिटिश सरकार के गोरों के प्रति जो घृणा उत्पन्न हुई उसे उन्होंने अपने स्वरचित लोकगीतों विशेषकर हीड़ में जुल्मी कहकर चुनौती दे डाली। उन्होंने अपने क्षेत्रीय समाज में देशभक्ति और अपनी जातिगत वीरता एवं स्वाभिमान की हुंकार भरी। उन्होंने हीड़ में अपने स्थानीय ग्राम देवी-देवताओं, महापुरूषों और शहीदों के उत्सर्ग वाले वीरत्व कार्यो का गुणगान समाहित किया। उनके इस हीड़ गायन ने फिर जन-जन में आत्मविश्वास, शक्ति और एकता का संचार किया। इस प्रकार प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम के बाद यद्यपि शाजापुर क्षेत्र में ग्वालियर राज्य के शासक माधवराव शिन्दे (सिन्धिया) (1876-1925) ने प्रजा की सर्वोन्नति एवं कृषि सुधार के कार्य व्यक्तिगत रूचि लेकर सम्पन्न किये परन्तु जो क्रान्ति बीज इस धरती पर एक बार स्थापित हुए उनका प्रभाव अनुवांशिक रूप से यहाँ पीढ़ी दर पीढ़ी उनमें यह राष्ट्रीय आन्दोलन क्रमिक रूप से विस्तृत होता गया जिसमें सैकड़ों स्वतन्त्रता प्रेमियों ने अपना योगदान देकर इसे संजोया।

राष्ट्रीय आन्दोलन और उसमें जनजागरण की भूमिका से शाजापुर जिले में जिन स्वतन्त्रता सपूतों ने अपना अमिट योगदान दिया वह आज भी न केवल मालवा में वरन् मध्यप्रदेश व उससे आगे बढ़कर भारतीय स्वतन्त्रता के परिप्रेक्ष्य में अंकित करने योग्य है। शाजापुर जिले में ऐसे भी स्वतन्त्रता सपूत हुए जिन्होंने आन्दोलन को जनजागरण और क्रान्ति के साथ-साथ अपनी कलम, विचाराभिव्यक्ति से भी बड़ा प्रभावित किया। इन सपूतों में इस जिले के पं. बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' बा साहब पं. लीलाधर जोशी एवं सौभाग्यमल जैन का नाम वरेण्य है।

■

आदि शंकराचार्य का कश्मीर में अवस्थान: संदर्भ एवं परिप्रेक्ष्य

डॉ. अद्वैतवादिनी कौल

कश्मीर की पृष्ठभूमि

भारतवर्ष के शीर्ष पर विराजमान कश्मीर मण्डल का इतिहास हज़ारों वर्ष पुराना है। प्राचीन समय का कश्मीर गांधार तक फैला हुआ है। इसमें गिलगित, हुंज़ा, मुज़्ज़फराबाद और कृष्णगंगा भी समाविष्ट हैं जो इस समय पाकिस्तान अधिकृत क्षेत्र हैं। विद्या स्वरूपिणी शारदा देवी का भव्य मन्दिर कृष्णगंगा के क्षेत्र में स्थित है ।परन्तु दुर्भाग्यवश आज इस भव्य मन्दिर के अवशेष ही देखने को मिलते हैं(चित्र सं: 1) ।विद्या-वैभव के लिए समर्पित कश्मीर मण्डल का यह अत्यन्त पवित्र एवं महत्त्वपूर्ण स्थान रहा है और कश्मीर को शारदा देश / शारदा मण्डल/ शारदा भूमि के नामों से उद्धृत किया गया है। इसके लिखित प्रमाण उपलब्ध होते हैं। कश्मीर के विद्वानों को ऋषि कहते थे इसीलिए कश्मीर को ऋषि भूमि के नाम से भी जाना जाता है। वास्तव में दार्शनिक एवं बौद्धिक रचनात्मकता में निरन्तर गतिशीलता के लिए विख्यात कश्मीर मण्डल विद्या का बहुत ही महत्वपूर्ण केन्द्र रहा है। यहां केवल भारत के विभिन्न प्रदेशों से ही नहीं अपितु विदेशों से भी विद्यार्थी ज्ञानार्जन के लिए आया करते थे। इस विषय में कई प्रतिष्ठित विद्वानों के नाम आते हैं जिनका सीधा सम्पर्क कश्मीर से रहा है, वे कश्मीर आये और यहां रहकर उनके आध्यात्मिक ज्ञान में भी वृद्धि हुई।

चित्र संख्या: 1

कश्मीर के ब्राह्मणों को सारस्वत ब्राह्मण कहते हैं। ऐतिहासिक तथ्यों के अनुसार सरस्वती नदी के किनारे बसने के कारण ही सारस्वत ब्राह्मणों का नाम प्रचलन में आया। कालान्तर में सरस्वती के विलुप्त होने पर सारस्वत ब्राह्मण विभिन्न दिशाओं में चले गए। वितस्ता नदी के किनारों पर बसी सारस्वत ब्राह्मणों की टोली ही कश्मीर में वैदिक संस्कृति की सूत्रधार बनी, ऐसी धारणा है। ऋग्वेद के दसवें मण्डल के नदी सूक्त में भारत की मुख्य नदियों में कश्मीर की वितस्ता नदी का नाम भी अंकित है:

इमं मे गंगे यमुने सरस्वती शुतुद्रि स्तोमं सचता परुषण्या।
असिक्न्यामरुद्वृधे वितस्तयर्जीकीये शृणुह्या सुषोमया।

– ऋ.वेद 10:75:5

प्राचीन काल से ही भारतीय साहित्य के विभिन्न ग्रन्थों में भी कश्मीर और यहां की पवित्र वितस्ता को उद्धृत किया गया है। इसके बहुत सारे संदर्भ उपलब्ध हैं, जैसे – महाभारत (सभापर्व 9.19; वन पर्व 82.89,90-91; 130.10-11; अनुशासन पर्व 25.7-8); वायु महापुराण(पूर्वार्ध 47.45); पद्म महापुराण (स्वर्गखण्ड 25.1-3); मत्स्य पुराण(13.47); विष्णु पुराण(4.48); पाणिनि कृत अष्टाधयायी(गणपाठ,4.2.133; 4.3.93); विष्णुधर्मोत्तरपुराण (10.10; 207.63;261.16&34), इत्यादि। विष्णुधर्मोत्तरपुराण का समय पांचवीं ईस्वी सदी माना गया है और अनुमानत: इस ग्रन्थ की रचना कश्मीर प्रदेश में ही हुई है। इसके अतिरिक्त कश्मीर के इतिहास से सम्बन्धित सबसे प्राचीन ग्रन्थों में से अब केवल दो स्रोत ग्रन्थ उपलब्ध हैं। पहला नीलमत् पुराण है। इसका समय सातवीं ईस्वी सदी के आस-पास निर्धारित किया गया है। दूसरा ग्रन्थ कल्हण कृत राजतरङ्गिणी है जिसकी रचना बारहवीं सदी में की गई

[1]शारदामठमारभ्य कुङ्कुमाद्रितटान्तग:।
तावत्काश्मीरदेश: स्यात् पञ्चाशद्योजनात्मक:।। –शक्तिसंगम तन्त्र 7.22
सहोदरा: कुंकुमकेसराणां भवन्ति नूनं कवितावलासा:।
न शारदादेशमपास्य दृष्टस्तेषां यदन्यत्र मया प्रोह:।। – बिल्हणकृत् विक्रमांकदेवचरितम् 1.5.21

है। इसके अतिरिक्त कश्मीर में रचे गए अन्य विधाओं से सम्बन्धित संस्कृत ग्रन्थों में भी बहुत सारी ऐतिहासिक महत्व की सूचनाएं प्राप्त होती हैं।

आदि शंकराचार्य एवं उनका कश्मीर में अवस्थान

सनातन वैदिक संस्कृति के संवाहक, वेदान्त के सर्वोच्च व्याख्याकार एवं विशुद्ध अद्वैत के संस्थापक आदि शंकराचार्य वैदिक संस्कृति के प्रचार-प्रसार द्वारा सम्पूर्ण भारत को एक सूत्र में बांधने वाले पहले कर्मठ मनीषि हुए हैं। प्रस्थानत्रयी पर उनकी अद्वैत परक व्याख्याएं, उनके द्वारा रचित अद्यतन सर्वत्र प्रचलित अनेक स्तोत्र, आदि शंकराचार्य के कृतित्व को उजागर करते हैं। तदनुसार वे एक उच्च कोटि के आत्मज्ञानी, दार्शनिक, शास्त्रज्ञ एवं उत्तम तर्कशास्त्री थे। आदि शंकराचार्य ने अपने गुरु के आदेशानुसार भारत की सनातन संस्कृति के रक्षक के रूप में सम्पूर्ण भारत देश का भ्रमण किया। विभिन्न प्रदेशों में अनेक सम्प्रदायों के अनुयायियों के साथ शास्त्रार्थ के द्वारा अपने प्रतिद्वन्दियों को परास्त करते हुए पूरे भारतवर्ष को एक सूत्र में बांध लिया। उनके जीवन से सम्बन्धित कई विवरण प्राप्त होते हैं जो लोक में प्रचलित कथाओं से भी प्रेरित लगते हैं। उनके शिष्यों के द्वारा 'शंकर विजय/ शंकर दिग्विजय' शीर्षक के अन्तर्गत लिखे ग्रन्थों में उनके विवरण मिलते हैं। 'शंकर दिग्विजय' दस लेखकों के द्वारा लिखे गए है। इनमें से कुछ का प्रकाशन भी हो चुका है। परन्तु माधव कृत शंकर दिग्विजय संक्षेप-शंकर-विजय'' अधिक प्रचलित है। इसे तत्त्वज्ञान सम्बन्धित दार्शनिक जीवन चरित्र पर आधारित काव्य रचना कह सकते हैं। उदाहरणार्थ आदि शंकराचार्य के आविर्भाव का मनोहर वर्णन का प्रस्तुत श्लोक:

चित्र संख्या: 2

अज्ञानान्तर्गहनपतितानात्मविद्योपदेशै-
स्त्रातुमं लोकान्भवदवशिखातापपापच्यमानान् ।
मुक्त्वा मौनं वटविटपिनो मूलतो निष्पतन्ती
शम्भोर्मूर्तिश्चरति भुवने शङ्कराचार्यरूपा ॥

-शं. दि. 4.60

''अज्ञान के गहन अन्धकार में पडे, संसार रूपी जंगली आग के ताप से तपते हुए लोगों की रक्षा के लिए, वट वृक्ष के नीचे बैठी शिव की मूर्ति अपने मौन को त्यागकर शंकराचार्य के रूप में आत्मविद्या के उपदेश द्वारा मूल सिद्धान्त (अद्वैत वेदान्त) की वर्षा बरसा रहे हैं।''

आदि शंकराचार्य भारत भ्रमण करते हुए कश्मीर पधारे थे। यहां आकर भारतीय ज्ञान परम्परा के विभिन्न मतों के शास्त्रज्ञों के साथ उनका शास्त्रार्थ हुआ। अपने शास्त्रार्थ के द्वारा विद्वानों को संतुष्ट करने के उपरान्त ही उन्हें सर्वज्ञपीठ पर आसीन शारदा भगवती का साक्षात्कार हुआ। इस विषय में दृढ़ लोक धारणा प्रचलित तो है ही, साथ ही माधवीय शंकर दिग्विजय के सोलहवें सर्ग का विषय ही यही है। ''श्रीमदाचार्याणां शारदापीठवासवर्णनम्'' शीर्षक से इस अन्तिम सर्ग में 107 श्लोक हैं। इस सर्ग के 54वें श्लोक के अनुसार एक दिन प्रात:कालीन अनुष्ठान एवं कृत्यों के उपरान्त आचार्य शंकर अपने शिष्यों के साथ (वाराणसी में) गंगा के किनारे एकत्रित होकर खड़े थे तो किसी ने आकर समाचार दिया:

जम्बूद्वीपं शस्यतेऽस्यां पृथिव्यां तत्राप्येतन्मण्डलं भारताख्यम् ।
काश्मीराख्यं मण्डलं तत्र शस्तं यत्राऽऽस्तेऽसौ शारदा वागधीशा ।।

- शं दि. 16.55

''सारी पृथ्वी पर जम्बूद्वीप सबसे प्रसिद्ध है। उसमें भी भारत नाम का यह मण्डल श्रेष्ठ है। उस (भारत) में काश्मीर नाम से जाना जाने वाला मण्डल विख्यात है, जहां वाग्देवी शारदा विद्यमान हैं।''

समाचार में आगे कहते हैं:

द्वारैर्युक्तं माण्डपैस्तच्चतुर्भिर्देव्या गेहं यत्र सर्वज्ञपीठम् ।
यत्राऽऽरोहे सर्ववित्सज्जनानां नान्ये सर्वे यत्प्रवेष्टुं क्षमन्ते ।।
प्राच्या: प्राच्यां पश्चिमा: पश्चिमायां ये चोदीच्यास्तामुदीचीं प्रपन्ना: ।
सर्वज्ञास्तद् द्वारमुद्धाटयन्तो दाक्षा नद्धं नो तदुद्घाटयन्ति ।।

- शं दि. 16.56-57

''वहां चार द्वारों से युक्त मण्डपों वाले शारदा देवी के मन्दिर में सर्वज्ञपीठ विद्यमान है। जहां चढ़कर सर्वज्ञान सम्पन्न सद्जन ही प्रवेश प्राप्त करने की क्षमता रख सकते हैं, अन्य नहीं। पूर्व (द्वार) से पूर्व की, पश्चिम से पश्चिम की और उत्तर से उत्तर की (दिशाओं से आये) जो विद्वान यहां पहुंचे, उन सर्वज्ञानियों के लिए वे द्वार खोले गए। (परन्तु) दक्षिण दिशा से आये किसी भी विद्वान के लिए अभी तक दक्षिण द्वार नहीं खोला गया है।''

ग्रन्थकार आगे लिखते हैं:

वार्तामुपश्रुत्य स दाक्षिणात्यो मानं तदीयं परिमातुमिच्छन् ।
काश्मीरदेशाय जगाम हृष्ट: श्रीशङ्करो द्वारमपावरीतुम् ।।

द्वारं पिनद्धं किल दाक्षिणात्यं न सन्ति विद्वांस इतीह दाक्षाः।
तां किंवदन्तीं विफलां विधातुं जगाम देवीनिलयाय हृष्यन्।।

– शं दि. 16.58–59

''यह समाचार सुनकर श्रीशंकराचार्य दक्षिण के विद्वानों के मान को आंकवाने की इच्छा से प्रसन्नता पूर्वक कश्मीर की ओर (दक्षिण) द्वार खुलवाने के लिए चले।' (दक्षिण दिशा में) बन्द द्वार (को खोलने के लिए) दक्षिण के विद्वानों ने यहां अपनी दक्षता नहीं दिखाई – इस किंवदन्ती को विफल सिद्ध करने के लिए (वे) प्रसन्न होकर देवी के निवासस्थान की ओर चले पड़े थे।''

आगे के विवरण में लेखक लिखते हैं कि श्रीशंकराचार्य के कश्मीर पहुंचने पर उनके अद्वैत मत के समर्थक उनके आगमन के स्वागत की घोषणा करने लगे। इस प्रकार प्रशंसकों के उद्घोष के साथ आचार्य शंकर शारदा मन्दिर के दक्षिण द्वार को खुलवाने के उद्देश्य से उस द्वार पर पहुंचे तो एक विवादी समूह ने सामने आकर उन्हें रोका:

अथाब्रवीद्वादिगणः स देशिकं किमर्थमेवं बहुसंभ्रमक्रिया।
यदत्र कार्यं तदुदीर्यतां शनैर्न संभ्रमः कर्तुमलं तदीप्सितम्।।
यः कश्चिदेत्येतु परीक्षितुं चेद्वेदाखिलं नाविदितं ममाणु।
इत्थं भवान्वक्ति समुन्नतीच्छो दत्त्वा परीक्षां व्रज देवतालयम्।।

– शं. दि. 16.63–64

''वाद करने वाले एक समूह ने उस धर्मगुरु को कहा, किस लिए ऐसी शीघ्रता कर रहे हो। शीघ्रता करने से कुछ प्राप्त नहीं होगा। जो यहां करना है उसमें सफल हो जाओ तो ही इच्छा पूरी होगी। इधर सर्वज्ञानी होने की परीक्षा में सफल होने पर ही कोई भी आगे जा सकता है। इसलिए आप से कहते हैं कि (सर्वज्ञपीठ पर) आरूढ़ होने की इच्छा वाले आप पहले परीक्षा देकर ही मन्दिर की ओर बढ़ो।''

इसके उपरान्त छः विभिन्न सम्प्रदायों के प्रतिनिधि आचार्य शंकर के सम्मुख आकर उनसे प्रश्न करते हैं। सबसे पहले ऋषि कणाद के वैशेषिक सिद्धान्त के प्रतिनिधि प्रश्न करते हैं, ''हमारे सिद्धान्त के अनुसार परमाणुओं में एक प्रकार की क्रिया उत्पन्न हो जाती है, जिससे एक परमाणु दूसरे परमाणु से संयुक्त हो जाते हैं। दो परमाणुओं के संयोग से एक 'दव्यणुक' उत्पन्न होता है। तो बताओ वह क्या है जो दो परमाणुओं को जोड़ता है?'' आचार्य शंकर उत्तर में बोलते हैं, 'परमाणुओं में अन्तर्निहित कोई कारण ही परमाणुओं को आपस में जोड़ता है।' दूसरे प्रश्नकर्ता एक नैयायिक आकर पूछते हैं, ऋषि गौतम के द्वारा मुक्ति के स्वरूप की जो व्याख्या की गई है, वह ऋषि कणाद की व्याख्या से भिन्न है। बताओ वह भिन्नता क्या है?

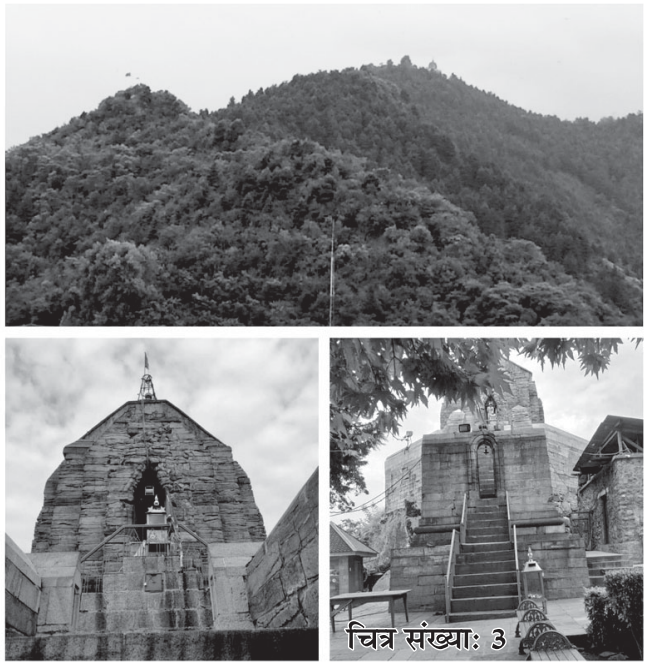

श्रीनगर में शंकराचार्य पर्वत पर मन्दिर के दृश्य

शंकर का उत्तर, ''कणाद के अनुसार मुक्ति आकाश की तरह गुणों से मुक्त मनः स्थिति है और गौतम इस में आनन्दमय और चेतन अवस्था जोड़ते हैं। इन दोनों सम्प्रदायों के अनुसार तत्त्वों की भिन्न गणना की गई है। कणाद ने सात और गौतम ने सोलह तत्त्वों की गणना की है, और दोनों ईश्वर को जगतकर्ता मानते हैं।'' अब तीसरे अन्य प्रतिनिधि सांख्य पर प्रश्न करते हैं, ''क्या प्रकृति स्वावलंबी है अथवा किसी अन्य सत्ता पर आश्रित है?'' इस प्रश्न का उत्तर देते हैं, ''सांख्य कहता है कि प्रकृति स्वावलंबी है। इसमें तीन गुण हैं जिनसे सृष्टि की रचना होती है। परन्तु वेदान्त दर्शन के अनुसार प्रकृति ईश्वर पर आश्रित है।''

इसके उपरान्त बौद्धों के दो प्रख्यात सम्प्रदायों के विद्वान आचार्य के सम्मुख उपस्थित होकर प्रश्न करते हैं, ''सर्वास्तिवाद दो प्रकार का है, दोनों में क्या भेद है एवं शून्यवाद और आपके दर्शन (अद्वैत दर्शन) में क्या भेद है?'' शंकर का उत्तर, 'सर्वास्तिवाद के दो सम्प्रदायों में से पहले अर्थात् सौत्रान्तिकों के अनुसार कार्य सर्वदा कारण के होने पर होता है (अन्वय) और न होने पर नहीं होता है (व्यतिरेक)। जबकि वैभाषिक दर्शन में बाह्य वस्तुओं की सत्ता तथा स्वलक्षणों के रूप में उनको प्रत्यक्ष मानता है। फिर भी दोनों के अनुसार वस्तु का निरन्तर परिवर्तन होता रहता है और कोई भी पदार्थ एक क्षण से अधिक स्थायी नहीं रहता। अतः दोनों में अधिक भेद नहीं है। विज्ञानवादी चित् को प्रति क्षण नष्ट होने से क्षणिक मानते हैं।

श्रीचक्र

चित्र संख्या: 4

जबकि वेदान्त में चित् एकात्म एवं स्थिर है। अत: इन दोनों में बहुत बड़ा भेद है। इसके बाद दिगम्बर जैन आये और पूछने लगे', 'बताओ हमारे सिद्धान्त के अनुसार अस्तिकाय से क्या अभिप्राय है ?' शंकर का उत्तर, 'जैनमत में पांच अस्तिकाय बताये गये हैं – जीवास्तिकाय, पुद्गलास्तिकाय, धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय और आकाशास्तिकाय।' अन्त में 'जैमिनीय शाखा की पूर्वमीमांसा के एक विद्वान सामने आकर प्रश्न करते हैं, जैमिनी ऋषि के सिद्धान्त में शब्द का स्वरूप क्या है – यह द्रव्य है या गुण ?' आचार्य का उत्तर, 'वर्ण शाश्वत है, सर्वव्यापक है एवं कर्णेन्द्रिय से इसका बोध होता है, शब्द इसका रूप। इस मत के अनुसार द्रव्य सर्वव्यापक है।'

इस प्रकार सभी विवादी संतुष्ट हो गये कि आचार्य को वास्तव में प्रत्येक दर्शन के सिद्धान्तों का अनुभव है। अत: उनके लिए मन्दिर का प्रवेशद्वार आदरपूर्वक खोला गया और आचार्य ने मन्दिर में प्रवेश किया। अपने शिष्य पद्मपाद का हाथ पकड़कर वे सर्वज्ञपीठ पर ज्यूं ही आरूढ़ होने लगे(चित्र सं. 2) तो उन्हें इस मन्दिर की अधिष्ठात्री देवी सरस्वती की विक्षुब्ध ध्वनि से चुनौतीपूर्ण वचन सुनाई दिए – ''आप का सर्वज्ञानी होना तो पहले ही सिद्ध हो चुका है, अन्यथा विश्वरूप(मण्डन मिश्र का पहला नाम, बाद में सुरेश्वर), जिन्हें ब्रह्मा का अवतार माना जाता है, कैसे आपके शिष्य बन जाते ? परन्तु इस पीठ पर आरूढ़ होने के लिए सर्वज्ञानी होने के साथ-साथ जीवन का पूर्ण रूप से पवित्र होना भी अत्यन्त आवश्यक है। अत: अपने जीवन की पवित्रता पर प्रकाश डाले बिना सर्वज्ञपीठ पर आरूढ़ होना अनौचित्यपूर्ण है। सन्यासी होते हुए भी आपने कामशास्त्र के रहस्यों का ज्ञान प्राप्त करने के लिए संभोग का जीवन जिया है। क्या आपके लिए ऐसा करना औचित्य रखता है ?'' इस चुनौतीपूर्ण प्रश्न का उत्तर देते हैं।

नास्मिञ्शरीरे कृतकिल्विषोऽहं जन्मप्रभृत्यम्ब न संदिहेऽहम्।
व्यधायि देहान्तरसंश्रयाद्यन्न तेन लिप्येत हि कर्मणाऽन्य:।।

– शं. दि. 16.86

'हे अम्बे ! जन्म से ही मैंने इस शरीर से कोई भी पाप कर्म नहीं किया है। दूसरे शरीर से किये गए कर्म का प्रभाव इस शरीर पर नहीं पड़ता है।'

तत्पश्चात् लेखक वर्णन करते हैं:

इत्थं निरुत्तरपदां स विधाय देवीं सर्वज्ञपीठमधिरुह्य ननन्द सभ्य:।
संमानितोऽभवदसौ विबुधैश्च वाण्या गार्ग्या कहोलमुखरैरिव याज्ञवल्क्य:।।

– शं. दि. 16.87

'इस प्रकार देवी सरस्वती के द्वारा(उसके स्पष्टीकरण को स्वीकार कर) आगे कुछ न बोलने पर आचार्य सर्वज्ञपीठ पर आरूढ़ होकर आनन्द के साथ महत्ता को प्राप्त हुए। विद्वानों की वाणी द्वारा सम्मानित उनकी स्तुति ऐसे हुई जैसे गार्ग्य, कहोल इत्यादि ने याज्ञवल्क्य की (स्तुति)की थी।'

वहां सभी उपस्थित उनका गुणगान करने लगे:

वादप्रादुर्विनोदप्रतिकथनसुधीवाददुर्वारतर्क-
न्यक्कारस्वैरधाटीभरितहरिदुपन्यस्तमाहानुभाव्य:।
सर्वज्ञो वस्तुमर्हस्त्वमिति बहुमत: स्फारभारत्यमोघ-
श्लाघाजोघुष्यमाणो जयति यतिपते:शारदापीठवास:।।

– शं. दि. 16.88

''सुशिक्षित और अनुभवी विवादियों के तर्कों का खण्डन करके आपने अपने यश का सम्पूर्ण देश में विस्तार किया है। आप सर्वज्ञपीठ की उपाधि के लिए सर्वथा योग्य हैं। शारदापीठ पर आरूढ़ होने पर महान संन्यासी की जयजयकार हो।''

शंकर दिग्विजय के अन्तिम सर्ग के समापन में माधव लिखते हैं:

इति मुनिरतितुष्टोऽध्युष्य सर्वज्ञपीठं
निजमतगुरुतायै नो पुनर्मानहेतो:।
कतिचन विनिवेश्याथर्ष्यश्रृङ्गाश्रमादौ
मुनिरथ बदरीं स प्राप कैश्चित्स्वशिष्यै:।।

– शं. दि. 16. 93

'इस प्रकार से अपने अद्वैत-सिद्धान्त की महत्ता के लिए, न कि अपनी प्रभुता के लिए, मुनि शंकर ने सर्वज्ञपीठ को विजयोल्लास के साथ सुशोभित किया। (तत्पश्चात) कई शिष्यों को श्रृङ्गेरी इत्यादि अन्य स्थानों को भेजकर, कुछ शिष्यों के साथ मुनि शंकर ने बद्रीनाथ की ओर प्रस्थान किया।'

माधव के अनुसार बद्रीनाथ से ही फिर शिव के पवित्र स्थल केदारनाथ जाकर शंकराचार्य अन्तर्ध्यान हो गये थे।

कश्मीर के सन्दर्भ में शंकर दिग्विजय के प्रस्तुत संस्करण के अन्य सर्गों की ओर ध्यानाकर्षण कराना भी महत्वपूर्ण है। इसके

आठवें सर्ग से दसवें सर्ग में शंकराचार्य का प्रयाग से प्रस्थान करके मीमांसा दर्शन के प्रसिद्ध दार्शनिक कुमारिल भट्ट के शिष्य एवं उस समय के प्रख्यात विद्वान मण्डन मिश्र से मिलने का विवरण प्रस्तुत किया गया है। दूर-दूर से उन्हें शास्त्रार्थ के लिए आमन्त्रित किया जाता था और स्वयं भी अनेक विद्वान उनके पास आकर उनसे शास्त्र चर्चा करते थे। मण्डन मिश्र के साथ सम्पन्न शास्त्रार्थ आदि शंकराचार्य के जीवन की सबसे विशेष और बड़ी घटना है। मण्डन मिश्र कट्टर कर्मकाण्डी विद्वान थे और उनकी धर्मपत्नी उभय भारती भी उच्च कोटि की विदुषी महिला थीं। मण्डन मिश्र और आदि शंकराचार्य के बीच होने वाले शास्त्रार्थ के लिए उभय भारती को निष्पक्ष मध्यस्थता के लिए आमन्त्रित किया जाता है। दोनों पक्षों के उत्तम विद्वानों के बीच शास्त्रार्थ कई दिनों तक चलता रहा। अन्ततः

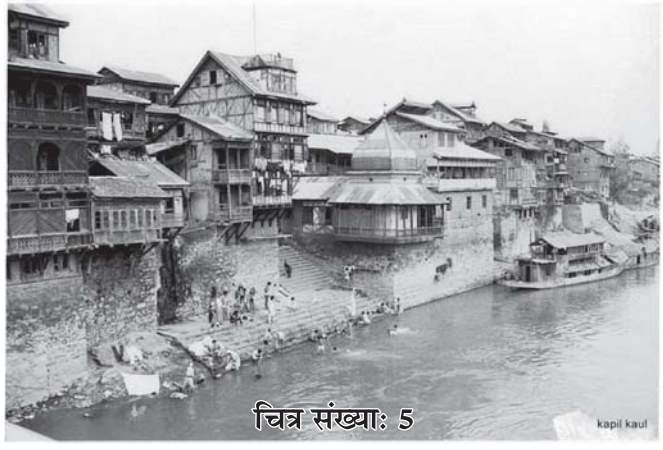

वितस्ता नदी के किनारे पर स्थित पुरुषार्थ मोहल्ले का वर्तमान दृश्य

मण्डन मिश्र की पराजय होती है तो वे अपनी पराजय स्वीकार कर लेते हैं । परन्तु उनकी विदुषी पत्नी अपने पति की पराजय से अन्दर से खिन्न होकर शंकराचार्य को सम्बोधित कर कहतीं हैं,'' आपने निःसंदेह मेरे पतिदेव को शास्त्रार्थ में पराजित किया है। किन्तु शास्त्रों द्वारा अनुमोदित रीति के अनुसार अभी इन्हें पूर्ण रूप से पराजित नहीं माना जा सकता है, क्योंकि मैं इनकी अर्धांगिनी हूं। आपको मेरे साथ भी शास्त्रार्थ करना होगा। यदि मैं भी पराजित हो जाऊं तभी इनको पूरी तरह से पराजित माना जा सकता है। यह सब सुनकर शंकराचार्य आश्चर्यचकित हुए और उभय भारती से कहने लगे कि शास्त्रार्थ करना आपका कर्तव्य नहीं है। आपने ही तो निर्णायक बनकर अपने पति की पराजय का निर्णय दिया है और फिर आप एक स्त्री हो। स्त्रियों के साथ शास्त्रार्थ धर्मानुमोदित नहीं है। आप एक बार अपने पति से पूछकर देख लो।''जैसा वे कहेंगे मैं उसे स्वीकार करूंगा। इस पर उभय भारती बोलीं, मैं स्वीकार करती हूं कि आपने मेरे पतिदेव को परास्त किया है। परन्तु जबतक आप मुझे भी परास्त न करें तब तक मेरे पतिदेव पूरी तरह से पराजित नहीं हुए हैं। दूसरी बात जो आप कह रहे हैं कि स्त्रियों के साथ शास्त्रार्थ नहीं करना चाहिए, यह तो आपका मात्र भ्रम है। गार्गी की याज्ञवल्क्य से और जनक की सुलभा से शास्त्र-चर्चा इसके प्रमाण हैं।'' सरस्वती स्वरूपा उभय भारती के युक्ति-युक्त एवं तर्कपूर्ण वचन सुनकर शंकराचार्य ने शास्त्रार्थ करने की स्वीकृति दे दी। दोनों के बीच शास्त्रार्थ प्रारम्भ हुआ। सभा में उपस्थित दर्शक एवं श्रोतागण उभय भारती के तर्क-वितर्कों सहित पाण्डित्य से आश्चर्यचकित रह गए। शंकराचार्य पर भी उभय भारती के पाण्डित्य का प्रभाव अंकित हो गया। इस प्रकार कई दिनों तक चल रहे शास्त्रार्थ के उपरान्त उभय भारती के परास्त होने पर उन्होंने अपनी चातुर्यपूर्ण युक्ति से कामशास्त्र की चर्चा आरम्भ की। इस विषय पर अपने अध्ययन की अपूर्णता को ध्यान में रखते हुए शंकराचार्य ने उभय भारती से एक महीने का समय मांगा ताकि वे इस विषय पर पूरा अध्ययन कर सकें क्योंकि इस विषय पर शास्त्रार्थ करना तभी सम्भव था। उभय भारती ने शंकराचार्य की बात स्वीकार कर ली। शंकराचार्य अपने शरीर को शिष्यों की सुरक्षा में छोड़कर, एक मरणासन्न राजा के शरीर में अपनी आत्मा का प्रवेश करके कामशास्त्र के रहस्यों का ज्ञान प्राप्त करने के लिए कुछ दिनों के लिए राजसी जीवन व्यतीत करते हैं। ध्यातव्य है कि इसी सन्दर्भ में सर्वज्ञपीठासीन देवी शारदा ने शंकराचार्य से उनके जीवन की पवित्रता पर स्पष्टीकरण मांगा था।

यहां निर्धारित समयावधि को विस्मृत कर शंकराचार्य की आत्मा राजसी सुख-भोग में लिप्त रही, उधर शंकराचार्य के शरीर की रक्षा में लगे उनके शिष्य चिन्तित होकर तथा पता लगाकर कलाकारों के वेष में राजदरबार में प्रवेश करते हैं। उन्हें स्मरण कराने के बाद ही आत्मा शंकराचार्य के शरीर में वापस प्रवेश करती है। शंकराचार्य अब तुरन्त उदय भारती के साथ शास्त्रार्थ को पूरा करने के लिए मण्डन मिश्र के घर चले जाते हैं। यहां आचार्य को आदर सत्कार सहित आसीन करा कर उदय भारती, जो वास्तव में देवी सरस्वती हैं, कहतीं हैं, हे महात्मन! आप सदाशिव हैं, आप ब्रह्मा के, देवों के, तथा सभी जीवों के स्वामी हैं और सर्वज्ञ हैं। हे कामदेव को भस्म करने वाले! आपने

[2]Sankara Digvijaya: The Traditional Life of Sri Sankaracharya, Madhava-Vidyaranya,translated by Swami Tapasyananda, Sri Ramakrishna Math, Madras, p. 82 f.n.

जो कामशास्त्र के शास्त्रार्थ में मुझे तत्काल परास्त नहीं किया, और जो आपने काम शास्त्र में विशेष ज्ञान अर्जित करने का कष्ट उठाया; इस सब से तात्पर्य केवल सांसारिक तौर-तरीकों का अनुसरण मात्र है। आपसे परास्त होना किसी प्रकार भी ग्लानि नहीं है। देदीप्यमान सूर्य के प्रकाश से चन्द्रमा की शीतल किरणें और तारों की रौशनी अवरुद्ध होने से उन में अपयश प्रोद्भूत होता है क्या ? मेरा उद्देश्य पूरा हो गया है। मुझे आज्ञा दीजिए अब मैं स्वर्गारोहण करती हूं। यह वचन कहकर उदय भारती वहां से विलुप्त होने ही वाली थीं कि शंकराचार्य ने उनके प्रति इस प्रकार से वाचन किया:

जानामि त्वां देवि देवस्य धातुर्भार्यामिष्टामष्टमूर्तेः सगर्भ्याम्।
वाचामाद्यां देवतां विश्वगुप्तत्यै चिन्मात्रामप्यात्तलक्ष्म्यादिरूपाम्।।
तस्मादस्मत्कल्पितेष्वर्च्यमाना स्थानेषु त्वं शारदाख्या दिशन्ती।
इष्टानर्थानृष्यश्रृङ्गादिकेषु क्षेत्रेष्वास्स्व प्राप्तसत्संनिधाना।।

– शं. दि. 10.70-71

'जानता हूं आप ब्रह्मा की सहचरी और शिव की भगिनी, वाग्देवी सरस्वती हैं। शुद्ध चिन्मात्र स्वभाव से सर्वत्र विद्यमान लक्ष्मी आदि रूपों में आप ही इस संसार की रक्षक हैं। अत: मैं ऋषिश्रृङ्ग (श्रृङ्गेरी) तथा अन्य स्थानों पर शारदा नाम से आपकी पूजा के लिए मन्दिरों का निर्माण करूंगा। हे देवी शारदे! मैं प्रार्थना करता हूं कि आप इन सब मन्दिरों में प्रकट होकर भक्तों की आराधना स्वीकार करके उन्हें वरदान दीजिए।'

इन शब्दों पर अपनी सहमति प्रदान करते हुए देवी दृष्टि से ओझल हो गईं।

मण्डन मिश्र से सम्बन्धित एक महत्वपूर्ण सूचना यह भी है कि उनका पैतृक स्थान कश्मीर बताया गया है। चिद्विलास लिखित 'शंकर दिग्विजय' में मण्डन मिश्र को काश्मीर में रहने वाला बताया है।

कश्मीर के लोक-मानस में आदि शंकराचार्य

कश्मीर की राजधानी श्रीनगर शहर में स्थित शंकराचार्य नाम से प्रसिद्ध पहाड़ी है। इस पहाड़ी के ऊपर प्राचीन शिव मन्दिर की स्थापना का समय ईस्वी सदी के आरम्भ का बताया जाता है। इस मन्दिर का कई बार जीर्णोद्धार किया गया है (चित्र संख्या: 3)। लोक धारणा के अनुसार आदि शंकराचार्य ने कश्मीर प्रवास के समय इस पहाड़ी के नीचे स्थित किसी एक मन्दिर के आश्रम में अपने शिष्यों के साथ निवास किया था। निसंदेह आदि शंकराचार्य इस पहाड़ी पर स्थित शिव मन्दिर के दर्शन करने अवश्य गये होंगे। किम्वदन्ती है कि आदि शंकराचार्य ने इस पहाड़ी पर तपस्या भी की

चित्र संख्या: 6

तरङ्ग पहनी कश्मीरी महिलाएं, 1955 ई. के इस फोटो में साड़ी पहनी महिलाएं भी हैं।

थी और साथ में यह भी कहा जाता है कि उन्होंने सौन्दर्यलहरी की रचना इसी पहाड़ी के सुरम्य वातावरण में की है। इन घटनाओं के कारण इस पहाड़ी का नाम शंकराचार्य पडा होगा, ऐसा प्रतीत होता है। आदि शंकराचार्य के कश्मीर आने की स्मृति को चिरस्थाई बनाए रखने वाली इस पहाड़ी के ऊपर कालान्तर में मन्दिर के ही बगल में आदि शंकराचार्य की एक मूर्ति भी स्थापित की गई है। इस मूर्ति का अवलोकन श्रद्धालु यहां आकर आज भी करते हैं। श्रीनगर शहर में स्थित इस प्रसिद्ध क्षेत्र के कारण आदि शंकराचार्य का नाम कश्मीर के जन-मानस में सदियों से विद्यमान होता चला आ रहा है। इसके अतिरिक्त कुछेक कथाएं भी प्रचलित हैं जिन्हें सुनना कई बार रोमांच उत्पन्न कर देता है। ऐसी ही एक कथा के अनुसार जब आदि शंकराचार्य भारत भ्रमण करते हुए जन साधारण में बढती हुई नास्तिकता के भाव को समाप्त करने के लिए सनातन धर्म सम्मत अपने अद्वैत दर्शन को समझने की अनिवार्यता का प्रचार करते हुए कश्मीर पहुंचे तो यहां आकर उन्हें शाक्त पण्डितों के साथ काफी संघर्ष करना पड़ा। कश्मीर की अधिष्ठात्री देवी शारदा का स्थान होने के कारण परा शक्ति की सर्वव्यापकता की धारणा को जब आदि शंकराचार्य ने चुनौती देने का प्रयत्न किया तो, कहते हैं कि अचानक उनकी प्राण-शक्ति क्षीणता को प्राप्त हो गई । स्थिति ऐसी हो गई कि लेटे हुए फिर से उठना सम्भव नहीं हो पा रहा था। उसी समय बाहर से दही बेचने वाली एक महिला की आवाज़ सुनाई देने लगी - 'दही लो', 'दही लो'। दही लेने के लिए जब उन्होंने संकेत किया तो अक्कड भरी हंसी उडाते हुए उस महिला ने आचार्य से कहा, 'हे महाशय! शक्ति के सिद्धान्त को यहां से निर्वासित करने में आप

[3]व्याख्या के लिए देखें - सौन्दर्य लहरी, स्वामी विष्णु तीर्थ महाराज, पृ. सं.105-110

तरङ्ग पहनी कश्मीरी दुल्हन

सफल हो चुके हैं, अब आप के अन्दर शक्ति क्योंकर बनी रह सकती है ?' कहते हैं इसके पश्चात् ही आचार्य को अनुभव हुआ कि शक्ति के सिद्धान्त पर उनके द्वारा प्रहार करना अतिलंघन करना था। क्योंकि परा शक्ति ही पूरी सृष्टि की कारण हैं। इस संसार की स्थिति परम शक्ति पर ही निर्भर है। ऐसी धारणा है कि आदि शंकराचार्य ने उसी क्षण परा शक्ति को समर्पित ''सौन्दर्य लहरी'' की काव्य रचना करके अपने अतिलंघन का प्रायश्चित किया। आदि शंकराचार्य ने तत्त्वज्ञान सम्बन्धित जितने भी दार्शनिक ग्रन्थ लिखे हैं उनमें सौन्दर्य लहरी एक संकीर्ण स्तोत्र ग्रन्थ है। इसमें परा शक्ति की महामाया और शुद्ध विद्या के तात्त्विक, योगिक एवं सगुण रूप का सारगर्भित एवं भक्ति से परिपूर्ण वर्णन किया गया है।

आदि शंकराचार्य कृत एक अन्य छोटा स्तोत्र गौरीदशक कश्मीर में अम्बस्तव के नाम से अत्यन्त लोकप्रिय स्तोत्र है। प्रत्येक धर्मनिष्ठ काश्मीरी परिवार में इस स्तुति का भक्तिभाव पूर्ण गान किया जाता है। ध्यान से देखा जाए तो एक प्रकार से यह सौन्दर्य लहरी का ही संक्षिप्त संस्करण है जो गूढ़ रहस्यों से भरा हुआ है। तुलना के लिए दोनों स्तोत्रों से यहां कुछ उदाहरण प्रस्तुत हैं। दोनों स्तोत्रों के पहले ही श्लोक में शक्ति के वैभव का वर्णन करते हैं:

शिवःशक्त्या युक्तो यदि भवति शक्तः प्रभवितुं
न चेदेवं देवो न खलु कुशलः स्पन्दितुमपि।
अतस्त्वामाराध्यां हरिहरविरिञ्चादिभिरपि
प्रणन्तुं स्तोतुं वा कथमकृतपुण्यः प्रभवति।।

– सौन्दर्य लहरी:1

'शिव यदि शक्ति से युक्त होकर ही सृष्टि करने में समर्थ हैं, और यदि ऐसा न होता तो वह देव स्पन्दित होने के योग्य भी नहीं होता। अतः ब्रह्मा, विष्णु और महेश (सृष्टि, स्थिति और संहार के देवताओं) की आराध्या आपको प्रणाम करने की या आपकी स्तुति करने की प्रवृत्ति किसी पुण्यहीन (मनुष्य) की कैसे हो सकती है।'

लीलारब्धस्थापितलुप्ताखिल लोकां
लोकातीतैर्योगिभिर्न्तर्हृदि मृग्याम् ।
बालादित्य श्रेणि समान द्युतिपुंजां
गौरीमम्बामम्बुरूहाक्षीम् अहं ईडे ।।

– अम्बस्तव:1

''जो अपनी लीला के द्वारा इस पूरी सृष्टि का प्रारम्भ करतीं हैं, उसे स्थापित करतीं हैं अर्थात् उसका पालन करतीं हैं तथा उसका लोप करतीं हैं; इस सृष्टि से ऊपर की अवस्था पर पहुँचे हुये योगी जिसे अपने अन्तर हृदय में खोजते हैं; उदित होते हुये असंख्य सूर्यों की जैसी जिनकी द्युति है; कमल जैसे नेत्रोंवाली उस गौरी अम्बा की मैं स्तुति करता हूं।''

श्रीचक्र की उपासना शुद्ध विद्या की उपासना है और यह उपासना का अत्यन्त महत्वपूर्ण साधन है। इसके द्वारा आध्यात्मिक शक्ति की उपलब्धि करके मनुष्य-जीवन को सार्थक किया जा सकता है। सौन्दर्य लहरी के 11वें श्लोक में श्रीचक्र (चित्र सं 4) का विस्तृत वर्णन किया गया है:

चतुर्भिः श्रीकण्ठैः शिवयुवतिभिः पञ्चभिरपि
प्रभिन्नाभिः शम्भोर्नवभिरपि मूलप्रकृतिभिः।
चतुश्चत्वारिंशद्वसुदलकलाश्रत्रिवलय-
त्रिरेखाभिः सार्धं तव शरणकोणाः परिणताः।।

– सौन्दर्य लहरी:11

'हे परा शक्ति! चार श्रीकण्ठ (शिव त्रिकोण) और पांच शिव युवतियां (शक्ति त्रिकोण), इन नौ मूल प्रवृत्तियों से आपके रहने के तैंतालीस त्रिकोण बनते हैं, जो शम्भु के बिन्दु स्थान से भिन्न हैं। वे तीन वृत्तों और तीन रेखाओं सहित आठ और सोलह दलों से युक्त हैं।'

अम्बस्तव में इसी अवधारणा को अन्य प्रकार से व्यक्त किया है:

नानाकारैः शक्ति कदम्बैर्भुवनानि
व्याप्य स्वैरं क्रीडति यासौ स्वयमेव।
कल्याणीं तां कल्पलतामानतिभाजां
गौरीमम्बामम्बुरूहाक्षीं अहं ईडे ।।

– अम्बस्तव:5

''नाना रूप की अपनी अनन्त शक्तियों के द्वारा सभी लोकों में व्याप्त होकर अपनी ही इच्छा से क्रीड़ा (सृष्टि, स्थिति, लय की

क्रीड़ा) करती हैं जो वास्तव में स्वयं एक ही हैं; भक्तजनों का कल्याण करने वाली, जो शरण में आये हुये भक्तजनों के लिये कल्पलता के समान हैं (अर्थात् उनकी सभी कामनाएँ पूर्ण करती हैं), कमल जैसे नेत्रोंवाली उस गौरी अम्बा की मैं स्तुति करता हूं।''

परा शक्ति की उपासना जैसे मन्त्र और यन्त्र के द्वारा बाह्य रूप में करते हैं,उसी प्रकार से शरीर के भीतर भी चक्र (षट्चक्र) और नाडियों (ईडा, पिंगला, सुषुम्ना) में शक्तियों के केन्द्र हैं जिनकी सहायता से योग साधना का क्रमिक विधान है। इस स्थिति में मनुष्य देह को ही श्रीयन्त्र माना जाता है। प्रत्येक मनुष्य की देह के अन्दर मूलाधार चक्र में स्थित कुण्डलिनी शक्ति का उत्थान मन्त्रों की सहायता से करने के पश्चात्, आरोहण-अवरोहण सुषुम्ना नाड़ी से सीधे सहस्रार पर्यन्त किया जाता है। दोनों स्तोत्रों में इसका वर्णन किया गया है:

महीं मूलाधारे कमपि मणिपूरे हुतवहं
स्थितं स्वाधिष्ठाने हृदि मरुतमाकाशमुपरि।
मनोऽपि भ्रूमध्ये सकलमपि भित्त्वा कुलपथं
सहस्त्रारे पद्मे सह रहसि पत्या विहरसे।।

-सौन्दर्य लहरी:9

'पृथ्वी तत्व को मूलाधार में, जल को भी (मूलाधार में ही), मणिपूर में अग्नि तत्व को, जिसकी स्थिति स्वाधिष्ठान में है; हृदय में वायु तत्व को और ऊपर विशुद्धि चक्र में आकाश तत्त्व को, मन को भी भ्रूमध्य में; इस प्रकार सकल कुल पथ (शक्ति-मार्ग) का वेध करके आप सहस्रार पद्म में अपने पति के साथ एकान्त में विहार करती हो।'

मूलाधारातदुत्थितवन्तीं विधिरन्ध्रं
सौरं चान्द्रं धाम विहाय ज्वलिताङ्गीम्।
ध्येयां सूक्ष्मां सूक्ष्मतनुं तां तडिदाभां
गौरीमम्बामम्बुरूहाक्षीं अहं ईडे

- अम्बस्तव:6

'जो (कुण्डलिनी शक्ति के रूप में) मूलाधार से (अभ्यास के द्वारा) उदित होकर (ईड़ा -पिंगला अथवा प्राण-अपान रूप) सूर्य और चन्द्रमा के प्रकाशों को पार करके ब्रह्मरन्द्र (सहस्रार) में प्रकाशमान होती हैं; बिजली की चकाचौंध की तरह जो सूक्ष्म से सूक्ष्मतर स्वरूपा ध्यान करने योग्य हैं, कमल जैसे नेत्रोंवाली उस गौरी अम्बा की मैं स्तुति करता हूं।'

मन्त्र के मनन द्वारा तत्सम्बन्धी देवता से तादात्म्य स्थापित किया जाता है। मन्त्र-जप से कुण्डलिनी शक्ति का जागरण सम्भव होता है, इसलिए मन्त्र को देवता का अधिष्ठान कहा जाता है:

शिवः शक्तिः कामः क्षितिरथ रविः शीतकिरणः
स्मरो हंसः शक्रस्तदनु च परामारहरयः ।
अमी हृल्लेखाभिस्तिसृभिरवसानेषु घटिता
भजन्ते वर्णास्ते तव जननि नामावयवताम्।।

-सौन्दर्य लहरी: 9

'हे जननी! शिव, शक्ति, काम, क्षिति और फिर रवि, शीतकिरण (चन्द्र), स्मर (काम), हंस, चक्र, इसके पीछे परा

चित्र संख्या: 8

विशेष रूप से सुसज्जित दुल्हन की 'जूज्य'

[4]Naisada of Sri Harsa ed by Pt. Sivadatta,1894, p.324

[5]व्यक्तिगत रूप से मेरे लिए यह गौरवपूर्ण सूत्र है, क्योंकि मेरा जन्म स्थान पुरुषधार से सट्टा द्राबिणार नामक मुहल्ला है।

[6]1990 तक फिर भी कहीं-कहीं तरङ्ग पहनी वृद्ध महिलाएं देखने को मिलती थी परन्तु कश्मीर से विस्थापन के बाद गर्म मौसम वाले स्थानों में इस लिबास की व्यावहारिकता ही समाप्त हो चुकी है अब तरङ्ग वाला लिबास प्रायः समाप्त ही हो गया है।

(शक्ति), मार(काम), हरि, इन तीनों के अन्त में तीन ह्लेखा जोडकर तेरे नाम के अवयव स्वरूप अक्षरों का साधक-जन भजन करते हैं।'

आदिक्षान्तां अक्षरमूर्त्यां विलसन्तीं
भूते भूते भूत कदम्बं प्रसवित्रीम्।
शब्दब्रह्मानन्दमयीं तां प्रणवाख्यां
गौरीमम्बामम्बुरूहाक्षीं अहं ईडे ।।

– अम्बस्तव: 7

'अ' से लेकर 'क्ष' तक अक्षरों के मूर्त रूप में (मातृकाचक्र के रूप में) प्रकट हुई (परा शक्ति); पंचमहाभूतों में स्थावरजंगम सृष्टि को उत्पन्न करने वाली; आनन्ददायक शब्दब्रह्ममयी(अनाहत शब्द स्वरूपा) जिसका वाचक प्रणव (ॐ कार) है; कमल जैसे नेत्रोंवाली उस गौरी अम्बा की मैं स्तुति करता हूं।'

वास्तव में कश्मीर में शाक्त मत के अन्तर्गत श्रीविद्या और श्रीचक्र की उपासना के विधान का विशेष महत्व प्राचीन काल से ही चला आ रहा है। इसके कई प्रमाण आज भी उपलब्ध हैं। सबसे पहला प्रमाण कश्मीर की राजधानी का नाम श्रीनगर होना है। श्रीनगर नाम से आध्यात्मिक एवं सांसारिक दोनों प्रकार के वैभव परिलक्षित होते हैं। सुरम्य श्रीनगर शहर की वास्तु योजना श्रीचक्र के आधार पर यन्त्र के रूप में की गई है। श्रीयन्त्र के रूप में शहर के केन्द्र में सुमेरु पर पूज्यनीय शारिका पर्वत चक्रेश्वरी/ चक्रेश्वर का स्थान है। यह शक्ति का ऐसा जाग्रत स्थल है जहां सदियों से न जाने कितने योगियों ने परा शक्ति का साक्षात्कार किया है। शहर में रहने वाले सभी लोग प्राय: प्रतिदिन प्रात: काल में उठकर इस परम पवित्र पर्वत स्थल की परिक्रमा में आसन लगाकर परा शक्ति का भगवती शारिका के रूप में ध्यान करने के पश्चात् ही अपनी दिनचर्या प्रारम्भ किया करते थे।

चित्र संख्या: 9

सर्पाकार में बनाई गई 'पूच' कुण्डलिनी जागरण की द्योतक है।

इसी प्रकार से श्रीविद्या का सम्बन्ध मन्त्र विद्या से है। मन्त्र वर्णों से बनते हैं। परा वाक् के सूक्ष्मातिसूक्ष्म रूप में वर्ण श्वाश्वत हैं और सर्वव्यापक हैं। शब्द वर्णों का स्थूल रूप है। कश्मीर में श्रीविद्या के रूप में परा शक्ति सर्वज्ञपीठासीन शारदा भगवती का सुविख्यात स्थान रहा है। देश के विभिन्न प्रदेशों से विद्वान अपने ग्रन्थों का अनुमोदन कराने के लिए देवी शारदा के सम्मुख उपस्थित हो जाते थे।

11वीं/12वीं सदी में विशिष्टाद्वैत के प्रवर्तक रामानुजाचार्य, विद्वानों की सम्मति लेने के लिए अपने ब्रह्मसूत्र भाष्य को लेकर कश्मीर आये थे। पञ्चरात्र परम्परा पर आधारित उनके सुप्रसिद्ध भाष्य को सम्मति भी मिली और इसका 'श्रीभाष्य' नामकरण भी कश्मीर के विद्वानों ने किया ।

12वीं सदी का एक ओर सन्दर्भ है जिसके अनुसार कन्नौज के राजा जयन्तचन्द (1170-1194 ई.) के आदेश पर उनके राजकवि श्री हर्ष ने नैषधचरितम की रचना करके प्रस्तुत किया तो राजा ने कहा कि कश्मीर जाओ, वहां पण्डित विद्वानों को दिखाओ और वाग्देवी के हाथ में दो। वाग्देवी वहां स्वयं साक्षात् वास करतीं हैं, दोषपूर्ण काव्य को हाथ में रखते ही अस्वीकार कर दूर फेंकती हैं । परन्तु अच्छे काव्य को स्वीकार कर ठीक से ग्रहण करते हुए ऊपर से फूल गिरते हैं। श्रीहर्ष राजा के आदेश को पूरा करने के लिए ढेर सारी सामग्री लेकर काश्मीर चले गए। वहां पण्डितों को दिखाया। अपनी पुस्तक को सरस्वती भगवती के हाथ में रखा तो भगवती ने उसे दूर फेंक दिया। श्रीहर्ष बोले, मेरे काव्य को अन्य साधारण काव्य समझकर आप उद्विग्न क्यों हो। भगवती बोलीं, अरे दूसरों का मर्म बताने वाले, क्या तुम्हे याद नहीं है तुमने 11वें सर्ग के 66वें श्लोक में क्या कहा है? परन्तु बाद में कवि के अपने दृढ़ मत से स्पष्टता देने पर, सहमत होकर भगवती भारती ने वहां विद्वानों की उपस्थिति में इस काव्य को स्वीकार किया और नैषधचरितम् महाकाव्य के रूप में विख्यात हो गया। इन घटनाओं से अनुमान लगा सकते हैं कि बड़े-बडे विद्वान पूरे देश से कश्मीर जाकर अपनी रचनाओं पर सम्मति प्राप्त करते थे।

तन्त्र/आगम विधि बताते हैं। तन्त्रोक्त मतानुसार मन्त्रों के द्वारा यन्त्र के माध्यम से उपासना की जाती है। कश्मीरी पण्डितों का शक्ति उपासना में सबसे बडा प्रमाण उनकी अब तक बची दृढ़ आस्था है। शक्ति उपासना का उनकी परम्पराओं पर गहरा प्रभाव रहा है। एक और कथा है, एक दिन आदि शंकराचार्य के एक युवा शिष्य कश्मीर के पुरुषयार नामक एक मुहल्ले में भिक्षा के लिए

गए थे । वहां एक महिला ने अपनी पुत्र-वधू से घर के अन्दर से भिक्षा लाकर देने को कहा। भिक्षा लाकर पात्र को खाने से भरते हुए महिला ने उस युवा भिक्षु के चेहरे पर अपनी दृष्टि डाली तो अपने प्रातिभज्ञान से उसको आभास हुआ कि सायंकाल तक उसकी मृत्यु हो जाएगी। उसने भिक्षु को कुछ नहीं कहा, परन्तु अपने परिवार में इसके विषय में बात कर ली। थोड़ी ही देर में इसकी जानकारी उस भिक्षु तक पहुंच गई तो संतप्त हो कर उसने अपने गुरु को इसके बारे में जानकारी दी। गुरु आदि शंकराचार्य ने अपने शिष्य को उसका मन लगने के लिए अनुकूल कार्य दिया जिससे वह उसी में तल्लीन हो गया। फिर उसका क्या हुआ, कथा उसके बारे में मौन है। परन्तु आदि शंकराचार्य ने उस मुहल्ले का पता लगाया और स्वयं वहां चले गए। वहां द्वार पर खड़ी एक बालिका को देखकर उससे कहा कि अन्दर जाकर महिलाओं से बातचीत करना चाहते हैं। तुरन्त वहीं महिला सामने आई जिसने उसी दिन प्रात:काल में युवा सन्यासी को भिक्षा दी थी, आचार्य को आसन ग्रहण करवाया। तत्पश्चात् आचार्य शंकर ने उस महिला के साथ शाक्त सम्प्रदाय के विभिन्न पक्षों पर शाक्ततन्त्रों की जटिलताओं को लेकर लम्बी चर्चा कर ली। कहते हैं कि वहां से वापस जाकर आदि शंकराचार्य ने उस महिला के सम्मान में सिर में पहनने का वस्त्र भेजा जिसका नाम तरङ्ग था। इस कथा में हमें दो महत्वपूर्ण सूत्र मिलते हैं। एक सूत्र पुरुषयार मुहल्ले के नाम में है, क्योंकि कश्मीर में अभी भी इस नाम से प्रसिद्ध मुहल्ला वितस्ता नदी के किनारे बसा हुआ है।[5] (चित्र सं.5) दूसरा सूत्र 'तरङ्ग' नामक सिर के आवरण से जुड़ी लोक-रीति से सम्बन्ध रखता है। कश्मीर में प्राचीन काल से महिलाएं अपने सिर को ढकने के लिए तरङ्ग नाम के एक विशेष प्रकार के आवरण को पहनतीं थीं, कहते हैं कि कश्मीर में महिलाओं के द्वारा तरङ्ग पहनने का रिवाज ऊपर वर्णित वृत्तान्त के बाद ही प्रारम्भ हुआ है। 19 वीं सदी में साड़ी के प्रचलन के बाद तरङ्ग वाला लिबास धीरे-धीरे कम होने लगा।[6] (चित्र सं.6) तरङ्ग को लम्बे फेरन के साथ पहना जाता था । अब इस परिधान को विशेष अवसरों पर केवल प्रदर्शन के लिए महिलाएं पहनती हैं। कश्मीरी समाज में तरङ्ग की महत्ता इतनी ज़्यादा है कि विवाह के समय दुल्हन के रूप में एक पुत्री का वैवाहिक कृत्य विशेष प्रकार से सुशोभित तरङ्ग पहनाकर ही सम्पन्न कराया जाता है (चित्र सं. 7)। शक्ति उपासक कश्मीरी समाज में तरङ्ग की व्याख्या कुण्डलिनी जागरण के रूप में की गई है। तरङ्ग का पूरा परिधान विभिन्न प्रकार के आवरणों के मेल से तैय्यार किया जाता है। सब से पहले एक विशेष प्रकार की टोपी को सर पर पहनाया जाता है, जिसका ऊपरी भाग जरी का गोल भाग होता है और जरी के नीचे लाल रंग का पश्मीना जोड़कर टोपी के आकार का बना देते हैं। इस टोपी को कश्मीरी में 'कल्पोश' कहते हैं। दुल्हन /महिला के सिर पर पहनाकर माथे के स्थान पर इस टोपी के ऊपर ढेड़ इंच की चौड़ी और ढाई मीटर लम्बी कलफदार सफेद पट्टी को अबरक से चमकाकर गोलाकार में बांधा जाता है। महिलाओं के साधारण परिधान के रूप में फिर एक कान से दूसरे कान तक सामने के भाग को पारदर्शी पत्र से ढककर दोनों तरफ दो-दो काले सिर वाली सूईयों से बन्द कर देते हैं। इस पारदर्शी पत्र को कश्मीरी में 'शीशलाठ' कहते हैं। परन्तु दुल्हन के तरङ्ग को सुनहरे गोटे से गोलाकार में बांध लिया जाता है। इसमें सोने के सिर वाली दो सूईयां लगाकर बन्द करते हैं। कन्धों से थोडा नीचे तक लटकती हुई सफेद जाली के दोनों तरफ लगी रेश्मी चौड़ी पट्टियों वाली 'जून्य' से इस टोपी को ढकते हैं। दुल्हन की 'जून्य' की चौड़ी रेशमी पट्टियों को सुनहरे गोटा-पट्टी और सीप कड़ाई इत्यादि से सजाया जाता है।(चित्र सं. 8) साधारण महिलाओं के तरङ्ग के ऊपर फिर सर्पाकार में तैयार की गई 'पूच' लगाई जाती है। इसे मलमल के नर्म कपड़े के दो भागों को नीचे से ऊपर तक जोडकर बनाया जाता है। सिर से पैरों तक लम्बी इस 'पूच' के नीचे के दो कोनों को मोड़कर सर्पाकार बनाया जाता है। (चित्र सं.9)। पूरे परिधान की व्याख्या शाक्तमतानुसार बहुत ही महत्वपूर्ण है। इसमें जरी की टोपी श्रीचक्र का सांकेतिक रूप है। सफ़ेद पट्टी को ही वास्तव में तरङ्ग कहते हैं और यह मस्तिष्क में सद्विचार के तरङ्गों का संकेत है। सद्विचार की पुष्टि को 'जून्य' के

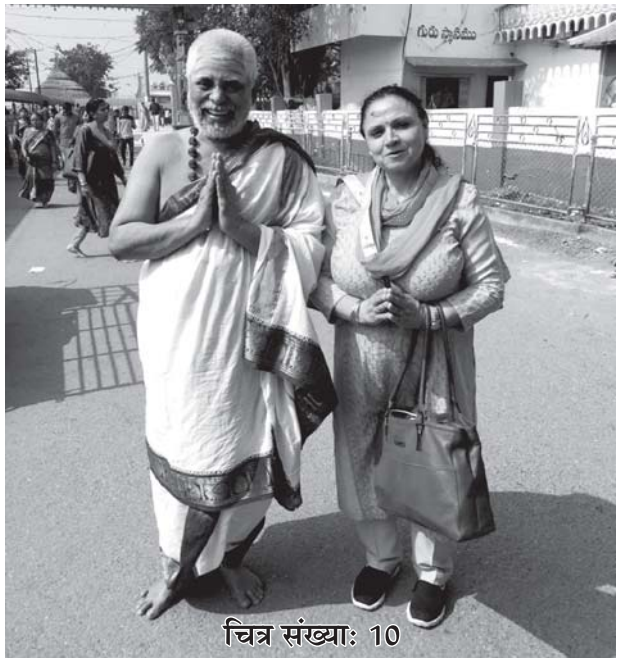

चित्र संख्या: 10

मुख्य पुजारी, भद्रकाली मन्दिर, वारंगल, तेलंगाना 2018

सौन्दर्यपूरित अलंकरण से व्यक्त किया गया है। अन्त में 'पूच' कुण्डलिनी जागरण का संकेत व्यक्त करता है। इस वैभवशाली धरोहर पर भला किसको गर्व का अनुभव नहीं हो सकता है!

व्यक्तिगत अनुभव एवं उपसंहार

आदि शंकराचार्य की प्रसिद्ध पेंटिंग उनके चार मुख्य शिष्यों –पद्मपाद, हस्तामलक, तोटक और सुरेश्वर के साथ राजा रवि वर्मा द्वारा बनाई गई है, यह सब जानते हैं।

फ्रेम किया हुआ इस पेंटिंग का सुन्दर छाया–चित्र कश्मीर में हमारे घर के मुख्य कमरे की दीवार को सुशोभित करता था। मुझे स्मरण है कि जब मैं लगभग दस वर्ष की थी तो मेरे पिताजी ने आदि शंकराचार्य के इस छाया–चित्र की व्याख्या करते हुए आदि शंकराचार्य के चार शिष्यों की कहानी सुनाई थी कि किस तरह एक–एक करके वे उनके शिष्य बन गए थे। बड़ी होने पर एक बार मुझ से प्रसन्न होकर पिताजी ने मुझे वेदान्तसार पुस्तक भेंट की थी और अपने हाथ से लिखा एक सुन्दर सराहना–पत्र भी पुस्तक के साथ रख दिया था। आदि शंकराचार्य के स्तोत्रों को और उपनिषदों के मन्त्रों को मेरे पिताश्री कागज के पत्रों पर लिखकर उनकी कार्बन प्रतियां बनाकर रखते थे। फिर उन प्रतियों को बच्चों में तथा परिवार के सभी सदस्यों में बांटकर उनका पाठ कराते थे। हम सभी भाई–बहनों को आजतक वे उपनिषद् मन्त्र इत्यादि कण्ठस्थ हैं। अद्वैत वेदान्त और अद्वैत शैव दर्शन पिताजी के प्रिय विषय रहे हैं। दोनों दर्शनों की तुलनात्मक समीक्षा पर उन्होंने लेख लिखे हैं। वेदान्त में पिताजी के गुरु पण्डित नीलकण्ठ ज्योतिषी थे। बाद में वे सन्यास धारण करने पर स्वामी नीलकण्ठानन्द सरस्वती के नाम से शिवानन्द आश्रम, ऋषिकेश मेंवा रहते थे। इन्होंने ही पिताजी को कश्मीर के सुप्रसिद्ध शैवाचार्य स्वामी लक्ष्मण जू से मिलवाया था। शैव शास्त्रों का अध्ययन पिता जी ने स्वामी लक्ष्मण जू से ही किया। यहां विषय को ध्यान में रखते हुए वेदान्त से सम्बन्धित चर्चा ही अभीष्ट है। पिताजी वेदान्त का स्वाध्याय पण्डित सतराम जी के साथ बैठकर करते थे। इनका निवास–स्थान स्वामी लक्ष्मण जू के आश्रम के समीप ही था। वे भी पिताजी की तरह स्वामी लक्ष्मण जू के शिष्य थे। वेदान्त दर्शन के उत्तम ज्ञानी थे। पिताजी उपनिषदों का स्वाध्याय सदैव करते रहते थे। योगवासिष्ठ और अध्यात्म रामायण उनके प्रिय ग्रन्थों में से थे। उन्होंने 'वेदान्तडिण्डिम:' का अंग्रेजी में अनुवाद किया, इसका प्रकाशन 1975 में हुआ था। स्वामी रामतीर्थ से बहुत प्रभावित थे। रामकृष्ण मठ की कई पत्रिकाओं में पिताजी के लेख प्रकाशित हैं। पञ्चदशी में वेदान्त दर्शन की व्याख्या पर उनका व्याख्यान अक्तूबर 1997 में जम्मू में भगवान गोपीनाथ सहस्राब्दी समारोह के अन्तर्गत आयोजित कराया गया था। इस व्याख्यान के कुछ ही दिनों के पश्चात पिताजी अन्तर्ध्यान हो गये। पिताजी द्वारा किया गया मेरा नामकरण उनकी दार्शनिक प्रज्ञा को दर्शाता है।

इस पृष्ठभूमि में पलते मेरे अन्दर इसका थोड़ा–बहुत संस्कार अवश्य हुआ होगा, जिसके कारण मेरे अन्दर भारतीय दर्शन की ओर शुरू से ही अभिरुचि रही है। सौभाग्य से ही ऐसा व्यवसाय भी मिला जिससे मुझे भारतीय दर्शन की विभिन्न धाराओं का अध्ययन करने का अवसर प्राप्त होता रहा। परिणामस्वरूप भारतीय चिन्तन की परम्परा को एक प्रक्रिया के रूप में समझने की उपलब्धि हुई । इसमें साम्प्रदायिकता का कोई भी स्थान नहीं है। अपितु इस प्रक्रिया के अन्तर्गत ही भारतीय चिन्तन की विभिन्न विधाओं का विकास होता चला आया है। कश्मीर के अद्वैत शैव दर्शन का विकास आदि शंकराचार्य द्वारा प्रवर्तित अद्वैत वेदान्त की पृष्ठभूमि पर ही हुआ है, और जिस प्रकार आदि शंकराचार्य ने अद्वैत वेदान्त के दर्शन से सम्पूर्ण भारतवर्ष को एक सूत्र में बांधा, उसी प्रकार आचार्य अभिनवगुप्त ने भारत में विकसित विभिन्न शास्त्रों को एक दूसरे के साथ जोडकर भारतीय संस्कृति को एकरूपता प्रदान की है।

आदि शंकराचार्य के भारत भ्रमण कर उनके प्रभाव के संकेत अभी तक विद्यमान हैं। इससे जुड़े मेरे दो अनुभव हैं। पहला अनुभव उत्तराखण्ड में मेरी यात्रा का है। इस प्रदेश में हमने कई ऐसे मन्दिर देखे जिनमें नम्बूथिरी ब्राह्मण ही पूजा–अर्चना करते है। उनका कहना है कि उनके पूर्वजों को आदि शंकराचार्य यहां लाए थे। मेरा दूसरा अनुभव दक्षिण भारत में वारंगल स्थित भद्रकाली मन्दिर के मुख्य पुजारी के साथ हुए वार्तालाप का है। सरकारी दौरे पर वारंगल के भद्रकाली मन्दिर में वहां के मुख्य पुजारी से परिचय हो रहा था, मेरा परिचय देते हुए हमारे साथ उपस्थित एक विद्वान ने उन्हें बताया कि में कश्मीर से हूं। उन्होंने तुरन्त कहा कि मैं भी तो मूलरूप से कश्मीर का हूं, मेरे पूर्वजों को आदि शंकराचार्य कश्मीर से यहां लाए थे! (चित्र सं.10)

कश्मीर में आदि शंकराचार्य के अद्वैत वेदान्त का बहुत प्रभाव रहा है। यहां ऐसे अनेक विद्वान हुए हैं जिन्होंने वेदान्त के ग्रन्थ लिखे हैं, अनुवाद किए हैं और टीकाएं लिखी हैं। योगवासिष्ठ जिसका वास्तविक नाम मोक्षोपायनिर्णय है, अद्वैत वेदान्त की पृष्ठभूमि पर आधारित कश्मीर से उद्भुत दर्शन का यह ग्रन्थ बहुत प्रसिद्ध है। मोक्षोपाय पर कश्मीरी पण्डित भास्करकण्ठ की टीका बहुत ही महत्वपूर्ण है।

[7] 'कलअ' कश्मीरी में सिर को कहते हैं और 'पोश' अर्थात् ढकना।

साझा करना चाहती हूं कि इस लेख के लिखने के लिए सामग्री का अध्ययन करते हुए एक विशेष सूत्र मिला। आदि शंकराचार्य रचित 'शिवापराधक्षमापणस्तोत्र' के पन्द्रह श्लोक हैं। इसका ध्रुव पद है 'क्षन्तव्यो मे अपराधा शिव शिव शम्भू श्री महादेव शम्भू।' कश्मीरी पण्डित केवल इस एक पद का ही उपयोग करते हैं और यह उपयोग शव-कार्य-विधि के समय किया जाता है। सम्पूर्ण शव-कार्य-विधि के दौरान सभी उपस्थित इस ध्रुवपद का उच्चारण करते रहते हैं, ध्येय स्वत: स्पष्ट है।

अन्तत: निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि कश्मीर आकर आदि शंकराचार्य को भारतीय ज्ञान परम्परा की विभिन्न विधाओं के विद्वानों के सम्मुख होकर शास्त्रार्थ करके उन्हें सन्तुष्ट करने की बात की गई है न कि यहां के विद्वानों को परास्त करने की। जगद्गुरू की उपाधि आदि शंकराचार्य को कश्मीर में मिली – इससे यह स्पष्ट हो जाता है। ऐसी धारणा भी है कि कश्मीर में ही वाग्देवी का जिन्हें भारती नाम से अभिहित किया गया है, शारदा नामकरण आचार्य शंकर ने ही किया है। यहां ध्यातव्य है आचार्य शंकर का उभय भारती के साथ अन्तिम संवाद जिसमें आचार्य उन्हें वाग्देवी सरस्वती अभिहित करके यह कहकर प्रार्थना करते हैं, 'मैं श्रृङ्गेरी तथा अन्य स्थानों पर शारदा नाम से आपकी पूजा के लिए मन्दिरों का निर्माण करूंगा। हे देवी शारदे! मैं प्रार्थना करता हूं कि आप इन सब मन्दिरों में प्रकट होकर भक्तों की आराधना स्वीकार करके उन्हें वरदान दीजिए।' कहते हैं मण्डन मिश्र जो संन्यासी होकर सुरेश्वर नाम से आदि शंकराचार्य के शिष्य बने थे, उन्हे ही शारदाम्बा की काष्ठ प्रतिमा देकर कश्मीर से श्रृङ्गेरी मठ भेजा गया था वहां शारदा मन्दिर का निर्माण करके प्रतिमा को वहां स्थापित करने के लिए। श्रृङ्गेरी आदि शंकराचार्य की विद्या स्थली रही है। वहीं इन्होंने अपने गुरु गोविन्दपादाचार्य से विद्या ग्रहण की थी।

'कश्मीर वैभव' शीर्षक शारदा स्तुति भी आदि शंकराचार्य की ही रचना है, ऐसी भी धारणा है। इस स्तुति का पहला श्लोक अत्यन्त विख्यात शारदा स्तुति श्लोक है:

नमस्ते शारदा देवी काश्मीर पुरवासिनि।
त्वामहं प्रार्थये नित्या विद्यादानं च देहि में।।

कश्मीर में परम सत्ता की परा शक्ति/ परा वाक् के रूप में उपासना की सुदृढ़ परम्परा पहले से विद्यमान रही थी। आदि शंकराचार्य पर इसका गहरा प्रभाव पड़ा। उनका कश्मीर की महिलाओं के साथ हुई शास्त्र चर्चा की कई कथाएं प्रचलित होना इसकी ओर संकेत करता है। शारदाभुजङ्गप्रयाताष्टकम् का अन्तिम श्लोक इस सम्बन्ध में एक और महत्वपूर्ण जानकारी प्रस्तुत करता है:

भवाम्भोजनेत्राजसंपूज्यमानां
लसन्मन्दहासप्रभावक्त्रचिह्नाम्।
चलच्चञ्चलाचारुताटङ्ककर्णा
भजे शारदाम्बामजस्त्रं मदाम्बाम्।।

– शा. भु. 8

'मैं उस मां शारदा का भजन करता हूं, जो सदैव (अनवरत) मेरी मां हैं। जिनको ब्रह्मा, विष्णु और शिव पूजते हैं। जिनका मुख मण्डल मन्द मुस्कान से शोभायमान है, (और) दोनों कानों से लटकते हुए ताटङ्कों के झूलने से जिनका सौन्दर्य कई गुना बढ़ जाता है।'

कश्मीरी महिलाएं एक विशेष रूप का कर्णाभूषण धारण करती हैं। यह कर्णाभूषण वक्ष्यस्थल तक लम्बा होता है। (चित्र सं.9 में इसे देख सकते हैं)

तन्त्र सम्मत व्याख्या के अनुसार यह आभूषण शिव-शक्ति का द्योतक है। सम्भवत: आदि शंकराचार्य ने इस श्लोक में कश्मीरी महिलाओं के इसी विशेष कर्णाभूषण को उद्धृत किया है।

आदि शंकराचार्य का भी कश्मीर के लोगों पर बहुत गहरा प्रभाव रहा है, जो आजतक विभिन्न रूपों में परिलक्षित होता है। इस सम्बन्ध में ऊपर पहले ही चर्चा की गई है।

सब मिलाकर कश्मीर में शंकराचार्य के द्वारा स्थापित सनातन धर्म की एकसूत्रता विद्यमान रही और शक्ति की उपासना और अधिक गहरी होती गई। इस प्रकार चिन्तनशील परम्परा में पनपते हुए अद्वैत शैव परम्परा को आज पूरे विश्व में भारतीय ज्ञान परम्परा की पराकाष्ठा माना जाता है।

संदर्भ ग्रन्थ:

'गौरी स्तुति', कुन्दमाला एवं अन्य स्तोत्र-रत्न, सम्पादक एवं टीकाकार जानकीनाथ कौल 'कमल', श्री रामकृष्ण आश्रम (शिवालय), श्रीनगर-कश्मीर, 1994.

श्रीविद्यारण्यविरचित: श्रीमत्शंकरदिग्विजय:, मूलमात्रात्मक:, edited by NS Ananthakrishna Sastri, Sringeri Math, Sringeri, 1956.

श्रीशंकरग्रन्थावलि:- स्तोत्राणि, Volume I, Samata Books, Madras,v~}v(Revised Edition)

सौन्दर्यलहरी, हिन्दी अनुवाद और श्रीविद्यातत्त्व कुण्डलिनी रहस्य सहित, स्वामी विष्णुतीर्थ महाराज, 1949।

"Kashmiri Ladies Scarf", R Kuppuswami(Excerpted from Sri Sankara Bhagavatpadacharya, Bhavani Book Centre, Chennai, 1991 (published in the national daily - The Hindustan Times).

Naisada of Sri Harsa, edited by Pandit Sivadatta, 1894

Sankara-Dig-Vijaya, The Traditional Life of Sri Sankaracharya, Madhava Vidyaranya, translated by Swami Tapasyananda, Sri Ramakrishna Math, Madras, 1985.

The Age of Sankara, T S Narayana Sastry, edited by TN Kumaraswamy, BG Paul&Co, Madras, 1971 (Second Enlarged Edition).

■

आलेख

कला के अमृत घट और स्वतंत्रता का अमृत पर्व

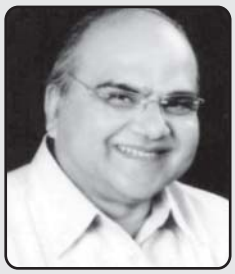

नर्मदा प्रसाद उपाध्याय

अमृत हमारी परंपरा में जीवन की समाप्ति पर विराम लगा देने के अर्थ में प्रयुक्त होता है और हम इसे केवल देह की अमरता से जोड़ लेते हैं जबकि यह अमृत केवल देह की अमरता तक सीमित नहीं है। वह मनुष्य के नहीं मनुष्यता के अमर होने पर केंद्रित है ,वह आत्मा की पवित्रता के अक्षुण्य बने रहने का शाश्वत विश्वास है ,वह प्रतीति है सदैव जाग्रत रहने की। अमृत जीवित बने रहने की आश्वस्ति नहीं जीवंत बने रहने का वरदान है। जीवित बने रहना तो सांसों के आरोह और अवरोह की निरंतरता भर है लेकिन जीवंत बने रहने का अर्थ उत्कट जीवन शक्ति है,जिजीविषा है।

इसलिए यदि आज़ादी का अमृत महोत्सव मनाया जा रहा है तो इसका अर्थ स्वतंत्रता प्राप्ति के 75 वर्ष पूर्ण होने भर से नहीं है इसका अर्थ है कि देश के जीवंत बने रहने के 75 वर्ष पूरे हुए। हमारे पुरखों ने अपने बलिदान और समर्पण से इस परतंत्र देश के जीवित होने को उसके जीवंत होने में आज से 75 बरस पहले पूर्ण स्वतंत्र कर बदल दिया और आज इस महान देश की अप्रतिम प्राण शक्ति का हम 75 वां महोत्सव मना रहे है। इस महादेश की प्राण शक्ति क्या है ? वह है इसकी विविधता में एकता, समन्वय ,और मिश्रण की तरह नहीं यौगिक की तरह मिल कर अभिन्न हो जाने का स्वभाव। ऐसा स्वभाव कि परस्पर मिलें तो अपनी पहचान खो दें,रहीम के शब्दों में,

रहिमन प्रीति सराहिए ,मिले होत रंग दून
ज्यों हरदी जरदी तजै, तजै सफेदी चून

चूने और हल्दी को मिलाओ तो चूना अपनी सफेदी और हल्दी अपनी जरदी,अपना पीलापन भुला दे। यही एकात्म होना इस देश की आत्मा है। रवींद्रनाथ टैगोर ने भी इस महान देश के इस स्वभाव को इन शब्दों में ढाल दिया ,

हेथाय आर्य, हेथा अनार्य, हेथाय द्राविड़ चीन
शक हूण दल , मोगल पठान एक देहे होलो लीन

यह संविलयन अदभुत है। जब से यह महादेश बना तभी से यह संविलयन आरंभ हुआ जो आज भी निरंतर है और इस संविलयन ने केवल हमारे आचरण को ही नहीं प्रभावित किया बल्कि हमारी संस्कृति और सभ्यता के अनुशासनों को भी रचा। इस रचाव की यात्रा में अनेक मोड़ आए।

यदि हम हमारे कला अनुशासनो की ओर देखें तो ज्ञात होगा कि ईसा की आरंभिक सदियों में गांधार प्रभाव यूनानियों के यहां प्रवेश करने पर पड़ा। मुद्राओं से लेकर विशेष रूप से शिल्प पर प्रभाव पड़ा। यह गांधार प्रभाव आज भी दिखाई देता है। यह भी उल्लेखनीय है कि हमारे यहां मंदिर की अवधारणा स्तूप के निर्माण से बनी और इस तरह मंदिर उस बौद्ध प्रभाव की देन हैं जिसकी दार्शनिक अवधारणा सनातन दार्शनिक अवधारणा से साम्य नहीं रखती।

इसी प्रकार शकों के आगमन का भी प्रभाव पड़ा जिसके उदाहरण दसवीं से पंद्रहवीं सदी के बीच बने अपभ्रंश कलम के इन चित्रों में देखा जा सकता है जिनसे कल्पसूत्र जैसे जैन ग्रंथ और बालगोपाल स्तुति जैसे सचित्र सनातन ग्रंथ निर्मित हुए।

फिर जब इस्लाम भारत में आया तो परिदृश्य बदला। भारतीयता का वह स्वरूप जो प्राय: ग्यारहवीं बारहवीं सदी तक स्थिर हो चुका था उसमें बड़ा परिवर्तन आया। भारत में इस्लाम का आगमन आक्रमण के द्वारा हुआ और मुस्लिमों के इस आक्रमण में चूंकि कट्टरता निहित थी और यह मान्यता थी कि चित्रांकन जैसे कार्य कुफ्र हैं और उनकी स्वीकार्यता इस्लाम में नहीं है इसलिए विध्वंस के दौर आरंभ हुए। भारत में उदारता की लहर अकबर के समय में उठी जब मुगल कलम फारसी और देशज कलम के विलय के फलस्वरूप जन्मी। लेकिन औरंगजेब के समय में फिर कट्टरता का दौर आरंभ हुआ और चितेरे पहाड़ों की तथा राजस्थान की रियासतों में चले गए जहां उन्होंने रूप की अद्भुत सृष्टि की और अनेक मनभावन राजस्थानी और पहाड़ी कलमों ने अपना जादू बिखेर कर भारतीय लघुचित्र परंपरा को विश्व के इतिहास में अमरता प्रदान की। यही स्थापत्य में भी हुआ।

लेकिन संक्षेप में यदि चित्रांकन की इस परंपरा को ही देखें तो लगेगा कि देशज कलम ने अंत में मुगल कलम को विस्थापित कर दिया। शनै: शनै: बाहरी तत्वों का प्रभाव क्षीण होता गया। अंकन का स्वरूप भी देशज हुआ और विषय भी भारतीय हुए।

यह नहीं कहा जा सकता कि मुसलमानों और मुगलों के कलात्मक अवदान का जो प्रभाव पड़ा वह समाप्त ही हो गया। निश्चय ही वह प्रभाव विद्यमान रहा किंतु उसका आधिपत्य नहीं रहा। देशज स्वरूप ने अपने कलात्मक उत्कर्ष को प्राप्त किया तथा इसकी निरंतरता तब तक रही जब तक कि अंग्रेज़ों ने पुन: इस देश पर आधिपत्य नहीं कर लिया और कंपनी शैली जैसी शैली नहीं जन्म गई।

यहां स्वतंत्रता को लेकर एक और महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि भारतीय कला दृष्टि और लोक दृष्टि दोनों में साम्य है क्योंकि दोनों में लोक प्रधान है और व्यक्ति गौण। हम अजंता, बाग,खजुराहो,कोणार्क और दक्षिण भारत के भव्य और विशाल मंदिर सरिणी के महान कलाकारों के नाम नहीं जानते। हमारे यहां कला भी किसी व्यक्ति के नाम पर नहीं है। हमारे कलाकारों ने लोक से प्रेरणा लेकर अपनी वैयक्तिकता को लोक पर न्योछावर कर दिया है। व्यक्ति ने लोक को प्रत्येक युग में स्वातंत्र्य के अमृत महोत्सव सौंपे हैं इसलिए इस अवसर पर इस लोक,उससे उपजी कला और इन कलाकारों की अस्मिता के संरक्षण की भी आवश्यकता है।

आज इस अवसर पर हमारे कला अनुशासनो की मौलिकता के स्वरूप के संरक्षण के बारे में भी यह संकल्प लेना होगा कि वे अक्षत रहें। उनमें समाया अमृत रीते नहीं। कला अनुशासनो में समाए अमृत घटों की रक्षा का दायित्व भी केवल कलाकारों पर नहीं है उन सब पर है जो इस देश के घटक हैं। इस घटक से आशय समाज से है। यदि समाज कलाकार को अकेला छोड़ देगा तो फिर इन अमृत घटों को रीतने में समय नहीं लगेगा।

हमारे पुरखों का समाज कलाकार का सम्मान करता था, उसे संरक्षण देता था,उसकी रक्षा करता था,उसकी कला को प्रतिष्ठा देता था। हमने किस्से सुने हैं कि जब तानसेन को रीवा से अकबर के दरबार में दिल्ली जाना पड़ा तो रीवा के महाराज ने कुछ दूरी तक उसकी पालकी ढोई थी।

समय आगे बढ़ा तो कला के मानदंड बदले लेकिन समाज की दृष्टि में भी परिवर्तन आया। आज समाज भी उतना संवदेनशील नहीं है और कला के भी बाज़ार सज गए हैं।

यह स्थिति निश्चय ही विचारणीय है। देश में केवल स्वतंत्रता के अमृत महोत्सव का औपचारिक अनुष्ठान न हो। वे कलाएं जिनके कारण इस महान देश की पहचान है उनके अमृत घट सुरक्षित रहें। उनके अमृत में वृद्धि हो।

इसलिए कि अमरता का आशय केवल जीवित रहना भर नहीं जीवंत बने रहना है और अमृत देह को नहीं उसमें समाई संवेदना को अमरत्व प्रदान करता है।

–लेखक प्रख्यात ललित निबंधकार तथा कलाविद् है।
85, इंदिरा गांधी नगर, पुराने आर.टी.ओ. के पास, केसरबाग रोड, इन्दौर (म.प्र.) 452009

'कला समय' पत्रिका के सदस्यता शुल्क की सूचना

प्रिय पाठकों,

सदस्यों से अनुरोध है कि अपना सदस्यता शुल्क निम्नानुसार भेजकर सहयोग करें। जिन आजीवन (15 वर्षीय) सदस्यों की सदस्यता अवधि के 15 वर्ष पूरे हो चुके हैं, उनसे अनुरोध है कि वे पुन: अपनी आजीवन सदस्यता का नवीनीकरण कराने हेतु 'कला समय' के पक्ष में आजीवन सदस्यता शुल्क भेज कर अनुगृहीत करें।

सदस्यता शुल्क

वार्षिक	:	300 (व्यक्तिगत)	350 (संस्थागत)
द्वैवार्षिक	:	600 (व्यक्तिगत)	700 (संस्थागत)
चार वर्ष	:	1000 (व्यक्तिगत)	1200 (संस्थागत)
आजीवन (15 वर्ष के लिए)	:	10,000 (व्यक्तिगत)	12,000 (संस्थागत)

(कृपया सदस्यता शुल्क- ऑनलाईन/ड्राफ्ट/मनीआर्डर द्वारा 'कला समय' के नाम पर उक्त पते पर भेजें)

विशेष : 'कला समय' की प्रतियाँ साधारण डाक/रजिस्टर्ड बुक-पोस्ट से भेजी जाती हैं यदि कोई महानुभाव रजिस्टर्ड पोस्ट से पत्रिका मंगवाना चाहते हैं तो कृपया वार्षिक डाक खर्च 120/- अतिरिक्त भेजने का कष्ट करें।

संस्मरण

भालू मोंढे लींक से हटकर एक कलाकार

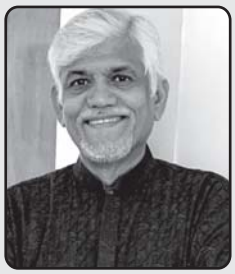

उमाकांत गुंदेचा
(पद्मश्री सम्मान से सम्मानित)

बात 09 फरवरी 1976 की है, उस दिन आगर में जो अब ज़िला है, मेरे बुआ के बेटे की शादी थी। हम उज्जैन से गए थे हमने देखा एक मस्त गबरू जवान कंधे तक बाल झूलते हुए जिंस में शर्ट खोंसे हुए बड़ी स्टाइल से यहाँ वहाँ फोटो खींच रहा है। मालूम करने पर पता चला ये भालू मोंढे है जो आगर के हमारे पड़ोसी दत्तु भैया के साले हैं, इंदौर में रहते हैं और अभी-अभी जर्मनी से आए है। जर्मनी और लंदन वो बहुत सालों तक रहे और वर्षों तक यू.के. पासपोर्ट धारी भी। खैर .....

शादी में उनका बड़ा जलवा रहा आखिर फोटोग्राफर जर्मनी से होकर आया है। लेकिन एक बात पर हमने उस समय ध्यान दिया कि सारी फोटोग्राफी व अकेले कर रहे थे, न कोई असिस्टेंट, न अतिरिक्त प्रकाश व्यवस्था सब कुछ प्राकृतिक लाइट में ही काम हो रहा था। उसी समय आगर के हमारे पड़ोसी दत्तु भैया ने हमारा परिचय भालू जी से करवाया।

यह परिचय समय के साथ-साथ प्रगाढ़ होता गया और भालू दादा और हमारे रिश्ते आज पारिवारिक रिश्तों में बदल गए। भालू दादा ने हमारे कई फोटो सेशन किये हैं। लेकिन सबसे पहला फोटो सेशन मांडव के ध्रुपद कथक उत्सव में किया, जहाँ हम लोग ध्रुपद गायन के लिए गए थे। पहले माण्डू उत्सव जब शुरू किया गया तो वह ध्रुपद एवं कत्थक पर ही केन्द्रित था परंतु बाद में इसका स्वरूप बदल दिया गया।

इस उत्सव में डागर ब्रदर्स तथा हमारे दोनों उस्ताद उस्ताद ज़िया मोहिउद्दीन डागर व उस्ताद ज़िया फरीदुद्दीन डागर ने भी शिरकत की थी। हमारे उज्जैन से भोपाल आने पर भालू भाई से मिलना अक्सर होने लगा क्योंकि वे भी किसी न किसी काम से इन्दौर से भोपाल आते रहते थे।

भालू के बड़े भाई नीनू मोंढे है, जो जर्मनी में रहते हैं वे कलरप्रिंट के उस्ताद हैं। उनकी बहुत बड़ी कलर लैब हम्बर्ग में थी अब उन्होने भी समय के साथ-साथ काम छोड़ दिया। एक बार हम जर्मनी में कार्यक्रम देने के लिए गए हुए थे पता चला भालू मोंढे भी अपने भाई के पास हम्बर्ग आए हुए हैं बस फिर क्या था, फोन पर बात हुई और हम पहुँच गए हम्बर्ग नीनू दादा के पास। वहाँ लगभग चार-पाँच दिन रहे और हम सब ने मिलकर बहुत मज़ा किया ।

भालू भाई की हमारे पिताजी से भी बहुत पटती थी। जब भी वे घर पर आते तो पिताजी और वे घंटों बैठकर चर्चा किया करते। बात का टॉपिक कुछ भी हो बस बात चली है तो समय की कोई सीमा नहीं। भालू भाई हमारे पूरे परिवार के स्नेह पात्र है।

भालू भाई ने वैसे तो हर प्रकार की फोटोग्राफी की है परन्तु आदिवासियों, वन्य जीवन व प्रवासी पक्षियों पर उनकी फोटोग्राफी अद्भुत है उन्होंने कई ख्यातनाम कलाकारों-आर्टिस्टों के फोटो सेशन किये हैं। भालू भाई पेंटिंग कोलॉज और इंस्टालेशन भी करते हैं जो उनकी कलात्मक सोच का एक दूसरा पहलू उजागर करते हैं। कुल मिलाकर भालू दादा पैदाइशी कलाकार है।

आज जब भालू दादा 80 वर्ष के हो रहे हैं तो हमारी ओर से बहुत-बहुत स्वस्ति कामनाएँ। वे स्वस्थ रहकर शतायु को प्राप्त हो ■

संस्मरण

भालू मोंढे ने अपना काम किया और अपने काम को प्रचार-प्रसार से दूर रखा

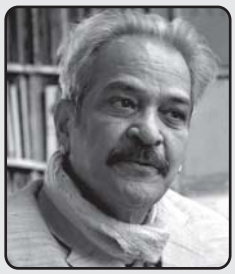

अखिलेश

भालू मोंढे से पहला परिचय हुआ जिन दिनों मैं कॉलेज के तृतीय वर्ष की पढ़ाई में अपना समय खर्च कर रहा था। एक शाम पिता ने कहा आज की दावत में भालू आने वाले हैं। हम सब के लिए यह सूचना से ज़्यादा विस्मय का विषय था। देर शाम जब भालू घर आए तब यह पता न चला कि यही भालू हैं। चौबीस इंच की ऊँची साइकल पर सफ़ेद बालों वाला एक व्यक्ति आए और आते ही खुले गले से पिता के साथ गपशप में मशगूल हुए। बाद में पता चला कि यही भालू हैं और अभी अभी विदेश से लौटे हैं। तेईस साल की उम्र में भालू लंदन चले गए और उन दिनों यदि कोई पाँच साल लंदन में रह जाता है तब उसे वहाँ के नागरिक हो सकने की पात्रता हासिल हो जाती थी। भालू वहाँ मूर्तिशिल्प की पढ़ाई के साथ जीवन यापन की मुश्किलों में मशगूल थे। उन्नीस सौ चौंसठ से उनहत्तर तक अपनी पढ़ाई पूरी कर भालू जर्मनी चले आए और वहाँ ड्यूसेफ डाल्फ़ में चित्रकला का कोर्स शुरू किया। साथ ही फ़ोटोग्राफ़ी का विशेष प्रशिक्षण लेना शुरू किया। इंडस्ट्रीयल फ़ोटोग्राफ़ी उन दिनों नयी नयी शुरू हुई थी और यह विशेष प्रशिक्षण की माँग करती थी। होर्डिंग की तरह बड़े बड़े विज्ञापन के लिए इसका इस्तेमाल किया जाता था। यह एक महँगा और तकनीकी कौशल वाला उध्यम था। भालू ने इसमें महारत हासिल की और अब तक उनका मन युरोप से उचट चुका था। उन्नीस सौ पचहत्तर में भालू वापस अपनी जन्मभूमि इंदौर लौटे और सुतार गली में अपना स्टूडियो डाला। इंदौर में यह सम्भवत: किसी भी चित्रकार का पहला व्यवसायिक स्टूडियो था जहाँ चित्रकला, मूर्तिकला और फ़ोटोग्राफ़ी के लिए डार्करूम भी था। उन दिनों भालू पर

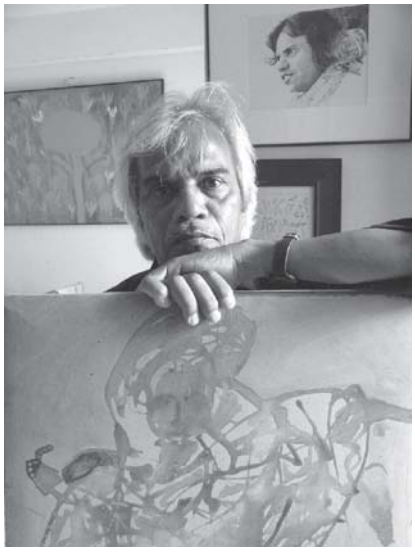

फ़ोटोग्राफ़ी का भूत सवार था और क्यों न हो इस तरह के विशेष कौशल का अख्तियार हो हासिल था। शायद ही उन दिनों किसी को इस तरह फ़ोटोग्राफ़ी का अन्दाज़ा भी न था। भालू ने अनेक काम किए और बहुत दिनों बाद पता चला कि भालू चित्र- मूर्ति भी बनाते हैं। उन दिनों भालू के कन्धे पर कैमरा होना आम बात थी। भालू को चित्र बनाते किसी ने देखा न था। अक्सर फ़ोटो क्लिक करते हुए अनेक प्रदर्शनियों में मिल ज़ाया करते और उनकी बातचीत के केन्द्र में भी फ़ोटोग्राफ़ी हुआ करती थी। भालू के पास पाँच एकड़ का फार्म हाउस हुआ करता था और नारायण श्रीधर बेंद्रे अक्सर वहाँ आकर कुछ समय बिताया करते थे। बेंद्रे से पहली मुलाक़ात भालू के इसी फार्म हाउस की सुबह के नाश्ते पर हुई थी। यह भी कि बेंद्रे के दो खूबसूरत चित्र भालू के घर की दीवार पर टँगे होते थे। एक चित्र में ट्रेन के डिब्बे की लाल रंग की परत पर बनी खिड़की में बैठी लाल रंग की साड़ी पहने मासूम चेहरा लिए आदिवासी लड़की अपनी बड़ी सी आँखों में कौतुक लिए आपको देख रही होती थी। अब वो चित्र नए घर में नहीं दिखायी देता।

भालू दिलफ़रेब ढंग से अपनी बातों में उलझा सकते हैं। अनुभव का ख़ासतौर पर

व्यवहारिक अनुभव में ढली-बसी बात श्रोता को हिलने नहीं देगी। भालू की रुचि सिर्फ़ कलाओं में है ऐसा भी नहीं है। चिड़ियाओं का विशेष अध्ययन और उस पर उनकी पुस्तक किसी का भी मन मोह लेगी। पर्यावरण सम्बन्धी जागरूकता जगानी हो या तालाब की जलकुम्भी की सफ़ाई, इन सभी सार्वजनिक हित के कामों का बीड़ा उठाना और उसे अंजाम देना यह भी भालू का शग़ल है। शहर में कला दीर्घा बने या संगीत के कार्यक्रम का आयोजन किया जाना हो भालू अपनी विशेषज्ञता के साथ भाग लेते हैं। एक लम्बे अन्तराल के बाद भालू चित्रकला की तरफ़ लौटे और अपनी मन-मर्ज़ी के चित्र बनाए। अपनी मन-मर्ज़ी के चित्र सभी चित्रकार बनाते हैं किन्तु भालू ने कभी उसके प्रदर्शन, विक्रय, पुरस्कार या उससे यश हासिल करने की चेष्टा नहीं की। अपना काम किया और अपने काम को प्रचार-प्रसार से दूर रखा।

यह विलक्षण गुण कम ही कलाकारों में पाया जाता है। मैं अनेक कलाकारों को जानता हूँ जिन्होंने शायद साल में या दस साल में एक चित्र बनाया और ज़ाहिर ऐसा किया कि वे न सिर्फ़ चित्रकार हैं बल्कि हुसेन के बाद वही हिंदुस्तान में पैदा हुए हैं। भालू इन प्रचार लालसा से मुक्त अपनी बहुमुखी प्रतिभा से यदा-कदा सभी को चकित करते रहे हैं।

भालू में एक और गुण है जो उन्हें दूसरे कलाकारों से अलग करता है वह उनका पुरातत्व के प्रति गहरा लगाव। अनेक पुरानी ऐतिहासिक महत्व की इमारतों, महल, कोठियों के रख-रखाव, संरक्षण और उनको बचाने के लिए सहमति का आग्रह करना और आखिरी दम तक उसके लिए लड़ना, लड़ना याने किसी तरह की हिंसा का हस्तक्षेप नहीं बल्कि सत्याग्रह से जागरूकता फैलाना और अन्ततः उसमें सफल होने का माद्दा रखना भी है। वे अपनी असफलताओं से हताश नहीं होते बल्कि दुगने जोश से अभियान में लग जाते। उनके इन साहसिक अभियानों के चलते अनेक ऐतिहासिक महत्व की इमारतें, छतरियाँ इंदौर में स्वस्थ्य और सुरक्षित दिख रही हैं। भालू के अस्सी साल पूरे हो जाने के बाद भी उनका जोश, सरोकार अनुकरणीय है। मृदु भाषी भालू अपनी विनम्र उपस्थिति से भले ही शुरू में आकर्षित न करें किन्तु एक बार मिल लेने के बाद भालू मन से उतरता नहीं इसका अहसास मिलने वाले को हो जाता है।

जब हम अच्छा खाने, अच्छा पहनने और अच्छा दिखने में खर्च करते हैं
तो अच्छा पढ़ने-लिखने और सोचने-समझने की खुराक में खर्च क्यों न करें !

कलासमय

प्रबंध संपादक

सम्पर्क- जे-191, मंगल भवन, महावीर नगर, ई-6, अरेरा कॉलोनी, भोपाल- 462016 फोन : 0755-2562294, मो.-94256 78058
ई-मेल : kalasamaymagazine@gmail.com / bhanwarlalshrivas@gmail.com

आलेख

लोक कलाओं का शिखर - स्पर्श

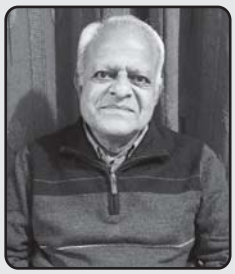

श्रीकान्त साकल्ले

'कल' धातु से उत्पन्न कला शब्द का अर्थ है - 'सुंदरता को प्राप्त करना।' गुरुदेव रवींद्रनाथ टैगोर के अनुसार - जो सत्य है, 'जो सुंदर है, वही कला है।' शिक्षाशास्त्री अरस्तु के अनुसार - 'कला प्रकृति के सौंदर्यमय अनुभवों का अनुकरण है।'

इन्हीं कलात्मक मान्यताओं पर संवरती-निखरती, निमाड़ उपत्यका से संस्कारित होकर भोपाल में रहते, अनेक राज्यों तक अपनी स्थापित पहचान लिए, लोक कला की लब्ध प्रतिष्ठित साधिका; स्नेहिल बिटिया तथा बहू है - श्रीमती पूर्णिमा उपाध्याय चतुर्वेदी ! पूर्णत: पूर्णि:,पूर्णि मिमीते के सूक्त वाक्य की अनुकृति पूर्णिमा ! मानों, मन और मस्तिष्क से अलग लोक कला की आराध्या का समर्पण - चन्द्रमा की सोलह कलाओं को - यथा - अमृत, मनदा, पुष्प, पुष्टि, तुष्टि, ध्रुति, शाशनी, चंद्रिका, कांति, ज्योत्स्ना, श्री, प्रीति, अंगदा, पूर्ण और पूर्णामृत - को संजोए स्वनामधन्य हुआ है।

कला एक विशेष प्रकार का गुण मानी जाती है। यानि सामान्य से हटकर सोचना, समझना या काम करना। मनुष्य के मन में भी एक प्रकाश है। मन को चंद्रमा के समान ही माना गया है। कला वह मान्य आकृति है, जो मानवीय भाव-सौंदर्य और आनंद की अनुभूति को जागृत अभिव्यक्ति देती है। *चित्रकला* एक श्रेष्ठ ललित कला है। अन्य ललित कलाओं की भांति इस कला की आधारशिला में भी संतुलन एवं सामंजस्य हैं। यह कलाकार को, सहृदय तक पहुंचने में आनंद एवं संतुष्टि प्रदान करता है।

विभिन्न संस्कृतियों की अकूत संपदा का स्वामी हमारा भारत, दुनिया भर में अग्रणी है। यहाँ के विभिन्न अंचलों की सांस्कृतिक विरासत और मीठी बोलियाँ इस संपन्नता का बखान करती हैं। ऐसा ही एक अंचल है - 'निमाड़।' जो कपास, सोयाबीन, गेहूं, गन्नों और केले के साथ ही प्याज, मिर्ची जैसी फसलों के लिए भी प्रसिद्ध है; इसका यहीं तीखा-मीठा-कसैला स्वाद, इसके साहित्य में भी झलकता है। लोक-कलाएं दुनिया की पारंपरिक संस्कृतियों का वह संप्रेषण है, जो समुदाय और संस्कृति से आता हैं तथा साझा सामुदायिक मूल्यों और सौंदर्यशास्त्र को सांस्कृतिक पहचान देता है।

पूर्णिमा चतुर्वेदी का 'लोक कलार्पण' - निमाड़ी लोक चित्र सृजन, निमाड़ी लोक चित्र प्रशिक्षण एवं निमाड़ी लोक गीत गायन की तीन विधाओं से आवेष्ठित है। बिना सीखे जन-साधारण जिस चित्र-कला को सीख कर, अपनी उद्भावना से बनाते हैं; वह लोक चित्रकला है। आपने निमाड़ अंचल के पैतृक ग्राम कालमुखी तथा निमाड़ी लोक साहित्य के पुरोधा पद्मश्री दादा रामनारायण जी उपाध्याय के खंडवा स्थित साहित्य कुटीर के घर-आंगनों की गोबर से लिपी-पुती भूमि और भित्ति के कैनवास पर पिसे कोयले, सफेद-लाल खड़िया चाक मिट्टी एवं अन्य रंगों सहित फूल पाँखुरियों से लोक चित्रों को सज्जित करना सीखा। उपाध्याय कुल की सबसे छोटी 'मुंहबोली पुन्टु' की नन्हीं-किशोर उंगलियों ने, निमाड़ी लोक चित्रकला के कौशल में, गहन अभिरूचि लेकर लगभग 5000 वर्षों पूर्व की मान्य लोक कल्पनाओं को; अल्पनाओं-सी आकृति देना सीख लिया। यही नहीं उन लोकचित्रों से जुड़ी भावात्मक अभिव्यक्तियों और संदेशों को भी, जिज्ञासु शिष्या की तरह दीक्षित होकर आत्मसात किया। पेड़-पौधे, नदी-निर्झर, पशु-पक्षी, कुंवा-बावड़ी-पनघट, फूल-लताएं, आदि लोकचित्रों में प्रकृति तथा पर्यावरण संरक्षण के समसामयिक प्रेरक संदेश को समझा। तीज-त्योहार-मंगल उत्सवों पर निमाड़ के दीवारों, आंगनों, देहरी चौखटों तक पर लोक चित्रकला के मनोरम आकर्षण भी, हमारी कलाधर्मी पूर्णिमा के सौन्दर्य बोध से अछूते नहीं है। आपकी लोक चित्रकला नाग, जिरोती, राखी, हरतालिका तीज, ऋषि पंचमी, हलछठ, सेली

सप्तमी, संजा-फूली, नरवत, दशहरा, दीवाली का रथचौक, गोरधन, भाईदूज, खोपड़ी ग्यारस, शिशु जन्म, पगल्या, डेढर माता, विवाह, आदि की सार्थक रेखाकृतियां, मांडना वैविध्य तथा गोबर से निर्मित प्रतिमूर्ति स्वरूप आकृतियां; आस्थावान लोक संस्कृति के अर्चन-आराधन की संवाहक हैं। पौराणिक मान्यता है कि, कन्या-जन्म दो परिवारों को गौरवान्वित करता है। यह मान्यता 20 जुलाई 1967 को जन्मीं साहित्य कुटीर की सोन चिरैया पूर्णिमा पर शत-प्रतिशत व्यवहृत है। स्व. शंकरलाल जी चतुर्वेदी के पुत्र श्री आनंद चतुर्वेदी के साथ, परिणित जीवन में संयुक्त परिवार की घर-गृहस्थी में सेवाभावी रहते हुए, आपने संस्कारों में रची-बसी निमाड़ी लोक संस्कृति एवं कलाप्रियता से लगाव अविरत रखा। उल्लेखनीय है कि, चतुर्वेदी परिवार का यथेष्ट उत्साहवर्धन आपके मनोबल वृद्धि का यशस्वी कारक रहा है। निमाड़ी लोक चित्रों की सृजन यात्रा में, सफल सिद्ध प्रशिक्षक की गरिमामय पहचान की सौगात पाने में, एक सफल गृहिणी के लिए ससुराल पक्ष की ऐसी सहभागिता; साधुवाद की पात्र कही जायेगी।

इस जहाने-ग़ैर में, आराम क्या, राहत कहाँ ?
लुत्फ़ जब है अपनी दुनिया, आप पैदा कीजिए !

आदिवासी लोक कला परिषद सन् 2005 से आपकी निमाड़ी लोक चित्रों का सृजन एवं प्रशिक्षण पथ की यह साधना, देश के अनेक राज्यों में निमाड़ का परचम लहराती रही। मध्यप्रदेश तथा भारत सरकार द्वारा प्रायोजित अनेक सेमिनार्स, कार्यशालाओं एवं प्रशिक्षणों में आपकी अतिथि स्वरूप प्रतिभागिता पुरस्कृत एवं सम्मानित रही है। जैसे - राजकीय संग्रहालय झाँसी में प्रतिभागिता (2007) एवं 30 निमाड़ी लोक चित्रों का चित्रण (2011), दक्षिण-मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र नागपुर में गुरु -शिष्य परंपरा केन्द्रित 6 माह का लोक चित्र प्रशिक्षण तथा गुरु की उपाधि से सम्मानित, खजुराहो शिविर एवं शिल्पग्राम में लोक चित्र सृजन एवं चित्रण, उत्तर-मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र इलाहाबाद के पारंपरिक

चित्रकार शिविर इन्द्रधनुष-2008 में लोक चित्रों का सृजन, कलाग्राम चंडीगढ़ शिविर (2009) में लोकचित्रों का सृजन, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय भोपाल में 4 दिवसीय साँझा पर्व में साँझा-फूली चित्रों का चित्रण, सागर इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी भोपाल में निमाड़ी पेंटिंग से मंच सज्जा, केरल ललित कला अकादमी में ट्रायबल एवं फोक आर्टिस्ट वर्कशॉप में सृजन कार्य, लोक रंग उत्सव रवीन्द्र भवन भोपाल में बेटियों पर केंद्रित सृष्टि कार्यक्रम सहित मैसूर व कलकत्ता सदृश संस्थानों में लोकगीतों पर आधारित लोक चित्रों की प्रदर्शनी आदि प्रमुख उपलब्धियां रही है। आपके लोक चित्र सृजन एवं चित्रण पर, दो महाविद्यालयीन छात्राओं कु. प्रियंका द्विवेदी (भोपाल) एवं कु. रश्मि सिंह (मंदसौर) ने परियोजना कार्य में शोध पत्र भी प्रस्तुत किए हैं।

पूर्णिमा चतुर्वेदी की उपलब्धियों का यह कोष लोकचित्र सृजन, चित्रण, प्रशिक्षण, पाठ्य पुस्तकों के पाठ्यक्रम-निर्माण तक ही सीमित नहीं है। निमाड़ी लोकगीतों के गायन में सिद्ध आपकी ख्याति-पताका, राजधानी भोपाल सहित आकाशवाणी, दूरदर्शन, राज्य शासन व अनेक शीर्ष सांस्कृतिक संस्थाओं के प्रायोजित लोक संगीत समारोहों में फहरा रही है।

आखिर लोकगीतों का विपुल- वाचिक-वैभव ही ऐसा है। वैदिक ऋचाओं की तरह लोक द्वारा सृजित, लोक द्वारा रक्षित, लोकरंजन के लिए, लोक जिव्हाओं द्वारा गाया जाने वाला संगीत ही लोक संगीत होता है। विश्ववंद्य राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने कहा था कि - लोकगीतों में धरती गाती है, पर्वत गाते हैं, नदियां गाती हैं, फसलें गाती हैं। उत्सव, मेले और अन्य अवसरों पर मधुर कंठों में लोक समूह लोकगीत गाते हैं। लोक संगीत या लोकगीत अत्यंत प्राचीन, प्रकृति-प्रेरित एवं मानवीय संवेदनाओं के सहजतम उद्गार हैं, जो जन-मानस के नवरसों से नि:सृत होकर; आज तक जीवन्त हैं। साहित्य की छंदोंबद्धता एवं अलंकारों से मुक्त रहकर, ये हमें तन्मयता के लोक में पहुंचा देते हैं। अत्यधिक सरल, स्वाभाविक और अनुभूतिमय इन लोक गीतों में - प्रेम, ईर्ष्या, खुशी, उल्लास, तड़पन, सिहरन आदि - सभी भावनाएं झलकती हैं। यही नहीं प्राकृतिक सौंदर्य, ऋतु दर्शन, विभिन्न संस्कारों, सुख-दु:ख और जन्म-मृत्यु को; बड़े ही मर्मस्पर्शी ढंग से प्रस्तुत किया गया है।

लोक मानस की अनुभूतियों का प्रस्फुटन, स्वर, ताल, नृत्य के आश्रय से ही लोक संगीत की चौपाल की रौनक है। एक ओर हारमोनियम, तबले व ढोलक की थापों, बांसुरी, खंजरी, मंजरी और ताली की सांगीतिक संगत है, तो दूसरी ओर सिर ढँकी सीधे पल्लू की

साड़ी, मांग भर सिंदूर, भाल पर दमकती बड़ी गोल कुंकुम टिकिया, कलाई भर चूड़ियों की सजधज लिए मर्यादित निमाड़ी रमणियों की फबन। मंचासीन पूर्णिमा चतुर्वेदी के प्रमुख स्वरों के साथ, मनोहारी लोकगीतों की प्रस्तुतियों में उनके दल में प्राय: श्रीमती मीनाक्षी पगारे. श्रीमती आराधना पाराशर तथा श्रीमती मीनाक्षी ताले के कोरस स्वरों का संतुलित सहभागी गायन, निमाड़ी लोकगीत को लोकसंगीत की सार्थकता तक पहुंचाता है।

पारिवारिक विवाहों तथा शुभ- प्रसंगों के निमाड़ी लोक गीतों में - पयला मनाऊं म्हारा गणपति देवा, गौरी का पुत्र गजानन छे जी, आज म्हारा आंगणा मऽगणपति आया, आज म्हारा आया गजानन पावऽणा, पावऽणा लागऽ सुहावणा, देवी महिमा एवं भक्ति गीतों में - नवदुर्गा की रात, माता पानड़ पानड़, पावा जो गढ़ सी, शरद पूनम का रास, राग-रंग, और ठिठोली-विनोद के गीतों में - ए जी म्हारो लहरिया रंग रंगीलो, मिट्ठो लाग्यो नहेर को पाणी, आमंत्रण गीतों में ननद-भाभी पर व्यंग्य, शादियों के बन्ना-बन्नी, मामेरा गीत, नऽणंद खऽ लेणऽ आया पिपल्या सी, बैलगाड़ी गीत में पति-पत्नी की मीठी नोंक- झोंक, साँझा-फूली, ऋतु गीत चौमासा, होली-फाग जैसे लोकप्रिय निमाड़ी लोकगीतों की स्वरलहरियों के बीच, निमाड़ी सौंधेपन का एहसास कराती, पूर्णिमा जी की भाव-भंगिमा तथा संदर्भित गीतों की व्याख्याएं, मंत्रमुग्ध सुधी श्रोताओं को तालियों का स्नेह निछावर करते; भावविभोर कर देती हैं।

निमाड़ी लोक संस्कृति के साध्य को साधती, तपोनिष्ठ सफल समाराधिका पूर्णिमा चतुर्वेदी, पुरस्कारों की अदाता नहीं रही; अपितु सम्मान एवं पुरस्कार उनके हाथों पहुंच कर स्वमेव धन्य हुए हैं। अ.भा. नार्मदीय ब्राह्मण समाज का नार्मदीय गौरव सम्मान, म.प्र. राष्ट्रभाषा प्रचार समिति के सौजन्य से, महामहिम राज्यपाल के हाथों मिला श्रीमती बालकृष्ण ओबेराय विशिष्ट महिला पुरस्कार, नर्मदा भवन ट्रस्ट द्वारा संस्कृति विद् सम्मान, पब्लिक रिलेशन काउन्सिल ऑफ इंडिया का इमेज अवार्ड, आई.ए.एस. ऑफिसर्स वाइव्स एसोसिएशन फोक सिंगर सम्मान, मालव लोक कला एवं संस्कृति संस्थान उज्जैन से 32 वां भेरा जी सम्मान, कला मंदिर भोपाल से लोक कला संगीत रत्न सम्मान, कादम्बिनी शिक्षा एवं समाज सेवा समिति का कादम्बिनी अलंकरण, बुंदेलखंड समाज विज्ञान शोध संस्थान व पंचायत विकास परिषद के कलाकुंभ कार्यक्रम में सम्मानित, राज्य शिक्षा मंडल में माध्यमिक कक्षाओं में लोक कला विषयक पाठ्यक्रम लेखन, तथा मध्यप्रदेश शासन का एक लाख रुपए की सम्मान राशि तथा सम्मान पट्टिका सहित शिखर सम्मान की गरिमामय उपलब्धियों से गौरव मंडित आपका यश पथ, समूचे निमाड़ अंचल तथा कलाप्रेमियों को गौरव-गर्वित करता है।

जनजातीय एवं लोक कला के क्षेत्रों में आपकी वरेण्य सेवाओं की उल्लेखनीय उपलब्धियों के निमित्त, भारत भवन भोपाल के विशेष समारोह में म.प्र. शासन की कला पारखी एवं विदुषी संस्कृति मंत्री माननीया उषा ठाकुर के कर कमलों से तथा संस्कृति सचिव श्री शिवशेखर शुक्ला [आई.ए.एस.] के वरद् सान्निध्य में सन् 2020 के गरिमामय शिखर सम्मान की सूचना पर, शुभचिंतकों तथा कला मर्मज्ञों के बधाई संदेशों में से, पं. वीरेन्द्र कुमार तिवारी की शुभाशंषा मन को भा गई कि - पूर्णिमा की विभावरी का चंद्र शिखरस्थ ही होता है, कोई आश्चर्य नहीं कला का शिखर सम्मान आपको मिला। समय के आकाश को वर्षा के काले मेघों ने जैसे ही मुक्त किया, पूर्णिमा की आभा से कला आलोकित हो उठी। लोक कला साधिका पूर्णिमा जी की कलात्मक रंग तूलिका से अनथक लोक चित्रों का सृजन, एक वृहद् संग्रहालय का आकार ले! आपकी लोक कलाओं तथा गायन की गूंज-अनुगूंजों को नव क्षितिजों का स्पर्श मिले! सादर आत्मीय बधाई ! मंगलकामनाएं है कि-

ऊँचा चढ़ा है चंद्रमा, चांदनी बिछाने को !
ऊँचा चढ़ा है श्रृंग, नीचे नदियां बहाने को !!
ऊँचे उठो तो ऐसे, कि जैसे बादल उठते हैं -
रस बरसाने को, धरा पर स्वर्ग लाने को !!

॥ इति शुभम् ॥

लेखक : राष्ट्रपति पुरस्कार प्राप्त पूर्व प्राचार्य वरिष्ठ साहित्यकार तथा कुशलवक्ता हैं।

■

आलेख

स्वतंत्रता संग्राम और कलाकार

प्रीति निगोसकर

अमृत महोत्सव के पावन पर्व में देश को स्वतंत्र करने सक्रीय ,अनजाने हजारो-हजारो देशभक्तों को सश्रद्धा नमन। उस आन्दोलन में कई कलाकार भी सक्रीय थे। में अभी यहाँ दो चित्रकार-कलाकारों के कुछ अनुभव सुनाती हूँ। जन गन मन जैसा देश को राष्ट्रगान देने वाले भी आधुनिक चित्रकला के अग्रदूत रहे रविंद्र नाथ टैगोर को कौन नहीं जानता है। मेरे पहले कलाकार है कलागुरु स्व.मुकुंद सखाराम भांड। अपने बचपन में ये नीमच में थे। बहुत छोटी उम्र से ही ये आंदोलन का हिस्सा बने। ये देशप्रेम और सामाजिक कुरीतियों पर चित्र बनाते थे।

राष्ट्रयज्ञ नाम से बना उनका चित्र देश भर में उस समय बहुत चर्चित रहा। इसमे चित्रकार भगत सिंग, राजगुरु और सुखदेव का चित्र बनाया था। पीछे भारत माता की तस्वीर थी और नीचे यज्ञ की अग्नि प्रज्वलित होते हुए दिखाई थी, अर्थात भारत माता के लिए अपनी आहुति दे रहे ये नोजवान। इसी चित्र को कलाकार ने रंगोली माध्य्म में भी अमरावती प्रदर्शनी में बनाया था। इसी चित्र की दस हजार कॉपियां केलेंडर रूप में लाहोर अधिवेशन में भी वितरित की गई थी।

1930 में इसी चित्र को इलाहाबाद की चाँद पत्रिका ने अपने फाँसी अंक में छापा था। इस तरह ये चित्र भारत भर में प्रसिद्ध हो गया। तब ब्रिटिश सरकार ने इस किताब को जप्त कर लिया। आप स्त्री शिक्षा की गतिविधियों में भी सक्रीय रहे। उसी समय कुम्भ मेले में पहली बार स्वदेशी वस्तुओं की दुकान लगाई गए उसका मुख्य उद्देश्य था, आम जनता में देशप्रेम की भावना का प्रचार करना। इस गतिविधि में भी कलाकार ने बढ़चढ़ कर हिस्सा लिया।

आगे ये कलाकार ग्वालियर जा बसें, उनके सुपुत्र बताते थे कि इनके इस देशप्रेम के कारण एक बार घर में छापा पड़ा। घर की परिस्थिति बहुत ख़राब थी। एक चुल्हे पर पानी उबल रहा था। भांड जी ने आऐ हुए लोगों से कहा पहले चाय पी लीजिए, फ़िर अपनी कार्यवाही कीजिये। उन्होंने उबलते पानी में चायपत्ती और शकर डालकर उसमें धीरे से अपनी पिस्टल डाल के ढक्कन बन्द कर दिया। इस तरह उन्होनें खुद को बचा लिया।

दूसरे कलाकार है मेरे कलागुरु प्रसिद्ध पुराविद पद्मश्री डॉ. विष्णु श्रीधर वाकणकर। वे अपने बचपन के किस्से यूँ सुनते थे। उनकी माताज़ी उन्हें बचपन में शिवाजी और क्रान्तिकारियों की कहानियां सुनाती थी। ऐसे उनमें देशभक्ति की भावना जागृत हुई। 1927/28 में महात्मा गांधी के प्रथम सत्याग्रह आंदोलन में प्रभात फेरी निकालने का ऐलान किया। सर बहुत छोटे होने से उन्हें स्टूल पर खड़ा किया गया,वह इन्होंने वन्देमातरम गाया। तब एक मुसलमान इंस्पेक्टर छड़ी से मारने आए तो ये सब वन्देमातरम चिल्लाते हुए भागे। तिरंगा लेकर जुलुस निकालने पर पाबन्दी थी, उस समय इन्होंने घर की महिलाओं के चोली से सफ़ेद, लाल और हरे रंग की चिन्धिया फाड़ कर बांस की खिपची में फसा के वन्देमातरम भारत माता की जय कहते हुए घूमते रहे। तब हमें थाने बुलाकर डांटा गया और जैसे ही वे मारने दौड़े हम उनकी आँखों में धूल डालके भाग निकले।

आगे चलकर उनको अपने एक साथी के साथ पुल के नीचे बम लगाने की जिम्मेदारी दी गयी। ये लोग पुल पर पहुंचे ही थे, कि गश्त लगाते पुलिस वहां पहुंच गयी। तब ये दोनों बहादुर नीचे नदी में कूद गए इस तरह अपनी जान बचाई। उसी दौरान इन्होंने एक नाटक लिखा मृत्यु का आलिंगन। ऐतिहासिक पृष्टभूमि से देशप्रेम और देश के लिए जरुरत में जान देना ही कैसे श्रेष्ट है ,बताया है।

इस तरह अज्ञात रूप में ना जाने कितने ही विविध क्षेत्र के कलाकारों ने अपनी विधाओं के माध्यम से अपना सक्रीय योगदान दिया होगा। उन हजारों अनजान कलाकारों का स्मरण करना आज आवश्यक है,साथ ही उन पर भी शोध कार्य करने की जरूरत है। सुभद्रा कुमारी चौहान की पंक्तियों से लेख का अंत करती हूँ...

चमक उठी सन् सत्तावन में, वह तलवार पुरानी थी ।
बुंदेले हरबोलों के मुख, हमने सुनी कहानी थी।।

■

पुस्तक : महाभारत रिसता है

– निर्मला भुराड़िया

पुस्तक विवरण–

पुस्तक का नाम	:	महाभारत रिसता है
लेखिका	:	डॉ. सत्यभामा
प्रकाशक	:	प्रभात प्रकाशन
मूल्य	:	₹300

हमारा पौराणिक ग्रंथ महाभारत सचमुच महान है। एक ही ग्रंथ में कितने ही किरदार, कितनी ही कहानियां छुपी गुंथी हैं। इस ग्रंथ में जीवन दर्शन और मनुष्य के मनोविज्ञान की पकड़ ऐसी है कि हम महाभारत के आकलन में आज के मनुष्य को भी देख सकते हैं, मगर ऐसा करने के लिए चाहिए सूक्ष्म दृष्टि और वही अनुपम दृष्टि डॉ. सत्यभामा जी में है। इसीलिए उन्होंने महाभारत रिसता है नामक इस पुस्तक की रचना की है। उन्होंने हमारे अभी के समय के जीवन चरित्र रश्मि, परसू, भीता, मोहन आदि में कुंती, अंबा, परीक्षित, कर्ण, भीष्म, हिडिंबा, घटोत्कच आदि को ढूंढ लिया है। स्थापित करने में सफल रही कि समय बदलता है मनुष्य की स्थितियां नहीं। मनुष्य का जीवन जटिल है क्योंकि उसका मनोविज्ञान ही जटिल है। मनुष्य एक कुंडलित प्राणी है और महर्षि वेदव्यास ने इस कुंडली के, कभी न खत्म होने वाले घुमावदार चक्र के मध्य बिंदु पर हजारों साल पहले ही अपनी तर्जनी रख दी थी। इस संकेत को डॉ. सत्यभामा जी जैसे सुधिजन ही भली–भांति पकड़ पाते हैं। यहीं उन्होंने इस कहानी संग्रह में किया है। उनके पात्र आज के कुरुक्षेत्र वह हस्तिनापुर के हैं।

कहानियों को प्रस्तुत करने की शैली इस पुस्तक को और भी विशिष्ट बनाती है। हर कहानी के प्रारंभ में महाभारत के किस पर्व में ऐसा ही आख्यान है, प्रस्तुत कहानी में संदर्भित पात्र हैं वह सश्लोक दर्शाया गया है। साथ ही श्लोक का हिंदी अर्थ और लेखिका के पुत्र श्री तुषार द्वारा बनाए गए इसके भी हैं। इस तरह आप महाभारत के उद्योग पर्व, सभा पर्व, द्रोण पर्व, आदि पर्व, स्त्री पर्व वगैरह के संदर्भ यहां देख सकते हैं जिन के बरक्स आज के समय की कहानियां प्रस्तुत की गई हैं। यहां एक और प्रयोग है। कहानी की शुरुआत में श्लोक और कहानी के अंत में निष्कर्ष हैं जो कि महाभारत के संदर्भ में है। मुझे यह शैली अनूठी लगी।

समीक्षक : वेब दुनिया की सलाहकार प्रख्यात कहानीकार तथा उपन्यासकार हैं।

कला समय का बैंक खाता विवरण

1.	**खाता का नाम**	:	कला समय
2.	**खाता संख्या**	:	09321011000775 (चालू खाता)
3.	**बैंक शाखा**	:	पंजाब नैशनल बैंक की शाखा अरेरा कॉलोनी, भोपाल (म.प्र.)
4.	**आईएफएस कोड**	:	PUNB0093210

प्रबंध संपादक

संतूर के सरताज पंडित शिवकुमार शर्मा

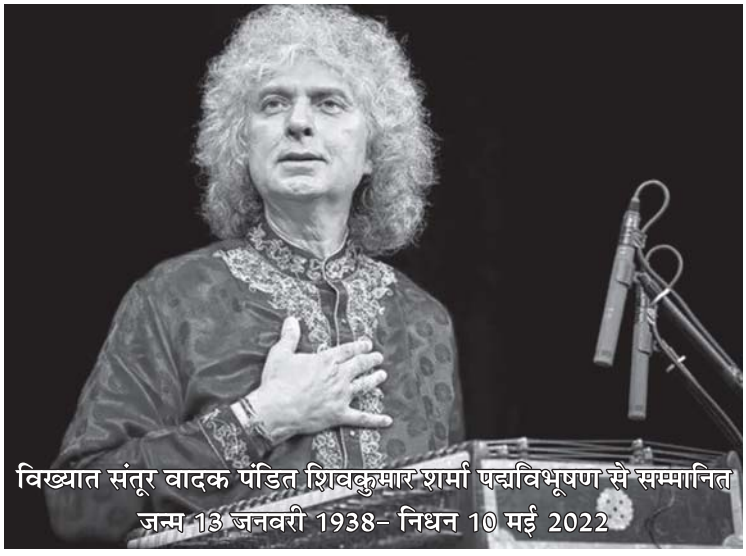
विख्यात संतूर वादक पंडित शिवकुमार शर्मा पद्मविभूषण से सम्मानित
जन्म 13 जनवरी 1938- निधन 10 मई 2022

आज मूर्धन्य संगीतकार पंडित शिवकुमार शर्मा जी के असामयिक निधन पर भारत भवन में शोकसभा आयोजित की गयी, जिसमें कलाकारों, साहित्यकारों, संस्कृतिकर्मियों आदि ने पंडित शिवकुमार शर्मा जी को अपनी भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की। श्रद्धांजलि सभा में प्रख्यात ध्रुपद गायक श्री उमाकान्त गुन्देचा, श्री देवीलाल पाटीदार, सुश्री वंदना पाण्डेय, श्री राहुल रस्तोगी, श्री अशोक मिश्र समेत अनेक कलाकार और संस्कृतिकर्मी शामिल हुए। सभा में संचालक संस्कृति और भारत भवन के निदेशक श्री अदिति कुमार त्रिपाठी ने शोक प्रस्ताव का वाचन किया। शोक प्रस्ताव नीचे अंकित अनुसार है:

शोक प्रस्ताव

महान संगीतकार पंडित शिवकुमार शर्मा के असामयिक निधन की खबर से हम सब शोक-संतप्त हैं। संतूर जैसे वाद्य के माध्यम से पं. शिवकुमार शर्मा ने भारतीय संगीत की जो सेवा की है

अर्थात् जो योगदान दिया है उसे कभी भुलाया न जा सकेगा। श्रद्धेय पंडित शर्मा जी का बहुकला केन्द्र भारत भवन और संस्कृति विभाग, म.प्र. शासन को हमेशा आत्मीय सानिध्य प्राप्त होता रहा है। उनकी आत्मीयता और सांगीतिक अवदान हम सबके लिए अमूल्य धरोहर है। एक मूर्धन्य संगीतकार के रूप में भारत भवन, भोपाल में और मध्यप्रदेश संस्कृति विभाग के आयोजनों में पंडित शर्मा जी लगातार संतूर वादन के लिए पधारते रहे हैं जिसकी वजह से मध्यप्रदेश में लाखों की संख्या में उनके संगीत के अनुरागी मौजूद हैं।

वर्ष 1938 में जम्मू-कश्मीर में जन्में पं. शिवकुमार शर्मा भारतीय संगीत के ऐसे जगमगाते नक्षत्र हैं जिनका सांगीतिक योगदान प्रणम्य होने के साथ ही बेहद करुणापूरित है। उन्होंने अपने संगीत के माध्यम से शैव परम्परा के 'शिवत्व' को तो बखूबी फैलाया ही है, सूफी परम्परा को भी उन्होंने खूबसूरत विस्तार दिया है। गहराई से उनके संतूर वादन को सुनने पर जम्मू कश्मीर की घाटियों-पहाड़ियों की साँस तो उस संगीत में रची-बसी सुनाई ही देती थी, हज़ारों वर्षों से चली आ रही भारतीय संगीत की अनुगूँज भी उनके संतूर के रणन-अनुरणन में हम सुनते आये हैं।

पंडित शिवकुमार शर्मा ने अपने पिता पं. उमादत्त शर्मा से संगीत की शिक्षा पायी और अपने गहरे अभ्यास तथा सुदीर्घ रियाज़ से उन्होंने संतूर की ध्वनियों-अनुगूँजों से देश-विदेश के संगीतप्रेमियों को मंत्रमुग्ध किया। पहले वे श्रेष्ठतम् तबला वादक के रूप में भारतीय संगीत में दाखिल हुए, इसके उपरान्त पिता से प्राप्त संतूर में ऐसे रमे कि संतूर के पर्याय ही हो गये। उनका संतूर गाता था

जिसमें नाद तत्व की अनहद आवाजाही हम विस्मित मन से देखते-सुनते रहे हैं। पं. शिवकुमार शर्मा का निधन भारतीय संगीत की ऐसी क्षति है जिसे भर पाना अब सम्भव न हो सकेगा। पंडित शर्मा के निधन से भारतीय संगीत शोकाकुल तो है ही, संतूर के तार भी मौन हो गए हैं। फिल्मों में सांगीतिक योगदान को देखें तो 'शिव-हरि' की जोड़ी अर्थात् पं. शिवकुमार शर्मा एवं पं. हरिप्रसाद चौरसिया की जुगलबन्दी ने सिनेमा की दुनिया में शास्त्रीय संगीत की बहुत मुकम्मल जगह बनायी। आगे चलकर पं. शिवकुमार शर्मा और पं. हरिप्रसाद चौरसिया ने संतूर तथा बाँसुरी की स्वतंत्र जुगलबन्दी कर अनूठा रससिक्तत संगीत हम सबको उपलब्ध कराया, जो किसी भी संगीतप्रेमी के लिए अप्रतिम उपलब्धि की तरह है। पंडित शर्मा जी ने अनेक दुर्लभ रागों और धुनों को अपने संतूर पर बजाकर देश के सुदूर अंचलों में संगीत के प्रति लोगों में सम्मान तो भरा ही, बड़ी संख्या में श्रोता-समाज भी निर्मित किया। संतूर की सांगीतिक सामर्थ्य को नयी ऊँचाईयाँ देते हुए पं. शिवकुमार शर्मा ने देश और विदेश में संगीत के अनेक शिष्य भी बनाये। इस तरह उन्होंने सांगीतिक प्रस्तुतियों के साथ ही संगीत की शिक्षा में भी अविस्मरणीय योगदान किया है।

संगीत में विशिष्ट और व्यापक योगदान के लिए पं. शिवकुमार शर्मा को पद्मश्री, पद्मविभूषण, तानसेन सम्मान, मास्टर दीनानाथ मंगेशकर पुरस्कार, संगीत-नाटक एकेडमी अवार्ड, महाराष्ट्र गौरव पुरस्कार जैसे बेहद प्रतिष्ठित सम्मानों से विभूषित किया गया है। संस्कृति विभाग, मध्यप्रदेश शासन को पंडित शिवकुमार शर्मा को आयोजनों में आमंत्रित करने के साथ ही समय-समय पर सम्मानित करने का भी गौरव प्राप्त हुआ है। पंडित जी और संस्कृति विभाग, मध्यप्रदेश शासन का आधी सदी से अधिक का आत्मीय रिश्ता रहा है, पार्थिव रूप से उनका न रहना हम सबके लिए बहुत पीड़ादायी है।

पं. शिवकुमार शर्मा के निधन का समाचार हम सबके लिए आघात की तरह है। हम सब पंडित जी की आत्मा की शान्ति के लिए ईश्वर से कामना करते हैं और इस दुखद घड़ी में उनके परिवार को दुख सहन करने की ईश्वर से प्रार्थना करते हैं। शोक-संतप्त यह सभा दो मिनट का मौन रखकर पं. शिवकुमार शर्मा को अपनी हार्दिक श्रद्धांजलि और हृदय की गहराई से अपनी भावांजलि देती है।

मुख्य प्रशासनिक अधिकारी भारत भवन

पत्रिका ही नहीं, एक रचनात्मक अनुष्ठान

पत्रिका मुफ्त मांग कर, कृपया हमारे अनुष्ठान को आघात न पहुँचाएं

'कला समय' के सदस्य बनें- ❍ पत्रिका की वार्षिक/द्वैवार्षिक /आजीवन सदस्यता ग्रहण करें। सदस्यता शुल्क मनीआर्डर, ड्राफ्ट, ऑनलाइन अथवा व्यक्तिगत रूप से भुगतान किया जा सकता है।

'कला समय' की एजेंसी के नियम- ❍ आपके गांव, कस्बे, शहर में सांस्कृतिक पत्रिका 'कला समय' की एजेन्सी के लिए सम्पर्क करें। ❍ कम से कम दस प्रतियों से एजेन्सी शुरू की जायेगी। ❍ पत्रिका कुरियर अथवा रजिस्टर्ड बुक पोस्ट से भेजी जायेगी। डाक खर्च एजेन्सी को वहन करना होगा। ❍ कमीशन, प्रतियों की संख्या के आधार पर।

स्थायी तथा सम्पादकीय पता और दूरभाष क्रमांक के साथ सम्पर्क करें- जे-191, मंगल भवन, महावीर नगर, ई-6, अरेरा कॉलोनी, भोपाल- 462016 Email : bhanwarlalshrivas@gmail.com मो. 9425678058, 0755-2562294

लेखकों/कलाकारों से ❍ कला, संस्कृति साहित्य एवं समसामयिक विषयों के अछूते पहलुओं पर सृजनात्मक, शोधात्मक और सूचनात्मक आलेख, टिप्पणियां, रिपोर्ताज, साक्षात्कार, ललित निबंध, कविताएँ, छायाचित्र, रेखांकन तथा शोध आमंत्रित हैं ❍ रचनाएँ कागज के एक ओर टाइप की हुई तथा मौलिकता का प्रमाण पत्र संलग्न हो। कृपया रचना के साथ पर्याप्त डाक टिकिट लगा लिफाफा भी संलग्न करें। रचनाएँ और चित्र ई-मेल से भी भेजे जा सकते है।

प्राथमिकता के साथ : Chanakya फोंट / वर्ड फाइल / PDF फॉर्मेट में ही भेजें।

अनुरोध : वे सदस्य जिनका वार्षिक / द्विवार्षिक सदस्यता शुल्क समाप्त हो रहा है, कृपया अपनी सदस्यता का नवीनीकरण करायें। सदस्यों को पत्रिका साधारण डाक से भेजी जाती है। नहीं मिलने की स्थिति में सदस्यता शुल्क के साथ 120/- का प्रतिवर्षानुसार रजिस्टर्ड डाक शुल्क अतिरिक्त भेजा जाना होगा।

-संपादक

आलेख

बुन्देली लोकगीतों में राष्ट्रीय स्वर

जगदीश कौशल

''मैं मानता हूँ कि लोकगीत समूची संस्कृति के पहरेदार होते हैं। कन्याकुमारी में तीन समुद्रों का संगम देखकर मलावार के किसी लोककवि ने अवश्य कुछ गाया होगा। इस स्थान पर स्वामी विवेकानन्द ने भारत माता को साष्टांग प्रणाम किया था। तीन समुद्रों के संगम के गीत में भारतमाता क्या कहती है, यह मैं अवश्य जानना चाहता हूँ। इस लोकगीत में स्वतंत्रता की कोई पुकार अवश्य होगी।''

उपर्युक्त शब्द पूज्य बापू ने 14 जनवरी 1948 को कहे थे। बापू को भारतवर्ष के लोकगीतों में कितनी श्रद्धा और विश्वास था इसका परिचय उनके इन शब्दों में मिल जाता है। भारतमाता इन गीतों में क्या कहती है उसे जाने बिना ही वह अपनी माँ की गोद को सदा के लिए छोड़कर चले गए। बापू आज हमारे बीच नहीं है, किन्तु उसके द्वारा कहे हुए शब्द हमें आज भी प्रेरणा दे रहे हैं। आज हम सब भारतवासियों का कर्तव्य हो जाता है कि हम देखें और परखें उस स्वतंत्रता की पुकार को, जो हमारे लोकगीतों में गूँज रही है।

भारत एक राष्ट्र है। भारतीय लोकगीतों में अपनी-अपनी भाषा और शैली की भिन्नता के साथ ही भारतीय संस्कृति की एकता का स्पष्ट बोध अभिव्यंजित होता है। भाषा और बोली की भिन्नता तो ऊपरी दिखावा मात्र है। सदियों से सोयी हुई देश की अशिक्षित ग्रामीण जनता में देशप्रेम और स्वाधीनता की भावना जाग्रत करने का श्रेय हमारे उन लोकगीतों के गायकों को ही प्राप्त है, जिन्होंने अपनी सीधी-सादी, सरल ग्रामीण बोली में भैरवी का राग अलापकर आश्चर्यजनक देशव्यापी जन आगृति उत्पन्न कर दिखाया। बुन्देलखण्ड के लोककवियों ने इस सत्र में विशेष रूचि प्रदर्शित की है और देश में आजादी के आन्दोलन में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

भारतीय स्वाधीनता आन्दोलन के प्रथम चरण की अमर सेनानी झाँसी की रानी महारानी लक्ष्मीबाई की वीरता को भला कौन नहीं जानता। उनकी वीरता का वर्णन बुन्देलखण्ड के अनेक लोकगीतों में देखने को मिलता है। बानगी के लिए यह लोकगीत देखिए-

हम स्वदेश हित सिर कटवा दें
मिलें मंत्र गुरु ज्ञानी को
हम सुनो नाऊं मरदानी कौं
बाई-साब महारानी को
उनकी घोड़े पे है सवारी
नाती राजा बंधे पछारी
तेगा दोऊ हाथ लिए भारी
मुख पै तेज टपकत आयो
धीर वीर गुणखानी को
हम सुनौ नाइं मरदानी को
बाई, साब महारानी को.

झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई का मरदाना रूप हमारी आँखो के सामने साकार हो उठता है। बाई साब घोड़े पर सवार है, उनकी कमर में उनका पुत्र बंधा हुआ है, हाथों में तलवार और मुखमण्डल से तेज चमक रहा है। लोककवि कहता है कि झाँसी की रानी हमें स्वदेशहित के लिए सिर कटवा देने का अमर मंत्र दे गयी है। देशप्रेम की भावना जाग्रत करने के लिए लोककवि ने कितनी सुन्दर उक्ति को अपनाया है। अंग्रेजी हुकमत ने 1857 की जनक्रान्ति का बड़ी बेरहमी से दमन किया था। दिन प्रतिदिन शासन को बढ़ती हुई उपेक्षा एवं दमन नीति से भयातुर होकर ही एक लोककवि की अन्तरात्मा चीत्कार उठी थी-

यह दमन चक्र चल रहा घोर, जुर मिल यदि लोन दबाओगे
तो कछु दिनन के भीतर ही सर पर चोटी नहि पाओगे
तो आर्य वंश के धीर वीर, जग में कायर कहलाओगे
भारत हित वीरों कटो मरो, जग बीच अमर पद पाओगे।

सन् 1885 में भारतीय काँग्रेस दल का संगठन हुआ। पुन: नये सिरे से आजादी की जंग छिड़ी। विदेशी माल का बहिष्कार और स्वदेशी के प्रचार का आन्दोलन सारे भारत में चला। देश के कोने-कोने में विदेशी कपड़ों की होली जलाई गई। खादी का प्रचार हुआ।

इस आन्दोलन के भाव को बुन्देलखण्ड का लोककवि

अपनी प्रेमिका सजनी के मुख से उल्हावने के ढंग से कितनी सुन्दरता से प्रस्तुत करता है –

तुमसे कौन्ने कयी सजनवा, घर में चीर विदेशी ल्याव
चिकन टसर मलमल में सैयाँ, अब तो आग लगाव
नयी गुलसारी हमें पहनना, खादी की लै आव
खादी की सुन्दर चोली, कुरती हमें सिलाव
भारत भारत होत हमारौ, ऊकौं आप बचाव
सुधर जाय ब्योपार सुदेसी, एसौं जतन रचाव
मैं कुल नारी हूँ भारत की, मोय न और लजाव।
तुम समाज के ने तो ''लछमी'' अब ना नाम धराव.

सजनी अपने साजन से कितने उलाहने–भरे शब्दों में पूछती है आखिर तुमसे किसने कहा है कि तुम विदेशी कपड़ा घर में लेकर आओ। अब तो इन चिकन, टसर और मलमल के कपड़ों में आग लगा दो। मुझे तो खादी की नयी साड़ी और चोली पहननी है सो ले आओ। साथ ही भारत की कुलवधू को स्वदेशी व्यापार को सुधारने की भी कितनी चिन्ता है। बुन्देलखण्डी नारी का यह रुप दिखाकर लोककवि ने भारतीय महिलाओं को जो गौरव प्रदान किया है वह विशेष उल्लेखनीय है।

स्वतंत्रता आन्दोलन के वीर सेनानी नेताजी सुभाषचन्द्र बोस तथा शान्ति और अहिंसा के अग्रदूत पंडित जवाहरलाल नेहरू के गुणों का मान भी बुन्देली लोकगीतों में देखने को मिलता हैं। उदाहरणार्थ ये लोकगीत देखिए –

भारत माँ के दो लाल, दिये दुख टाल, जगत में जाहर
परमवीर सुभाष, जवाहर
यह महावीर से वीर हुए, यह गणपति गंभीर हुए
नामी ग्रामी दोई बल विद्या के सागर
यह दुश्मन दल संहारन को यह जनमे देश सुधारन को
तन मन धन दोनों ने कर दिया निछावर

भारतमाता के दोनों सपूत विश्व में विख्यात है। सदियों से गुलामी की जंजीरों में जकड़ी माँ दुखी थी। इन वीर बालकों ने उसको सब दुखों से छुटकारा दिला दिया। सुभाष बाबू परमवीर थे और नेहरूजी गणपति जी की तरह शान्त और गंभीर हैं। दोनों ने देश के लिए तन, मन और धन न्योंछावर कर डाला है।

अनेक कुर्बानियों और बलिदानों के बाद देश को स्वतंत्रता मिली। 15 अगस्त 1947 को देश स्वतंत्र हुआ। किन्तु इस स्वतंत्रता को प्राप्त करने के लिए क्या–क्या नहीं करना पड़ा, कितनी माताओं की गोद सूनी हुई, कितनी सुहागिनों की माँग का सिन्दुर लुटा, कितने परिवार अनाथ हुए– बरबाद हुये। 15 अगस्त के पीछे हुए बलिदानों से बुन्देलखण्ड का लोककवि भलीभाँति परिचित था। ग्रामीण जनता को राष्ट्र के कर्णधारों के त्याग बलिदान की कहानी सुनाना वह अपना पुनीत कर्तव्य समझता है। यथा –

जो पन्द्रा अगस्त के दिन साँचऊ, सोने को नैया।
जोई जन्नी के पावन की बेढ़ी को कटबैया।। जो पन्द्रह.....
जई के लाने लरी लड़ाई, झाँसी वारी रानी ।
सब कोऊ जानत सत्तावन की विपदा भरी कहानी
वीर बहादुर साह जुटा दये सबको अपने छैया।। जो पन्द्रह.....
खुदीराम, जोगेन्द्र फिरते जइको बने दिभाने।
रासबिहारी बोस जइको, माटीमोल बिकाने ।
भगत सिंह ने जइको लइकी फांसी को मिचकइया। जो पन्द्रह....
तिलक, पटेल, मालवी ने जइके लाने तन गारो ।
गाँधी जी ने जइके लाने, सत्त शान्त व्रत धारो
वीर जवाहर जइकौं छोड़ी, फूलन की सुख सैया।। जो पन्द्रह.....

स्वाधीनता संग्राम के इन सब सैनिकों के त्याग और बलिदान के फलस्वरूप हमें 15 अगस्त का स्वर्ण दिवस मिला है। कवि आगे सब भारतवासियों से विनती करता है कि आप सब लोग मिलजुल कर इस स्वतंत्र भारत की रक्षा करना। देखो मेरी बात को ध्यान में रखना। कहीं बनी बनायी बात बिगड़ने पायी तो फिर पूछनेवाला नहीं मिलेगा––

विन्ती इतनी ''मित्र'' की
सुन लइयो चित्त धरकै
जा स्वतंत्र भारत की रक्षा करिओं सब मिल जुरकै
जो काऊ बिगरी बात कितऊँ फिर नइयाँ कोऊ पुछैया
जो पन्द्रा अगस्त को दिन, सांचऊ सोने को भैया।।

देश स्वाधीन होने के बाद दिल्ली के लाल किले पर तिरंगा झंडा लहराने लगा है। नेहरूजी प्रधानमंत्री हुए है जो इस तिरंगी पताका के संरक्षक है। लोक गायक इसी भाव को त्रिवेणी के संगम का रूपक देते हुए गाता है –

तिरबेनी सा लहराय
त्रिताप नसाय तिरंगा झण्डा ।
नेहरूजी जाके पण्डा।
इसमें जो चक्र दिखता है
भगवान की याद दिलाता है
'कविदास' कहे रिपुके हों
सत सत खण्डा

नेहरू जी जाके पण्डा ।।

पन्द्रह अगस्त को मुस्कुराती सुबह ने गुलामी की अंधेरी रात का अन्त कर दिया है। इस आशय को व्यक्त करने के लिए कवि प्रश्नोत्तर का कैसा सुन्दर नाटकीय ढंग अपनाता है। एक सखी अपनी दूसरी सखी से कहती है –

अब सारो पलट गयो राज
देश में आजादी आई बहना ।।
मिट गई कारी रात सबेरो
हंसत दिखा रओ है बहना।

लेकिन सहेली उसकी बात समझी नहीं और प्रश्न कर बैठी–

काहे की कारी रात हती
और कौन सबेरो होत ?

तब अपनी सखी को समझाते हुए वह कहती है –

अरे सारी रात गुलामी की
सबेरो आजादी को होत।
देश में आजादी आई बहना।

बात नहीं पर समाप्त नहीं हो जाती है। सहेली के मन में जिज्ञासा उत्पन्न होती है कि आखिर इस आजादी रूपी प्रभात को कौन लाया और गुलामी रूपी अंधकार को किसने मिटाया? अत: वह पुन: प्रश्न करती है–

को है सबैरो लाओ मोंरी बहना,
कोनाने मेटीरात ?देश में.....

शंका समाधान करती हुई दूसरी सखी कहती है–

नेहरू सबेरों लाओ मोरी बहना गांधी ने मेटी रात। देश में....

इस प्रकार हम देखते है कि बुन्देलखण्ड के लोककवियों ने लोकगीतों के माध्यम से कितनी सरल और सरस शब्दावली में स्वतंत्रता का सन्देश देश के कोने–कोने तक पहुँचाया है। निश्चय ही बुन्देलखण्ड के लोकगीत भारत की समूची संस्कृति के पहरेदार है जिसमें हमारी प्राचीन परम्पराओं के साथ आधुनिक राष्ट्रीय जागरण के सन्देश भी सुरक्षित है।

कला समय

आगामी अंक
जून-जुलाई 2022

''नाद ब्रह्म''

विशेषांक

अतिथि सम्पादक - प्रो. डॉ. मधु भट्ट तैलंग
(वरिष्ठ ध्रुवपद गायिका, जयपुर राजस्थान)

छायाकार–जगदीश कौशल

समय की धरोहर

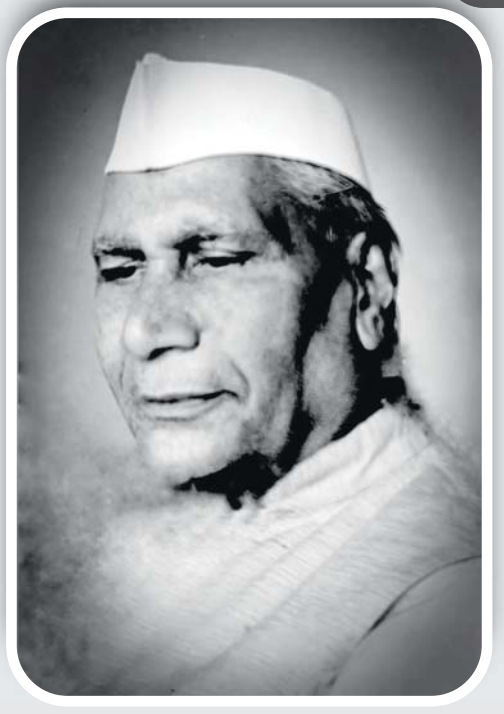

राष्ट्रकवि पंडित सोहन लाल द्विवेदी

जन्म - 22 फरवरी 1906 निधन - 1 मार्च 1988 .

हिन्दी काव्य जगत की अमूल्य निधि पंडित सोहनलाल द्विवेदी को आजादी से पूर्व राष्ट्रीयतापूर्ण कविताएं लिखने वाले कवियों में उन्हें मूर्धन्य स्थान प्राप्त है। उन्होंने महात्मा गाँधी और गांधीवाद के प्रभाव तत्व को वाणी देने का सार्थक सफल प्रयास किया। स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों के लिए ऊर्जा और चेतना से भरपूर रचनाओं के रचयिता पंडित सोहनलाल द्विवेदी जी को राष्ट्रकवि की उपाधि से अलंकृत किया गया था। वर्ष 1969 में भारत सरकार ने उन्हें पद्मश्री उपाधि से सम्मानित किया गया था।

पंडित सोहनलाल द्विवेदी राष्ट्रीय नव जागरण के उत्प्रेरक एक ऐसे कवि है जिन्होने अपने संकल्प, चिन्तन, त्याग और बलिदान के सहारे राष्ट्रीयता की अलख जगाकर अपने पूरे युग को आन्दोलित किया था। सन् 1941 में देशप्रेम से लबरेज ''भैरवी'' उनको प्रथम प्रकाशित रचना थी, जो स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों के लिए सबसे अधिक प्रेरणा गीतों का संग्रह है। इसके अलावा 'वासवुदत्ता', 'पूजागीत', 'विषपान', 'जय गांधी आदि अनेक काव्य संग्रह है। आपने बालोपयोगी कविताएँ भी भरपूर मात्रा में लिखी है आपके कई बाल काव्य संग्रह भी प्रकाशित हुए हैं जिनमें 'दूध–बताशा' उल्लेखनीय है।

बहुमुखी प्रतिभा के धनी पंडित सोहनलाल द्विवेदी ने वर्ष 1937 में लखनऊ से प्रकाशित दैनिक समाचार पत्र ''अधिकार'' का सम्पादन भी किया था। उन्होंने ''बालसखा'' पत्रिका का अवैतनिक सम्पादक के रूप में सम्पादन कार्य भी किया था। देश में बाल साहित्य के वह महान आचार्य माने जाते है।

पंडित सोहन लाल द्विवेदी जी का यह कलात्मक छायाचित्र भोपाल के सुविख्यात वयोबृद्ध छायाकार श्री जगदीश कौशल ने वर्ष 1982 में उनके भोपाल प्रवास के समय उनसे साक्षातकार लेते हुए क्लिक किया था।

संस्मरण

देश प्रेम की अलख जगाने वाले राष्ट्रकवि पं. सोहनलाल द्विवेदी

जगदीश कौशल

आजादी के पहले महात्मा गांधी के नेतृत्व में चल रहे स्वतंत्रता संग्राम के आन्दोलनों में सक्रिय भागीदारी करने वाले राष्ट्रकवि पं. सोहनलाल द्विवेदी किसी परिचय के मोहताज नहीं है। उन्होंने अपनी ओजपूर्ण कविताओं के माध्यम से देश की युवाशक्ति को राष्ट्रीय स्वतंत्रता आन्दोलनों में सक्रिय बनाने हेतु नई दिशा और गति प्रदान करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया था। आपकी राष्ट्रीय कविताओं में खादी प्रचार, ग्राम सुधार,देशभक्ति, सत्य, अहिंसा के सन्देश प्रभावी ढंग से मुखरित हैं। गांधीजी को इन सबका सृजनकर्ता मानकर उन्हें युगान्तर वो रूप में देखते हुए उन्होंने लिखा था –

चल पड़े जिधर दो डगमग में चल पड़े कोटि पग उस ओर
पड़ गयी जिधर भी एक दृष्टि गड़ गये कोटि डग उसी ओर।

इसी प्रकार वह गांधी जी के अहिंसात्मक आन्दोलन को इस प्रकार अभिव्यक्ति देते हैं –

न हाथ एक शस्त्र हो, न हाथ एक अस्त्र हो
न अन्य वीर वस्त्र हो,
हटो नहीं, डरो नहीं, बढ़े चलो, बढ़े चलो।

इसी प्रकार की एक और कविता में उसकी सूक्ष्म दृष्टि का परिचय मिलता है। वह कहते है –

लहरों से डरकर नौका पार नहीं होती।
कोशिश करने वालों की हार नहीं होती।।

सन् 1941 में प्रकाशित उनके पहले काव्य संग्रह ''भैरवी'' का सर्वाधिक प्रचारित पूजागीत इस प्रकार है –

वंदना के इन स्वरों में एक स्वर मेरा मिला लो ।
राग में अब मत्र झूलो तो कभी माँ को न भूलो
अर्चना के रत्नकण में एक कण मेरा मिला लो
जब हृदय का तार बोले, श्रृंखला को बन्द खोले
हों जहाँ बलि शीश अगणित, एक सिर मेरा मिला लो।।

इस प्रकार हम देखते है कि पंडित सोहनलाल द्विवेदीजी की कविताओं में देशप्रेम की भावना कूट–कूट कर भरी हुई है।

मेरा यह परम सौभाग्य है कि मुझे ऐसे महान व्यक्तित्व के धनी राष्ट्रकवि पं. सोहनलाल द्विवेदी जी के चरण वंदन करने वाले और उनके गौरवशाली व्यक्तित्व को अपने कैमरे में कैद करने, साक्षात्कार करने का सुअवसर प्राप्त हुआ।

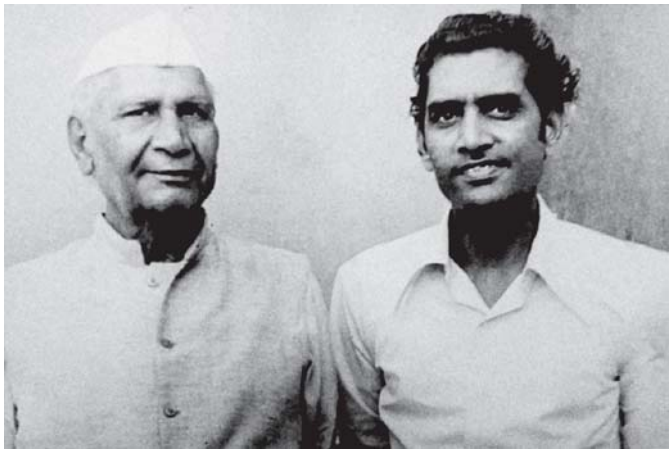

1980–81 में पंडित जी का भोपाल आगमन हुआ था। मुझे उनका विशुद्ध गांधीवादी चेहरा, खादी–कुर्ता–पैजामा उस पर नेहरू कट जॉकिट और मुखमण्डल पर गाँधी टोपी धारण किये हुए आज भी याद है। मृदु भाषी अत्यन्त सरल स्वभाव के अद्भुत व्यक्ति थे।

संपर्क : ई–3/320 अरेरा कॉलोनी, भोपाल
मो. 9425393429

पुस्तक – समीक्षा

'कला समय' पत्रिका में कला, संस्कृति, साहित्य, इतिहास पुरातत्व, लोक साहित्य, पर्यटन, गीत, ग़ज़ल, कविता इत्यादि विषयों पर प्रकाशित पुस्तकों की समीक्षा प्रकाशित की जाती है। प्रकाशनार्थ समीक्षा के साथ पुस्तक की एक प्रति भेजना आवश्यक है।

– संपादक

आयोजन

आचार्य शंकर सांस्कृतिक एकता न्यास, मध्यप्रदेश शासन, संस्कृति विभाग का प्रतिष्ठा आयोजन ...

आचार्य शंकर प्रकटोत्सव एकात्म पर्व समारोह

भारत की ज्ञान परम्परा ही उसे विश्व गुरु बनाएगी: श्री आरिफ मोहम्मद खान, माननीय राज्यपाल, केरल

दिनांक 6 मई 2022 सायं 6 बजे, कुशाभाऊ ठाकरे सभागृह मिन्टो हॉल भोपाल में आचार्य शंकर प्रकटोत्सव एकात्म पर्व का प्रतिष्ठापूर्ण आयोजन आचार्य शंकर सांस्कृतिक एकता न्यास, मध्यप्रदेश शासन संस्कृति विभाग द्वारा सम्पन्न हुआ। समारोह के मुख्य अतिथि माननीय श्री शिवराजसिंह चौहान जी माननीय मुख्यमंत्री मध्यप्रदेश, विशिष्ट अतिथि श्री आरिफ मोहम्मद खान माननीय राज्यपाल केरल, सारस्वत उद्बोधन स्वामी परमात्मानंद सरस्वती संस्थापक आचार्य आर्ष विद्या मंदिर, राजकोट सहित शंकर संगीत की प्रस्तुति सूर्या गायत्री एवं राहुल वेल्लाल द्वारा शंकर रचित पदों का गायन किया गया।

स्वामी परमात्मानंद सरस्वती, पूज्य स्वामी दयानंद सरस्वती जी के वरिष्ठ शिष्य हैं। स्वामी जी ने अपने गुरु के मार्गदर्शन में वेदांत, संस्कृत व योग का गहन अध्ययन किया है। स्वामी जी भारत समेत विश्व भर में विगत 40 वर्षों से समाज के विभिन्न वर्गों में वेदांत का अध्यापन करा रहे हैं। आप समाज के सभी वर्गों, भक्तगणों, युवाओं, शासकीय व कार्यरत अधिकारियों छात्रों व बच्चों से संवाद करने व उनको प्रशिक्षित करने की विलक्षण योग्यता रखते हैं। हाल ही में स्वामी जी को गुजरात विश्वविद्यालय द्वारा डी.लिट् की मानद उपाधि प्राप्त प्रदान की गई। आप हिन्दू धर्म आचार्य सभा के संयोजक व सचिव आर्ष विद्या मंदिर, राजकोट के संस्थापक आचार्य शिवानंद आश्रम अहमदाबाद के अध्यक्ष व आचार्य शंकर सांस्कृतिक एकता न्याय के न्यासी हैं। स्वामी जी अनेक राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठियों, बैठकों और कार्यक्रमों में सनातन धर्म व भारत का प्रतिनिधित्व करते हुए वेदांत का व्यापक प्रचार-प्रसार करते हैं।

समारोह का शुभारम्भ विधिवत दीप प्रज्वलित कर आदि शंकराचार्य जी के चित्र पर माल्यार्पण अतिथियों द्वारा किया गया। समारोह सभा की शुरुआत में शंकर संगीत की प्रस्तुति सूर्या गायत्री केरल की प्रसिद्ध शास्त्रीय गायिका एवं राहुल वेल्लाल ने दी। आपने श्रीमती आनंदी व श्री निशांत के मार्गदर्शन में कर्नाटक संगीत का औपचारिक प्रशिक्षण प्राप्त किया है। आपने भारत समेत विभिन्न देशों में प्रस्तुतियाँ देते हुए अनेक पुरस्कार प्राप्त किये हैं।

राहुल आर वेल्लाल बेंगलुरू निवासी कर्नाटक संगीत के विख्यात गायक व संगीतज्ञ हैं। आप सुश्री रजनी, सुश्री गायत्री, सुश्री कलावती अवधूत श्री जयचन्द्र राव, श्री अभिषेक एन व श्री कुलदीप पाई के मार्गदर्शन में संगीत प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे हैं। आपने भारत समेत विभिन्न देशों के प्रतिष्ठित मंचों पर प्रस्तुतियाँ देते हुए अनेक पुरस्कार प्राप्त किए हैं। इन दोनों बाल गायकों के स्वरों से मिन्टो हाल गुंजायमान हुआ। आप कलाकारों ने शिव पंचाक्षर स्त्रोत, शिवाष्टकम्, गणेश पंचरत्नम्, आर्यगिरी नंदिनी जैसे स्त्रोतों की सुरीली आवाज में प्रस्तुति दी। दर्शक दीर्घा में विराजमान अतिथियों ने इसका खूब आनंद लिया।

आचार्य शंकर प्रकटोत्सव में अतिथियों द्वारा शुभारंभ

मुख्य वक्ता स्वामी परमात्मानंद सरस्वती जी ने कहा कि वर्तमान विश्व में अधिकांश समस्याएँ हमारे व्यक्तित्व केन्द्रित होने के कारण उत्पन्न हुई है। जब विभिन्न मत-मतान्तरों में एकता लाने की आवश्यकता हुई तब आचार्य शंकर का प्रादुर्भाव हुआ और उन्होंने

आदि शंकराचार्य के चित्र पर पुष्प अर्पित करते हुए माननीय शिवराज सिंह चौहान

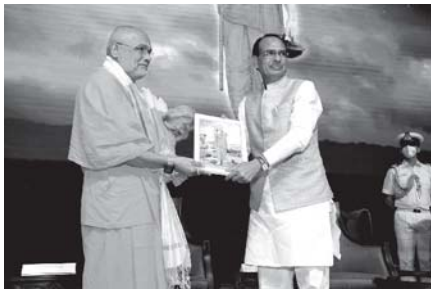

स्वामी परमात्मानंद सरस्वती जी का सम्मान करते माननीय शिवराज सिंह चौहान

आचार्य प्रणवानंद सरस्वती जी का सम्मान करते माननीय मुख्यमंत्री म.प्र. शासन

प्रो. अंबिकादत्त शर्मा जी का सम्मान करते माननीय मुख्यमंत्री म.प्र. शासन

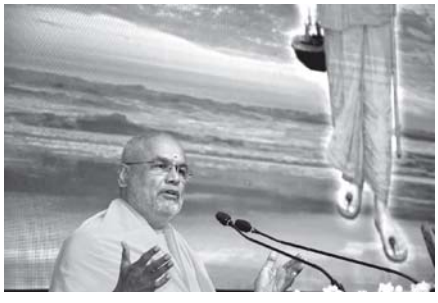

स्वामी परमात्मानंद सरस्वती जी का सारस्वत उद्‌बोधन

करुणापूर्ण रूप से सभी मतों को संस्कारित कर वैदिक दर्शन अद्वैत वेदांत दर्शन का प्रचार किया। हिंदू धर्म के आफलाइफ नहीं है बल्कि विजन ऑफटूऊथ है, हम सत्य के पुजारी हैं। स्वामी परमात्मानंद जी ने कहा कि धर्म का अर्थ रिलीजन नहीं है। रिलीजन आस्था विशेष को कहते हैं और धर्म कर्तव्य विशेष को कहते हैं। अंत में उन्होंने ओंकारेश्वर प्रकल्प के महत्व को बताते हुए कहा कि यह आधुनिक युग का नालंदा सिद्ध होगा।

केरल के राज्यपाल माननीय आरिफ मोहम्मद खान ने हिंदू धर्म व आदि शंकराचार्य पर बहुत विद्वतापूर्ण उद्बोधन में कहा कि आदि शंकराचार्य ने देश को एक दृष्टि दी और कहा कि हिंदू धर्म जीवन जीने का तरीका नहीं अपितु सत्य की दृष्टि है। धर्म का अर्थ आस्था विशेष से नहीं होता यह कर्तव्य विशेष से होता है। धर्म कर्तव्य का साधन है। आचार्य शंकर ने सर्व समावेशी होने की शिक्षा दी। आज पर्यावरण जैसी अनेक समस्याएँ उपभोक्तावाद के कारण बढ़ रही है। आचार्य शंकर का दर्शन मानव प्रकृति और पर्यावरण में एकात्मकता स्थापित करता था। विश्व शांति के लिए उनके दर्शन की जरूरत है। राज्यपाल जी ने कहा कि उन्होंने वर्ष 83-84 में स्वामी विवेकानंद जी को पढ़ा था। जो विवेकानंद जी ने कहा वही आचार्य शंकर ने कहा था। शंकर ने सनातन के बुनियादी सिद्धांतों व दर्शन को सामने रखा। अवतार समाज की धूल झाड़ने के लिए होते हैं। समाज को एकता की जरूरत होती है। ऋग्वेद कहता है कि सत्य एक है भारत प्रकृति के कानून को मानता है और यह विविधता की स्वीकार्यता को महत्व देता है। इसीलिए भारत में दुनिया का नेतृत्व करने की सामर्थ्य है। उन्होंने कहा कि मुझे गर्व है कि मैं आदि शंकराचार्य की जन्मभूमि से चलकर यहां आया हूँ। उनकी दीक्षाभूमि से मुझे आमंत्रण मिला यह मेरा सौभाग्य है। वेदांत दर्शन एक वैश्विक दर्शन है जो मानव मात्र के लिए उपयोगी है। सनातन दर्शन में यह कहा गया है कि मानव दिव्य है और दिव्यता का प्रकटीकरण हमारे जीवन में होना चाहिए। ये संत ही हैं जिन्होंने नैसर्गिक सिद्धांतों को खोजा और इस भूमि की धूरी को टिका कर रखा। आचार्य शंकर ने भारत की चारों दिशाओं में चार मठ स्थापित किए और उन चारों मठों के चार वेदों से चार महाकाव्य का दिए, जो कहते हैं कि जीवन दिव्य चैतन्य है। उन्होंने कहा कि भारत का अधिकार है कि इसे विश्व गुरु होना चाहिए।

सूर्या गायत्री और राहुल आर वेल्लाल का शंकर संगीत

मुख्य अतिथि माननीय मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान जी ने कहा कि हम सभी पीड़ित मानवता की सेवा करने का संकल्प लें। पूरी प्रकृति एक ही चेतना से संचालित है। हिंदू मान्यताओं में इसका पर्याप्त ध्यान रखा जाता है। गाय को माता मानकर, नदियों और पेड़ों की पूजा करना इसी चेतना का सम्मान करना है। सभी में एक ही सत्ता होने का एहसास हमें सारे भेदभाव से ऊपर कर देता है। उन्होंने अपने प्रतिदिन पौधरोपण की चर्चा करते हुए कहा कि ऐसा करके उन्हें लगता है कि वे अपनी की आत्मा को तृप्त कर रहे हैं। ओंकारेश्वर प्रकल्प की जानकारी देते हुए कहा कि अद्वैत वेदांत की धारा पूरी दुनिया में फैले इसी उद्देश्य से

केरल के राज्यपाल
माननीय आरिफ मोहम्मद खान का उद्‌बोधन

मध्यप्रदेश शासन के मुख्यमंत्री
माननीय श्री शिवराज सिंह चौहान का उद्‌बोधन

मिंटो हॉल के सभागार में मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने उपस्थित श्रोताओं को संकल्प दिलाया

ओंकारेश्वर में काम किया जा रहा है, जो लगभग पूर्णता की ओर है। शंकर के ग्रंथ अंधकार में मानवता को दिशा दिखाते हैं।

माननीय मुख्यमंत्री जी ने कहा कि हम सभी एक ही चेतना का अंश है। पशु-पक्षी, जीव-जंतु, पेड़-पौधे सभी में एक ही चेतना विद्यमान है। सनातन दर्शन में साकार उपासक, निराकार उपासक, आस्तिक एवं नास्तिक जैसे विभिन्न विचारों को स्वीकार किया गया है। कण-कण में ईश्वर का वास है। मेरा तेरा छोटे दिल वालों की बात है। बड़े दिलवाले पूरे विश्व को एक समान मानते हैं। भौतिकता की अग्नि में मानवता के शाश्वत शांति का संदेश यदि कोई दे सकता है तो केवल अद्वैत वेदांत दर्शन ही दे सकता है। अपने उद्बोधन के अंत में सभी दर्शक दीर्घा में उपस्थित श्रोताओं को आचार्य शंकर सांस्कृतिक एकता न्यास की ओर से जारी संकल्प दोहराया।

इसी अवसर पर मार्कण्डेय आश्रम ओंकारेश्वर के स्वामी प्रणवानंद, स्वामी वेदत्वानंद उपस्थित थे। मध्यप्रदेश के अद्वैत वेदांत के लोकव्यापीकरण में योगदान के लिए आचार्य प्रणवानंद सरस्वती व डॉ हरिसिंह गौर केन्द्रीय विश्वविद्यालय, सागर के प्रधान प्राध्यापक प्रो. अंबिकादत्त शर्मा को सम्मानित किया गया। कार्यक्रम के अंत में संस्कृति विभाग के प्रमुख सचिव श्री शिवशेखर शुक्ला द्वारा आभार ज्ञापन में बताया कि जगतगुरु आदि शंकराचार्य के अद्वैत वेदांत के व्यापक प्रचार-प्रसार के लिए इस पर्व का आयोजन किया गया।

इस प्रतिष्ठापूर्ण समारोह में छात्र-छात्राएँ, युवा कलाकार, बुद्धिजीवी और शिक्षाविद् भी शामिल हुए। मंच संचालन विनय उपाध्याय ने किया। सभी अतिथियों को शाल, स्मृति चिन्ह, श्रीफल प्रदान किए गए। समारोह के दौरान ओंकारेश्वर प्रकल्प आधारित महत्वपूर्ण प्रगति रिपोर्ट की फिल्म का प्रसारण भी हुआ जिसे लोगों ने बहुत पसंद किया। ■

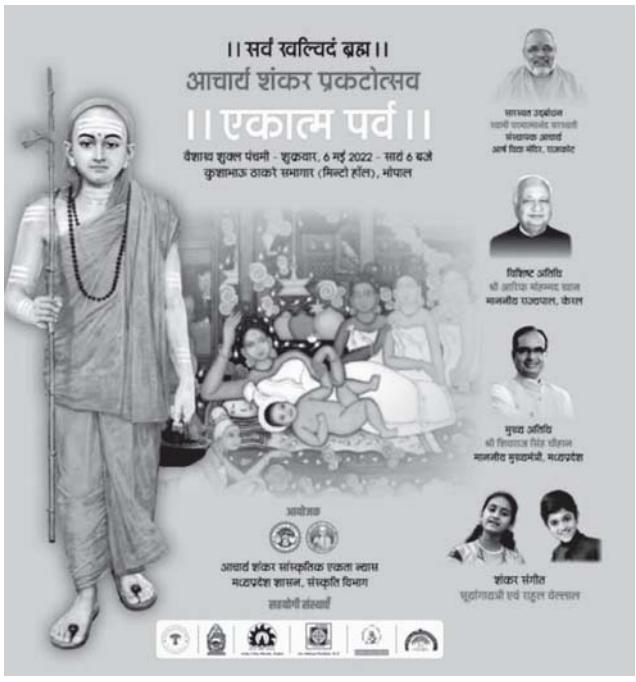

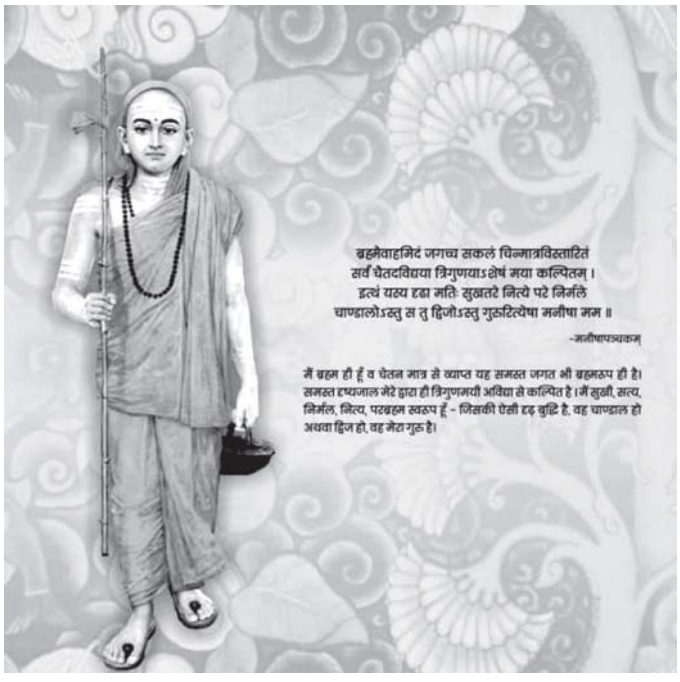

लोक साहित्यविद् प्रो शैलेन्द्र कुमार शर्मा एवं लोक साहित्य अध्येता डॉ. सुमन चौरे 35 वें भेराजी सम्मान से अलंकृत

मालवी भाषा के प्रचार-प्रसार में भेराजी सम्मान का योगदान अहम - कुलपति पाण्डेय

बाजारीकरण, वैश्वीकरण के इस दौर में भेराजी का परिवार आज भी मालवा की संस्कृति और परम्परा को भेराजी सम्मान के जरिये संजोये हुए है यह बहुत महत्वपूर्ण है। भेराजी की पुण्यात्मा भी आज यह सब देखकर खुश हो रही होगी कि मालवी संस्कृति के संवर्धन में उनकी तीसरी पीढ़ी समर्पित भाव से लगी हुई है। मालवी भाषा के प्रचार-प्रसार में भेराजी सम्मान का योगदान अहम है।

यह विचार कालिदास अकादमी में मालवा लोककला और संस्कृति संस्थान द्वारा श्रीमती सुमन वर्मा की स्मृति में आयोजित 35 वें भेराजी सम्मान समारोह में विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन के कुलपति श्री अखिलेश कुमार पाण्डेय ने मुख्य अतिथि के रूप में बोलते हुए व्यक्त किये।

समारोह में प्रख्यात लोकसाहित्यविद् डॉ. शैलेन्द्र कुमार शर्मा एवं लोक साहित्य की अध्येता सुश्री डॉ. सुमन चौरे को ''35 वें भेराजी सम्मान'' से अलंकृत किया गया।

सारस्वत अतिथि महर्षि पाणिनि संस्कृत एवं वैदिक विश्वविद्यालय, उज्जैन के कुलपति प्रो. सी. जी. विजय कुमार मेनन ने कहा कि भेंरा जी सम्मान लोक परम्परा का सम्मान है और दोनों सम्मानित व्यक्तित्व लोकसंस्कृति को और आगे ले जाने का कार्य करेंगे। वरिष्ठ कवि साहित्यकार डॉ. शिव चौरसिया ने अध्यक्षीय उद्बोधन में कहा कि आज बहुत गौरव का दिन है, स्वाभिमान का दिन है जब भेराजी सम्मान के बहाने हम भेराजी, कैलाश जी और सुमन वर्मा जी का स्मरण कर रहे हैं, जिन्होंने मालवा संस्कृति के उन्नयन में अपना जीवन समर्पित कर दिया। स्वागत भाषण मालवा लोक कला और संस्कृति संस्थान के सरंक्षक श्री श्रीराम दवे ने देते हुए भेराजी की स्मृतियों को रेखांकित किया।

समारोह में प्रख्यात लोकसाहित्यविद् डॉ. शैलेन्द्र कुमार शर्मा एवं लोक साहित्य की अध्येता सुश्री डॉ. सुमन चौरे को ''35 वें भेराजी सम्मान'' से अतिथियों एवं रानी जयेश भेराजी, मोनिका वर्मा, अंजू वर्मा द्वारा सम्मानित किया गया। सम्मान पत्र का वाचन अशोक भाटी और डॉ. राजेश रावल ने किया। अपने सम्मान के प्रतिउत्तर में श्री शैलेन्द्र कुमार शर्मा ने कहा कि भेराजी सम्मान मालवी और निमाड़ी का नोबल पुरस्कार है, जिसे पाकर उन्हें गर्व का अनुभव हो रहा है। सम्मानित लोक गायिका डॉ. सुमन चौरे ने निमाड़ी लोकगीत गाकर प्रशंसा पाई।

समारोह में सांस्कृतिक आयोजनों के तहत डॉ. हरिहरेश्वर पोद्दार की श्री सर्वोत्तम संगीत नृत्य अकादमी द्वारा उज्जैन की महिमा का लोकगीत - नृत्य से वर्णन किया गया। सुश्री जयवी व्यास ने लोकनृत्य और आकाशवाणी एवं दूरदर्शन के कलाकार श्री कालूराम बामनिया एवं समूह ने लोक गीत प्रस्तुत किये।

माँ सरस्वती के चित्र पर दीप आलोकन और भेराजी, कैलाश जी, सुमन जी के चित्र पर पुष्पांजलि से आयोजन का आरम्भ अतिथियों ने किया। अतिथि स्वागत श्री श्रीराम दवे, देवेन्द्र वर्मा, कमलेश वर्मा, डॉ. गरिमा दवे, रमेश चन्द्र नायक आदि ने किया। समारोह में प्रो. हरिमोहन बुधोलिया, डॉ. पिलकेन्द्र अरोरा, डॉ. प्रकाश रघुवंशी, बी. के. शर्मा, डॉ. श्रीकृष्ण जोशी, प्रो. जगदीश शर्मा, डॉ. प्रेमलता चुटैल, सूरज नागर, सुश्री माया बदेका, संतोष सुपेकर, शैलेन्द्र व्यास, डॉ. मोहन बैरागी, डॉ. रफीक नागोरी, शांतिलाल जैन, डॉ. प्रताप सोढ़ी सहित बड़ी संख्या में साहित्यकार उपस्थित रहे।

संचालन डॉ. हरीशकुमार सिंह ने और आभार जयेश भेराजी ने व्यक्त किया।

■

इस मिट्टी से तिलक करो, यह मिट्टी है बलिदान की

''भारत के स्वाधीनता संग्राम सेनानियों की जन्म और बलिदान स्थलों की चरणरज प्रदर्शनी'' को लोगों ने खूब सराहा।

युवा शोधार्थियों ने देखी स्वाधीनता प्रदर्शनी

दिनांक 13 अप्रैल, 2022 को पूर्वाह्न 11:00 बजे दत्तोपंत ठेंगड़ी शोध संस्थान पुस्तकालय दीर्घा में विधिवत प्रदर्शनी का शुभारम्भ श्री आशीष चौहान, राष्ट्रीय संगठन मंत्री अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद द्वारा श्री खेमसिंह ढेहरिया कुलपति अटलबिहारी विश्वविद्यालय की उपस्थिति में दीप प्रज्जवलित कर शुभारम्भ किया गया। इस अवसर पर संग्रहकर्ता पुरातत्वविद् डॉ. नारायण व्यास, प्रो. रुचि घोष डीन, बरकतउल्ला विश्वविद्यालय, डॉ. अल्पना त्रिवेदी, फेलो, भारतीय उच्च अध्ययन शिमला प्रमुख रूप से उपस्थित रहे। दुर्लभ प्रदर्शनी को देखने बड़ी संख्या में छात्र, शोधार्थी और विद्यार्थियों ने भ्रमण किया। डॉ. नारायण व्यास ने जिज्ञासु छात्रों को प्रदर्शनी के बारे में विस्तार से बताया। गौरतलब है कि 75 स्थलों ''भारत के स्वाधीनता संग्राम सेनानियों की जन्म और बलिदान स्थलों की चरणरज प्रदर्शनी'' को अभी तक 12 स्थानों पर प्रदर्शित कर चुके हैं।

जलियांवाला बाग बलिदान दिवस 13 अप्रैल की स्मृति में आयोजित इस प्रदर्शनी में स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों के रेखाचित्र डॉ. व्यास द्वारा बनाये हुये चित्र प्रदर्शित किये गये तथा ब्रिटिश शासन के समय की ईंटें, जिन पर वर्ष उत्कीर्ण है, वे इतिहास बताती हैं, भी प्रदर्शित की गई।

भारत के जाने माने पुरातत्ववेत्ता एवं भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण भोपाल से सेवानिवृत्त हुए डॉ. नारायण व्यास ने अभियान चलाया है कि स्वाधीनता के अमृत महोत्सव वर्ष में हमारे जो क्रांतिकारी शहीद हुए हैं, उनके जन्म/बलिदान एवं उनसे संबंधित स्थलों से एकत्रित की गई 75 पवित्र स्थलों की चरणरज (मिट्टी) का 75 स्थलों पर प्रदर्शन किया जाएगा। ताकि स्वाधीनता महोत्सव के अन्तर्गत हम चरणरज के माध्यम से उन्हें स्मरण करें। यही वजह है कि उन्होंने 75 स्थानों की चरणरज एकत्रित की है। जिसमें प्रमुख रूप से अमझेरा के शहीद राणा बख्तावर सिंह एवं उनके कई साथी जिन्हें फांसी हुई। जलियांवाला बाग की मिट्टी, सुभाषचन्द्र बोस के जन्म स्थान कटक की मिट्टी, प्रयागराज में शहीद हुए चन्द्रशेखर आज़ाद की मिट्टी, बाबासाहेब आम्बेडकर के जन्म स्थान की मिट्टी, झांसी की रानी लक्ष्मीबाई, तात्या टोपे शिवपुरी, अगस्त क्रांति मैदान मुम्बई की मिट्टी, उज्जैन के स्वतंत्रता सेनानी सूर्यनारायण व्यास, विष्णु श्रीधर वाकणकर, अनन्तलाल व्यास, राजस्थान के शहीदों के जन्म और बलिदान स्थलों की चरणरज का संग्रह है। डॉ. नारायण व्यास का लक्ष्य है कि 75 स्वतंत्रता सेनानियों के रेखाचित्र स्वयं बनाएंगे तथा इस प्रदर्शनी को 75 अलग-अलग स्थानों और शहरों में लगाने का भी लक्ष्य है। उसी कड़ी में यह 13वीं प्रदर्शनी दत्तोपंत ठेंगड़ी शोध संस्थान में आयोजित की गई थी। जिसका सैकड़ों लोगों ने अवलोकन किया।

रपट : डॉ. मुकेश कुमार मिश्रा - निदेशक

■

देश के प्रतिष्ठित ''राष्ट्रीय वनमाली कथा सम्मान समारोह'' का रवीन्द्र भवन भोपाल में हुआ भव्य आगाज

वनमाली कथाशीर्ष सम्मान से अलंकृत हुए प्रो. धनंजय वर्मा, वनमाली राष्ट्रीय कथा सम्मान से सम्मानित हुई वरिष्ठ कथाकार गीतांजलि श्री , वनमाली प्रवासी भारतीय कथा सम्मान से अलंकृत हुई दिव्या माथुर (लंदन), वनमाली विज्ञान कथा सम्मान से अलंकृत हुए देवेन्द्र मेवाड़ी। वनमाली मध्यप्रदेश कथा सम्मान से हरि भटनागर हुए सम्मानित।

सुप्रतिष्ठित कथाकार, शिक्षाविद् तथा विचारक स्व. जगन्नाथ प्रसाद चौबे ''वनमाली जी'' के रचनात्मक योगदान और स्मृति को समर्पित संस्थान ''वनमाली सृजन पीठ'' द्वारा तीन दिवसीय राष्ट्रीय वनमाली कथा सम्मान समारोह का आगाज रवीन्द्र भवन, भोपाल में किया गया। ''विश्व रंग'' टैगोर अंतर्राष्ट्रीय साहित्य एवं कला महोत्सव के अंतर्गत वनमाली सृजन पीठ, भोपाल रवीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय, आईसेक्ट पब्लिकेशन, टैगोर विश्व कला एवं संस्कृति केन्द्र के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित वनमाली कथा सम्मान समारोह में प्रथम ''राष्ट्रीय वनमाली कथाशीर्ष सम्मान'' से सुप्रसिद्ध समालोचक प्रोफेसर धनंजय वर्मा (उज्जैन) और ''वनमाली राष्ट्रीय कथा सम्मान'' से वरिष्ठ कथाकार सुश्री गीतांजलि श्री (दिल्ली) को शॉल श्रीफल, प्रशस्ति पत्र एवं एक-एक लाख रुपये सम्मान राशि प्रदान कर अलंकृत किया गया। इसके अतिरिक्त ''वनमाली कथा मध्यप्रदेश सम्मान'' वरिष्ठ कथाकार श्री हरि भटनागर (भोपाल), ''वनमाली युवा कथा सम्मान'' युवा कथाकार श्री चंदन पाण्डेय,(बंगलौर), ''वनमाली कथा आलोचना सम्मान'' युवा आलोचक श्री वैभव सिंह (दिल्ली), ''वनमाली साहित्यिक पत्रिका सम्मान'' दिल्ली से प्रकाशित चर्चित मासिक पत्रिका ''कथादेश'' को प्रदान किये गये। उल्लेखनीय है कि वनमाली कथा सम्मान में इस बार से वनमाली कथाशीर्ष सम्मान के साथ ही पहली बार दो और श्रेणियों में रचनाकारों को सम्मानित किया गया। पहला ''वनमाली प्रवासी भारतीय कथा सम्मान'' वरिष्ठ कथाकार सुश्री दिव्या माथुर (लंदन) को प्रदान किया गया तथा पहला ''वनमाली विज्ञान कथा सम्मान'' वरिष्ठ विज्ञान लेखक श्री देवेन्द्र मेवाड़ी (दिल्ली) को प्रदान किया गया। वनमाली कथा मध्यप्रदेश सम्मान, वनमाली युवा कथा सम्मान, वनमाली कथा आलोचना सम्मान, वनमाली साहित्यिक पत्रिका सम्मान, वनमाली प्रवासी भारतीय कथा सम्मान, वनमाली विज्ञान कथा सम्मान से सम्मानित रचनाकारों को शॉल-श्रीफल, प्रशस्ति-पत्र एवं इक्यावन- इक्यावन हजार रुपये सम्मान राशि प्रदान कर अलंकृत किया गया। इस अवसर पर वनमाली सृजन पीठ के राष्ट्रीय अध्यक्ष वरिष्ठ कवि एवं कथाकार श्री संतोष चौबे ने कहा कि विगत 30 वर्षों से वनमाली सृजन पीठ राष्ट्रीय स्तर पर वनमाली कथा सम्मान का आयोजन करता आ रहा है और हिन्दी एवं भारतीय भाषाओं के विस्तार के लिए लेखनरत साहित्यकारों को सम्मानित कर रहा है। आगे उन्होंने कहा कि आज हिन्दी के सामने अंतरराष्ट्रीय भाषा बनने के बड़े अवसर खुले हैं, इस दिशा में वनमाली सृजन पीठ एवं विश्वरंग टैगोर अंतरराष्ट्रीय साहित्य एवं कला महोत्सव निरंतर जमीनी स्तर से लेकर वैश्विक स्तर पर कार्यरत है। वनमाली सृजन पीठ, भोपाल के अध्यक्ष वरिष्ठ कथाकार श्री मुकेश वर्मा ने कहा कि

''विश्व रंग'' के अंतर्गत वनमाली सृजन पीठ द्वारा प्रदान किए जाने वाले ''वनमाली कथा सम्मान'' समकालीन कथा परिदृश्य में लोकतांत्रिक एवं मानवीय मूल्यों की तलाश में जुटे कथा साहित्य की पुन:प्रतिष्ठा करने एवं उसे समुचित सम्मान प्रदान करने के उद्देश्य से स्थापित द्विवार्षिक पुरस्कार है।

केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा के उपाध्यक्ष एवं वरिष्ठ रचनाकार श्री अनिल शर्मा जोशी ने सभी सम्मानित और सभागार में उपस्थित लेखकों का अभिनंदन करते हुए वनमाली जी विरासत को सहेजने के लिए संतोष चौबे जी एवं सिद्धार्थ चतुर्वेदी जी के प्रति हार्दिक साधुवाद व्यक्त किया। आपने आगे कहा कि हमारे यहाँ महान लेखकों की जन्म स्थली, जहाँ उन्होंने महत्वपूर्ण समय बिताया, जहाँ उनकी समाधि है वे खण्डहरों में तब्दील होती जा रही हैं, उपेक्षित है। हमें उन्हें संरक्षित करने की दिशा में कार्य करने की जरूरत है। साहित्य को सम्मान देने के लिए भारतीय भाषाओं को सम्मान और प्राथमिकता देना होगी।

इस अवसर पर समारोह की अध्यक्ष वरिष्ठ कथाकार ममता कालिया जी ने कहा कि वनमाली जी ने एक स्वप्न देखा, उसे उनके बेटे संतोष चौबे जी पूरा कर रहे हैं। यह गौरवान्वित होने के पल है। साहित्य आपको जीने की ताकत देता है। यहाँ सम्मानों के लिए राजनीति नहीं है। आपने भोपाल को साहित्य की वैश्विक राजधानी बना दिया है।

वरिष्ठ प्रवासी भारतीय कथाकार दिव्या माथुर जी, वरिष्ठ आलोचक श्री धनंजय वर्मा, वरिष्ठ कथाकार सुश्री गीतांजलि श्री, वरिष्ठ कवि एवं वनमाली सृजन पीठ दिल्ली के अध्यक्ष श्री लीलाधर मण्डलोई, वरिष्ठ विज्ञान कथाकार श्री देवेन्द्र मेवाड़ी, वरिष्ठ आलोचक श्री वैभव सिंह, युवा कथाकार श्री चंदन पाण्डेय आदि ने राष्ट्रीय वनमाली कथा सम्मान और वर्तमान साहित्यिक परिदृश्य पर अपने विचार व्यक्त किये।

वरिष्ठ कवि एवं विश्व रंग टैगोर अंतर्राष्ट्रीय साहित्य एवं कला महोत्सव के वरिष्ठ सदस्य बलराम गुमास्ता जी ने सभी का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि भाषा का साहित्य ही भाषा को वैश्विक स्वरूप प्रदान करता है। विश्व रंग ने साहित्य के वैश्विक पटल पर एक-एक अलग मुकाम बनाया है। वनमाली कथा सम्मान समारोह का सफल संचालन युवा कथाकार एवं वनमाली पत्रिका के संपादक श्री कुणाल सिंह द्वारा किया गया। प्रशस्तिपत्र का वाचन टैगोर विश्व कला एवं संस्कृति केन्द्र के निदेशक श्री विनय उपध्याय एवं वरिष्ठ उद्घोषिका सुश्री सुनीता सिंह द्वारा किया गया।

पूर्व रंग में कबीर के पदों की सांगीतिक प्रस्तुति श्री राजीव सिंह एवं साथीगण द्वारा प्रस्तुति दी गई। पूर्व रंग में कबीर के निर्गुण पदों का गायन कर राजीव सिंह ने शब्द संस्कृति के इस उत्सव में अनूठा रंग बिखेरा। उन्होंने अपने गायन में ''चदरिया झीनी रे.....'', ''मो को कहाँ ढूंढे रे बंदे....'' सहित कबीर की उन रचनाओं को चुना जो सदियों से मनुष्यता का संदेश मुखरित करती रही हैं। इसके अलावा ''रंगों से रंग मिले, नए नए ढंग मिले...'' की मनमोहक प्रस्तुति दी। इस अवसर पर टैगोर विश्व कला और संस्कृति केन्द्र के निदेशक विनय उपाध्याय ने पूर्व रंग सभा का संचालन करते हुए उत्सव के सांस्कृतिक महत्व पर प्रकाश डाला।

''वनमाली'', विश्व रंग, रंग संवाद, इलेक्ट्रॉनिकी आपके लिए पत्रिकाएँ हुई लोकार्पित:-

नई सदी की नई रचनाशीलता को सम्यक एवं समुचित स्थान देने के उद्देश्य से प्रारम्भ की गई लोकतांत्रिक मूल्यों की समावेशी पत्रिका ''वनमाली'' ने अपने प्रवेशांक से ही साहित्य जगत में रचनात्मक उपस्थिति दर्ज कराई है। वनमाली पत्रिका का ताजा अंक भी वनमाली कथा सम्मान समारोह में लोकार्पित किया गया। इस अवसर पर रंग संवाद, विश्व रंग एवं इलेक्ट्रॉनिकी आपके लिए पत्रिकाओं के ताजा अंकों को भी लोकार्पित किया गया। कथा भोपाल का लोकार्पण आईसेक्ट पब्लिकेशन द्वारा भोपाल के लगभग 200 कथाकारों की कहानियों को ''कथा भोपाल'' के रूप में चार वृहद खण्डों में संकलित, संपादित एवं प्रकाशित करने का महत्वपूर्ण कार्य किया है।

विज्ञान कथाकोश का लोकार्पण आईसेक्ट पब्लिकेशन द्वारा देश के लगभग 200 कथाकारों की विज्ञान कथाओं को विज्ञान कथाकोश के रूप में छ: वृहद खण्डों में संकलित, संपादित एवं प्रकाशित करने का रचनात्मक कार्य किया है। इस महत्वपूर्ण विज्ञान कथाकोश के प्रधान सम्पादक श्री संतोष चौबे एवं सम्पादक श्री सुखदेव प्रसाद है।

वनमाली कथा सम्मान समारोह के अंतर्गत टैगोर नाट्य महोत्सव में स्वर्गीय जगन्नाथ प्रसाद चौबे ''वनमाली'' जी कहानी ''आदमी और कुत्ता'' का सफल नाट्य मंचन किया गया। इसका नाट्य रूपांतरण, परिकल्पना एवं निर्देशन युवा रंगनिर्देशक मनोज नायर द्वारा किया गया। उल्लेखनीय है कि इस अवसर पर देश, प्रदेश एवं भोपाल एवं आसपास के लगभग एक हजार से अधिक वरिष्ठ एवं युवा साहित्यानुरागियों, कलाप्रेमियों आदि ने रचनात्मक भागीदारी की।

■

सुषेण पर्व नाटक का मंचन, दिखाई गई सुषेण के राजवैद्य से वैद्यराज बनने तक की यात्रा

भोपाल के हंस ध्वनि रविन्द्र भवन में डॉ. देवेन्द्र दीपक द्वारा रचित सुप्रसिद्ध काव्य नाटक ''सुषेण पर्व'' का मंचन किया गया। विश्व अयुर्वेद परिषद द्वारा आयोजित कार्यक्रम 'संयोजनम्' के अन्तर्गत सांस्कृतिक संध्या में ''सुषेण पर्व'' का मंचन हुआ। त्रेतायुग के प्रसिद्ध वैद्य सुषेण पर आधारित इस काव्य नाटक में चिकित्सक की व्यावसायिक नैतिक शुचिता का निर्देशन केन्द्र में है। वैद्य के अंतस में वनस्पतियों, वनदेवी से लेकर रोगी तक कृतज्ञता का भाव रखने तथा लोभ, लालच, आत्मप्रशंसा और जय-जय कार के भाव से दूर रहने की सीख, वैद्य सुषेण के चरित्र के माध्यम से दी गई। रामकथा के महत्वपूर्ण, किन्तु अलक्षित पात्र सुषेण के जीवन के अनेक अनबूझे और अनकहे पहलू और सुषेण के राजवैद्य से वैद्यराज बनने तक की कहानी प्रस्तुत की गई। राजवैद्य के वैद्यराज सुषेण बनने तक की यात्रा में द्वंद्व का निरसन सुषेण की पत्नी सूर्या (कल्पित) जिस तार्किकता के साथ करती है, वह अद्भुत है। अर्ध्य कला समिति भोपाल के कलाकारों द्वारा मंचित इस नाटक का निर्देशन वैशाली गुप्ता ने किया। कलाकारों ने अपने प्रतिभापूर्ण अभिनय से चरित्रों को जीवंत कर दिया। वैद्य सुषेण की भूमिका प्रेम गुप्ता ने निभाई। राम की भूमिका में अंकित तिवारी, लक्ष्मण की भूमिका में कृष्णा मुन्डारी लोहार और हनुमान की भूमिका में हर्ष राव थे। नाटक के उपरांत लेखक डॉ. देवेन्द्र दीपक और निर्देशक वैशाली गुप्ता का अभिनंदन किया गया। उल्लेखनीय है कि प्रोफेसर डॉ. देवेन्द्र दीपक राष्ट्रपति पुरस्कार प्राप्त साहित्यकार है। ''सुषेण पर्व'' डॉ. देवेन्द्र दीपक की सांस्कृतिक प्रज्ञा, सर्जन की अंतर्दृष्टि और कलाशीलता का नाट्य अनुष्ठान है। यह उनका चौथा काव्य-नाटक है।

– रीतेश दुबे

श्री कौतुक के कविता संग्रह का लोकार्पण

शासकीय श्री अहिल्या केंद्रीय पुस्तकालय द्वारा 23 अप्रैल को विश्व पुस्तक दिवस के अवसर पर श्री सदाशिव के कविता संग्रह इस दौर से गुजरते हुए का लोकार्पण संपन्न हुआ विश्व पुस्तक दिवस के अवसर पर कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए पूर्व लोकसभा अध्यक्ष पद्मश्री श्रीमती सुमित्रा महाजन जी ने विद्यालयों से आए विद्यार्थियों एवं साहित्यकारों को संबोधित करते हुए संग्रह की कविता का जिक्र किया इस अवसर पर मुख्य अतिथि सांसद शंकर लालवानी विशेष अतिथि श्री जयंत भिसे, अलाउद्दीन खाँ संगीत अकादमी के निर्देशक पद्मश्री भालू मोंढे, श्री मंगलेश व्यास जिला शिक्षा अधिकारी, श्री अनिल भंडारी ने भी संबोधित किया प्रारंभ में दीप प्रज्ज्वलन एवं अतिथियों का स्वागत हुआ जिला पुस्तकालय की ग्रंथपाल श्रीमती लिली डाबर ने स्वागत उद्बोधन दिया, श्रीमती सुमित्रा महाजन द्वारा श्री कौतुक द्वारा पिता पर लिखी गई कविताओं का वाचन किया संस्था मातृभाषा उन्नयन संस्था के द्वारा नगर के 5 विशिष्ट जनों का सम्मान किया गया कार्यक्रम का संचालन श्री हरेराम वाजपेई जी ने किया इस कार्यक्रम की सफलता पर श्रीमती सुमित्रा महाजन ने ग्रंथपाल लिली डाबर की सक्रियता की भूरी भूरी प्रशंसा की।

गजसिंह द्वारा डॉ. महेन्द्र भानावत को मारवाड़ रत्न का सम्मान

उदयपुर। लोककला संस्कृतिविज्ञ डॉ. महेन्द्र भानावत को जोधपुर स्थापना दिवस 12 मई को गजसिंह द्वारा मारवाड़ रत्न कोमल कोठारी सम्मान प्रदान किया गया। राष्ट्रीय स्तर का इक्यावन हजार का यह सम्मान डॉ. भानावत को उनके द्वारा विभिन्न प्रान्तों की कलाधर्मी जातियों, लोकानुरंजनकारी प्रवृत्तियों जनजातीय सरोकारों तथा कठपुतली पड़ कावड़ जैसी विधाओं पर खोजपूर्ण लेखन एवं शोध के उन्नयन में दीर्घकालीन उच्चस्तरीय योगदान के उपलक्ष्य में प्रदान किया गया।

इस दिन गजसिंह का 70वां तिलकोत्सव भी था। इस संबंधित एक विशिट प्रदर्शनी 70 वर्ष पूर्व की स्मृतियां लिए अलग से आयोजित की गई जिसे देख सभी अभिभूत हुए। समारोह के दौरान गजसिंह ने पूर्व काल तथा आजादी के बाद जनसेवा के उल्लेखनीय योगदान का जिक्र करते हुए मेहरानगढ़ म्युजियम ट्रस्ट द्वारा अगले वर्ष से राजाराम मेघवाल पुरस्कार देने की भी घोषणा की।

समारोह में विशिष्ट अतिथि प्रो.संजीव मिश्रा ने कहा कि मेहरानगढ़ के सूरजवंशी सूर्यनगरी जोधपुर ने रक्त की बजाय शकुन दिया है। मुख्य अतिथि सव्यसांची मुखर्जी ने जोधपुरी भाषाएँ संस्कृति तथा परम्परा को देश की संस्कृति की पहचान कहा। सम्मान समिति के प्रो. जहूर खां मेहर ने कहा कि देश के लिए विभिन्न क्षेत्रों में जो महानुभाव अपने कर्त्तव्य की साधना और पुरुषार्थ में लगे हुए हैं उनकी पहचान कर उनके स्मरणीय योगदान का सम्मान अन्यों को भी प्रेरणा और शकुन देता है। धन्यवाद की रस्म ट्रस्ट द्वारा संचालित म्युजियम शोध एवं अध्ययनशाला के निदेशक महेन्द्रसिंह तंवर ने अदा की।

उल्लेखनीय है कि कई पुरस्कारों से सम्मानित डॉ. भानावत को गत 29 मार्च को ही इतनी ही राशि से मोरारी बापू द्वारा प्रवर्तित श्री काग लोकसाहित्य सम्मान प्रदान किया गया था।

''संस्कृति के पथ पर'' पुस्तक का लोकार्पण

झालावाड़ 10 मई। बल्लभ सम्प्रदाय के छठेपीठ बड़ोदरा (गुजरात) के षष्ठपीठाधीश्वर द्वारकेशलाल जी महाराज ने मंगलवार को झालरापाटन के द्वारकाधीश मन्दिर में इतिहासकार ललित शर्मा द्वारा लिखित पुस्तक ''संस्कृति के पथ पर'' का लोकार्पण किया। द्वारकाधीश मन्दिर में राजभोग में फूलबंगला मनोरथ में पुस्तक का लोकार्पण करते हुए महाराज ने कहा कि – इस पुस्तक में भारत के अनेक सांस्कृतिक, पुरातात्त्विक स्थलों के प्रमाणिक परिचय आने से यह पुस्तक इतिहास के तथा साहित्य के पाठकों के लिए शोध एवं रूचि की होगी। इसमें अनेक ऐसे अध्याय है जो शोध की धारा को आगे बढ़ाते है। इस अवसर पर उन्होंने लेखक ललित शर्मा को ओपरना ओढ़ाकर सम्मान किया। समारोह का संचालन मुरली मनोहर प्रजापति ने एवं आभार सहयोग संदीप गुप्ता ने व्यक्त किया।

ललित शर्मा, इतिहासकार मोबा. 9079087965

डॉ विष्णु श्रीधर वाकणकर जयंती 4 मई 2022

प्रो. रविन्द्र कोरिसेट्टार और डॉ. नारायण व्यास को डॉ. विष्णु श्रीधर वाकणकर राष्ट्रीय सम्मान

पुरातत्वविद भारतीय संस्कृति का आधार: मंत्री ठाकुर

संस्कृति, पर्यटन और धार्मिक न्यास एवं धर्मस्व मंत्री सुश्री उषा ठाकुर ने कहा कि पुरातत्वविद ही भारतीय संस्कृति का आधार है। निष्ठा और परिश्रम से किया गया पुरातत्वविदों का अनुसंधान भावी पीढ़ी को स्वर्णिम प्राचीन इतिहास से परिचय कराएगा। मंत्री सुश्री ठाकुर राज्य संग्रहालय सभागार में डॉ. विष्णु श्रीधर वाकणकर सम्मान समारोह को संबोधित कर रही थी। मंत्री सुश्री ठाकुर ने प्रो. रविन्द्र कोरिसेट्टार वर्ष 2018-19 और डॉ. नारायण व्यास को 2019-20 के लिए शॉल, श्रीफल, प्रशस्ति पत्र और दो लाख रुपए की सम्मान राशि से सम्मानित किया। मंत्री सुश्री ठाकुर ने कहा कि डॉ. विष्णु श्रीधर वाकणकर न होते तो भीमबेटका की खोज न होती और कालजयी विश्वगुरु भारतीय संस्कृति को वैज्ञानिक कसौटी पर परखा न जा सकता। उन्हीं के सम्मान में शुरू किया गया यह पुरस्कार आगे भी से भारतीय संस्कृति और इतिहास में अनुसंधान करने वाले पुरातत्वविदों को दिया जाता रहेगा। प्रमुख सचिव संस्कृति और पर्यटन श्री शिवशेखर शुक्ला जी के साथ संस्कृति और पुरातत्व विभाग के अधिकारी कर्मचारी उपस्थित रहे। डॉ. विष्णु श्रीधर वाकणकर राष्ट्रीय सम्मान पुरा सम्पदा के संरक्षण एवं पुरातत्विक संस्कृति के क्षेत्र में रचनात्मक, सृजनात्मकता एवं विशिष्ट उपलब्धियाँ अर्जित करने वाले सक्रिय भारतीय नागरिक और संस्था को दिया जाता है।

प्रो. रविन्द्र कोरिसेट्टार:- प्रो. रविन्द्र कोरिसेट्टार का जन्म 8 जुलाई 1952 को होसपेट (कर्नाटक) में हुआ। उन्होंने प्रो. एच.डी. सांकलिया के सानिध्य में पुरातत्व के क्षेत्र में प्रशिक्षण प्राप्त किया। उन्होंने पुरातत्व में प्रागैतिहास को अपना विषय चुना एवं भारतीय प्रागैतिहास को विश्व में महत्वपूर्ण स्थान दिलाने में अहम योगदान दिया। आप विभिन्न वैज्ञानिक प्रयोगशालाओं एवं शोध पत्रिकाओं से सक्रिय रूप से जुड़े रहे एवं इन्हीं में से कुछ शोध पत्रिकाओं का संपादन भी आपके द्वारा किया गया। सेवानिवृति के बाद डॉ. विष्णु श्रीधर वाकणकर सीनियर फेलो (2015-17), उच्च शिक्षा अनुदान आयोग के इमेरिटस फेलो (2017-19) और भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद के सीनियर विधा विषयक फेलो (2019-21) के रूप में अनेक शोध कार्य किए हैं।

डॉ. नारायण व्यास:- डॉ. नारायण व्यास का जन्म 05 जनवरी 1949 को उज्जैन में हुआ। गुरुवर पद्मश्री डॉ. विष्णु श्रीधर वाकणकर के पद चिन्हों पर चलते हुये उन्होंने भारतीय शैल चित्रकला को विश्व पटल पर विशेष स्थान दिलाने में अहम् योगदान दिया। वर्ष 2009 में सेवानिवृत्ति के उपरांत पुरातत्व में विशेषकर शैल चित्रकला के संरक्षण एवं प्रबंधन के लिये भोपाल के विद्यालय, महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालय के छात्रों एवं शोधार्थियों के लिये सतत् प्रेरणा स्रोत बने हुये हैं। इनके 100 से अधिक शोध पत्र भी प्रकाशित हो चुके हैं। ■

घनश्याम सक्सेना के उपन्यास 'राजमहिषी मामोला बाई' का लोकार्पण

अखिल भारतीय साहित्य परिषद द्वारा स्वराज भवन में आयोजित एक गरिमामय आयोजन में श्री घनश्याम सक्सेना जी का हाल ही प्रकाशित उपन्यास 'राजमहिषी मामोला बाई' का लोकार्पण किया गया इस अवसर पर श्री घनश्याम सक्सेना ने कहा कि लोकाख्यानों में प्रचलित मामोला के चरित्र ने मुझे बहुत प्रभावित किया उन पर कही भी साहित्य नहीं मिलता है इसलिए मैंने तय किया कि मुझे मामोला पर लिखना चाहिए यह उपन्यास उसी का प्रतिफल है। मुख्य वक्ता परिषद की राष्ट्रीय मंत्री डॉ. साधना बलवटे ने कहा कि ये उपन्यास एक ऐसी हिन्दूरानी की कहानी है जिसने नवाब की धर्म परिवर्तन की शर्त नहीं मानी। लोक आख्यानों में वे मांजी मामोला के नाम से प्रसिद्ध हैं – वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. देवेन्द्र दीपक, लक्ष्मीनारायण पयाधि, सन्तोष चौबे, वरिष्ठ पत्रकार श्री महेश श्रीवास्तव आदि ने श्री घनश्याम सक्सेना जी के व्यक्तित्व और कृतित्व पर अपने-अपने विचार व्यक्त किए कार्यक्रम में नगर के सभी क्षेत्र के प्रबुद्धजन उपस्थित थे।

रपट – जगदीश कौशल

अष्टोत्तर सहस्त्र शिवलिंग पुस्तक लोकार्पण

अष्टोत्तर सहस्त्र शिवलिंग के लोकार्पण समारोह में माननीय मुख्यमंत्री श्री शिवराज जी चौहान के कर कमलो से अद्वितीय सहस्त्र लिंग पुस्तक का विमोचन करते हुए विधायक श्री यशपाल जी सिसौदिया व श्री कैलाश चन्द्र घनश्याम पांडेय।

आज़ादी का अमृत महोत्सव

नरेंद्र मोदी
प्रधानमंत्री

शिवराज सिंह चौहान
मुख्यमंत्री

Government of Madhya Pradesh

मध्यप्रदेश की पहचान, उन्नत खेती खुशहाल किसान

बढ़ता गेहूँ निर्यात

मध्यप्रदेश में किसान कल्याण की दिशा में उठाये गये कदमों से गेहूँ का निर्यात तेजी से बढ़ा है। किसानों की उपज का उचित दाम मिल रहा है।

· वित्तीय वर्ष 2022-23 में गेहूँ निर्यातकों को मंडी शुल्क की प्रतिपूर्ति की योजना लागू।

· इस वर्ष मध्य प्रदेश से गुजरात, आंध्रप्रदेश एवं महाराष्ट्र के बंदरगाहों से लगे रेलवे रेक पॉइंट्स पर भेजे जा रहे गेहूँ की रेक संख्या में अप्रत्याशित वृद्धि।

· गेहूँ निर्यात को बढ़ावा देने निर्यातकों को मात्र 1000 रुपये में लायसेंस देने का निर्णय।

· अभी तक 943 निर्यातकों द्वारा पोर्टल पर पंजीयन।

· इस वर्ष गेहूँ के निर्यात में 8 से 10 गुना वृद्धि देखने को मिल रही है।

· इस वर्ष मध्य प्रदेश से लगभग 3.00 लाख टन गेहूं बंदरगाहों तक भेजा जा चुका है। निर्यात के लिए गेहूँ की मांग निरंतर जारी।

कृषि निर्यात प्रकोष्ठ में निर्यातकों की सहायता हेतु एक्सपोर्ट हेल्पलाइन नम्बर 18002333474 जारी।

समृद्ध और सुरक्षित भविष्य की राह पर मध्यप्रदेश में कृषि और किसान

D-19135/22

।। सर्वं खल्विदं ब्रह्म ।।

आचार्य शंकर सांस्कृतिक एकता न्यास

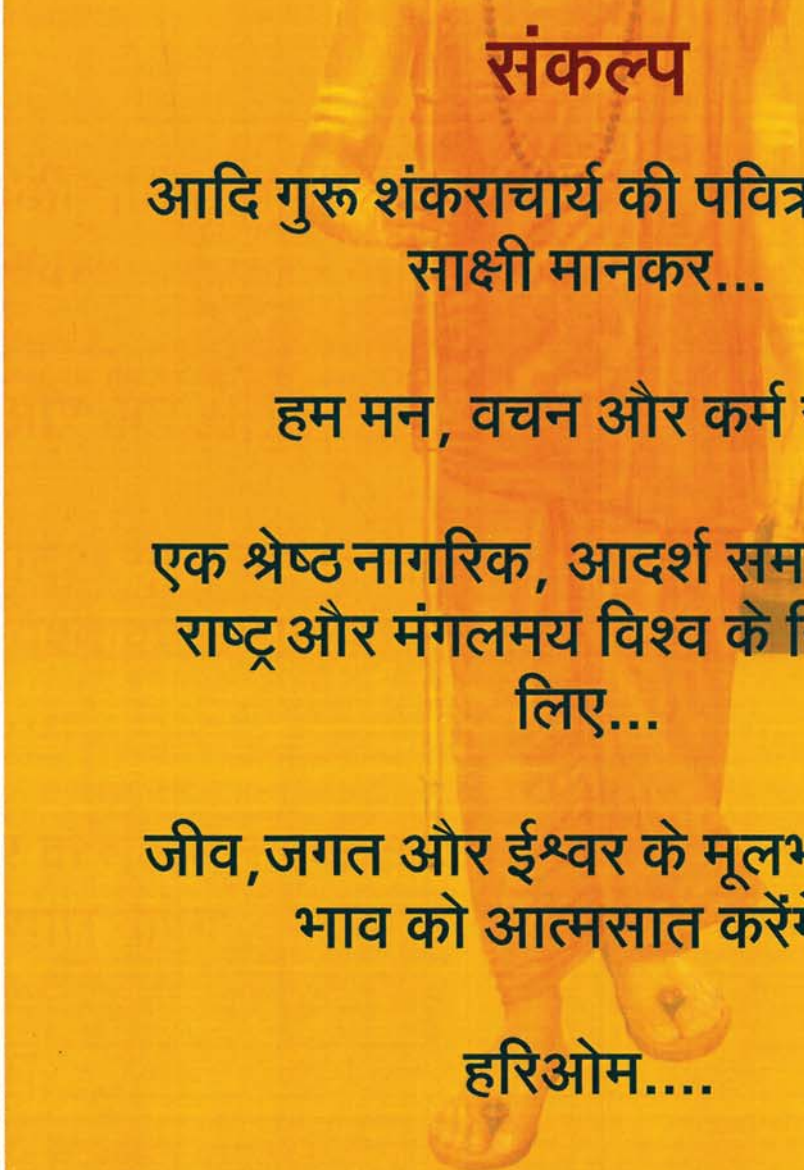

संकल्प

आदि गुरू शंकराचार्य की पवित्र स्मृति को साक्षी मानकर...

हम मन, वचन और कर्म से...

एक श्रेष्ठ नागरिक, आदर्श समाज, उन्नत राष्ट्र और मंगलमय विश्व के निर्माण के लिए...

जीव, जगत और ईश्वर के मूलभूत एकात्म भाव को आत्मसात करेंगे...

हरिओम....

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक एवं स्वत्वाधिकारी भँवरलाल श्रीवास द्वारा गणेश ग्राफिक्स, 26 बी, देशबन्धु भवन, प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी. नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं जे-191, मंगल भवन, ई-6, महावीर नगर, अरेरा कालोनी, भोपाल (म.प्र.)- 462016 से प्रकाशित। संपादक - भँवरलाल श्रीवास